ना कैरियर स्वयं चु

आनंद गांगुली
एस. भूषण

[illegible] निर्माण,
[illegible]"

थ [illegible], नई दिल्ली

प्रकाशक : ग्रंथ अकादमी, 1659 पुराना दरियागंज, नई दिल्ली 110002
सर्वाधिकार : सुरक्षित / संस्करण प्रथम, 2003 / मूल्य : [illegible]
मुद्रक : प्रिंट परफैक्ट, दिल्ली अनुवाद : श्रीमती [illegible]

APNA CAREER SWAYAM CHUNEN (Choose Your Career)
by A Ganguly / S Bhushan Rs 200.00
Pub' shed by Granth Akademi 1659 O'd Darya Ganj New Delhi 2
SBN 81-88267 16-3

भारतीय प्रतिभाओं
को

आमुख

जब हम कैरियर के संबंध में चर्चा करते हैं तब इस महत्वपूर्ण [illegible] का ध्यान रखना जरूरी हो जाता है कि पिछले दस वर्षों में इस क्षेत्र में व्यापक स्तर पर बदलाव आया है। दस वर्ष पहले जब कोई व्यक्ति कैरियर चुनना चाहता था तो इसके सामने सेना, चिकित्सा, इंजीनियरिंग तथा संघ लोक सेवा आयोग जैसे सीमित विकल्प होते थे, लेकिन आज इतनी अधिक संख्या में विकल्प मौजूद हैं कि व्यक्ति आसानी से यह निर्णय नहीं ले पाता कि वह कौन सा रास्ता चुने। आज यह देखा जाता है कि उम्मीदवार एक से अधिक कैरियर चुनता है और अधिकांश मामलों में [illegible] कैरियर चुनता है। इससे व्यक्ति को कार्य संतुष्टि नहीं मिल पाती। [illegible] होगा, जब नौकरी कार्य उसकी रुचि के अनुकूल हो

इस संबंध में जरूरी है कि व्यक्ति पहले आत्म विश्लेषण करे और उसके बाद अपनी रुचि का कैरियर अपनाए। व्यक्ति को अपने गुणों [illegible] चाहिए, तथा कार्य नौकरी की अपेक्षाओं, मूल्यों के साथ उनकी तुलना [illegible] उदाहरण के तौर पर - सौन्दर्य, अनुभूति, अनुशासनप्रियता और [illegible] [illegible]

केरियर [illegible] होने के नाते लेखिका ने सैकड़ों [illegible] विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया है। यह देखा गया है कि अर्ध-शहरी व ग्रामीण [illegible] तथा विशेष रूप से कुछ पिछड़े हुए राज्यों में विद्यार्थी सरकारी नौकरियों को [illegible] महत्त्व देते हैं। ये विद्यार्थी प्राइवेट सेक्टर के बारे में यथोचित जानकारी [illegible] इसी वजह से वे सीमित दायरे में स्वयं को कैद कर लेते हैं। [illegible] की कोशिश करनी चाहिए कि आज के युग में प्राइवेट क्षेत्र आकर्षक [illegible] साथ-साथ बेहतर सुविधाएँ प्रदान करता है। हाँ, आपको प्राइवेट क्षेत्र में [illegible] मेहनत करनी पड़ती है; लेकिन मेहनत का फल अवश्य मिलता है।

आज यह प्रवृत्ति उभरकर सामने आ रही है कि किसी विशिष्ट [illegible] ओर लगभग सभी इच्छुक अंधाधुंध भागने लगते हैं। पाँच [illegible] अध्ययन के पीछे लोग दीवाने थे तथा हर कोई डिप्लोमा [illegible] संस्थान में दाखिला लेना था। बाद में एहसास होता था कि यह क्षेत्र [illegible] अनुकूल नहीं है। इसके अलावा प्रबंधन अध्ययन करनेवाले [illegible] आकर्षक कैरियर का सपना देखने लगते थे। प्रबंधन जीवन [illegible] कि नौकरी पाने का माध्यम; बल्कि इसमें प्रगति के साथ [illegible] उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार से पिछले दो-तीन वर्षों में कंप्यूटर [illegible] कोई कमी नहीं है तथा हार्डवेयर सेक्टर की बजाय सॉफ्टवेयर में [illegible] मौजूद है। परिणामस्वरूप कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की बाढ़ सी आ गई है। [illegible] शुरुआत की तलाश में लोग भटक रहे हैं।

पाठकों के लिए जरूरी है कि वे सभी कैरियर विकल्प [illegible] चुनिंदा विकल्पों पर ही ध्यान दें। इससे उन्हें यह जानकारी मिलेगी कि [illegible] अनेक विकल्प मौजूद हैं। कॉल सेंटर उद्योग तथा प्रतिष्ठा प्रबंधन जैसे नवीन [illegible] विकल्प अपनाने पर भी ध्यान दिया गया है। आजकल मार्केट में ये [illegible] आकर्षण का केंद्र बनते जा रहे हैं तथा नौकरियों के अनेक अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। आशा है, सुधी पाठकों को यह संक्षिप्त एवं ज्ञानवर्धक पुस्तक [illegible]

—आनंद गांगुली

—एस. भूषण

अनुक्रम



अंतरराष्ट्रीय अध्ययन

(International Studies)

पूरे विश्व में इतना सबकुछ घटित हो रहा है और हर सुबह समाचार-पत्र में अनेक देशों की ऐसी खबरें पढने को मिलती हैं, जो प्रशंसनीय भी हैं और निंदनीय भी। विशेषज्ञ इन प्रमुख घटनाओं पर दोनों प्रकार की टिप्पणियाँ देते हैं और विश्लेषण करते हैं। अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों के गहन ज्ञान के परिणामस्वरूप ही विश्वव्यापी घटनाओं का विश्लेषण तथा राष्ट्रों के बीच संबंधों का विशेषज्ञतापूर्ण विचार-विमर्श सामने आता है।

विषय के रूप में अंतरराष्ट्रीय अध्ययन भारत में अभी परिपक्व अवस्था मे नहीं पहुँचा है। हालाँकि विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम तैयार नहीं किए जा सके हैं, फिर भी अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों मे डिग्री धारकों के लिए रोजगार के अवसर बढ़े है।

भारत मे अभी भी बहुत कम संस्थान अंतरराष्ट्रीय अध्ययन मे स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा अंतरराष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, पांडिचेरी विश्वविद्यालय में इस विषय मे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। दिल्ली तथा भारत के प्रमुख नगरों में आयोजित लिखित परीक्षा के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में जे एन यू. में दाखिला मिलता है। जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में अंतरराष्ट्रीय अध्ययन का विभाग है। इसके अलावा कुछ विश्वविद्यालयो के विभागों में राजनीति विज्ञान तथा क्षेत्र अध्ययनो के भाग रूप मे अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विषय पढ़ाया जाता है। क्षेत्र अध्ययन विशिष्ट क्षेत्रो के अध्ययन से सबंधित है। उदाहरण के तौर पर, मद्रास (चेन्नई) विश्वविद्यालय में दक्षिण-पूर्वी अध्ययन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। भारतीय अंतरराष्ट्रीय विधि सोसाइटी मे विशिष्ट क्षेत्रों में स्नातकोत्तर डिप्लोमा चलाया जाता है।

ऐसी अनेक पाठ्यचर्याएँ हैं, जहाँ उच्च स्तर पर प्रमुख विषय के रूप मे

अतरराष्ट्रीय अध्ययन पढ़ाया जाता है। एम फिल और पी-एच डी. स्तर पर छात्रा क सामने अनेक विकल्प होते हैं। इनमें राजनय, अतरराष्ट्रीय विधि तथा अर्थशास्त्र, अतरराष्ट्रीय राजनीति, निरस्त्रीकरण, व्यवसाय, पर्यावरण, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और विकास तथा क्षेत्र अध्ययन भी शामिल हैं।

एम ए में प्रवेश के लिए पात्रता मानदंड किसी भी विषय में कम-से-कम 50 प्रतिशत अंको के साथ स्नातक उपाधि है।

अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में उच्च स्तरीय डिग्री से आप सरकारी, अंतरराष्ट्रीय सगठनों, लाभेतर क्षेत्र, शिक्षा, विधि, पत्रकारिता और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों के लिए तैयार हो जाएँगे। अतरराष्ट्रीय संबंधो में रुचि रखनेवालो के लिए पारपरिक रास्ता भारतीय विदेश सेवा है। राष्ट्र की विदेश नीति से जुड़ी सरकारी एजेंसियो, राज्य और केद्र सरकार के विभागो मे ही रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

कैरियर सबंधी अवसर संयुक्त राष्ट्र तथा इससे संबंधित एजेंसियो में भी उपलब्ध हैं, जो ग्लोबल मुद्दों की व्यापक रेज पर केंद्रित है। एशियाई-अफ्रीकी विधायी परामर्श समिति भी ऐसा ही संगठन है, जिसमे पैंतालीस सदस्य देश शामिल हैं। यह विशेष संस्था है। इसका लक्ष्य व्यापार, पर्यावरण आदि जेसे क्षेत्रो मे अतरराष्ट्रीय विधि से संबंधित मामलो के बारे में विधायी परामर्श प्रदान करके सदस्य देशों की सहायता करना है। आमतौर पर व्यक्ति के पास अतरराष्ट्रीय विधि में उच्च स्तरीय डिग्री होनी चाहिए। अंतरराष्ट्रीय विधि में डिग्रीधारक की स्थिति उस समय अन्यों की तुलना में बेहतर होती है जब राजनय, गेर-सरकारी सगठन क्षेत्र तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय सगठन जैसे क्षेत्रों में नौकरी के लिए आवदन किया जाता ह।

अध्यापन एक बहुत ही आकर्षक कैरियर है। कॉलेज के साथ-साथ विश्वविद्यालयों में भी अंतरराष्ट्रीय अध्ययन तथा राजनीति विज्ञान में शिक्षण के अवसर उपलब्ध है।

अनुसंधान क्षेत्र मे भी व्यापक गुंजाइश है। सर्वाधिक आकर्षक विकल्प पी-एच.डी. तथा भारत या विदेश में पोस्ट डॉक्टरल अनुसधान है। गैर-सरकारी सगठन तथा अन्य विभिन्न संगठन अंतरराष्ट्रीय मामलों में शोध कार्य मे व्यस्त हैं। इस क्षेत्र में व्यक्ति को सतोषप्रद कैरियर मिल सकता है।

अतरराष्ट्रीय मामलों की जानकारी से व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की रिपोर्टिंग और विश्लेषण में पारंगत हो जाता है। अनेक पत्रकारों को समाचार-पत्रो तथा प्रसारण मीडिया में अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों को कवर करने के लिए असाधारण/उत्कृष्ट अवसर मिलते हैं। प्रमुख समाचार सेवाओं को भी ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता रहती

है, जो समाचारों को एकत्रित करके विश्लेषण करने के बाद उनका प्रसार कर सके।

वैश्विक अर्थव्यवस्था काफी फैल चुकी है। परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्त और बैंकिंग तथा अंतरराष्ट्रीय परामर्श क्षेत्र में कार्यरत व्यवसाय फर्मों में अनेक विभिन्न कैरियर विकल्प मौजूद हैं। उदारीकरण से अंतरराष्ट्रीय विधि मे विशेषज्ञता प्राप्त छात्रों तथा व्यवसाय और व्यापार (ट्रेड) में कार्यरत प्रैक्टिशनर्स (व्यवसायी) के लिए सेवा के नए द्वार खुल गए हैं।

इस क्षेत्र में अच्छा-खासा पारिश्रमिक मिलता है। लेक्चर का यू.जी.सी स्केल के अनुसार आठ हजार रुपए मूल वेतन है। सेवा काल में यह राशि विभिन्न लाभों के साथ बढ़ती जाती है। अन्य लाभो तथा पैकेज के साथ वेतन सोलह हजार रुपए तक बढ़ सकता है। पी-एच डी कार्यक्रम के दौरान ही यू.जी.सी की राष्ट्रीय शिक्षा परीक्षा (NET) उत्तीर्ण कर लेने पर व्यक्ति को फेलोशिप के रूप में पाँच हजार रुपए प्रति माह मिलते हैं। यदि व्यक्ति पोस्ट डॉक्टरल शोध कार्य कर लेता है, तब छात्रवृत्ति की राशि सरकारी कर्मचारियों के वेतन के बराबर हो जाती है।

अंतरराष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य प्राइवेट एवं अर्ध-सरकारी संगठनों में केंद्रीय सरकारी सेवा के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है। यहाँ मूल वेतन दस हजार से बारह हजार रुपए तक प्रति माह तथा इसके अलावा विभिन्न सुविधाएँ दी जाती हैं। अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के रूप मे प्रशिक्षित लोग पत्रकार से लेकर राजनीति विशेषज्ञ के रूप मे जिम्मेदारीवाले बडे-बडे ओहदों से अपना कैरियर आरभ कर सकते हैं। नौकरी की तलाश मे लगे हर छात्र के लिए कही-न-कही इस क्षेत्र में स्थान है।



अंशकालीन नौकरियाँ

(Part-time Jobs)

स्कूली परीक्षाएँ समाप्त हो जाने पर कुछ छात्र नई किताबें और कॉपियाँ खरीदने लगते है। उनपर खाकी कागज का कवर चढ़ाया जाता है, फिर उन्हें सजाया जाता है, सुंदर-सुंदर अक्षरो में अपना नाम, नई कक्षा लिखी जाती है। लेकिन कुछ छात्र बड़े धैर्य से परिणामों की प्रतीक्षा करते रहते हैं। परीक्षा के बाद छात्र-जीवन मे नया दौर—कॉलेज जीवन—शुरू होने वाला होता है। व्यक्तिगत हालात पर निर्भर करते हुए किसी का यह समय आराम से बीतता है, जबकि कुछ छात्रों के लिए यह समय काटना भारी पड़ता है।

ग्रीष्मकालीन नौकरियों या अंशकालीन नौकरियों की संकल्पना भारत में पहले से ही आवश्यक समझी जा रही है। लेकिन बेबी-सीटिंग या अपना पेपर रूट (route) तैयार करना अभी भी भारत में हॉलीवुड मूवी के समान समझा जाता है और अभी तक यह वास्तविक रूप नहीं ले पाया है। लेकिन इस समय को अन्य उपयोगी तरीको से भी बिताया जा सकता है।

यदि आप व्यंजनों के शौकीन है और आपको लोगों से मिलना-जुलना पसद है तथा आप पैसा सँभाल सकते हैं, घंटों खड़े रह सकते हैं और तब भी आप खुश मिजाज रहते हैं तो फास्ट फूड के काउटर के पीछे की सीट आपका मनपसंद स्थान होगा। मैकडॉनेल्ड जैसे संस्थान में घटे के आधार पर अंशकालीन रूप में कार्य करनेवालो को भुगतान किया जाता है। शुरू-शुरू मे तेरह रुपए प्रति घंटे के हिसाब से धनराशि दी जाती हैं। यह राशि अठारह रुपए प्रति घंटे तक बढाई जा सकती है। यदि आप दो पहिया स्कूटर चला सकते हैं तो आप घर-घर जाकर ऑर्डर की डिलीवरी देकर पूरे शहर का आनंद उठा सकते हैं।

यदि आपको चीजें बेचना अच्छा लगता है, किसी ऐसे हठी ग्राहक के साथ हँसकर पेश आते हैं, जो स्थल पर हर वस्तु का इस्तेमाल करके देखना चाहता है तो

विभिन्न स्टोर्स के सेल्स काउंटर पर कार्य करना अच्छा रहेगा. इसके अलावा प्रदर्शनियाँ भी अच्छा विकल्प है। हालाँकि अस्थायी रूप से ही यहाँ कार्य मिलता है, फिर भी इन प्रदर्शनियों मे काम करके अच्छी आमदनी हो जाती है। यह धनराशि काम लेनेवाली कंपनी पर निर्भर करती है। इसके अलावा प्लेसमेंट एजेंसियाँ भी ऐसे मेलो तथा प्रदर्शनियों के लिए कंपनी की ओर से छात्र उपलब्ध कराती हैं। अधिकाश ऐसी कपनियाँ कॉलेजों मे विज्ञापन देती हैं।

इच्छुक छात्र-छात्राओं को फॉर्म भरना होता है, इसमें उन्हें अपनी योग्यता तथा अन्य विशेषताओं का सक्षिप्त ब्योरा देना होता है। कुछ एजेंसियाँ फोटोग्राफ भी लेती हैं। ये एजेंसियाँ तमाम प्रविष्टियों का रिकॉर्ड रखती हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर सपर्क करती हैं।

प्रबंधन कपनियों मे भी कुछ लोग कार्य करते हैं। उत्पाद को लॉन्च करने के लिए डेस्क पंजीकरण तथा उत्पादों के सवर्धन, कॉरपोरेट सूचना एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रमों, कॉन्सेप्ट शो आदि मे शामिल 99 प्रतिशत लोग छात्र-छात्राएँ होते हैं। इन्हें दो सौ से पॉच सौ रुपए प्रतिदिन के हिसाब से भुगतान किया जाता है। चुने गए उम्मीदवार अच्छे वक्ता होने चाहिए तथा कार्य के प्रति निष्ठावान् हों, क्योंकि इनका संगठन की छवि पर असर पड़ता है। संवर्धन कंपनियों तथा मेलो में सर्वाधिक भुगतान किया जाता है। एक दिन के कार्य के लिए चार सौ से लेकर एक हजार रुपए तक भुगतान किया जाता है। यह ग्राहक की क्षमता पर निर्भर करता है।

इंटरनेट के वफ एवं सर्फर के लिए वेबसाइट रोचक विकल्प है। egurucool com . Icon पोर्टल जैसी साइट विषय-वस्तु तैयार करने तथा कहानी लेखन के लिए विद्यार्थियों को काम पर रखती हैं। इन्हे ढाई हजार से लेकर चार हजार रुपए तक पारिश्रमिक दिया जाता है। युवको के पास नए-नए विचार होते हैं। वे सर्जनात्मक तथा उत्साही होते हैं। इसलिए अधिकाश वेबसाइटें छात्र-छात्राओ को ही काम करने का मौका देती हैं। हालाँकि कंपनी को अनुभवी लोगों की जरूरत होती है, लेकिन अधिक व्यापक दृष्टिकोण के लिए युवावर्ग की भी जरूरत रहती है।

अन्य रोचक कार्य सर्वेक्षण का है। इस क्षेत्र मे काफी सख्या में लोगों की जरूरत रहती है। यहाँ शहर में घूम-घूमकर लोगों से मिलना होता है तथा नए विचारों को जाना जाता है। इस कार्य मे अच्छा पारिश्रमिक मिलता है।

यदि आप चौबीसों घंटे टेलीफोन से चिपके रहते हैं तो टेली-मार्केटिंग (घर मे बैठे टेलीफोन आदि से शॉपिंग) डाइनिंग क्लब जैसी कंपनियाँ तीन हजार रुपए प्रति माह वेतन तथा प्रतिदिन चार घंटे कार्य करने जैसे अन्य प्रोत्साहन देती है। साथ

ही सप्ताह मे छह दिन काय करना पड़ता है।

इन नौकरियों का आकर्षक पहलू यह है कि ये सभी पूर्णत: अस्थायी होती हैं। कुछ दिन कार्य करके आपकी जेब मे अतिरिक्त पैसा आ जाता है। चाहे आप दिन में कुछ घंटे ही कार्य क्यों न करें।

अकादमिक (शैक्षणिक) योग्यता मानदंड नही है। आपके पास संप्रेषण या अभिव्यक्ति की योग्यता होनी चाहिए, कुछ मामलों में सौम्य व्यक्तित्व होना चाहिए। इन नौकरियों से आत्मविश्वास ही उत्पन्न नहीं होता, बल्कि इनके माध्यम से आप हर क्षेत्र के लोगों के संपर्क में आते हैं। ग्रीष्मकालीन या अंशकालीन नौकरी से आप काफी कुछ नया सीखते हैं। आपको किसी विशेषता का पता चलता है और जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण बनता है। साथ ही व्यक्ति अतिरिक्त जेब खर्च कमाता है।

अंशकालीन नौकरियॉ या कार्य व्यक्ति को भविष्य मे आनेवाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। आप चाहे जो भी कार्य करें, हमेशा याद रखें कि सभी कार्य श्रमसाध्य होते हैं तथा कुछ सीमा तक मन भी उकता जाता है। कभी-कभी कुंठा भी उत्पन्न होती है। युवा व्यक्ति में अत्यधिक आत्मविश्वास नहीं होना चाहिए। याद रखे कि कुछ कंपनियाँ इसी कारण से युवकों को काम पर रखती है, क्योंकि उन्हें स्थायी रूप से कर्मचारी नही रखने पड़ते।

व्यक्ति की अंतरंग विशेषता के आधार पर ये नौकरियॉ नहीं दी जाती। यह भी याद रखें कि अस्थायी कर्मचारी का अर्थ है कि आपको ऐसा कार्य दिया जा रहा है, जो कंपनी में और कोई नही करना चाहता। स्पष्ट शब्दों मे, आप कपनी पर अपनी शर्ते नहीं लाद सकते, कार्य करने के लिए आपके पास धैर्य, परिश्रम, रुचि, समझ-बूझ तथा ऑर्डर लेने की क्षमता होना जरूरी है।

□

अग्नि-शमन

(Extinction of Fire)

आज की दुनिया मे आग लगने के जोखिम का अर्थ बढ़ते शहरीकरण तथा औद्योगिक कार्यो मे वृद्धि के साथ-साथ अप्रत्याशित विनाश है। इन कार्यो के परिणामस्वरूप मकानों और कार्यालयों में वैद्युत् उपकरणों का अधिकाधिक इस्तेमाल किया जा रहा है। कार्यालय मे ऑटोमेशन, हीटिंग एवं कूलिंग प्रणाली का इस्तेमाल हो रहा है। बम विस्फोट जैसे आतंकवादी कार्यो तथा ज्वलनशील पदार्थो के प्रति लापरवाही बरतने के कारण आधुनिक सभ्यता अधिक खतरों में घिर गई है। अमेरिका में आतंकवादी हमले के पश्च प्रभाव इसका प्रमाण हैं। भारत में आग लगने के विषय राज्य-सूची मे शामिल हैं तथा राज्य और संघ-शासित प्रदेश अग्नि-शमन सेवाओं पर नियंत्रण रखते हैं। प्रत्येक राज्य सरकार में अग्नि-शमन विभाग होता है, जो अग्नि सुरक्षा के उपायों पर नजर रखता है। गृह मंत्रालय राज्य/संघ-शासित क्षेत्रो तथा अग्नि-बचाव, अग्नि-निवारण एवं विधान के क्षेत्र में केंद्रीय मत्रालयों को तकनीकी सलाह देता है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार दो हजार से अधिक फायर स्टेशनों में लोग कार्य करते हैं। देश भर में इन स्टेशनों में लगभग छासठ हजार कर्मचारी कार्यरत हैं तथा साढ़े छह हजार उपकरण वाहको का बेड़ा शामिल है।

फायर इंजीनियर आग लगने के कारणों का पता लगाने और अग्नि-निवारण की विधियों का निर्धारण करने के लिए जिम्मेदार होते है। ये अग्नि-रोधकों के सबध मे अनुसंधान एवं परीक्षण कार्य करते है तथा सामग्री की अग्नि-सुरक्षा एव युक्तियो पर शोध और परीक्षण करते हैं। ये ज्वलनशील तथा खतरनाक पदार्थो के भडारण की सुरक्षित विधियाँ सुझाते हैं। फायर इंजीनियर अग्नि-खतरों का आकलन करने के लिए गणितीय सिद्धांतो का इस्तेमाल करते हैं। उसके बाद अग्नि-सुरक्षा की पद्धतियों के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग करते हैं। भयंकर रूप से आग लगने एव फैलने की घटनाओं के निवारण के लिए फायर इंजीनियर प्रबंधन तकनीकें

इस्तेमाल करते हैं। सक्रिय अग्नि-शमन एवं पर्यवेक्षी भूमिका निभाते समय फायर इंजीनियर का कार्य अधिक जोखिम भरा है। प्रशासनिक और अनुसंधान क्षेत्रों मे टेबुल-वर्क अधिक होता है।

सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्र के लिए सरकार द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार यदि विनिर्दिष्ट संख्या से अधिक व्यक्ति काम करते हैं तो कंपनी को फायर अधिकारी की नियुक्ति करनी पडेगी, जो कार्य कर रहे अग्नि-शमन कर्मचारियों का पर्यवेक्षण करेगा, अग्नि-शमन विभाग से संबंधित नियमों-विनियमों को लागू करेगा और आग बुझानेवाले उपकरणो का अनुरक्षण सुनिश्चित करेगा। फायर इंजीनियर को सरकारी अग्नि-शमन सेवाओं, वास्तुशिल्प एवं बिल्डिंग डिजाइन, बीमा आकलन, परियोजना प्रबधन, वायुयान उद्योग, रिफाइनरी, औद्योगिक प्रक्रमण आदि ऐसे किसी भी सुरक्षा क्षेत्र में कार्य करता है, जहाँ आग लगने की आशंका है तथा दहन का खतरा रहता है। कार्यालयों या आवासीय अहातों के मालिक सभी संगठन फायर इंजीनियर की सेवाएँ लेते हैं, ताकि उनके सर्वोत्तम अंश की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। संरक्षात्मक भूमिका में काफी सुरक्षा संबंधी जाँच कार्य, उपकरणो को अद्यतन बनाना, अनुसूचित कार्यक्रमों का संचालन एवं आकस्मिक फायर ड्रिल शामिल है। फायर इंजीनियर बीमा कंपनी के सर्वेक्षक के रूप में बीमित पार्टी द्वारा झेली गई क्षति के आकलन, आग लगने के कारणों की तहकीकात, सुरक्षा-यंत्रों एवं अलार्म प्रणाली की प्रभावोत्पादकता देखने संबंधी कार्य करते हैं।

लेकिन दुर्भाग्यवश, देश में प्रभावी अग्नि-शमन प्रबधन प्रणाली तैयार करने की बहुत आवश्यकता होने के बावजूद अग्नि-शमन प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन प्रणाली के इस आंतरिक भाग की दिशा मे बहुत कुछ नहीं किया गया है। तथापि बढ़ते शहरीकरण के साथ-साथ आग लगने के खतरे भी समान रूप से बढ़ जाने के कारण प्रभावी अग्नि प्रबधन प्रणाली तैयार करने के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

इस क्षेत्र में शैक्षिक योग्यता रसायन शास्त्र तथा भौतिकी या गणित अथवा वैकल्पिक रूप में दोनों विषयो के साथ बी.एस-सी उपाधि होनी चाहिए। इसमे अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयन किया जाता है। नई दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता तथा नागपुर में लिखित परीक्षा आयोजित की जाती है। इसके बाद साक्षात्कार लिया जाता है। लिखित परीक्षा में भौतिकी और रसायन शास्त्र मे एक-एक वस्तुनिष्ठ पत्र होता है। इस परीक्षा का स्तर बी.एस-सी. के स्तर का होता है। कॉलेज की मेडिकल अथॉरिटी चिकित्सा जाँच करती है। अनुपयुक्त घोषित उम्मीदवारो को इस पाठ्यक्रम में दाखिला नहीं दिया जाता। यह पाठ्यक्रम

अग्नि-शमन सेवा कॉलेज (गृह मंत्रालय), नागपुर-440 001 द्वारा चलाया है।

निम्नलिखित संस्थानों में भी संबद्ध पाठ्यक्रम चलाए जाते है—

1 कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर फॉर अंडरग्रेजुएट स्टडीज इन इंजीनियरिंग (CUST), चंगमपुह नगर, डाकखाना . कोची-682033।

2 राष्ट्रीय अग्नि-शमन अकादमी, अजवा वागोद्य रिंग रोड, सरदार इस्टेट के पास, वडोदरा-390 019।

3 फायर इंजीनियरिंग संस्थान (भारत), 719, जैन टॉवर्स 1, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, जनकपुरी, नई दिल्ली-110 058।

4 इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ फायर इंजीनियरिंग, महाराजा अग्रसेन प्लाजा, आर जेड बी 11/2 पहली मंजिल, महावीर एन्क्लेव, मेन पालम डाबरी रोड, डी वी.बी. सब-स्टेशन के सामने, नई दिल्ली-110 045।

5 इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ फायर, इकबाल मंजिल, एस.बी आई के पास, चूनी काटोल रोड, नागपुर-440 013।



अध्यापन कार्य

(Teaching)

संभवतः बच्चे स्कूल मे अध्यापकों को पसद नहीं करते हैं। उसका कारण यह माना जाता है कि वे विद्यार्थियों को ढेर सारा कार्य सौंप देते हैं। उनकी कठिन परीक्षाएँ ली जाती हैं और जॉच की जाती है। इसके बावजूद यह कहना उचित ही है कि अध्यापकों के साथ पूरा न्याय नहीं हो पाता।

शिक्षण व्यवसाय के बारे में प्रायः यह धारणा बनी हुई है कि इस कैरियर को वही अपनाते हैं, जो कहीं भी सफल नहीं हो पाते हैं। इसके विपरीत, शिक्षण क्षेत्र मे अभिप्रेरणा शक्ति तथा प्रतिभा का होना जरूरी है। नियंत्रण क्षमता के बिना कोई व्यक्ति पचास-साठ शरारती विद्यार्थियों को सँभाल नही पाएगा। पढाए जानेवाले विषय में रुचि का होना जरूरी है, लेकिन यह कोई मानदड नहीं है। आप अपने विषय में मेधावी हो सकते हैं, लेकिन इस व्यवसाय का सार तत्त्व यह है कि हम विचारों को दूसरों तक पहुँचाएँ, छात्रों को अच्छी तरह वह विषय समझाएँ।

दूसरों की मदद करने में गहन रुचि, आदर एव आत्मविश्वास की भावना प्रेरित करने की योग्यता अध्यापन के सफल कैरियर का मूल मत्र है। ऐसे कैरियर बहुत कम हैं, जहाँ समाज को आकार देने की प्रक्रिया में व्यक्ति योगदान कर सकता है। यदि आप भी इस धारणा को मानते हैं कि शिक्षक का कार्य मात्र शिक्षा और प्रशिक्षण देना है तो आप गलत समझते हैं।

अध्यापक के कधो पर मुख्य जिम्मेदारी यह है कि उसे छात्रो मे जीवन-मूल्य तथा नैतिक मानदंडों को ढालना है। इसके अलावा उन्हें परीक्षा की दृष्टि से भी तैयार करना है।

स्कूली शिक्षा तीन अवस्थाओं में विभाजित है। नर्सरी शिक्षा के स्तर पर सर्वाधिक सहनशक्ति की जरूरत है। नर्सरी टीचर के लिए किसी भी क्षेत्र में स्नातक डिग्री तथा मांटेसरी शिक्षण में प्रशिक्षण लेना होगा। सबसे ज्यादा जरूरी है कि आप

धैर्यवान्, शात तथा इस क्षेत्र मे आगे बढ़ने के इच्छुक एव सवदनशील हो इस कार्य के लिए आपके पास शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक क्षमता होनी चाहिए। जूनियर स्कूल टीचर के बारे मे भी यह गुण होना समान रूप से जरूरी है। चूँकि छात्रो की उन्नति के लिए ये निर्णायक वर्ष होते हैं अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि आप कैसे स्वयं को प्रस्तुत करते हैं तथा छात्र अध्यापक से कितना तालमेल या ग्रहण करते हैं।

स्कूल शिक्षा के परवर्ती स्तरों के लिए विशिष्ट विषयों में विशेषज्ञता होना जरूरी है। माध्यमिक विद्यालय का शिक्षक बनने के लिए न्यूनतम योग्यता किसी भी विषय में बी.ए तथा बी एड है। एम.एड होना सोने में सुहागा है। हालाँकि यह अनिवार्य योग्यता नही है। उच्च विद्यालय के लिए अधिक विशेषज्ञता होना जरूरी है। इस स्तर पर अनिवार्य योग्यता एम.ए. तथा एम एड. है।

कॉलेज स्तर पर व्याख्याता के पद पर कार्य करने के लिए अनिवार्य योग्यता एम फिल है। व्याख्याता के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा परीक्षा' (NET) की पात्रता परीक्षा यू जी.सी., सी.एस आई.आर. द्वारा ली जाती है या यू जी मी समतुल्य परीक्षाएँ लेता है। पदोन्नति होने पर व्यक्ति को और अधिक योग्यता सबधी शर्तें पूरी करनी होंगी। विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापकों को निरंतर अध्ययन करना पड़ता है तथा कार्यशालाओ मे भाग लेना होता है, ताकि वे परस्पर संपर्क मे आएँ। इस प्रक्रिया मे व्यक्ति प्रशिक्षण की नई विधियाँ तथा अध्यापन तकनीकें सीखता है। इस प्रकार से मात्र शैक्षणिक योग्यता की दृष्टि से ही कॉलेज और स्कूल के शिक्षण कार्य में अंतर नहीं पाया जाता है।

विगत अनेक वर्षो से अध्यापक अधिकाधिक संख्या में तेजी से कॉलेज शिक्षण अपना रहे है। कॉलेज शिक्षण तथा सीखने की प्रक्रियाओं से गुजरते हुए व्यक्ति विशेषज्ञता की ओर बढ़ता है। विशेषज्ञता के दौरान सूचना से हटकर विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक कौशलों पर बल दिया जाता है। यहाँ छात्रो को स्कूल के अभिविन्यास से हटकर विस्तृत रूप से पढ़ने-लिखने का प्रशिक्षण दिया जाता है। स्कूलों की तुलना में कॉलेजों में पढ़ाना कम थकाऊ है। यहाँ कम समय पढाना पड़ता है। इसके अलावा कॉलेज में शिक्षकों को अधिक वेतन मिलता है, जबकि यह सर्वविदित तथ्य है कि कॉलेज में सक्रिय भागीदारी कम है।

यहाँ अच्छा वेतनमान मिलता है। स्कूल स्तर पर प्राइमरी शिक्षक का वेतनमान प्रोफेसर, लेक्चरर की अपेक्षा बहुत कम होता है। टी.जी.टी और पी.जी.टी का

वेतनमान सम्मानजनक होता है। भारत सरकार के साथ मिलकर यू.जी.सी. ने कॉलेज शिक्षकों के वेतनमान तथा इनकी भरती की न्यूनतम अपेक्षाएँ संशोधित की हैं।

पिछले कुछ वर्षों से छात्रों की छवि में बदलाव आता जा रहा है। साथ ही अध्यापकों की छवि भी बदल गई है। आज छात्र कैरियर के बारे में अधिक चिंतित हैं तथा उनका ध्यान कैरियर पर केंद्रित है। सीखने के प्रति उनका दृष्टिकोण भी अधिक व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक है। वे कैरियर की ओर ज्यादा अभिमुख हैं।



अनुवाद और भाषांतरण

(Translation and Interpretation)

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, अनुवाद या भाषांतरण एक भाषा से अन्य भाषा मे ऐसे व्यक्तियों के बीच संप्रेषण का माध्यम है, जो एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते या ऐसी भाषा नही जानते जिसे दोनो जानते हो। तथापि अनुवादक का कार्य लिखित पाठ से जुड़ा है, जबकि दुभाषियों का कार्य संवाद मे जुडा है।

अनुवादक या दुभाषिए का कार्य अक्षरशः किसी एक भाषा के पाठ को अन्य भाषा में रूपांतरित करना नहीं है। यह कार्य कंप्यूटर या शब्दकोश की सहायता से भी किया जा सकता है। अनुवाद कार्य में वाक्य-संरचना और विभिन्न संदर्भो मे शब्दो के अर्थ का अधिक महत्त्व है। संक्षेप में, अनुवादक या दुभाषिया मानवीय संवेदनाओं और भावों को लक्ष्य भाषा में उतारता है। प्रथमत: लिखे या बोले गए शब्द का अर्थ समझना होता है। उसके बाद वाक्य प्रति वाक्य अन्य भाषा में रूपांतरण किया जाता है।

इस कार्य के लिए आपके पास उत्कृष्ट स्मरण-शक्ति तथा अच्छी गति होनी चाहिए। विशेष रूप से दुभाषिए का कार्य करते समय इन गुणो का होना और भी अधिक जरूरी हो जाता है। इस व्यवसाय का मूल सिद्धांत यह समझना है कि एक भाषा की दृष्टि से उचित संदर्भ अन्य भाषा मे अस्वीकार्य हो सकता है। व्यवसायी के रूप मे आपको सचेत रहना चाहिए। आपको दोनों भाषाओं और उनकी संस्कृतियो का अच्छा जानकार होना चाहिए, ताकि आप सही ढग से कार्य कर सके। इस बात का ध्यान रखा जाए कि भाषा व्यक्ति की संस्कृति और इतिहास का विस्तृत रूप है। भाषा के व्याकरण का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता है। जिस देश में यह भाषा बोली जाती है, उस देश या क्षेत्र का गहन शोध करना भी जरूरी है। साथ ही वहाँ की संस्कृति तथा विभिन्न उप-बोलियों एवं उनके बोलने के लहजे (accents) का भी गहन अध्ययन करना होगा। आपके पास संप्रेषण कौशल होना चाहिए और दिशा-

निर्देशो के अनुसार कार्य करने के लिए दृढ़ता होनी चाहिए।

अनुवादक बनने के लिए आपके पास स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। लक्ष्य भाषा में स्नातकोत्तर डिग्री को प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप जर्मन भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करना चाहते है तो इन दोनों भाषाओ मे से किसी एक भाषा मे डिग्री होनी चाहिए और दूसरी भाषा की उत्कृष्ट स्तर की अर्थ-ग्रहण शक्ति होनी चाहिए। सार रूप में, आप दोनो भाषाओं में सहज रूप मे सोच सकते हों, बोल सकते हों।

आज विश्व एक 'ग्राम' के रूप में सिमटता जा रहा है। विभिन्न देशों के बीच सबंध निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, अनेक दिशाओ मे नए-नए द्वार खुल रहे हैं। उदारीकरण के कारण भारत में अनेक विदेशी कंपनियों ने अपनी शाखाएँ खोल ली है। ऐसे मे, अनुवाद कार्य की माँग बढ़ती जा रही है। पूर्वी एशियाई भाषाओ मे अनुवाद की विशेष संभावनाएँ हैं। अनुवाद और दुभाषिए की मॉग मे फ्रेंच भाषा शीर्ष पर है। उसके बाद जर्मन, स्पेनिश, चीनी और जापानी भाषाओं का स्थान है। प्राय अधिकांश लोग अंशकालीन नौकरी के रूप में दुभाषिए और अनुवादक का कार्य करने की कोशिश करते है। भाषा-विद्वान् के लिए सर्वाधिक स्थायी विकल्प शिक्षण कार्य है। चाहे क्षेत्रीय भाषा हो या विदेशी, आप कॉलेज, स्कूलों और अन्य विभिन्न सस्थानो मे शिक्षण का कार्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न भाषाओ के संबंध में पुस्तके और सी डी जैसी पाठ्य सामग्री तैयार कर सकते है।

आमतौर पर अनुवादक स्वतत्र रूप से कार्य करते हैं तथा जैसा उचित समझते हैं, पारिश्रमिक लेते हैं। कार्य की मात्रा पर निर्भर करते हुए अनुवादक अनुवाद कार्य करने का निर्णय लेता है। आप पंद्रह हजार से बीस हजार रुपए तक प्रतिमास कमा सकते हैं। औसतन रूप में आप भारतीय भाषाओं में पचास से लेकर तीन सौ रुपए तक प्रति पृष्ठ चार्ज कर सकते हैं। विदेशी भाषाओ से जुडे अनुवाद के लिए आपको तीन सौ से पाँच सौ रुपए प्रति पृष्ठ पारिश्रमिक मिल सकता है। भाषा शिक्षक साठ रुपए से सौ रुपए प्रति घंटा कमाते हैं। दुभाषिया तीन सौ से पॉच सौ रुपए तक प्रति घटा कमा सकता है। पूर्णकालीन कर्मचारी को संगठन में छह हजार से बारह हजार रुपए तक या इससे भी अधिक प्रति माह वेतन मिलता है। पर्यटन प्रमुख उद्योग है जहॉ अनुवादकों, दुभाषियों की मॉग रहती है। इससे गाइड एवं दुभाषियो के लिए नई-नई संभावनाएँ उत्पन्न हो गई है। टूरिस्ट गाइड कम-से-कम पंद्रह सौ रुपए प्रतिदिन कमा सकता है। स्वतंत्र रूप से भी यह कार्य किया जाता है, पर कार्य की उपलब्धता अनिश्चित है। लेकिन यदि आप कार्य करने मे सक्षम हैं तो काम की

कोई कमी नहीं है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाओं में स्नातकोत्तर डिग्री दी जाती है। मुंबई में मीठीबाई कॉलेज और नरसी मोजी कॉलेज विभिन्न विदेशी भाषाओं मे भाषा पाठ्यक्रम चलाते हैं।

एलाइंस फ्रेंकाइस देश के विभिन्न भागों में फ्रेंच भाषा के पाठ्यक्रम चलाता है, जबकि मैक्समूलर भवन में जर्मन भाषा में पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इंडो-जापानी सेटर तथा जापानी कांस्युलेट मे जापानी भाषा सिखाई जाती है। इटालियन कल्चरल सेंटर में तीन स्तर पर इतालवी भाषा के पाठ्यक्रम हैं। इंस्टीच्यूट ऑफ हिस्पेनो, नई दिल्ली स्पेनिश में विभिन्न पाठ्यक्रम चलाता है। वाई.एम.सी.ए में विभिन्न भाषाओ के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

□

अस्पताल प्रबंधन

(Hospital Management)

स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन का आज महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज के युग में केवल कुशल डॉक्टरों की ही जरूरत नहीं है, बल्कि समाज में अस्पतालों के लिए सक्षम प्रशासको की भी समान रूप से मॉग है। इसीलिए प्रबधन क्षेत्र मे अस्पताल प्रबधन का विशेष पाठ्यक्रम अब आकर्षक कैरियर बन चुका है। हमारे समाज म अस्पताल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अस्पताल की सुचारु कार्य-प्रणाली म सगठन में रुचि के साथ-साथ कोशल एव गहन दृष्टि होना भी जरूरी है।

स्वास्थ्य की देखभाल और रोगी की संतुष्टि पर बल देने के साथ-साथ अस्पताल प्रबंधन में व्यावसायिक योग्यता प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता के महत्त्व पर भी ध्यान देना होगा। आप अस्पताल प्रबंधन या अस्पताल प्रशासन में स्नातक डिग्री ले सकते है। अस्पताल प्रशासन के लिए आपके पास उच्चतर माध्यमिक (XII) स्तर पर कम-से-कम पचास प्रतिशत अंक के साथ जीव-विज्ञान विषय हो इस क्षेत्र मे काफी मॉग है और आप इस विषय में उच्चतर शिक्षा भी प्राप्त कर सकते है।

अस्पताल प्रशासन में मास्टर डिग्री के लिए अपेक्षित योग्यता 50 प्रतिशत अकों सहित एम बी.बी एस /बी डी एस /बी वी.एस-सी/बी.एस-सी. (नर्सिंग)/ बी एच ए./बी.बी.ए. (एच.ए.) है। कुछ संस्थाओ में किसी भी विषय के स्नातक अस्पताल प्रशासन में मास्टर पाठ्यक्रम कर सकते हैं। ऑफ-कैंपस दूरवर्ती लर्निंग तथा कोलेबोरेटिव प्रोग्राम ऑफ बिट्स, पिलानी के अतर्गत एम बी बी एस. के लिए विशेष पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यहाँ अपेक्षित योग्यता एक-दो वर्ष का अनुभव ह तथा उम्मीदवार को नियोक्ता द्वारा प्रायोजित किया गया हो। बी.ई/बी फार्मा/ एम एस सी /एम बी ए या इसके समतुल्य डिग्रीधारक मेडिकल इतर उम्मीदवारो के लिए भी कुछ सीमित सीटे हैं। साथ ही इन उम्मीदवारो के पास प्रतिष्ठित अस्पतालों में एक-दो वर्ष का अनुभव हो। बशर्ते इस पाठ्यक्रम मे प्रवेश के लिए

उनके नियोक्ताओ ने उम्मीदवारों क नाम प्रायोजित किए हो।

अस्पताल प्रबधक समूचे सगठन तथा अस्पताल के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होता है, ताकि रोगी को पूरी सतुष्टि मिले और सुचारु कार्य-प्रणाली सुनिश्चित की जा सके। आपको अस्पताल के विभिन्न विभागों के बीच समन्वय करना पडता है तथा सुनिश्चित करना होता है कि सभी उपकरण काम करने की स्थिति मे हैं। स्वच्छता के अपेक्षित मानक रखे जाते हैं। आपको वित्तीय मामलो के साथ कर्मचारियो के साथ ही संपर्क बनाए रखना पडता है। यहाँ गुणवत्ता, दक्षता और लागत सभी सीमाओं पर बल देना होता है। सबसे बड़ी चुनौती कम-से-कम लागत पर सर्वोच्च गुणवत्ता के साथ देखभाल सबंधी सेवाएँ प्रदान करना है।

इस कार्यक्षेत्र मे शत प्रतिशत मरीजो की देखभाल, उनके ठहरने की अवधि कम करना, संसाधनों का सही ढंग से इस्तेमाल, चिकित्सीय स्टाफ के साथ कार्य करना आदि शामिल हैं, साथ ही अस्पताल के भीतर तमाम मार्गो के सभी पक्षो का समन्वयन कार्य भी शामिल है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम करने के बाद आपको मेडिकल इस्टीच्यूट, अस्पतालो, नर्सिग होम तथा स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में कार्य करनेवाले गैर-सरकारी संगठनों में चुनौती भरे कार्य करने के अवसर मिल सकते हैं। स्नातक तथा अस्पताल प्रशासन में स्नातकोत्तर के अलावा मेडिकल इतर व्यक्तियो के लिए अनेक संस्थानों में अल्पकालीन व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाए जाते है।

उद्यमिता अध्ययन विभाग, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय द्वारा अल्पकालीन व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यह विभाग परीक्षा के बाद डिप्लोमा प्रदान करता है। ये पाठ्यक्रम स्वास्थ्य की देखभाल मे प्रभावी प्रबधन की भारी माँग को देखते हुए चलाए गए हैं। मदुरै कामराज विश्वविद्यालय का स्नातक या समतुल्य उम्मीदवार इस पाठ्यक्रम मे आवेदन कर सकता है। चयन अखिल भारतीय स्तर पर किया जाता है। अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्रों द्वारा प्रायोजित उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाती है।

सक्षम प्रशिक्षित स्वास्थ्य देखभाल प्रोफेशनल की आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र में विभिन्न कार्यो के प्रभावी ढग से प्रबधन के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम डिजाइन किए गए हैं। इन पाठ्यक्रमो मे उम्मीदवारो को फेहरिस्त, वित्त, कार्मिक, विपणन तथा मेडिकल रिकॉर्ड जसे व्यावहारिक क्षेत्रों से संबंधित जानकारी दी जाती है और उपेक्षित कौशलों का विकास किया जाता है। इन्हें श्रम, प्रदूषण नियंत्रण तथा विभिन्न लोक स्वास्थ्य अधिनियमों के क्षेत्रो में सावधिक शर्तो की पूर्ति के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाता है।

समस्या-समाधान और नेतृत्व की दृष्टि से भी उम्मीदवारो को प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि उन्हें मरीज की देखभाल के संबध मे दिन-प्रतिदिन के कार्यों के समन्वयन के योग्य बनाया जा सके और वे प्रशासनिक टीम को नेतृत्व प्रदान कर सकें।

अस्पताल प्रबंधन मे पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के बाद पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि इस क्षेत्र मे अनेक अवसर हैं। आप छोटे अस्पताल मे वरिष्ठ प्रशासक या बड़े अस्पताल मे सुपरवाइजर स्तर की भूमिका निभा सकते है। यहाँ अच्छा-खासा पारिश्रमिक मिलता हे। अस्पताल में प्रबंधन स्नातक का कार्यकारी पद होता है। इसीलिए तदनुसार वेतन और विशेष भत्ते दिए जाते हैं। सरकारी अस्पताल में ऊँचे वेतनमान निश्चित है। किसी भी प्राइवेट अस्पताल मे पारिश्रमिक ज्यादा मिलता है। आज इस व्यवसाय की काफी माँग है।

अस्पताल का प्रबंधन दुष्कर कार्य है। आपके पास ब्योरों की सटीक जानकारी होनी चाहिए और यदि आप अच्छे अस्पताल प्रबधक या प्रशासक बनना चाहते हैं तो आपके पास प्रशासन/नियंत्रण तथा प्रबधन का हुनर होना चाहिए।

निम्नलिखित संस्थान यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं—

1. अपोलो इस्टीच्यूट ऑफ हॉस्पिटल मैनेजमेंट, दिल्ली।
2. इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल मार्केटिग (आई आई पी एम), लखनऊ।
3. हिदुजा हॉस्पिटल ऑफ हेल्थ केयर मैनेजमेंट, मुंबई।
4. मुंबई मैनेजमेंट एसोसिएशन, मुंबई।
5. टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल साईसेज, मुबई।

□



आपदा प्रबंधन

(Disaster Management)

उष्णकटिबंधीय (tropical) जलवायु तथा भूमि में अस्थिर रूप से आनेवाले परिवर्तन के साथ-साथ अधिक आबादी, गरीबी, निरक्षरता और पर्याप्त आधारभूत सरचना (Infrastructure) के अभाव जैसी समस्याओ के कारण भारत ऐसे विकासशील देशों की श्रेणी मे है जो सूखे, बाढ़, चक्रवाती तूफानों, भूकंप, भू-स्खलन, वनों में लगनेवाली आग, ओलावृष्टि, टिड्डी दल और ज्वालामुखी फटने जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से जूझ रहे हैं। वस्तुतः प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं से सर्वाधिक प्रभावित होनेवाले देशो में भारत का दसवाँ स्थान है।

हालाँकि अधिकांश आपदाओ का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है और न ही इन्हें रोका जा सकता है; लेकिन इनके प्रभाव को इस सीमा तक कम किया जा सकता है कि जान-माल का कम-से-कम नुकसान हो। यह कार्य तभी किया जा सकता है, जब सक्षम रूप से आपदा प्रबधन का सहयोग मिले।

आपदा प्रबंधन के दो महत्त्वपूर्ण आतरिक पहलू है—पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती आपदा प्रबंधन। पूर्ववर्ती आपदा प्रबंधन को जोखिम प्रबंधन के रूप में जाना जाता है। आपदा के खतरे जोखिम एवं शीघ्र चपेट मे आनेवाली स्थितियों के मेल से उत्पन्न होते हैं। ये कारक समय और भौगोलिक—दोनों पहलुओं से बदलते रहते हैं। जोखिम प्रबंधन के तीन घटक होते हे—खतरे की पहचान, खतरा कम करना (ह्रास) और उत्तरवर्ती आपदा प्रबंधन।

आपदा खतरे के प्रबंधन के लिए किसी भी प्रभावी कार्यनीति पर खतरों की पहचान से कार्य आरंभ होना चाहिए। इस अवस्था पर प्रकृति की जानकारी तथा किसी विशिष्ट अवस्थल की विशेषताओं से सबंधित खतरे की सीमा को जानना शामिल है। साथ ही इसमें जोखिम के आकलन से प्राप्त विशिष्ट भौतिक खतरों की प्रकृति की सूचना भी समाविष्ट है। इसके अतिरिक्त बढ़ती आबादी के प्रभाव-क्षेत्र

एव ऐसे खतरो से जुड़े माहौल से संबधित सूचना और डाटा भी आपदा प्रबधन का अग है। इसमें ऐसे निर्णय लिये जा सकते है कि निरंतर चलनेवाली परियोजनाएँ कैसे तेयार की जानी है और कहाँ पर धन का निवेश किया जाना उचित होगा, जिसमे दुर्दम्य आपदाओं का सामना किया जा सके। इस प्रकार जोखिम प्रबंधन तथा आपदा के लिए नियुक्त व्यावसायिक मिलकर जोखिम भरे क्षेत्रों के अनुमान (gauging) से संबंधित कार्य करते हैं। ये व्यवसायी आपदा के पूर्वानुमान के आकलन का प्रयास करते हैं और आवश्यक एहतियात बरतते हैं। जनशक्ति, वित्त और अन्य आधारभूत समर्थन आपदा प्रबंधन की उप-शाखा का ही हिस्सा हैं।

आपदा के बाद की स्थिति आपदा प्रबंधन का महत्त्वपूर्ण आधार है। जब आपदा के कारण सबकुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है तब लोगों को स्वयं ही उजडे जीवन को पुनः बसाना होता है तथा अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य पुनः शुरू करने पडते है। आपदा प्रबंधको को ऐसे प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य जीवन बहाल करने का कार्य करना पडता है। आपदा प्रबंधन व्यावसायिक समन्वयक के रूप में कार्य करता है। यह सुनिश्चित करना है कि समस्त आवश्यक सहायक साधन और सुविधाएँ सही समय पर आपदाग्रस्त क्षेत्र में उपलब्ध हैं, जिससे कम-से-कम नुकसान होता है। यह प्रबधक ऐसे विशेषज्ञ लोगों की टीम का मुखिया होता है, जिनकी सेवाएँ आपदा के समय अनिवार्य होती हैं; जैसे—डॉक्टर, नर्स, सिविल इजीनियर, दूर-सचार विशेषज्ञ, वास्तुशिल्प, इलेक्ट्रीशियन इत्यादि।

उत्तम आपदा प्रबंधन मे मात्र प्रतिदिन रोजमर्रा की आपातकालीन प्रक्रियाएँ ही शामिल नहीं हैं, बल्कि इस कार्य-क्षेत्र में अतिरिक्त कर्मियो, सुविधाओं और आपूर्ति को जुटाने का कार्य भी शामिल है। प्रायः आपदाओं से ऐसी अनोखी समस्याएँ उठ खडी होती हैं जिनका दैनिक आपात स्थितियों में शायद ही सामना करना पड़ता है। इसका एक कारण यह है कि आपदा के प्रति गतिविधियों का समन्वयन करना कठिन होता है। आपदा प्रबंधन की सबसे बडी चुनौती आपदाग्रस्त सीमा-क्षेत्र ओर होनेवाली क्षति का आकलन करना है। इससे इस क्षेत्र का कार्य अत्यधिक वैज्ञानिक प्रक्रिया का रूप ले लेता है।

आपदाग्रस्त क्षेत्रों की भौगोलिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण चुनौती ओर भी बढ़ जाती है। आपदा अधिकार-क्षेत्र की तमाम सीमाएँ लाँघ सकती है। विपत्ति के समय अनजान कार्यों की जिम्मेदारी उठाने की आवश्यकता भी उत्पन्न होती है। ऐसे में संस्थाओं की संरचना ही बदल जाती है तथा नए संगठन भी उभरते हैं। इससे प्रतिभागियों की सक्रियता प्रवर्तित हो जाती है। ये संस्थाएँ आदि स्थानीय आपातकालीन

घटनाओं को सामान्य ढंग से नहीं ले सकती हैं। ऐसी परिस्थितियो मे नियमित रूप से इस्तेमाल में आनेवाले उपकरण तथा सुविधाएँ भी कम और अनुपयोगी हो जाती है। परिणामस्वरूप सामान्य प्रक्रियाओं को स्थिति के अनुकूल बनाया जाता है, ताकि सामुदायिक रूप से आपात स्थिति के प्रति कारखाई को समजित किया जा सके। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए विशेष कर्मियो की जरूरत होती है। इससे यह कार्य ओर अधिक कठिन हो जाता है।

क्षण-अनुक्षण परिवर्तनशील आवश्यकताओं के अनुसार आपदाओ की प्रकृति भी लचीली होती है। इस लचीलेपन के कारण ऐसी प्रक्रिया की जरूरत होती है जिससे समग्र आपदा की स्थिति का जायजा लिया जा सके तथा उसे अद्यतन किया जा सके, साथ ही आनेवाली समस्याओं का पूर्वानुमान किया जा सके, जिनका हर हालत मे सामना करना पड़ेगा। विशेष रूप से इस कार्य के लिए जिम्मेदार व्यक्तियो के लिए इस कार्य का स्वरूप अस्पष्ट होता है तथा अनेक आपदाओं में इस प्रक्रिया को अनदेखा कर दिया जाता है।

जब आपदा स्थिति का आकलन किया जाता है तब सामान्यत: स्वतंत्र रूप से अनेक संगठन यह कार्य करते हैं। प्राय: प्रत्येक एजेसी विशिष्ट सगठन के प्रत्यक्ष परिणामो के अवलोकन तक ही अपना आकलन कार्य सीमित रखती है। अनेक मामलों मे इन संगठनों द्वारा प्राप्त जानकारी न तो साझा की जाती है, न ही एकत्रित की जाती है। तदनुसार आपदा के प्रभाव-क्षेत्र, गंभीरता, विघटन के प्रकार तथा क्षति की पूरी तसवीर नहीं मिल पाती। यही वह अवस्था है, जहाँ आपदा प्रबधकों का दल महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

आपदा प्रबंधक कौन बन सकता हे? कोई भी व्यक्ति यह कार्य कर सकता है। हममे से प्रत्येक व्यक्ति दिन-प्रतिदिन अपने-अपने स्तर पर आपदा प्रबधन का कार्य करता है। यदि किसी व्यक्ति में जन-सेवा का भाव है तो वह अत्यधिक दबाव तथा तनावपूर्ण स्थितियों में कार्य कर सकता है, उसका जोश बना रहता है तथा आपदा एवं भारी खतरे होने के बावजूद वह पूरे उत्साह से दिन भर कार्य कर सकता है, तो वह व्यक्ति प्रभावी आपदा प्रबंधक बन सकता है। आपदा प्रबंधन के लिए विशेष व्यावसायिकता रखने की संकल्पना भारत की नहीं है, विशेष रूप से ऐसे दलों के गठन तथा निर्वह के लिए काफी धन खर्च होता है, तथापि गुजरात मे आए भूकप के तत्काल बाद अधिकाधिक यह महसूस किया गया कि प्राकृतिक आपदाओ का सामना करने के लिए ऐसे लोगों की खास जरूरत है।

देश में ऐसे बहुत कम संस्थान हैं, जहाँ आपदा प्रबंधकों की क्षमता एवं

आवश्यकता को महसूस किया जाता है। अधिकांश सस्थाना मे आपदा प्रबधन या इसे कम करने के लिए दूरवर्ती शिक्षा अध्ययन कार्यक्रम चलाए जाते हैं। यहाँ क्षेत्रीय गतिविधियों के अतर्गत फील्ड वर्क की संभावना नहीं होती है। इसीलिए इस क्षेत्र मे कार्य के दौरान या इस क्षेत्र मे कार्यरत अनेक संगठनो के साथ स्वयंसेवा से ही अनुभव प्राप्त होता है।

भारतीय पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण संस्थान, नई दिल्ली ऐसा ही संस्थान है। यहाँ आपदा प्रबंधन मे दो वर्ष का स्नातकोत्तर दूरवर्ती अध्ययन शिक्षा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के लिए न्यूनतम योग्यता किसी भी विषय मे स्नातक की उपाधि है। कार्यक्रम मे आपदा नियंत्रण जैसे मुद्दे शामिल है। इसमे हाइड्रोलॉजिकल, तटीय, समुद्री तथा वायुमंडल से सबधित आपदाएँ, जोखिम आकलन तथा आपदा प्रबंधन जैसे विषय शामिल हैं। आपदा न्यूनीकरण संस्थान अन्य संगठन है, जो आपदा न्यूनीकरण, क्षमता-निर्माण तथा आपदा संबंधी तैयारी के क्षेत्र में कार्य करता है। इनका लक्ष्य कम मात्रा मे उपलब्ध संसाधनों का इष्टतम उपयोग सिखाकर आपदा से शीघ्र प्रभावित होनेवाले समुदायो की सभाव्यता एव क्षमता का निर्माण करना है। यह कार्य प्रशिक्षण, अनुसंधान एव प्रलेखन द्वारा किया जा सकता है। वर्तमान कार्यक्रमों में प्रौद्योगिक विकास और अनुसंधान, तूफान से राहत एवं पुनर्वास कार्यकलाप, आपदा के संसाधनो से जुडी सूचना का एकत्रीकरण और उनका प्रसार शामिल है।

इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने हाल ही मे आपदा प्रबधन का प्रमाण-पत्र कार्यक्रम शुरू किया है। देश मे आपदा की गहनता मे वृद्धि तथा अतराल मे होनेवाली कमी को ध्यान में रखते हुए छह माह का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम में आपदा चक्र की अवस्थाएँ, महाविपत्तियों का सामना करने की विधियाँ तथा आपदा के बारे में जन-चेतना के प्रसार के तरीके शामिल हैं। इस पाठ्यक्रम के लिए विद्यार्थी के पास इंटरमीडिएट की डिग्री होनी चाहिए।

सन् 1987 में भोपाल गैस त्रासदी के बाद आपदा प्रबंधन संस्थान (डी एम आई) की स्थापना की गई। यहाँ खतरनाक तत्त्वों के प्रबंधन, जोखिम विश्लेषण, स्थल पर तथा स्थल से बाहर आपात स्थितियों की योजना बनाने एव प्राकृतिक आपदाओं के प्रबधन से संबंधित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

गैर-सरकारी संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक और रेडक्रॉस जैसे सगठनों में आपदा प्रबधकों को रोजगार मिल सकता है। रेडक्रॉस नियमित या परियोजना के आधार पर विभिन्न आपदाजनक स्थितियों को सँभालने के लिए

तकनीकी और लोकोपकारी प्रशिक्षण देता है। केंद्रीय सरकार के वेतनमान के अनुसार वेतन दिया जाता है। रेडक्रॉस अपने कर्मचारियों तथा स्वयंसेवियों को आपदाग्रस्त क्षेत्रों में जाने व ठहरने के लिए खर्चे का भुगतान करता है।

निम्नलिखित संस्थानों में इसके पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1. भारतीय पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण संस्थान, ए-15, पर्यावरण कॉम्प्लेक्स, साऊथ–साकेत, मैदानगढ़ी मार्ग, दिल्ली।
2 आपदा न्यूनीकरण सस्थान, 411 साकार–5, नटराज सिनेमा के पास, आश्रम रोड, अहमदाबाद–380009।
3. आपदा प्रबधन संस्थान (डी.एम आई), कचनार, पर्यावरण परिसर, ई–5, एरिया कॉलोनी, भोपाल।
4. सेंटर फॉर डिसास्टर मैनेजमेट (सी.एम.डी), याशाद राजभवन कॉम्प्लेक्स, बनेर रोड, पुणे।



आभूषण डिजाइनिंग

(Jewellery Designing)

हीरे-जवाहरात को नारी सर्वाधिक महत्त्व देती रही है। ये उसे विपत् काल में संबल भी प्रदान करते रहे हैं। युगों-युगो से नारी जगत् के हृदय में आभूषणों के प्रति लालसा रही है। हीरे-जटित बालियों या रूबी के पेंडेट के बिना नारी का शृंगार अधूरा रह जाता है। यही नही, पुरुष भी हीरे-जवाहरात के प्रति समान रूप से आकर्षित रहे हैं।

भारतीय मानस हमेशा आभूषणों के प्रति सम्मोहित रहा है। इसके पीछे यह तथ्य भी है कि भारतीयो के पास आभूषण और कीमती धातुओं का भंडार है। लोग आभूषणों को फेशन या प्रतिष्ठा का प्रतीक ही नहीं मानते, बल्कि यह निवेश का भी साधन है। वस्तुतः भारतीय उद्योग का आभूषणों में कुल 43 प्रतिशत हिस्सा है। इसके साथ ही रत्नों का प्रतिवर्ष लगभग सत्तर हजार करोड़ रुपए का पूरे विश्व में निर्यात किया जाता है।

यद्यपि आभूषणों का डिजाइन तैयार करना बहुत पुराना व्यवसाय है, तथापि अधिकांशतः हमारे पूर्वजों से लेकर आज तक फैशन को बदलते वक्त के साथ जोड़कर देखने के कारण आज का यह डिजाइन का कार्य परंपरा से हटकर है। हमारे जीवन के दैनदिन व्यवहार में भी फैशन का स्थान रहा है। इसमें भी डिजाइनिग की सभी शाखाओं में आभूषण प्रमुख रूप से आकर्षण का केंद्र रहा है। इसे व्यापक स्तर पर स्वीकृति मिल रही है। फैशन की दुनिया मे इसकी प्रधानता रही है और यह नित नए फैशन का रूप लेता रहा है। आज आभूषण की डिजाइनिग के लिए अनुभव और नवोन्मेष की इच्छा की जरूरत है, ताकि ग्राहक की बदलती रुचियों और अपेक्षाओ के अनुसार नए डिजाइन तैयार किए जा सकें।

इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए व्यक्ति को फैशन में आनेवाले परिवर्तनो तथा रुझानों के अनुरूप बनना होगा तथा उसे बाजार की आवश्यकताओं को आँकने

मे कुशलता प्राप्त करनी होगी। रंग की सौंदर्यानुभूति तथा लावण्य का बोध होना जरूरी है। जेवरात के डिजाइन से संबंधित प्रक्रिया डिजाइनर से आरंभ होती है। पुन डिजाइन मॉडल मेकर को दे दिया जाता है, ताकि हाथ से प्रोटोटाइप पीस तैयार किए जा सके। इससे अगली अवस्था पर व्यापक स्तर पर उत्पादन की दृष्टि से सॉचा बनाया जाता है। कुछ मामलों में जब डिजाइन में कीमती पत्थर लगाने होते हैं, जो कि डिजाइन का ही हिस्सा होते हैं, उस समय मॉडल मेकर को स्टोन सेटिंग की प्रक्रिया ध्यान में रखनी होगी।

यद्यपि डिजाइनिग के प्रति मूल वृत्ति होने पर व्यक्ति इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा कर सकता है, लेकिन विशेषज्ञता पर अधिकाधिक बल दिए जाने के कारण पाठ्यक्रम में शामिल होना अनिवार्य है। रत्न और आभूषण की डिजाइनिग मे अधिकाशत· पाठ्यक्रम अल्पकालीन अवधि के कार्यक्रम है तथा बारहवीं कक्षा के बाद इन पाठ्यक्रमों में शामिल हुआ जा सकता है। ये पाठ्यक्रम डिप्लोमा स्तर के होते हैं व इनकी अवधि अलग-अलग होती है। ऐसे अधिकांश पाठ्यक्रम 'गौण सामग्री डिजाइनिग पाठ्यक्रम' के हिस्से है तथा इसमें जेवरात की विशेषज्ञता शामिल है। अन्य सबद्ध पाठ्यक्रमो में व्यक्ति जेवरात डिजाइनिंग और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त रत्न-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मोम की मॉडलिग तथा सॉचे बनाना, फिनिशिग, पॉलिश करने तथा मरम्मत, इलेक्ट्रो प्लेटिग एव इलेक्ट्रो फार्मिग, मीनाकारी, पत्थर की सेटिग, परख और परिष्करण, बाजार अनुसंधान, प्रस्तुतीकरण और बिक्री संबधी बोध, व्यवसाय अध्ययन और निर्यात प्रलेखन तथा फैक्टरी और स्टोर की निगरानी मे भी प्रशिक्षण ले सकता है।

कुल मिलाकर 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। कक्षागत अध्ययन के साथ कार्यशालाओं में भी विद्यार्थियो को ले जाया जाता है, ताकि उन्हें विविध प्रक्रियाओ एवं जेवरात बनाने तथा डिजाइनिंग में शामिल कार्यो की प्रत्यक्ष जानकारी मिल सके।

पाठ्यक्रम के सफल समापन पर विद्यार्थी किसी भी प्रतिष्ठित जेवरात हाउस मे प्रशिक्षु के रूप में कार्य कर सकते हैं। यह अनुभव अधिक बड़ी और समृद्ध स्थापनाओं में आगे बढने के लिए स्प्रिंग बोर्ड का कार्य करता है। प्रशिक्षु स्तर पर व्यक्ति को साढ़े तीन हजार से छह हजार रुपए तक भुगतान किया जाता है। लेकिन एक बार पैर जम जाने पर फिर आय की कोई सीमा नहीं रहती।

इस कार्य मे धातु कर्म तथा रत्न-विज्ञान के बारे में आधारभूत जानकारी होनी चाहिए। साथ ही वर्तमान शैली, विशद योजना और नए डिजाइनों की मार्केटिंग में

गहन दृष्टि होनी चाहिए। पैटर्न पर विचार करने के बाद डिजाइनर प्राय. कागज पर विस्तृत स्केच बनाता है, नमूने के तौर पर मॉडल तैयार करता है और फिर ग्राहकों को खोजता है। हालाँकि सोना, चाँदी, हीरे, मोती और अन्य कीमती तथा अर्द्ध-बहुमूल्य पत्थर जेवरात के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम रहे हैं; लेकिन आजकल डिजाइनर लकड़ी, पीतल, ताँबा, शैल, कॉच और यहाँ तक कि सूखे फूलों एवं पेपियर मैश जैसी सामग्री का भी प्रयोग कर रहे हैं। जेवरात डिजाइनर के रूप में आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप पारंपरिक वस्तुओं से लेकर समकालीन भारी-भरकम तथा हलके जेवरों तक व्यापक रेंज में शामिल समस्त जेवरात तैयार कर सकें।

विश्व के किसी भी कोने में नौकरी का व्यापक क्षेत्र है। कुछ उद्यमी व्यक्ति अपने कारोबार खोलने का भी साहस रखते हैं। धीरे-धीरे वे जेवरात की अलग ब्रांड या लाइनें विकसित कर लेते हैं। तथापि किसी भी कारोबार को आरंभ करने से पूर्व आपको यह ध्यान रखना है कि जेवरात डिजाइनिंग में भारी मात्रा में निवेश की आवश्यकता रहती है। भारत के परंपरागत सुनार तथा डिजाइनर का जोर हमेशा निर्यात बाजार पर रहा है। आभूषण डिजाइनिंग के क्षेत्र मे युवा पीढ़ी के लिए अनेक अवसर हैं, ताकि घरेलू बाजार, विशेषतः स्वतंत्र रूप से आवश्यकताओ की पूर्ति की जा सके।

डि-बीयर्स, एंचेट तथा स्वारोव्स्की जैसे अतरराष्ट्रीय नाम जेवरात के जाने-पहचाने ब्रांड बन चुके है। युवा वर्ग और सर्जनात्मक रुचि के लोगो मे यह क्षेत्र लोकप्रिय होता जा रहा है।

आभूषण डिजाइनिग का पाठ्यक्रम निम्नलिखित संस्थान चलाते है—

1 एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय, सर विट्ठलदास विद्याविहार जुहू रोड, सांताक्रुज (पश्चिम), मुंबई।
2 भारतीय रत्न विज्ञान संस्थान, 29, गुरुकुल चैंबर्स, 187-189, मुंबादेवी रोड, मुंबई-400002।
3 रत्न और आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद्, राजस्थान भवन, जयपुर।
4 सेंट जेवियर्स कॉलेज, रत्न-विज्ञान डिवीजन, भू-विज्ञान विभाग, महापालिका मार्ग, मुबई।
5. जैमस्टोन आर्टिजन ट्रेनिग स्कूल, झालान महल, जयपुर-302017।
6. आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद्, डी-15, कॉमर्स सेंटर, तारदेव, मुंबई-400034।
7 राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, हौज खास, नई दिल्ली-110016।



आहार विशेषज्ञ

(Food Specialist)

आजकल तनाव के कारण होनेवाले रोग बढ़ रहे हैं। इसलिए इस डॉट कॉम के युग में स्वास्थ्य को प्रमुख रूप से महत्त्व दिया जा रहा है। जैसे-जैसे लोग यह महसूस कर रहे हैं कि गरिष्ठ आहार और सॉल्यूशन कभी समाप्त नहीं होते वैसे वैसे संतुलित आहार भी प्रचलन मे आता जा रहा है।

पौष्टिक आहार का विज्ञान अनिवार्यतः लोगों के खान-पान की आदतो एव स्थितियों के संबंध में अनेक बाह्य और आंतरिक घटकों को ध्यान में रखते हुए सही चयन मे सहायता करने से संबंधित है। अतः जैव-रसायन प्रक्रिया और शरीर-विज्ञान संबंधी प्रतिक्रियाओ एव भोजन व मानव शरीर की विस्तृत जानकारी होना आवश्यक है। आहार विशेषज्ञ अनिवार्यतः शरीर और भोजन के बीच सबंधो की जानकारी लेता है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में अद्भुत है, इसलिए आहार विशेषज्ञ को पहले व्यक्ति के खान-पान की आदतों पर प्रभाव डालनेवाले विभिन्न घटकों की पहचान करनी होती है।

आम धारणा के प्रतिकूल आहार विशेषज्ञ बीमार लोगो की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल अस्पतालो मे काम पर रखे जाते हैं। यह कार्य आहार विशेषज्ञ का प्रमुख कार्य है। लेकिन बढ़ती आबादी, तनाव एवं दूषित जीवन-शैलियो के दुष्प्रभाव अधिकाधिक स्पष्ट होते जा रहे है। परिणामस्वरूप अब लोग ऐसे व्यावसायिको की तलाश में रहते है, जो उन्हें उचित पौष्टिक आहार की जानकारी दे सके। परंतु अभी तक भारत में यह व्यवसाय अपेक्षाकृत कम जाना-पहचाना है।

पौष्टिक आहार का क्षेत्र व्यापक है। इसमें व्यक्ति प्रैक्टिस के अलावा शिक्षण और अनुसधान के क्षेत्र मे पैर जमा सकता है। आहार विशेषज्ञ इस व्यापक क्षेत्र मे से मनपसद विकल्प चुन सकता है। ये अनिवार्यतः रोगियों (यदि अस्पताल या पोलिक्लीनिक में है) तथा ग्राहकों (क्लाइंट) का विस्तृत रूप से अध्ययन करते है,

व्यवसाय, रुचियो अरुचियो के समय पोषण स्वास्थ्य स्वच्छता परिवेश में विद्यमान तनाव, वित्तीय स्थिति आदि जैसे घटको पर विचार करने के बाद आहार–सूचियाँ तैयार करते हैं। इन सूचियों में रोगी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त खाद्य पदार्थों की सूची भी शामिल है। प्रैक्टिस करनेवाले आहार विशेषज्ञ की कार्य सबधी प्रोफाइल में रोगी या ग्राहक (क्लाइंट) को खान–पान संबंधी अच्छी तथा बुरी आदतों के बारे में परामर्श देना भी शामिल है।

यद्यपि पोषण/आहार उपचार की बजाय निवारण–विज्ञान है, लेकिन तनाव दूर करने में यह विज्ञान काफी सहायक होता है। विशेष रूप मे ऐसे रोगियों के मामले में सहायक होता है, जो हृदय रोग से ग्रस्त होता है। देश भर मे जगह–जगह खुले हुए हेल्थ क्लब, मोटापा दूर करनेवाले क्लीनिक तथा स्पास भी उन लोगो के लिए आकर्षण का केंद्र हैं, जो आहार विशेषज्ञ के रूप मे प्रैक्टिस करना चाहते है। अनुसंधान कार्य अन्य विकल्प हैं। आज पूरे विश्व में भोजन संबंधी विषय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो रहा है, विशेषतः आनुवशिकी रूप से संशोधित खाद्य पदार्थ पर अधिक बल दिया जा रहा है, अतः पोषण या आहार क्षेत्र में अनुसंधान से जुड़े कार्यों की कोई कमी नहीं है।

तथापि भारत मे यह क्षेत्र अभी नया है। इस विषय मे पश्चिमी देशो द्वारा आयोजित अनुसधान पर ही निर्भर रहना पड़ता है। अनुसंधानकर्ता के कार्य मे अनुसंधान कार्य के अलावा विभिन्न विकारों या रोगों तथा स्वस्थ लोगो के लिए पौष्टिक आहार के बारे मे समुदाय को शिक्षित करने के लिए शैक्षिक सामग्री तैयार करना आदि भी शामिल हो सकता है। आई.सी.डी सी (समेकित बाल विकास सेवा) जैसे सरकारी कार्यक्रमों में आहार विशेषज्ञ की सेवाएँ ली जाती हैं, ताकि लोगो को प्रशिक्षित किया जा सके तथा अनुसंधान कार्य किया जा सके। सयुक्त राष्ट्र, यूनिसेफ तथा विश्व स्वास्थ्य सगठन जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनो मे भी अनुसंधान परियोजनाओं के लिए आहार विशेषज्ञ को रखा जाता है। आप सरकारी, गैर–सरकारी या विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ जैसी संस्थाओं मे कार्य कर सकते हं। मानव ससाधन विकास मत्रालय के तहत आनेवाले नेस्ले जैसे खाद्य उद्योग तथा NIN (राष्ट्रीय पोषण संस्थान) जैसी अनुसंधान सस्थाओं में भी ऐसे व्यावसायिक रखे जाते है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लिए सामुदायिक कार्यशालाओं का आयोजन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन, स्कूलों तथा गृह विज्ञान कॉलेजों मे शिक्षण जैसे अन्य क्षेत्रों मे भी आहार विशेषज्ञो के लिए नई–नई संभावनाएँ मौजूद हैं। होटल्स और बहुराष्ट्रीय कंपनियों मे भी इच्छुक आहार विशेषज्ञ के लिए आकर्षक नौकरियाँ

हैं। परामर्श, फास्ट फूड उद्यम तथा पार्टी केटरिंग सेवाएँ अन्य क्षेत्र हैं।

आहार विशेषज्ञ को आरंभ में पाँच हजार से लेकर दस हजार रुपए तक प्रति माह वेतन मिलता है। लेकिन प्रतिष्ठित विशेषज्ञ इससे भी अधिक कमा सकते है। सरकारी अस्पताल में आरंभ में लगभग दस हजार रुपए प्रतिमास वेतन मिलता है। प्राइवेट अस्पतालो में बेहतर वेतन मिलता है। वहाँ आरंभ में पंद्रह हजार रुपए प्रति माह वेतन मिलता है। गैर-सरकारी प्रैक्टिशनर्स या परामर्शदाता प्राय: पहली सिटिंग और आहार प्लान के पाँच सौ रुपए लेते है। इसके बाद प्रत्येक सीटिंग के लिए लगभग दो सौ से तीन सौ रुपए प्रति माह तक फीस ली जाती है। जिन लोगो के पास वर्षो का कार्य अनुभव है, वे आसानी से पच्चीस हजार रुपए प्रति माह कमा सकते हैं।

आहार विशेषज्ञ के कार्य की चुनौती नुस्खा लिखने से ज्यादा है। नए ढंग से सोचना इस कार्य का महत्त्वपूर्ण पहलू है। आहार सूची तैयार करना तथा रोगियों और क्लाइंट के लिए स्वादिष्ट व आकर्षक भोजन तालिका बनाना महत्त्वपूर्ण है। बी.एस-सी या पोषण/आहार विज्ञान मे डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद तत्काल विद्यार्थी इस कैरियर मे आ सकता है।

यहाँ संप्रेषण कौशल होना अनिवार्य गुण है। व्यक्ति के पास तथ्यों, ऑकड़ो और निष्कर्षो की अद्यतन जानकारी होनी चाहिए। जब व्यक्ति योग्यता प्राप्त आहार विशेषज्ञ बन जाता है, तब नौकरी ढूँढ़ना कठिन नहीं होता है। लेकिन यदि आप प्रैक्टिस करना चाहते हैं तो प्रारंभ में आपके लिए यह कार्य दु:साध्य होता है।

निम्नलिखित संस्थान यह पाठ्यक्रम चलाते हैं—

1. गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी संस्थान, पंत नगर-263145।
2. उस्मानिया यूनिवर्सिटी प्रशासनिक भवन, हैदराबाद-500007।
3 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007।
4 मुबई विश्वविद्यालय, एम जी. रोड, फोर्ट, मुबई-400032।
5. इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ आल्टरनेटिव मेडिसिन, 80, चौरंगी रोड, कोलकाता-700020।
6 मणिपुर विश्वविद्यालय, कोचीपुर, इंफाल-795003।
7 आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद-500832।

☐

एयरलाइन उद्योग

(Airline Industry)

सर्वविदित या लोकप्रिय धारणा के प्रतिकूल एयरलाइन के क्षितिज या आयाम अधिक व्यापक हैं। एयरलाइन का क्षेत्र मात्र एयर होस्टेस या पायलट तक ही सीमित नहीं है। यह ऐसा उद्योग है, जो राष्ट्र की सेवा में जुटा है। इस उद्योग की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं—फ्लाइंग शाखा, तकनीकी शाखा और ग्राउंड ड्यूटी शाखा।

1. फ्लाईंग शाखा

यह एयरलाइन का सर्वाधिक आकर्षक कार्य है। इस क्षत्र मे काफी ग्लैमर तथा अच्छा-खासा पैसा है। लेकिन एयरलाइन या फ्लाइंग शाखा मात्र ग्लैमर या पैसे की दुनिया तक ही सीमित नही है। व्यावसायिक पायलट की जिम्मेदारी महँगी मशीनरी, सैकड़ो यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इतनी बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए आप में इस कैरियर को अपनाने का साहस और आत्मविश्वास होना चाहिए।

इस क्षेत्र मे जमीन पर कार्य करनेवाले कार्मिक तथा फ्लाइट कार्मिक शामिल हैं। जहाज की उड़ान के दौरान पायलट यात्रियों, कर्मीदल तथा विमान के लिए जिम्मेदार होता है। पायलट में श्रेष्ठ उड़ान कौशल होने चाहिए। उसे समय-अंतर की जटिलताओं, परिवर्तित रुख, फ्लाइट के सिद्धांत तथा वायुगतिक (aerodynamics) से अवगत होना चाहिए। वह बादलों के प्रकार को पहचानने, मौसम चार्टो को पढने तथा जलवायु का पूर्वानुमान करने के योग्य होना चाहिए।

एयर होस्टेस अन्य फ्लाइंग शाखा का क्षेत्र है। इस कार्य के बारे मे यह अनुचित धारणा बनी है कि यह कार्य ग्लैमरयुक्त है। एयर होस्टेस से अपेक्षा की जाती है कि वह उड़ान से कम-से-कम आधा घंटा पहले एयरपोर्ट पर पहुँच जाए। उन्हें सीनियर अधिकारी उड़ान के ब्योरों तथा गंतव्य स्थल की संक्षिप्त जानकारी देते

है बोर्डिंग के बाद ही वस्तुत इनकी ड्यूटी शुरू होती है बोर्डिंग पास लौटाने के बाद एयर होस्टस को यात्रियो की मदद करनी होती है तथा उन्हे सीटो पर बैठने मे सहायता करनी पडती है। उन्हें सुरक्षा प्रक्रियाएँ समझानी होती हैं तथा यात्रियो के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश करनी होती है। ऐसा करते समय जरूरी है कि आप विनम्र हों।

कभी-कभी एयर होस्टेस को हठीले (unfriendly) यात्रियों का सामना करना पडता है। यह उनके धैर्य की परीक्षा का समय होता है। ऐसे लोगों से बरताव करते समय झुँझलाहट होती है तथा व्यक्ति आपे से बाहर भी हो सकता है। लेकिन उस समय यात्री की सुरक्षा प्रमुख कार्य होता है। यह कार्य थकान भरा तथा झुँझलाहट भरा है। घरेलू उड़ान मे एयर होस्टेस की सबसे अधिक लंबी शिफ्ट (पारी) पाँच-छह घटे की होती है; लेकिन अंतरराष्ट्रीय उड़ान मे एक ही बार में बारह से पद्रह घटे की शिफ्ट में कार्य करना पड़ता है। कभी-कभी विमान यात्रा से परेशानी उठानेवाले लोगो, चिडचिड़े बच्चों और बीमार बुजुर्गों का भी ध्यान रखना होता है। विमान अपहरण तथा दुर्घटना जैसी आपात स्थितियों में आपको शांत रहने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पडते हैं। वस्तुतः यह कार्य नीरस होने के साथ-साथ जोखिम भरा होता है।

इस व्यवसाय में पारिश्रमिक अच्छा मिलता है। घरेलू एयरलाइन मे एयर होस्टेस को आकर्षक वेतन मिलता है। यह वेतन सगठन की हैसियत पर निर्भर करता है। अधिकांश एयरलाइंस संविदा आधार पर भरती करती हैं। अधिकतर सविदाओं की अवधि लगभग दो-तीन वर्ष होती है तथा संविदा जब तक समाप्त नही हो जाती तब तक उस एयरलाइन में कार्य करने के लिए व्यक्ति बाध्य होता है।

2. ग्राउंड ड्यूटी शाखा

एयरलाइन की रीढ़ की हड्डी उसका ग्राउंड स्टाफ है। इसके बिना विमान उडान नही भर सकता। ग्राउंड ड्यूटी शाखा में प्रशासनिक, एयर ट्रैफिक नियंत्रण, लॉजिस्टिक, फाइटर कंट्रोल, लेखा, शिक्षा और मौसम विज्ञान संबंधी अधिकारी आते हैं।

(क) प्रशासनिक अधिकारी—यह अधिकारी कार्मिक प्रबंधन, प्रशासन ओर रनवे, बिल्डिंग तथा सबंधित सेवाओं के लिए जिम्मेदार होता है।

(ख) एयर ट्रैफिक नियंत्रण अधिकारी—एयरलाइन के इस स्टाफ के बारे मे कम जानकारी उपलब्ध होती है, लेकिन विडंबना यह है कि उक्त शाखा एयरलाइन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शाखाओं में से है। ये अधिकारी देशो तथा महाद्वीपो के बारे में सही मार्गदर्शन करते हैं। इनका कार्य ट्रैफिक पुलिस मैन के

समान होता है अतर यही है कि ये अधिकारी आकाश मे बादलो के बीच ट्रैफिक नियमों का पालन करवाते हैं। इनका कार्य सभी यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। ये भयानक विपदा को रोकने के लिए उपाय करते है। ये अधिकारी विमानों का सुरक्षित उतरना तथा उड़ान भरना सुनिश्चित करते है। इसके अलावा सैकडो वायुयानों को अलग-अलग रास्तो पर तथा सही स्तर (Level) पर उडान भरने के लिए निर्देश देते हैं। यह स्टाफ पूरी यात्रा के दौरान विमान से संपर्क बनाए रखता है और क्षण मात्र के लिए भी पायलट से संपर्क नही टूटने देता। नियंत्रक का यह भी दायित्व है कि वह अपने क्षेत्र में तमाम राडार की मॉनिटरिंग करे तथा मौसम के बारे मे विमान का मार्गदर्शन करे।

ए टी सी के रूप मे कार्य करने के लिए आपके पास गणित और भौतिकी की पृष्ठभूमि होनी चाहिए। इस कार्य में काफी गणना करनी पड़ती है, इसलिए गणित और भौतिकी मे स्नातकोत्तर डिग्री को प्राथमिकता दी जाती है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ए टी सी. की नियमित परीक्षाएँ लेता है। सिविल विमानन प्रशिक्षण कॉलेज मे प्रशिक्षण के बाद शुरू-शुरू में ए टी सी. को ए.ए आई. में सुपरिंटेंडेंट की नौकरी मिलती है। निश्चित रूप से इस पद पर अच्छा पैसा मिलता है। शुरुआत मे कम-से-कम बीस हजार रुपए प्रति माह वेतन मिलता है। बाद में पैंतालीस हजार रुपए प्रति माह तक वेतन बढ़ जाता है। विशेष भत्ते इस राशि में शामिल नही है।

(ग) केबिन कर्मी दल—जैसाकि नाम से पता चल जाता है, यह अनुभाग एयरलाइन में आतिथ्य-प्रबंधन कार्य से जुडा है। इनका कार्य यह सुनिश्चित करना है कि हर समय सभी यात्रियों को खाना एवं अन्य सुविधाएँ मिल रही हैं।

(घ) लॉजिस्टिक अधिकारी—यह प्रमुखतः विमान तथा अतिरिक्त ईधन, सामग्री, सगठन की रोजमर्रा की जरूरतो से जुड़ी अन्य वस्तुओ आदि की व्यवस्था के लिए जिम्मेदार होता है।

(ङ) लेखा अधिकारी—इसे व्यय, लागत तथा निधि संबंधी आवश्यकताओ की जॉच और एयरलाइन की बजट सबंधी योजना बनाना और पूर्वानुमान करना होता है। गणित तथा लेखा बंदी की गहन समझ इस क्षेत्र में लाभप्रद होती है।

(च) शिक्षा शाखा अधिकारी—यह शाखा मानव ससाधन विकास से जुड़ी है। यह विभाग अधिकारियो के प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार होता है। इस विभाग में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी तैयार किए जाते हैं। साथ ही शैक्षणिक योग्यता बढाने के लिए यह विभाग कार्मिकों का मार्गदर्शन करता है। यह विभाग वायु सेना

कर्मियों के बच्चों के लिए एयर फोर्स स्कूल भी चलाता है। साथ ही विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों मे प्रशिक्षण देता है।

(छ) **मौसम विज्ञान शाखा**—मौसम पूर्वानुमान विभाग पर समूची एयरलाइन निर्भर करती है। यह विभाग विद्यमान मौसम तथा वातावरण संबंधी स्थितियों के संबध में वैज्ञानिक शोध से संबंधित कार्य भी करता है।

ओषधि निर्माण

(Pharmacy)

ओषधि स्वास्थ्य की देखभाल का अतर्भूत अंग है। हालाँकि 'इलाज से परहेज वेहतर' उक्ति दवा से दूर रहने की सलाह देती है, लेकिन यह दुष्कर कार्य है। चाहे सिरदर्द की आम दवा हो या तंदुरुस्ती के लिए मामूली गोली हो या फिर कैल्सियम की गोलियाँ—हर व्यक्ति को कभी-न-कभी इनके इस्तेमाल की जरूरत पडती है।

दवा तैयार करना, विनिर्माण तथा वितरण स्वास्थ्य देखभाल का महत्त्वपूर्ण पहलू है, जहाँ ओषधिविद् (Pharmacist) महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्राय: विभिन्न दवाओं के संघटन तथा कार्यो का अध्ययन करता है। दवा के क्षेत्र मे वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज ओषधिविदो की मॉग बढ गई है। ये नई दवाओं के समुचित प्रयोग के लिए चिकित्सकों तथा स्वास्थ्य परिचर्या क्षेत्र के व्यवसायियों से परामर्श करते हैं।

विभिन्न क्षेत्रो मे फार्मेसिस्ट की मॉग है। ये औद्योगिक, अनुसंधान, रिटेल, अस्पताल के फार्मेसिस्ट रूप में, चिकित्सा प्रतिनिधि या सरकारी क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं।

औद्योगिक फार्मासिस्ट

फार्मास्यूटिकल क्षेत्र मे अनेक कंपनियाँ शामिल हैं। ये कंपनियाँ हजारों लोगों को काम पर रखती हैं। फार्मेसी स्नातक कपनी के किसी भी विभाग मे कार्य कर सकता है। उत्पादन कार्य में विनिर्माण, समुचित पेकिंग, स्टोरेज और लॉजिस्टिक की बैच प्रक्रिया का प्रबंधन तथा सैटअप कार्य शामिल हैं। अनेक कपनियाँ नई दवाएँ तथा फॉर्मूले तैयार कर रही हैं। क्लीनिकल परीक्षण एवं गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम में फार्मासिस्ट शामिल होते हैं, ताकि रोग के उपचार में दवा का प्रभावी इस्तेमाल एव सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

अनुसंधान फार्मासिस्ट

अनेक कंपनियों ने अंत:परिसर (इन-हाउस) अनुसंधान पर अधिक ध्यान देने के लिए अनुसंधान तथा विकास बजट बढ़ा दिया है। अनुसंधान तथा विकास क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति करनेवाली कुछ प्रमुख भारतीय कंपनियों में रेनबेक्सी, डॉ. रेड्डी लैब तथा ऑर्चिड केमिकल्स शामिल है।

दवा अनुसंधान में कार्यरत सरकारी संगठनों मे केंद्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला, पुणे तथा भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद हे। अनुसंधान फार्मासिस्ट नई दवा के अणु की खोज तथा विकास और उनके विनिर्माण में प्रयुक्त प्रक्रियाओं में प्रमुख भूमिका निभाता है।

रिटेल फार्मासिस्ट

रिटेल फार्मासिस्ट की अपनी केमिस्ट शॉप होती है तथा दवाओं के भंडार होते हैं। ये चिकित्सक और स्वास्थ्य व्यवसायियों द्वारा निर्धारित दवाएँ तैयार करते है तथा वितरित करते हैं। इसके लिए फार्मासिस्ट के पास दवाओं एव उनके प्रभाव की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

अस्पताल फार्मासिस्ट

अस्पताल एव क्लीनिक द्वारा नियुक्त ये फार्मासिस्ट अस्पताल में विभिन्न दवाओं तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों के प्रापण, भंडारण और वितरण के लिए जिम्मेदार होते हैं। इन्हें दैनिक आवश्यकता तथा स्टॉक का लेखा-जोखा रखना पडता है। ये जीवन-रक्षक दवाओं और चिकित्सा संबधी उत्पादों की आपूर्ति सुनिश्चित करते है।

चिकित्सा प्रतिनिधि (मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव)

फार्मास्यूटिकल वस्तुओं के विनिर्माण में कार्यरत कंपनियाँ चिकित्सा प्रतिनिधि रखती हैं। इनका कार्य स्वास्थ्य की देखभाल के विशेषज्ञों को, विशेष तौर पर चिकित्सा व्यवसायियों को, अपनी कंपनी के नए उत्पाद, उनके लाभ, दुष्प्रभाव तथा अन्य ब्योरों की जानकारी देना होता है। चिकित्सा प्रतिनिधि मे तकनीकी ज्ञान और बिक्री संबंधी कौशलों का मेल होना चाहिए।

सरकारी नौकरियाँ

सरकारी अस्पतालों तथा स्वास्थ्य केंद्रों में सरकार द्वारा फार्मासिस्ट की नियुक्ति की जाती है। विभिन्न राज्य सरकारो के खाद्य एवं दवा प्रशासन (एफ.डी.ए.)

विभाग में भी नौकरियाँ उपलब्ध हैं।

फार्मेसी क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए आवश्यक है कि आप में विज्ञान तथा चिकित्सा विषयो मे रुचि होनी चाहिए। साथ ही मेहनत, दृढ़ तार्किक विचारणा, धैर्य तथा जिम्मेदारी की भावना होनी चाहिए। इसके अलावा विश्लेषणात्मक योग्यता और अच्छा शैक्षिक आधार होना जरूरी है। आप में उत्तम सप्रेषण योग्यता तथा लोगो को अपनी बात समझाने का कौशल भी होना चाहिए।

जहाँ तक शैक्षणिक योग्यता का सवाल है, विज्ञान विषयों के साथ सी बी एस सी ई या समतुल्य परीक्षा 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की हो। साथ ही भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान तथा अंग्रेजी मे अर्हक परीक्षा देनी होती है। कुछ जगहों पर गणित अतिरिक्त विषय है। न्यूनतम आयु सीमा सत्रह वर्ष है।

प्राय: योग्य फार्मासिस्ट की भरती करनेवाली फार्मास्यूटिकल कंपनियाँ पॉच हजार से आठ हजार रुपए के बीच प्रति माह वेतन देती हैं। लेकिन समय के साथ-साथ वेतन में भी बढोतरी हो जाती है।

निम्नलिखित संस्थानों में पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1 कॉलेज ऑफ फार्मेसी, पुष्प विहार, सेक्टर 3, नई दिल्ली।

2 फार्मेसी विभाग, विज्ञान संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

3 गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फार्मेसी, लाल बाग, सुबैया सर्कल, बगलौर, कर्नाटक।

4 के एम. कुंदमणि कॉलेज ऑफ फार्मेसी, प्लॉट नं 47, डॉ आर जी थंडाणी मार्ग, वर्ली सी फेस, मुंबई।

5. फार्मास्यूटिकल साइंस विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय कैंपस, नागपुर।

6. भारतीय विद्यापीठ पुणे कॉलेज ऑफ फार्मेसी, ईरनद्वारे, पुणे।

7 फार्मेसी विभाग, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता।

8 फार्मास्यूटिकल विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

9. फार्मेसी संकाय, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद।

10 फार्मेसी संकाय, कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज, मणिपाल।



औद्योगिक डिजाइनिंग

(Industrial Designing)

आज अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हो चुका है तथा कठिन स्पर्धा के कारण उत्पाद बनानेवाली कंपनियाँ इस दृष्टि से बाध्य हैं कि वे प्रतियोगी कंपनियों की तुलना मे सर्वोत्तम उत्पाद पेश करें। जब उद्योग समान मूल्य तथा कार्य (व्यावहारिकता) की दृष्टि से प्रतिस्पर्धा करते हैं तो ऐसी स्थिति में डिजाइन का ही अंतर पाया जाता है और यही अंतर महत्त्व रखता है। डिजाइन का स्पष्ट अंतर दरशानेवाली रेखा से इस क्षेत्र मे स्वर्ण युग का अभ्युदय हो चुका है, जहॉ लोग ग्राहक या उपभोक्ता के रूप मे उत्पादो के प्रति अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और मॉग करते हैं।

हालाँकि सीमित मात्रा में पूर्णत. नए उत्पाद बनाए जा सकते हैं, फिर भी औद्योगिक डिजाइनिंग का मुख्य ध्येय व्यावहारिकता व दक्षता के साथ-साथ उपभोक्ताओ की माँग को ध्यान में रखते हुए उत्पादो के नए डिजाइन तैयार करना है। अर्थात् नए पात्र में पुरानी वस्तु पेश की जाती है। यहीं पर औद्योगिक या उत्पाद डिजाइनर के विशेष कौशल सामने आते हैं। आज अधिकांश कपनियाँ पूर्णत. कुशल तथा रचनात्मक शक्ति-संपन्न औद्योगिक डिजाइनर की तलाश में रहती हैं।

ऑटोमोबाइल से लेकर उपभोक्ता की दृष्टि से टिकाऊ होने तक, बडे वाहन से चिकित्सीय उपकरण एवं इंट्रूमेंटेशन तक, फर्नीचर से कंप्यूटर तक उत्पादो की पूरी रेंज खोजी जा रही है, संशोधित की जा रही है तथा औद्योगिक डिजाइनर द्वारा इसे उन्नत बनाया जा रहा है।

औद्योगिक डिजाइन सर्जनात्मक शोध पर आधारित अनुप्रयुक्त विद्या है, जो उपभोक्ता की दृष्टि से टिकाऊ एवं व्यापक स्तर पर उत्पादों या व्यावसायिक और औद्योगिक प्रयोग के लिए उपकरण तैयार करने के कार्य से जुड़ी है। आप इसे सर्जनात्मक इंजीनियरिंग कह सकते हैं। डिजाइनर कला से संबंधित हुनर या कौशल इस्तेमाल करता है, ताकि इस प्रकार से आकर्षक व लुभानेवाले उत्पादों को बढावा

मिले कि इनसे मात्र प्रयोजनों की पूर्ति ही न हो, बल्कि ये देखने मे भी अच्छे लगे। आराम, सौंदर्य-बोध, दक्षता, सुरक्षा, विश्वसनीयता तथा किफायत की दृष्टि से उपभोक्ता की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखना है। ये सभी मुद्दे उत्पाद की बिक्री से संबंधित है। इनकी वजह से अधिकांश विनिर्माण संबंधी उद्योगो मे डिजाइन डिवीजन बनाना जरूरी हो गया है।

औद्योगिक डिजाइनर कलात्मक प्रतिभा के साथ उत्पाद के प्रयोग, उत्पादन विधियों तथा सामग्री के संबंध में अनुसंधान कार्य का सुदर मेल करता है। इस संगम से बाजार मे प्रतियोगी उत्पाद बनाने के लिए व्यवहारमूलक एवं आकर्षक डिजाइन तैयार किए जाते हैं। औद्योगिक डिजाइनर के लिए प्रमुख चुनौती उत्पाद की कीमत घटाना है।

औद्योगिक डिजाइनर सबसे पहले उत्पाद का लॉजिस्टिक निर्धारित करता है आवश्यक सामग्री की सूची बनाता है, विनिर्माण का स्थल तथा तरीका तय करता हे, जिससे सुरक्षित तथा प्रयोग की दृष्टि से सुविधाजनक उत्पाद तयार किया जा सके। इसके पश्चात् उत्पाद के रूप की योजना तैयार की जाती है। आरेख और मॉडल बनाए जाते हैं। अंततः कार्यकारी मॉडल तैयार किया जाता है।

औद्योगिक डिजाइनर की प्रमुख अपेक्षाएँ सर्जनात्मकता, सौंदर्य-बोध तथा कल्पना-शक्ति है।

उसे तार्किक ढग से सोचने के योग्य होना चाहिए, समस्याओं का विश्लेषण करना चाहिए तथा मौलिक सुझाव देने की क्षमता होनी चाहिए। आरेखों के माध्यम से विचार अभिव्यक्त करने, कल्पना करने और तीन आयामो में सोचने की सामर्थ्य औद्योगिक डिजाइनर की निर्णायक योग्यता है। उसमें यह जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए कि छोटी-मोटी मशीनें तथा वस्तुएँ किस प्रकार कार्य करती है। यांत्रिकी मे रुचि होना जरूरी हे। साथ ही थोड़ी-बहुत गणितीय योग्यता भी होनी चाहिए। डिजाइनर को जटिल एव विस्तृत कार्य करने मे सक्षम होना चाहिए। उदाहरणतया, आरेखन एव संरचनात्मक मॉडल।

भारत में औद्योगिक डिजाइनिंग अपेक्षाकृत नया कार्यक्षेत्र है तथा यहाँ प्रशिक्षण सुविधाएँ भी कम हैं। दिल्ली और मुबई में स्थित आई आई टी, भारतीय विज्ञान सस्थान, बंगलौर, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद तथा मौलाना आजाद प्रौद्योगिकी कॉलेज, भोपाल जैसे प्रमुख संस्थानों में प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध हे। आई.आई टी., मुंबई और दिल्ली में औद्योगिक डिजाइन मे दो वर्ष का मास्टर प्रोग्राम चलाया जाता है। इसमे चार सत्र (समेस्टर) होते हैं। इस पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम

योग्यता इजीनियरिंग या वास्तुशिल्प में स्नातक डिग्री है।

आई आई.टी , मुंबई द्वारा अखिल भारतीय आधार पर फरवरी में आई आई टी तथा आई.आई एस. की डिजाइन क्षेत्र से सबंधित सामान्य प्रवेश परीक्षा (सी.ई ई.डी) ली जाती है। दोनों संस्थानों के लिए क्रमशः अभिवृत्ति परीक्षा तथा साक्षात्कार लिये जाते है।

आई.आई टी., मुंबई तथा आई आई.टी., बंगलौर में पंद्रह-पंद्रह छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। जबकि आई.आई टी., दिल्ली में प्रतिवर्ष बीस छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। आई.आई टी. प्रमुख उद्योगों से परामर्श कार्य भी लेती है, ताकि छात्र प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकें। इस पाठ्यक्रम की फीस लगभग दस हजार रुपए प्रति सत्र है।

राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद औद्योगिक डिजाइन में पॉच वर्प का स्कूल लीवर्स व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम चलाता है। यह कार्यक्रम कला की ओर अभिमुख है, जहाँ उत्पाद डिजाइन, टैक्सटाइल डिजाइन, फर्नीचर डिजाइन और चीनी मिट्टी की वस्तुओं के डिजाइन में विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है। एन आई डी. इंजीनियरिग स्नातको के लिए उत्पाद डिजाइन में डेढ वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाता है। एक्सटीरियर्स प्राइवेट लि., नई दिल्ली इंटीरियर डिजाइन मे फर्नीचर मे विशेपज्ञता सहित एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाता है।

भारत में औद्योगिक डिजाइनर की माँग है, जबकि अभी यह प्रोफेशन अभ्युदय काल में है। उद्योग के ऑकड़ों के अनुसार, भारत मे अभी प्रति दस लाख दो से भी कम औद्योगिक डिजाइनर हैं, जबकि इस क्षेत्र में पचास गुना वृद्धि की गुजाइश है।

औद्योगिक डिजाइनर परामर्श क्षेत्र में भी उद्यम खोल सकते हैं। स्वतत्र औद्योगिक डिजाइनर के रूप में काफी आकर्षक विकल्प मौजूद है। डिजाइनर के रूप मे ये बिक्री-डिजाइन सेवा तथा संविदा प्राप्त करने से लेकर डिजाइन, विकास और परिणामो के परीक्षण तक सभी अवस्थाओं के लिए जिम्मेदार हैं। ये डिजाइनर उत्पाद-नियोजक के रूप में भी कार्य करते हैं तथा बाद में कंपनी के विकास और उत्पादन संबधी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करते हैं। अन्य विकल्प शिक्षण कार्य है। प्रारंभिक वेतन दस हजार रुपए तथा इससे अधिक मिलता है।

अधिकाधिक कंपनियाँ डिजाइन के प्रति सजग हो रही हैं। औद्योगिक डिजाइनर की ऑटोमोबाइल क्षेत्र, इलेक्ट्रॉनिक सामान, ग्राहकों के लिए टिकाऊ सामान, पैकेजिंग फर्नीचर आदि की दृष्टि से अग्रणी कंपनियों द्वारा भरती की जा रही

है। नए योग्य डिजाइनर को डिजाइन टीम के जूनियर सदस्यों के रूप में कार्य सौंपे जाते हैं। उन्हें विनिर्माण कंपनियाँ या डिजाइन परामर्श कंपनियाँ काम पर रखती हैं। प्रारंभ मे इस कार्यक्षेत्र में नियमित कार्य ही शामिल होते हैं तथा अन्य लागों के लिए डिजाइन तैयार किए जाते है। ये डिजाइनर धीरे-धीर उच्चतर प्रबधन स्तर की ओर बढ़ते है। फिलिप, गोदरेज, टाइटन, टेल्को, वीडियोकॉन जैसी औद्योगिक फर्मे व्यावसायिक औद्योगिक डिजाइनर रखती है।

भारतीय उत्पाद डिजाइन अंतरराष्ट्रीय मार्केट में भी स्थान प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए डिजाइनर का इस क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य है।





कंपनी सचिव

(Company Secretary)

व्यवसाय जगत् मे 'सेक्रेटरी' (सचिव) शब्द का अनुपयुक्त अर्थ लिया जाता है। विशेष रूप से वह व्यक्ति गलत अर्थ लेता है, जिसे इस शब्द की संकल्पना की समुचित जानकारी नही है। कंपनी सचिव को नियमित अनाप-शनाप सचिवीय कार्य—टाइपिंग, डिक्टेशन, फाइलें रखने या पत्राचार जैसे कार्यों से कुछ लेना-देना नहीं है। विधिक विषयों पर सलाहकार के रूप में कंपनी सेक्रेटरी किसी कॉरपोरेट मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 383-ए के अनुसार, सांविधिक रूप से यह जरूरी है कि न्यूनतम पचास लाख रुपए की प्रदत्त पूँजी वाली कंपनियाँ कंपनी सेक्रेटरी की नियुक्ति करें। पचास लाख रुपए से कम प्रदत्त पूँजी वाली कपनी के मामले में इटरमीडिएट उत्तीर्ण व्यक्ति भी इस नियुक्ति का पात्र है। इसलिए कंपनी सचिव किसी भी कपनी के प्रबंधन का महत्त्वपूर्ण अंग है।

कंपनी सचिव की जिम्मेदारी सगठन और उसके आकार-प्रकार पर निर्भर करती है। कपनी के कार्य-कलापों के स्वरूप का कंपनी सचिव के कार्य पर प्रभाव पडता है।

विधि के तहत कंपनी सचिव को कंपनी में महत्त्वपूर्ण दर्जा दिया गया है। कंपनी की सफलता या असफलता की जिम्मेदारी काफी हद तक इस विशिष्ट पद पर जाती है। अत: व्यावसायिक दृष्टि से कंपनी सचिव के रूप मे प्रशिक्षित होना जरूरी है।

कंपनी, निदेशक मंडल, शेयर धारकों तथा सरकारी और नियामक एजेंसियो को जोड़नेवाली महत्त्वपूर्ण कड़ी 'कंपनी सचिव' ही होता है। किसी संगठन में कपनी सचिव की जिम्मेदारियाँ इस प्रकार होती हैं—

कंपनी का प्रमुख अधिकारी होने के नाते वह तमाम सचिवालय संबंधी कार्यो की देखरेख करता है। इसमे कार्य-सूची तैयार करना, निदेशक मंडल की बैठकें, शेयर धारकों की वार्षिक आम बैठकें, अतर्विभागीय बैठकें, विदेशी शिष्ट मडलों की

बैठकें वित्तीय संस्थाओं नियामक प्राधिकारियों की बैठकें आयोजित करने बुलाने तथा कार्यवृत्त तैयार करने का कार्य शामिल है।

वह कंपनी के रजिस्ट्रार के रूप मे कार्य करता/करती है। कंपनी के निगमीकरण, सघटन, समामेलन, पुनर्सगठन या बंद करने के लिए आवश्यक कानूनी पहलुओं को व्यावहारिक रूप देना भी कंपनी सचिव की जिम्मेदारी है।

अंत निगम निवेश तथा ग्रहण से जुड़ी तमाम वैधताएँ भी कंपनी सचिव द्वारा देखी जाती हैं।

निदेशक मडल की बैठकों से जुड़ी समस्त जिम्मेदारियाँ कंपनी सचिव के पद से जुड़ी हैं। यह अधिकारी अन्य सदस्यों की सलाह से बैठकों की समय-सूची तैयार करता है, बैठकें आयोजित करता है और संबंधित रिकॉर्ड रखता है।

कंपनी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कंपनी सचिव कर संबधी मामले तथा उत्पाद विधि, श्रम विधि एवं निगम विधि जैसी अन्य विधियों से जुडे मामले सँभालता है।

उसके कार्यों में बोर्ड के विचाराधीन प्रस्तावों के विस्तार के संबंध में निदेशक मडल को सलाह देना भी शामिल है।

निगमित विकास योजनाकार के रूप में वह विस्तार सबधी अवसरों का अभिनिर्धारण करता है, सहयोग समामेलन (amulgamation), आमेलन, अधिग्रहण ग्रहण, विनिवेश, नियंत्रित कंपनियों की स्थापना तथा भारत में और भारत से बाहर सयुक्त उद्यम खोलने की व्यवस्था करता है।

सचिव प्रबंधन नियुक्तियों से संबधित आवेदन-पत्रो और उनकी आमदनी से संबधित काररवाई करता है।

कपनी सचिव संस्थागत वित्त प्राप्त करने के लिए सभी संबंधित मामले देखता है। इस संबंध में उसके कार्यों में परियोजना संबंधी अनुमोदन प्राप्त करना, लाइसेस और परमिट लेना, एकाधिकार और प्रतिबंधित व्यापार पद्धति (MRTP), विदेशी मुद्रा विनिमय विनियमन अधिनियम (FERA) जेसे विनियमों और विभिन्न अधिनियमों के तहत अपेक्षाओं की सूची तैयार करना आदि कार्य शामिल हैं।

कंपनी सचिव कंपनी की वार्षिक विवरणिकाओं पर हस्ताक्षर करने और आवश्यकता पडने पर कंपनी का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकृत है।

यदि आवश्यक हो तो सार्वजनिक क्षेत्र (पब्लिक इश्यू) का प्रबंध कार्य भी कपनी सचिव की जिम्मेदारी के दायरे में आ जाता है।

भारतीय कंपनी सचिव संस्थान एकमात्र संगठन है, जहाँ इस विशेष व्यवसाय

मे प्रशिक्षण दिया जाता है। कंपनी सचिव अधिनियम, 1980 के तहत भारत मे कपनी सचिव के व्यवसाय के विकास एवं नियमन के लिए गठित यह सांविधिक निकाय है। यह संस्थान कंपनी विभाग, विधि, न्याय और कंपनी कार्य, मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्य करता है।

कपनी सचिव परीक्षा के आयोजन के अलावा यह संस्थान व्यावहारिक प्रशिक्षण के बाद योग्य छात्रों को सदस्यों के रूप में नामित करता है। व्यावसायिक लोकाचार, आचार संहिता से संबंधित मामलों में सदस्यों पर व्यावसायिक स्तर पर नियंत्रण रखता है तथा नियमित आधार पर व्यावसायिक विकास की दृष्टि से निरंतर शैक्षिक कार्यक्रमो का आयोजन करता है। यह संस्थान शोध पत्र–पत्रिका, मार्गदर्शन नोट, सचिवीय मानक तथा निगमित कार्यपालकों के लिए 'चार्टर्ड सेक्रेटरी' और विद्यार्थियों के लिए 'स्टूडेंट कंपनी सेक्रेटरी' तथा 'CS फाउडेशन पाठ्यक्रम बुलेटिन' प्रकाशित करता है।

डाक माध्यम से आई सी एस आई द्वारा चलाया जा रहा यह पाठ्यक्रम शिक्षण और वैकल्पिक कोचिंग कक्षाओ का मिश्रित रूप है। प्रवेश के समय छात्रो को अध्ययन सामग्री दी जाती है।

डाक माध्यम से कोचिंग और कॉण्टेक्ट कक्षाओं के समापन पर यदि विद्यार्थी ऐसा विकल्प चुनता है तो वह सस्थान की परीक्षाओं में बैठने का पात्र होगा। परीक्षा से कम–से–कम नौ माह पहले प्रत्येक परीक्षा के लिए निबंधन (रजिस्ट्रेशन) कराना जरूरी है। प्रति वर्ष जून और दिसबर में छत्तीस केंद्रो में यह परीक्षा ली जाती है।

कपनी सचिव के रूप में प्रशिक्षण के बुनियादी पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम पात्रता 10+2 या समतुल्य परीक्षा है। सी.एस. के प्रशिक्षण के तीन स्तर हैं— आधारभूत या बुनियादी, इंटरमीडिएट तथा अतिम। यदि आप आई.सी एस आई. के सदस्य बनना चाहते है तो आपको ये तीनों परीक्षाएँ उत्तीर्ण करनी होंगी तथा इसके अलावा सोलह माह का प्रशिक्षण लेना होगा। वाणिज्य या किसी अन्य विद्या के स्नातक या स्नातकोत्तर आधारभूत पाठ्यक्रम छोड़कर सीधे परीक्षा में नाम लिखा सकते हैं, लेकिन ललित कला का विषय इसका अपवाद है।

आई सी डब्ल्यू (इंस्टीच्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउटेंट्स ऑफ इंडिया) की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके अभ्यार्थियों को भी यह छूट प्राप्त है। अंतिम परीक्षा में बैठनेवाले व्यक्ति का लाइसेंशिएट आई.सी एस आई. के रूप मे नाम लिखा जा सकता है। अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण लेने के बाद व्यक्ति एसोशिएट सदस्य के रूप में प्रवेश लेने का पात्र होगा।

आधारभूत पाठ्यक्रम मे व्यवसाय प्रशासन व्यवसाय विधि तथा प्रबधन लेखाकरण के सिद्धांत, अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी विषय पढ़ाए जाते हैं। इंटरमीडिएट स्तर पर सामान्य विधि तथा पद्धतियाँ, कार्मिक प्रशिक्षण एवं औद्योगिक विधि, कर-विधि, लागत एवं प्रबंधन तथा लेखा जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। अंतिम परीक्षा स्तर पर वित्तीय प्रबंधन, प्रबंधन, नियंत्रण और सूचना, निगमित कर प्रबंधन—प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष कर, निगमित विधि एवं आदि विषय पढ़ाए जाते हैं।

उदारीकरण के साथ निगमित क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई है, जिससे विभिन्न प्रकार की कानूनी खामियाँ भी आ गई है। कंपनी सचिव इस संबंध मे सेवाएँ प्रदान करता है। इसलिए कॉरपोरेट क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ बहुत अधिक बढ चुकी है। लोक उद्यम ब्यूरो, सरकारी वित्तीय संस्थाओं एवं स्टॉक एक्सचेंज जैसी सरकारी क्षेत्र की सस्थाओं में भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं। इसके अतिरिक्त केंद्र सरकार की विधि सेवाओं तथा वित्त, विधि, लेखा, वित्तीय संस्था, स्टॉक एक्सचेज, राष्ट्रीयकृत बैंकों की मर्चेंट बैंकिंग डिवीजन की लेखा शाखाओं में भी नई-नई संभावनाएँ सामने आई है। शैक्षणिक क्षेत्र में विश्वविद्यालयों मे प्रवक्ता बनने की ओर अधिक रुझान दिखाई दे रहा है। अनुभव और विशेषज्ञता के बलबूते पर व्यक्ति प्रतिष्ठित संगठन मे चेयरमैन, प्रबंध निदेशक तथा निदेशक जैसे शीर्ष पदो तक पहुँच सकता है।

स्टॉक एक्सचेंज की सूची में शामिल होने की इच्छुक सभी कपनियों के लिए जरूरी है कि वे पूर्णकालीन सी एस की नियुक्ति करे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग ने वरिष्ठतर पदों तथा केंद्र सरकार के अंतर्गत सेवाओं मे नियुक्ति के लिए आई.सी.एस.आई की सदस्यता को मान्यता प्रदान की हैं। कंपनी कार्य विभाग की केंद्रीय कंपनी विधि सेवा की लेखा शाखा मे ग्रेड I से ग्रेड IV तक भरती के लिए आई सी एस आई की सदस्यता अनिवार्य योग्यता है। आई बी.ए (भारतीय बैंक संघ) ने बैको से सिफारिश की है कि वे वित्त, लेखा, विधि और मर्चेंट बैंकिग के क्षेत्र में विशेषज्ञो के रूप मे कपनी सचिव की नियुक्ति करने पर विचार करे।

प्रैक्टिस करनेवाले कंपनी सचिव की सेवाओ की भी तब आवश्यकता पड़ती है, जब अपेक्षित प्रमाण-पत्र के प्रयोजन से कंपनी को सचिवीय लेखा परीक्षा की जरूरत होती है। ऐसी लेखा परीक्षा से प्रबधन वर्ग को यह सहायता मिलेगी कि विशेषज्ञ व्यावसायिक, कंपनी सचिव की सहायता से कंपनी द्वारा आत्मनियंत्रण की अवधारणा के संवर्धन तथा अनुपालन मे आनेवाली कमियाँ बताई जा सकें एव सुधार लाया जा सके।

निम्न संस्थान/संस्थानों द्वारा यह पाठ्यक्रम चलाया जाता है—भारतीय कंपनी

न, आई.सी एस.आई. हाउस, 22 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, इस सस्थान के अन्य क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई, चेन्नई एवं कोलकाता मे तिरिक्त समूचे भारत में विभिन्न क्षेत्रों मे छत्तीस चैप्टर्स तथा सोलह टर्स स्थित हैं।



कला संरक्षक तथा जीर्णोद्धारक

(Art Conservator and Restorator)

आधुनिक युग की यह प्रवृत्ति उभरकर सामने आ रही है कि परंपरा एव विरासत के संरक्षण मे कला को बचाकर रखना अनिवार्य है। पाँचवें दशक के अत तक कुछ विशेषज्ञ शिल्पी ही कला और परंपरा को बचाए रखने तथा जीर्णोद्धार का कार्य करते थे। इस कार्य मे प्राचीन या आद्य तकनीक शामिल थी, जिसमें तैलीय रग (पेंट) को हटाया जाता था या उसे पुन· सजाया जाता था। तथापि प्रौद्योगिकी से कला को बनाए रखने का कार्य वैज्ञानिक प्रक्रिया बन चुका है, जिसमे जटिल प्रौद्योगिकी शामिल है। यह अब विशेषज्ञता वाला क्षेत्र बन गया है।

आम व्यक्ति की दृष्टि मे कला जीर्णोद्धार तथा संरक्षण लगभग समानार्थी प्रतीत होते हैं, लेकिन मूलत· ये दोनों अलग-अलग क्षेत्र है। प्रत्येक क्षेत्र कला के अलग-अलग पहलुओं से जुड़ा है। जीर्णोद्धार कार्य कलाकृतियों को पहुँची क्षति की मरम्मत का कार्य है, ताकि कला के क्षेत्र में सुसगतता तथा निरंतरता बनी रहे। इन्हे ऐसी स्थिति में पुन: लाया जाए कि ये मौलिक कृतियाँ दिखाई दें। जलवायु, मौसम, आर्द्रता, धूल एवं धुएँ का कलाकृतियों पर प्रभाव पडता है। खास तौर पर पेटिंग और रगो पर असर पडता है। कलाकार भी ऐसी सामग्री का इस्तेमाल करते हैं, जो अतत. नष्ट हो जाती है, रंग बदल जाते हैं या रंग फीके पड़ जाते हैं। जीर्णोद्धारक का कार्य ऐसी समस्याओं को दूर करना है। जीर्णोद्धारक कलाकृतियों के संग्रह तथा प्रदर्शन (डिस्प्ले) पर परामर्श देता है।

वस्तुत· कला संरक्षण मूल कलाकृनियां को बचाकर रखने की कला है, ताकि इनका सौंदर्य विकृत न हो।

पारखी दृष्टि, ब्योरो एव पूर्णता के प्रति भावावेश, जुनून, धैर्य, निरंतर प्रयास और इससे अधिक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक स्वभाव—ये सफल कला जीर्णोद्धारक की कुछ विशेषताएँ हैं। कलाकृति के सर्जनात्मक पहलू को देखने की योग्यता के अलावा आपको पर्यावरण के ऐसे पहलुओ के बारे मे भी सतर्क रहना होगा, जिनका

कलाकृति पर प्रभाव पडता है क्योकि अलग अलग मे सामग्री पर अलग-अलग प्रभाव पडता है। इसी विषय में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय योग्यताए सामने आती हैं।

सफल कला जीर्णोद्धारक बनने की दिशा में सबमे पहले आपको इस क्षेत्र में तत्सबंधी पाठ्यक्रम पूरा करना होगा। लेकिन भारत मे कला संरक्षण तथा संग्रह कला-इतिहास सस्थान (इस्टीच्यूट ऑफ हिस्ट्री ऑफ आर्ट, कंजरवेशन एंड म्यूजियोलॉजी) एव राष्ट्रीय सग्रहालय, नई दिल्ली में स्नातकोत्तर स्तर पर पूर्णकालीन पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इस पाठ्यक्रम में पात्रता का आधार विज्ञान विषय में स्नातक डिग्री है, साथ ही ललित कला में कौशल के संबध में वरीयता दी जाती है। यदि कलाकार कला क्षेत्र में अपनी समझ-बूझ एव ज्ञान शक्ति बढ़ाना चाहते है तो वे भी इस पाठ्यक्रम में भाग ले सकते हैं। अभिवृत्ति परीक्षण के बाद प्रतिवर्ष दस-बारह विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। अन्य संस्थानों में मुख्यत· भारतीय इतिहास मे पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु में जैव तथा अजैव (Inorganic) रसायनशास्त्र तथा बुनियादी पेंटिंग कौशल शामिल हैं। इस पाठ्यक्रम के बाद छात्र-छात्राओं मे दृश्यात्मक ग्रहण शक्ति भी अच्छी तरह से समंजित होती है।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दूसरी अवस्था किसी प्रतिष्ठित कला जीर्णोद्धारक तथा सरक्षक के सहायक के रूप में कार्य करके अनुभव प्राप्त करना है। जब तक दुनिया मे कला की सराहना होगी तब तक कला जीर्णोद्धारक तथा सरक्षक का भी कार्य-क्षेत्र मौजूद रहेगा। लखनऊ, दिल्ली और कोलकाता के राष्ट्रीय सग्रहालय भावी कला जीर्णोद्धारक के लिए सर्वोत्तम सहायक साधन हैं। INTACH (इडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज), नई दिल्ली कला संरक्षण केद्र है, जहाँ प्राइवेट सग्रहकर्ता तथा संस्थाओं को जीर्णोद्धार की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।

प्राइवेट आर्ट फर्मे तथा कला दीर्घाएँ भी आकर्षक विकल्प हैं। हालाँकि प्राइवेट प्रैक्टिस में खतरा हो सकता है, क्योंकि इस क्षेत्र मे भारी निवेश करना पड़ता है, लेकिन एक बार पैर जम जाने के बाद यह आकर्षक विकल्प बन जाता है। आप कला व्यवहार में विविधता ला सकते हैं। इसमे कला सामग्री का व्यापार (trading) भी शामिल है। ऐसा करते समय असाधारण या उत्कृष्ट व्यवसाय-बोध और कलात्मक कौशलो का सुदर सम्मिश्रण किया जाता है। प्रारभिक रुकावटों के बावजूद संरक्षण और जीर्णोद्धार के क्षेत्र मे काफी पैसा मिलता है। मोनेट के संरक्षण मे मेहनताना मिलता है। दक्ष जीर्णोद्धारक अच्छी-खासी रकम कमा सकता है।

☐

कार्टून बनाना

(Cartooning)

कार्टूनिस्ट की नजर बड़ी पैनी होती है। गभीर विषयो को रोचक ढग से चित्रण की गहन जानकारी होती है, ताकि पाठक पर अभीष्ट प्रभाव पड़ सके। विनोदप्रियता, विवेक, समाज में विद्यमान असंगतियो को भापने की योग्यता, राजनीति मे विसगतियों को पकड़ पाने की क्षमता, राजनीतिज्ञो की मूर्खता, सामाजिक, आर्थिक व्याकुलता आदि होना जरूरी है, ताकि विषय को सर्वाधिक प्रभावशाली एव चुटीले ढंग से व्यक्त किया जा सके। इस प्रकार कार्टूनिस्ट सशक्त पत्रकार होता हे। वह कारगर ढग से संप्रेषण के लिए इस दृश्यात्मक/प्रत्यक्ष माध्यम का इस्तेमाल करता है। दूसरे शब्दों में, कार्टूनिंग की कला प्रत्यक्ष माध्यम के जरिए विनोदपूर्ण ढग मे व्यग्य कसना या व्यंग्य लेख लिखने की प्रतिभा हैं, इसका विकास किया जा सकता है। सर्जनात्मक कार्य करने के लिए सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक वातावरण की गहन समझ होना जरूरी है। व्यक्ति ललित या व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि, या सरल शब्दों में कहें तो प्रतिभा, से ही इस कला में पारंगत हो सकता है, बशर्ते उसमें कार्टून या प्रत्यक्ष इमेज के माध्यम से सूक्ष्म या महत्त्वपूर्ण संदेश देने की योग्यता हो। आज श्रव्य-दृश्य मीडिया के प्रसार के कारण कप्यूटर और नेटवर्क पर आधारित अनुप्रयोगों की वजह से कॉमिक स्ट्रिप्स तैयार की जा सकती है। टेलीविजन, रुपहले परदे या प्रिंट मीडिया के लिए कार्टून फिल्में बनाई जा सकती है।

अमूल मक्खन तथा एयर इडिया महाराजा जैसे कुछ उल्लेखनीय विज्ञापनो मे इस मीडिया का कारगर ढंग से इस्तेमाल हुआ हे। ये अभियान लोकप्रिय होने के साथ-साथ संदेश पहुँचाने में भी सफल हुए। आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि किसी समाचार-पत्र में कार्टून नही होता तो खून-खराबा, प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं, कर संबंधी छापों आदि से भरी निराशाजनक खबरों के कारण समाचार-पत्र कितना उबाऊ होता। संपादकीय लेख, कार्टून तथा राजनीतिज्ञों के व्यंग्य-चित्रो मे निर्भीक

होकर व्यंग्य शैली में सामाजिक बुराइयों और कमियों को उभारा जाता है या टिप्पणी की जाती है। कॉमिक कलाकार मे विनोदप्रियता का गुण होता है। हलके-फुलके रोचक ढंग से खबरें प्रस्तुत की जाती है। टी वी एवं फिल्मों मे दिखाए जानेवाले सजीव कार्टून 'मोशन कार्टूनिस्ट' द्वारा तैयार किए जाते है। ये कार्टूनिस्ट रहस्यों को प्रकट करते हैं, परियों की कहानियाँ चित्रित करते हैं, बच्चों को कहानियाँ तैयार करते है। बच्चे इस रचना जगत् के वशीभूत हो जाते हैं। मोशन पिक्चर्स, विज्ञापन तथा टी.वी और कुछ सीमा तक नेटवर्क पर ये कार्टून लोकप्रिय हैं।

इससे सर्जनात्मक शक्ति को सर्वोत्तम ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है, क्योंकि कलाकार इस सशक्त माध्यम का अपने ढंग से प्रयोग करता है। प्रयोग की विधि के अनुसार यह रूप लोकप्रिय होता है, फिर चाहे जन-साधारण तक बढ़ती आबादी पर नियत्रण पाने का संदेश हो अथवा बच्चों को यह नैतिक शिक्षा देनी हो कि वे कर्तव्यनिष्ठ हों, कर्मठ हों या ईमानदार बनें, या ऐसी रचना का लक्ष्य मात्र मनोरजन करना हो। स्कूल स्तर से पूर्व स्तर या स्कूली बच्चों को देशभक्ति आदि जैसे मूल्य सिखाने के लिए कार्टून को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि इससे रचनाशील मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पडता है। कार्टून के माध्यम से एड्स नियंत्रण, सुरक्षित स्वास्थ्य प्रक्रियाओं आदि से संबंधित संदेश लोगों तक पहुँचाए जाते हैं।

10+2 परीक्षा के बाद कार्टूनिंग को कैरियर के रूप में चुना जा सकता है, हालाँकि बारहवीं कक्षा तक पढ़ाई करना आदर्श रहता है। इसके बाद ही यह पाठ्यक्रम किया जाए। मल्टी मीडिया पाठ्यक्रम से तकनीकी पहलुओं को समझने मे सहायता मिलती है। तब व्यक्ति विभिन्न सॉफ्टवेयर पैकेज का इस्तेमाल करने का आदी हो जाता है। तथापि कॉमिक रूपों के आरेखन की कला के लिए किसी औपचारिक प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती है, बशर्ते व्यक्ति में चित्र बनाने, मूल रूप मे चित्रण, हास्य शैली मे सामाजिक, राजनीतिक संकट एवं विपत्तियों को व्यक्त करने की प्रतिभा हो, जिससे जनता में रुचि जाग्रत् हो तथा उसकी कल्पना-शक्ति प्रस्फुटित हो। ऐसा ही व्यक्ति सफल कार्टूनिस्ट बन सकता है।

कार्टूनिस्ट और एनीमेटर (सजीव चित्रकार) के लिए पब्लिशिंग संस्थानो मे नौकरियाँ उपलब्ध रहती हैं। इसके अलावा पत्रिकाओं, विज्ञापन एजेंसियों, श्रव्य-दृश्य मीडिया और समाचार-पत्रों में भी काफी संभावनाएँ विद्यमान हैं। यदि व्यक्ति के पास प्रतिभा एवं कल्पना-शक्ति है तो उसका भविष्य उज्ज्वल है; लेकिन ऐसे कार्यों के लिए बड़े शहरों में ही ज्यादा माँग है। बाधा यही है कि संपादकीय कार्य

मे काफी स्वतन्त्रता की जरूरत है, लेकिन सौपे गए काय को कर्मचारियो मे बाटकर करवाना पड़ता है। कंप्यूटर सहायता प्राप्त डिजाइन (सी ए.डी) प्रौद्योगिकी का श्रव्य-दृश्य प्रस्तुतीकरण में व्यापक स्तर पर इस्तेमाल किया जाता है। इस संबध मे कडी स्पर्धा है, लेकिन उच्च कोटि के कार्य से व्यक्ति को अपनी पसद का कार्य मिलने में सहायता मिलती है।

भारत में कार्टूनिस्ट का कार्यक्षेत्र अभी प्रारभिक अवस्था मे है। इसकी तुलना चार दशक पूर्व 'पंच' एवं 'न्यूयार्कर' से की जा सकती है। प्रारंभ में कार्टूनिस्ट को पैर जमाने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन एक बार शुरुआत हो जाने पर पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ती। भारत में आर के. लक्ष्मण, सुधीर तैलंग, रंगा, राजिद्र पुरी, राशि काल्दा जैसे कुछ नाम उल्लेखनीय है।

ये पाठ्यक्रम निम्नलिखित सस्थानो में चलाए जा रहे हैं—

1 शंकर अकादमी ऑफ आर्ट, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।
2. ए पी.जे इंस्टीच्यूट ऑफ डिजाइन, 54, तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया, एम बी. रोड, नई दिल्ली-110 062।
3 द दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली 110 001।
4 सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट, डॉ डी.एन रोड, मुंबई-400 001।
5 नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ डिजाइन, पालदी, अहमदाबाद।
6 जाइका स्टूडियो, ऐसल वर्ल्ड, गोराई आईलैंड, बोरीवाली (पश्चिम), मुंबई-400 091।
7 द केरल कार्टून अकादमी, चित्तूर रोड, ऑफ कोची, केरल।



कॉल सेंटर उद्योग

(Call Centre Industry)

पहली बार भारत में कॉल सेंटर कंसल्टेंसी और ट्रेनिंग सेवाएँ (CCCTS) उच्च कोटि की (मूल्य आधारित) कॉल सेंटर प्रशिक्षण और परामर्श सबंधी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं, ताकि ग्राहकों को कॉरपोरेट किया जाए। पाँच सौ कंपनियोंवाली अमेरिका की फॉरच्यून फैकल्टी अनुभव को महत्त्व देती है। यह फैकल्टी प्रतियोगी दरों पर प्रशिक्षण दे रही है। इस प्रकार से CCCTS पूरा मानव संसाधन विकास सबधी पैकेज देती है। पाठ्य सामग्री इस प्रकार से तैयार की गई है कि उसमे विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं का पूरा ध्यान रखा गया है और इसमे सजीव अभ्यास के प्रशिक्षण सहित भाषा सबंधी बाधाओं को दूर करते हुए स्वर और लहजे का प्रशिक्षण दिया जाता है।

नेस्कॉम किंसे (NASSCOM Mckinsey) रिपोर्ट के अनुसार, सन् 2008 तक कॉल सेंटर उद्योग से लगभग ढाई लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। इसलिए इस उद्योग में प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढती जाएगी। ग्राहक संबंधों के प्रबधन की अत्यधिक प्रतियोगी दुनिया में ग्राहकों की आवश्यकताओ की पूर्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जहाँ पर ग्राहक राजा के समान होता है। कंपनी के प्रशिक्षण कार्यक्रम मे प्रमुखत: उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने पर बल दिया जाता है। विशेष रूप से उस समय ऐसी सेवाएँ देने की जरूरत है, जब विश्व के किसी भी कोने मे कम-से-कम समय में ग्राहक को अपने प्रश्नों के जवाब की जरूरत पडती है।

आप में श्रवण कौशल, पश्चिमी शैलियो प्रवृत्तियों की समझ, गूढार्थ समझने तथा तेजी से जवाब देने संबंधी गुण होने जरूरी हैं। CCCTS समस्त निर्णायक पैरामीटरों पर केंद्रित है। गुणवत्ता संबंधी प्रशिक्षण की दी जानेवाली सुविधाओ के लिए प्रतियोगी आधार पर फीस ली जाती है।

विभिन्न भाषाओं के संबध में स्वराघातों (accents) को समुन्नत बनाया जाता है तथा अपेक्षित बल सबंधी पैटर्न के साथ व्यवस्थित शब्दों के समूह से सर्बधित समय की कसौटी पर परखी गई विधियों का अध्ययन किया जाता है। विद्यार्थी को विश्व के किसी भी कोने से आनेवाली 'कॉल' की हैंडलिग के अनुकूल बनाने के लिए कार्यक्रम में ये विधियाँ शामिल की गई हैं। प्रत्युत्तर हैडलिंग में छात्रो को तैयार करने के लिए भाषा-विज्ञान से संबंधित नई तकनीकें इस्तेमाल की जाती हैं। यह सगठन स्टाफ और भरती के संबध मे महत्त्वपूर्ण समाधान भी निकालता है। इस सगठन मे मानव संसाधन विकास का पूरा पैकेज है, जिससे शीर्ष स्तरीय प्रबंधन की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं। ग्राहक प्रबंधन आधार स्तर होता है, जिसका लक्ष्य ग्राहक की सतुष्टि है। इससे किसी भी संबंधित उद्योग की उच्च उत्पादन क्षमता सुनिश्चित होती है। CCCTS ग्राहक की संतुष्टि पर फोकस रखता है।

कॉल सेंटर प्रशिक्षण कंपनी सफलतापूर्वक चलाने के लिए प्रशिक्षक, शिक्षा विधि, आकलन, लागत, प्रभावशीलता, अभ्यास (Simulation) तथा सजीव कॉल सेटर प्रशिक्षण जैसे आवश्यक तत्त्व इस कार्यक्रम के मूल अंग हैं। CCCTS के अत्यधिक योग्यता प्राप्त तथा अनुभवी विद्वज्जन एवं प्रशिक्षणार्थी इस कैरियर का मुख्य सहारा है। शिक्षण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पाठ्य सामग्री ही नही, बल्कि पाठ्य सामग्री के प्रबंधन की विधि भी प्रशिक्षण की प्रभाव क्षमता निर्धारित करती है।

स्तर बनाए रखने की दृष्टि से पाठ्यक्रम आकलन प्रक्रिया में दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन किया जाता है। प्रशिक्षणार्थी की निरंतर समीक्षा तथा आकलन किया जाता है। कॉल सेंटर ग्राहक/टेली बिक्री सेवाओं के आधार पर वास्तविक जीवन से जुड़े कौशलों की दृष्टि से विद्यार्थी को तैयार करने के लिए जीवंत माहौल तैयार किया जाता है। अपेक्षाओं के अनुसार CCCTS प्रशिक्षण और मानव संसाधन विकास संबंधों के समाधान में क्लियंटेल को अनुकूल गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करने के लिए कृत-संकल्प है, ताकि ग्राहक संबंध प्रबंधन की व्यवस्था करते हुए एशिया मे गुणवत्ता प्रशिक्षण और परामर्श सेवाओं को बढ़ावा दिया जा सके।

CCCTS भारत में फल-फूल रही कॉल सेंटर मार्केट के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित कॉल सेटर विशेषज्ञों की बढ़ती आवश्यकता की पूर्ति के लिए कटिबद्ध है। आज यह कारोबार मार्केट में दस लाख डॉलर तक फैला है। आज इस बाजार मे प्रवेश कर चुके अनेक लोग बढ़-चढकर दावा कर रहे हैं। लेकिन इस संबध में चौंकानेवाले रहस्योद्घाटन हुए हैं। यहाँ प्रशिक्षित श्रमशक्ति का अभाव है। जबकि इस क्षेत्र में श्रमशक्ति की काफी माँग रही है। CCCTS का प्रमुख लक्ष्य

कॉल सेंटर एजेंट, पर्यवेक्षक, प्रबंधक के प्रशिक्षण और एशियाई क्षेत्र में प्रचालन संबंधी प्रबंधन के स्तर को बढ़ाना है। अंततः इससे ग्राहक को लाभ पहुँचता है।

कॉल सेंटर अकादमी प्रमुख रूप से दो प्रकार के ग्राहकों का कार्य करती है—

1. कॉल सेंटर कंपनियों के लिए कैप्टिव प्रशिक्षण, CCA जनशक्ति की अपेक्षाओं और विशिष्टताओं के आधार पर कॉल सेंटर कंपनियों तथा कॉरपोरेट ग्राहकों के लिए श्रमशक्ति के प्रशिक्षण के लिए सुविधाएँ प्रदान करती है।

2. CCA के माध्यम से आम लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। यह अकादमी कॉल सेंटर उद्योग में रोजगार पाने के इच्छुक लोगों को 'प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण' देती है। इन सेंटरों में उन उम्मीदवारों को रोजगार मिलने की गारंटी दी जाती है, जो प्रमाण-पत्र परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। CCA कॉल सेंटर उद्योग में नौकरी पाने के इच्छुक लोगों को भी प्रशिक्षण देती है। इस पाठ्यक्रम की अवधि साढ़े पाँच सप्ताह है। सप्ताह में छह दिन कक्षाएँ लगती हैं। प्रतिदिन आठ घंटे पढ़ाई होती है। इस पाठ्यक्रम की फीस लगभग पच्चीस हजार रुपए तक है।

□



कृषि इंजीनियरिंग

(Agricultural Engineering)

कृषि मात्र बीज बोने या फसल काटने का ही कार्य नहीं है। इसमे फार्म प्रबधन, वित्त के संबंध में बैंकिंग कार्य-कलाप तथा खेतो का विकास, उत्पादों, कृषि सेवाओं आदि का परिमाण एव गुणवत्ता बढाने के लिए अनुसधान कार्य जैसे कार्यकलाप भी शामिल हैं।

संक्षेप में, कृषि इजीनियर जैव विज्ञान तथा पर्यावरण विज्ञान को कृषि मशीनरी के डिजाइन, विरचन तथा विनिर्माण कार्य के अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) सिद्धांतो के साथ समेकित करते हैं। साथ ही मृदा-संरक्षण, सिंचाई प्रणालियों की योजना, संरचना के डिजाइन एवं कृषि-ट्यूबवेल तथा पप लगाने, प्रसंस्करित फार्म उत्पादो के उत्पादन आदि का कार्य करते हैं तथा कृषि वित्तपोषण सेवाओ पर केंद्रित होते हैं।

कृषि इजीनियर खेती के विभिन्न ओजारों, मशीनों, खाद्य तथा कीटनाशक दवाओ जैसे अन्य उत्पादों का अध्ययन करते है, ताकि पर्यावरण को कम-से-कम क्षति पहुँचे और फसलें भी सुरक्षित रहें। ये कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण, उत्पादन, ढुलाई तथा भंडारण की भी देखभाल करते हैं। साथ ही प्रबंधकों एवं स्वामियों के साथ समस्याओं पर चर्चा करते हैं और रिपोर्ट तैयार करते हैं। बिल्डिग, संस्थापना एव परीक्षण प्रक्रियाओं की निगरानी करते हैं।

अन्य इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के समान इस पाठ्यक्रम में डिग्री लेने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति विज्ञान विषय में पी सी बी. या पी सी एम सहित + 2 की परीक्षा उत्तीर्ण की हो। आप जैव रसायन इंजीनियरिंग, खाद्य प्रौद्योगिकी तथा प्राप्त कर रसायन प्रौद्योगिकी में डिग्री से कृषि इजीनियर के रूप में उपाधि पा सकते हैं। साथ ही खाद्य प्रौद्योगिकी या सिंचाई इजीनियरिंग में विशेषज्ञता प्राप्त करना भी आवश्यक है। कृषि इंजीनियरिंग में ए ई. या एम टेक के दौरान फार्म मशीनरी मृदा और जल संरक्षण इजीनियरिंग, जल कृषि या जल प्रबंधन में विशेषज्ञता काफी

उपयोगी सिद्ध होती है। पृथक् व्यवसाय के रूप में कृषि इंजीनियरिंग अभी भारत में इतना लोकप्रिय नहीं हो पाया है। अधिकांशतः स्वयं कृषक भी इस इंजीनियरिंग की जानकारी हासिल करने में बहुत ज्यादा रुचि नहीं लेते।

भारत का कृषि क्षेत्र अभी भी मजबूत है, अतः इसमें भी संभावनाएँ बहुत हैं। वस्तुतः जैसे-जैसे उन्नति होती जाती है, इस क्षेत्र में अधिकाधिक विशेषज्ञता प्राप्त व्यावसायिकों की जरूरत भी बढती जाती है। स्वयं किसान भी तकनीकी पक्षों को सॅभाल नहीं पाऍगे, जिससे उन्हे विशेषज्ञों से परामर्श लेने की आवश्यकता पड़ेगी। इस क्षेत्र मे सरकार की गहन रुचि होने के कारण केंद्र व राज्य सरकार के विभागो मे प्रचुर अवसर मौजूद हैं। कृषि उद्योग, सिचाई तंत्र तथा कृषि मशीनरी विकास एवं विनिर्माण कंपनियों, बीज तैयार करनेवाली कपनियों, डेयरी एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों तथा कृषि क्षेत्र में कार्यरत गैर-सरकारी संगठनों में विकल्प मौजूद हैं। कृषि वित्त अन्य क्षेत्र हैं, जहॉ इंजीनियर प्रबंधन प्रशिक्षणार्थी या तकनीकी अधिकारियों के रूप मे बैंकों में कार्य कर सकते है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय बीज निगम, भारतीय खाद्य निगम, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड तथा डेयरी व खाद्य उद्योग जैसे संगठन भी कृषि इजीनियरो को नौकरी पर रखते हैं। डिप्लोमा धारकों को प्रारंभ मे चार हजार से लेकर छह हजार रुपए तक वेतन मिलता है तथा कृषि इंजीनियरिंग मे डिग्री धारकों को कम-से-कम साढ़े छह रुपए से नौ हजार रुपए तक प्रति माह वेतन मिलता है।

निम्नलिखित संस्थानो मे यह संबद्ध पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं—

1. कृषि इजीनियरिंग कॉलेज, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, पजाब।
2. कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर, तमिलनाडु।
3. भारतीय प्रौद्योगिकी सस्थान, खडगपुर।
4. जी.बी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी कॉलेज, पंत नगर।
5. ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनंद, गुजरात।
6. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली।
7. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा।
8. कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर, कर्नाटक।

□

खुदरा प्रबंधन

(Retail Management)

आजकल बिक्री का इतना अधिक महत्त्व है कि खुदरा प्रबंधन अनिवार्य क्षेत्र बन चुका है। रिलायंस, इंडियन टोबैको कंपनी, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड जैसे बड़े-बड़े व्यावसायिक संगठन इस क्षेत्र में धाक जमा रहे हैं। इस वजह से खुदरा प्रबंधन विशेषज्ञता-युक्त नया प्रबंधन क्षेत्र बन चुका है।

प्रथम द्रष्टया स्थानीय भाषा में इसे 'किराना' स्टोर कहते हैं, लेकिन खुदरा प्रबंधन मात्र इतना ही नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह कार्य कर सकता है। बदलती जीवन-शैली के प्रति अनुकूलन क्षमता से जुड़ी आवश्यकताओं की इस प्रकार से पूर्ति की जाती है कि यह क्षेत्र प्रबंधन के विशेष क्षेत्र का रूप धारण कर लेता है। खुदरा प्रबंधन ब्रांड तैयार करना है, न कि मात्र उत्पाद तैयार करना, बल्कि यह कार्य संगठन से जुड़ा है।

भारत में यह अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है। खुदरा प्रबंधन में अनिवार्यतः थोक विक्रेता के विपरीत कम मात्रा में सामान का चयन किया जाता है। यही कम मात्रा खुदरा बिक्री को नया विशिष्ट रूप देती है। अतः खुदरा प्रबंधन केवल बिक्री काउंटर का ही प्रबंधन नहीं करता है।

यह विनिर्माण, वित्त, बिक्री, मार्केटिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन, स्टोर संबंधी प्रचालन कार्यों का मिश्रित रूप है। सामान्य विपणन कार्य-नीतियों से भिन्न इस क्षेत्र में उत्पाद संवर्धन, मूल्य तथा स्थान संबंधी निर्णायक तत्त्वों पर पकड़ होती है। खुदरा प्रबंधन की सफलता की कुंजी उसके लोग या ग्राहक हैं। अतः खुदरा प्रबंधकों में संप्रेषण अथवा व्यवहारमूलक कौशल होना चाहिए। वे ग्राहक का व्यवहार भाँपने में भी पूर्णतः कुशल होने चाहिए। चाहे अल्पकालिक प्रयोजन हो या दीर्घ-कालीन प्रयोजन, खुदरा प्रबंधकों को ग्राहकों का स्टोर के प्रति निरंतर ध्यान आकर्षित करने के लिए नए-नए तरीके अपनाते रहना चाहिए। इस प्रयोजन से इष्टतम मूल्य बरकरार रखते हुए विभिन्न स्कीमें और बिक्री संवर्धन की कार्यनीतियाँ लागू करनी चाहिए।

हालाँकि खुदरा बिक्री असगठित क्षेत्र है, लकिन आज के समय मे दुकानदार नई चुनौतियो का सामना कर रहे है। साथ ही बड़े-बड़े कॉरपोरेट और शॉपर्स शॉप, क्रॉसवर्ड जैसे विशाल (मेगा) रिटेलर इस क्षेत्र को नया रूप दे रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय खुदरा उद्योग का एक सौ अस्सी अरब डॉलर मूल्य आँका गया है। बाजार मे संगठित क्षेत्र का 2 प्रतिशत हिस्सा है तथा परचून क्षेत्र लगभग 50 प्रतिशत है। फिर भी, ओ.आर.जी के अन्य अध्ययन से संकेत मिलता है कि मात्र 5.3 करोड़ खुदरा दुकाने (आउटलैट) इस देश के संगठित और असंगठित बाजार मे उपलब्ध है। अनेक विदेशी खुदरा कॉरपोरेट भी भारतीय खुदरा बाजार में फल-फूल रहे हैं।

इस उद्योग में अचानक उछाल आने का कारण उदारीकरण की नीतियाँ है। स्पष्ट है कि भारतीय उपभोक्ता अपनी जरूरतों से अच्छी तरह से परिचित हैं। इंटरनेट के प्रवेश से भारतीय उपभोक्ता को मार्केट से जुड़ने का नया रास्ता मिल गया है।

इस क्षेत्र मे व्यापक वृद्धि हुई है। इससे देश में खुदरा प्रबंधन के पाठ्यक्रम भी बढ रहे हैं। ग्राहकों मे बढ़ती जागरूकता के कारण तथा कॉरपोरेट की गहन रुचि की वजह से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सस्थागत रुचि पनपी है।

ईबोनी, द होम स्टोर्स जैसे खुदरा स्टोरो में इस क्षेत्र से सबंधित कक्षाएँ ली जाती हैं। ईबोनी रिटेल अकादमी राष्ट्रीय बिक्री संस्थान (एन आई एस.) के साथ मिलकर खुदरा अभिविन्यास, उपभोक्ता-व्यवहार, योजना तथा रिपोर्टिंग, बिक्री और संवर्धन क्षेत्रों में कक्षाएँ आयोजित करता है। होम स्टोर में अन्य पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जो किसी विश्वविद्यालय से नही जुड़ा है। ईबोनी के कोर्स की अवधि तीन माह है, जिसके लिए कोई विशिष्ट पात्रता मानदड नहीं है। म्यूजिक वर्ल्ड का अपना खुदरा प्रबंधन संस्थान है। पर्ल अकादमी ऑफ फैशन जैसे संस्थान फैशन रिटेलिंग मे विशेष पाठ्यक्रम चलाते हैं।

प्रबंधन तथा व्यावसायिक स्कूल इस क्षेत्र की बढ़ती सभावनाओं तथा लोकप्रियता को समझ चुके हैं। इन्होंने खुदरा प्रबधन में नए पाठ्यक्रम शुरू कर दिए है। इंदिग इस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेट, पुणे में दो वर्ष का पाठ्यक्रम चलाया जाता है। सलाहकार बोर्ड में टाइटन उद्योग के प्रतिनिधि हैं। वेलिगकर इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुबई भी खुदरा विषयक पाठ्यक्रम मॉड्यूल चलाता है।

खुदरा प्रबधन के लिए आपके पास विभिन्न कौशल होने चाहिए, जैसे—गणना में रुचि, खरीदते समय विशिष्ट उत्पाद वर्गो की जानकारी और ग्राहक सेवा सबंधी अंतर्वैयक्तिक कौशल। निम्न स्तर पर प्रबंधक प्रतिवर्ष एक लाख रुपए तक कमा सकते है तथा मध्य और उच्च स्तर पर इससे अधिक वेतन मिलता है।



खेल-चिकित्सा/शारीरिक शिक्षा/खेल-प्रशिक्षक

(Sports Medicine/Physical Education/Sports Trainer)

खिलाड़ियों की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी समस्याओं का ध्यान रखना कोई कठिन कार्य नहीं लगता। यहाँ आपको खिलाड़ी की सहायता करनी पड़ती है, ताकि वह धीरे-धीरे स्वास्थ्य संबंधी न्यूनतम स्तर से सर्वोच्च स्तर तक सजग हो सके। खेल जगत् में मेडिसिन डॉक्टर के लिए यही सबसे बड़ी चुनौती है। इस प्रकार यह विशेष क्षेत्र है। आपको अनेक कारको का ध्यान रखना पड़ता है, जैसे मानसिक योग्यता (मेक-अप), स्वास्थ्य संबधी कार्यक्रम, चोट, रोग, पोषण, शरीर विज्ञान (Physiology) तथा खिलाड़ी का मनोविज्ञान। ये सभी तत्त्व खेल चिकित्सा के क्षेत्र का हिस्सा हैं।

वास्तविक परिप्रेक्ष्य से पहले आपको सभी मूलभूत बातो की जानकारी प्राप्त करनी होगी, ताकि समस्त बातो को समग्र रूप मे देखा जा सके। आप चोट को हलके नहीं ले सकते और न ही एथलीट (खिलाड़ी) को यह कह सकते हैं कि वह किसी और डॉक्टर के पास इलाज कराए या सलाह ले। आपके पास बहुमुखी कौशल होने चाहिए, क्योंकि एथलीट के पास इतना समय नहीं होता कि वह अलग-अलग तकलीफों के लिए अलग-अलग डॉक्टरो के पास जा सके।

खेल चिकित्सा मे भारी-भरकम रोगी के घुटने की सीधे सर्जरी करने से दुष्परिणाम सामने आएँगे। लेकिन सर्जरी से पहले प्रभावित घुटने को अनुकूल स्थिति मे लाने के लिए रोगी की सहायता करने तथा वजन घटाने की उपयुक्त विधियाँ सिखाकर बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। जब रोगी अपना वजन घटा लेता है तब वह जल्दी से स्वस्थ होगा और उसमें संतुलन भी आएगा, जिससे वह खेल जगत् की गतिविधियाँ जारी रख सकता है।

खेल चिकित्सा या खेलों से जुड़े क्षेत्र में कैरियर चुनौती भरा होता है; लेकिन इसके गुणावगुण पर ध्यान देने से पूर्व भलीभाँति विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि प्रशिक्षण, समय की बाधाओं एवं वित्तीय स्थिति के कारण अलग-अलग मौके उपलब्ध होते हैं। आपको अपने आपसे यह प्रश्न पूछना चाहिए—ध्येय प्राप्त करने से पूर्व मैं इस कैरियर में कितना निवेश कर सकता हूँ?

उदाहरणार्थ, प्रमाणित एथलीट प्रशिक्षक एवं भौतिक चिकित्सक को अन्य चिकित्सकों की अपेक्षा कम स्कूली शिक्षा की जरूरत पड़ती है। इसलिए शिक्षा मे कम पैसा खर्च होता है। तथापि ये अत्यधिक प्रशिक्षित व्यावसायिक होते हैं और निरंतर एथलीट एवं अन्य खिलाड़ियों के सपर्क में रहते है। ये प्रायः सप्ताह के अंत मे छुट्टी के दिन आपातकालीन स्थिति में नियमित चिकित्सा व्यवसायी के समान नहीं आते। विकलांग विज्ञान (orthopaidics) में ऐसे अनेक उपचार हैं, जो दर्द तथा मांसपेशीय विकारों के लिए सुझाए जाते हैं। अधिकांश गोलियाँ ऐसी हैं, जिनके खाने की आदत नही पड़ती। कुछ गोलियों से बचा भी जा सकता है। स्टेरॉइड-रहित सूजन-रोधी उपचार (NSAIM) तथा मांसपेशीय शिथिल कारकों की प्राय· राय दी जाती है। गठिया, टेंडीटिस या श्लेष पुटी शोध (buristies) जैसे सूजन संबंधी हालात मे NSAI उपचार मे राहत मिलती है। गरदन में तनाव तथा कमर के निचले हिस्से मे दर्द होने पर नियमित रूप से मासपेशी के शिथिल कारक के सेवन से आराम मिलता है।

देश में प्रशिक्षण मे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पक्ष शामिल करने की कोई विशिष्ट नीति नहीं है, जबकि इन पक्षों का बार-बार उल्लेख किया जाता है। वस्तुत ये सकारात्मक परिवर्तन बहुत पहले ही हो जाने चाहिए थे। सामान्यतः श्रम शक्ति संबंधी संसाधन कम हैं। डॉक्टरो, वैज्ञानिको तथा गुणवत्ता परीक्षण स्थापनाओ की संख्या भी कम है। उदाहरण के तौर पर, मालिश करनेवालों को प्रशिक्षण देने के लिए न तो कोई स्कूल है, न ही कोई संगठन। थका देनेवाले खेल समारोह के बाद खिलाडियों के लिए मालिश कराना जरूरी है। प्रशिक्षण के दौरान मालिश कराने की जरूरत होती है, ताकि थकी-माँदी मांसपेशी को आराम मिले, उसे पुनः स्वास्थ्य लाभ मिल सके और आप तरोताजा, स्फूर्तिवान् हो सकें।

खेल जगत् के इन क्षेत्रों के संबंध में स्पष्ट नीतिगत निर्देशो का अभाव है। सामान्य तौर पर, खेल जगत् में भौतिक चिकित्सकों की कमी रही है तथा इन क्षेत्रो मे इनकी आवश्यकता है। इस प्रकार खेलो के सबद्ध क्षेत्रों में ऐसे चिकित्सकों की माँग है। उच्च श्रेणी के ऐसे खिलाड़ियों आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए

कार्मिकों की माँग रहती है, जो विभिन्न क्षेत्रो में अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रशिक्षण और स्वास्थ्य के लिए खेलों/स्वास्थ्य संबंधी आधारभूत संरचना के प्रबधन की दृष्टि से योग्य और अनुभवी स्टाफ का नेटवर्क तैयार करने की जरूरत है। स्वास्थ्य और आरोग्यता के प्रति बढ़ती जागरूकता के परिणामस्वरूप आरोग्यता संबंधी मशीनों की लोकप्रियता और माँग बढ़ी है। इस क्षेत्र मे स्वास्थ्य शिक्षको के साथ-साथ पोषणविदों के लिए भी संभावनाएँ बढ़ी हैं। यदि आपका इन क्षेत्रों के प्रति झुकाव है, आप में उपयुक्त योग्यता है और आपको स्वास्थ्य (शारीरिक) शिक्षा या आहार-विज्ञान के क्षेत्र में अनुभव प्राप्त है, तो इस क्षेत्र में नौकरियाँ उपलब्ध हैं।

इस क्षेत्र में तीन वर्षीय बी पी ई /पी.जी स्तर का स्वास्थ्य (शारीरिक) शिक्षा मे डिप्लोमा कराया जाता है या जोनल चैंपियनशिप सहित इंटर विश्वविद्यालय चैंपियनशिप में दो बार भागीदारी के साथ स्नातक की डिग्री ली हो तथा दो वर्ष का व्यावहारिक अनुभव हो तो एक वर्ष का बी पी शिक्षा कार्यक्रम कराया जाता है। तीन वर्ष का बी पी. शिक्षा कार्यक्रम भी कराया जाता है, जिसमें निम्नलिखित विषय है— शारीरिक शिक्षा का परिचय, अंग्रेजी, भारतीय भाषा, संबधित क्षेत्र के कौशल और प्रशिक्षण। दूसरे वर्ष में व्यायाम की किनिशियोलॉजी, शरीर विज्ञान (फिजियोलॉजी) तथा स्वास्थ्य (शारीरिक) शिक्षा के संबंध में मनोविज्ञान पर फोकस होता है।

निम्नलिखित संस्थानो में ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1. भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI), पटियाला-147001।
2. इंदिरा गाधी शारीरिक शिक्षा तथा खेल विज्ञान संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110018।
3. एन एस. ईस्टर्न सेंटर, साल्टलेक सिटी, सेक्टर-III, कोलकाता-700091।
4. एन एस. साउथ सेंटर, यूनिवर्सिटी कैंपस, बगलौर-560056।
5. डॉ भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा, उत्तर प्रदेश।
6. लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ-226007।
7. मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई-600005।
8. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर-474011।
9. लक्ष्मी नेशनल कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, ग्वालियर-474002।
10. महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम-686560।



गृह व्यवस्था

(Housekeeping)

होटल उद्योग के क्षेत्र मे गृह व्यवस्था केरियर की बहुत कम संभावनाओं का पता लगाया गया है। इस विभाग में नौकरी करने का अर्थ निरंतर श्रम करना हे, जिसका फल भी मिलता है। इस नौकरी में व्यक्ति को फर्श साफ करने से लेकर परदे वदलने तक के सभी कार्य करने पडते है। उसे सुनिश्चित करना होता है कि खिड़कियों के शीशे साफ-सुथरे चमकते रहें तथा होटल के सभी कमरों व बाथरूम मे साफ-सुथरे तौलिए आदि रखे हों। संक्षेप में, गृह व्यवस्था ग्राहक की सेवा से सबधित कार्य है, जहाँ ग्राहक या अतिथि की सतुप्टि एवं आनंद को प्राथमिकता दी जाती है। सामान्य दृष्टि से देखें तो यही अर्थ निकलता है कि घर को सर्वोत्तम ढग से व्यवस्थित रखा जाय। स्वच्छता विश्व स्तरीय हो और अत्यधिक व्यवस्थित ढग से कार्य किए जाएँ।

विभाग के शीर्ष स्तर पर हेड अर्थात् कार्यकारी गृह प्रबंधक होता है, उसके बाद सहायक कार्यकारी होते है। सहायक कार्यपालक (कार्यकारी) के अधीन गेस्ट रिलेशंस सुपरवाइजर होते है। ये सुपरवाइजर गृह व्यवस्था प्रशिक्षणार्थियो तथा गृह व्यवस्था परिचारकों के प्रभारी होते हैं। ये परिचारक तथा प्रशिक्षणार्थी ही सोफासाज (upholstar), दरजी, पॉलिश करनेवाले, बढ़ई, पेंटर आदि जैसे विभाग के शेष स्टाफ से कार्य करवाने के लिए जिम्मेदार होते हैं।

गृह व्यवस्था के अच्छे कर्मचारी बनने के लिए यह जरूरी नही है कि आप मे सफाई करने की धुन लगी हो। जरूरत इस बात की है कि आपका शांत व्यक्तित्व हो तथा स्पष्ट दृष्टिकोण हो। आत्मविश्वास, क्षमता तथा दूरदर्शिता अन्य पूर्वापेक्षाएँ हे। व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए तथा हर ब्योरे पर नजर रखनेवाला भी। स्टाफ के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति से तथा हर प्रकार की स्थिति सुलझाने की क्षमता से आप आगे-ही-आगे बढ़ते जाएँगे। अन्य महत्त्वपूर्ण

कारक सयम है। आपको पूरी तरह से समय का पाबद होना चाहिए

आप दो प्रकार से इस विभाग में शामिल हो सकते है। एक तरीका यह है कि होटल प्रबंधन में तीन वर्ष का डिप्लोमा करने के बाद यह विभाग चुने। दूसरे, आप 10+2 या स्नातक करने के बाद केवल इसी विभाग से संबंधित डिप्लोमा कर सकते हैं। ऐसे डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि छह से बारह माह तक होती है। सभी व्यावसायिक सस्थानों में ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

होटल प्रबंधन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए आपके पास 10+2 या स्नातक स्तर पर 50 प्रतिशत अक होने चाहिए। प्रवेश परीक्षा के आधार पर दाखिला दिया जाता है। इस परीक्षा में उम्मीदवार का अभिवृत्ति तथा सामान्य ज्ञान की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाता है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए क्रमशः 15 और 7 5 प्रतिशत आरक्षण है। साक्षात्कार और सामूहिक परिचर्या में उम्मीदवारों के निष्पादन का मूल्यांकन किया जाता है।

आपको विभिन्न होटलो, रेस्तरॉ, क्लबों, क्रूजशिप, रिजॉर्ट तथा आतिथ्य उद्योग से जुड़े अन्य भागो में काम पर रखा जा सकता है। कॉरपोरेट हाउस, अस्पताल और बडे संगठनो मे भी गृह व्यवस्था कार्यपालकों की आवश्यकता होती है। नौकरी की अनंत संभावनाएँ हैं तथा भविष्य उज्ज्वल है।

प्रशिक्षणार्थी के रूप मे आप सगठन की हैसियत के आधार पर पॉच हजार रुपए से सात हजार रुपए के बीच तक कमा सकते हैं। प्राइवेट संगठनों मे ढाई हजार से साढ़े तीन हजार तक तनख्वाह मिलती है। जैसे-जैसे सफलता की सीढ़ी चढते हें, वेतन बढता जाता है। इस क्षेत्र मे कार्य-संतुष्टि पूरी तरह से मिलती है। गृह व्यवस्था क्षेत्र में ऐसे लोग आते हैं, जो अपने आस-पास अतिथि के आराम का पूरा ध्यान रखते हैं। ये निरंतर सेवाएँ प्रदान करते है। आपको अपनी मेहनत का स्पष्ट रूप से फल मिल जाता है तथा यह कैरियर सुखद एवं संतोषप्रद है।

गृह व्यवस्था की सेवाओं की माँग आजकल बढ रही है। इस बढ़ती माँग के साथ इस क्षेत्र में गैर-सरकारी संस्थाओं की माँग भी कई गुना बढ़ गई है। यदि आपके पास पर्याप्त अनुभव है और आपकी वित्तीय स्थिति सुदृढ है तो आप अपनी कपनी खोल सकते हैं, अन्यथा आप प्रबंधकीय स्टाफ के सदस्य के रूप में किसी प्राइवेट संगठन में शामिल हो सकते हैं। इस विभाग से उकता जाने पर आप नए ढग से कार्य करने, अनुरक्षण या प्लेसमेंट सेवाओं अर्थात् ग्राहक से जुड़ी कोई भी नौकरी चुन सकते है।

□

गैर-सरकारी संगठन
(Non-Governmental Organisations)
[NGOs]

गैर-सरकारी सगठन उन सभी के लिए पहचान या सूचक शब्द बन गया है, जो विकास संबधी कैरियर में जाना चाहते हैं तथा सामाजिक क्षेत्र मे आगे बढ़ना चाहते हैं। ऐसा भी समय था, जब प्रतिभाशाली युवा छात्रों को बड़े लोग सिविल सेवा या चिकित्सा अथवा इंजीनियरिंग अपनाने की सलाह देते थे या छात्र इन क्षेत्रों में रुचि रखते थे। आज युवा पीढ़ी शैक्षिक आयाम से परे देखने की कोशिश कर रही है। ये लोग अधिक पैसा कमाने की ओर ही आकर्षित नहीं होते, बल्कि निराश व्यक्तियों की मदद करना चाहते हैं और ग्रामीण विकास में भी रुचि रखते हैं।

एन जी.ओ. ऐसे सगठन हैं, जो विशिष्ट प्रयोजन से गठित किए गए हैं—अर्थात् उन्हें किसी कारण कोई मिशन पूरा करना है। ये संगठन विभिन्न निधि देनेवाली एजेंसियो से अपेक्षित धनराशि प्राप्त करते हैं; जैसे—बडे कॉरपोरेट हाउस, अतरराष्ट्रीय सगठन एवं सरकार। लक्ष्य-प्राप्ति में समुचित मार्केटिंग और संसाधन जुटाने संबंधी अभियान दो मूलभूत संगठनात्मक तत्त्व हैं।

इसीलिए एन.जी.ओ. कैरियर का अर्थ अनिवार्यतः सामाजिक कार्यकर्ता होना ही नहीं है। अनेक विभाग मिलकर किसी एन जी.ओ की रूपरेखा तैयार करते हैं। सामान्यतः एन जी ओ. में दो प्रमुख यूनिट्स होती है—(1) प्रशासनिक तथा (2) परियोजना। परियोजना यूनिट एन जी.ओ. द्वारा ली गई परियोजनाओ से संबधित कार्य करती है। उदाहरण के तौर पर, पर्यावरण सबंधी एन.जी.ओ प्रदूषण नियंत्रण अभियान के संबंध मे कार्य करता है, जबकि स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यशील एन जी ओ एड्स नियंत्रण अभियान की दिशा में कार्य कर सकता है।

भारत जैसे विकासशील देश मे सामाजिक कार्यकर्ता अनेक क्षेत्रों में से कोई

क्षेत्र चुन सकते है . पिछले कुछ वर्षों स अनक एन जा ओ विकास क क्षेत्र मे सामने आए हैं। भारत में विभिन्न प्रकार के एन जी ओ हैं। 'चाइल्ड रिलीफ एंड यू' (क्राई—CRY) एवं 'बटरफ्लाई' बच्चों के लिए कार्य करते हे; 'संजीवनी' सस्था मानसिक चुनौतियों का सामना करती है, 'वातावरण' एन जी ओ सेंटर फॉर साइस एड एन्वॉयरमेंट तथा संरक्षण पर्यावरणीय मुद्दो से संबधित है। आदिवासी क्षेत्रो मे एन जी ओ कार्य कर रहे है। सहेली, साक्षी ओर राही खासतौर पर महिलाओं की समस्याएँ निपटाती हैं।

सप्रति एन.जी ओ का कार्य अधिक व्यावसायिक तथा सस्थागत बन चुका है। अब वे दिन लद चुके हैं, जब सामाजिक कार्य व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर होता था या समाज के उत्थान एवं कल्याण के प्रति व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य माना जाता था। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र मे समाज के सामने अनेक समस्याओं पर विचार करते हुए एन जी ओ. क्षेत्र में आने के लिए इच्छुक व्यक्ति के सामने असंख्य क्षेत्र है। शिक्षण, शोध, परामर्श, मार्केटिंग, प्रबंधन, चिकित्सा आदि एन जी ओ. के अलग-अलग विभाग हैं। अत वकील, डॉक्टर, शोधकर्ता, मनोचिकित्सक विभिन्न योग्यतानुसार संबंधित एन जी.ओ. में शामिल हो सकते हैं। कुछ संगठन पुनर्वास तथा विकासोन्मुखी कार्य से भी जुड़े हैं, जेसे—सड़कें बनाना, बॉध बनाना आदि। इसलिए एन.जी.ओ मे तकनीकी दृष्टि से योग्यता प्राप्त कमी को पूरा कराने की आवश्यकता होती है।

एन जी ओ मे वेतन कार्य के स्तर, प्रकार तथा क्षेत्र पर निर्भर करता है। तथापि अतरराष्ट्रीय एन.जी ओ मे अधिक वेतन देते है। ये संगठन विश्व मे भ्रमण करने का अवसर देते हें, क्योकि इनके कार्यकर्ता विश्व के अलग-अलग भागों में जाकर कार्य करते है। सामाजिक कार्य दृढ़ इच्छा शक्तिवाले व्यक्ति ही कर सकते हैं, जो समाज के सुविधा-वंचित वर्गो के प्रति कल्याण-भाव रखते है।

अपराध-शास्त्र एवं सुधारात्मक प्रशासन (सी.सी ए), स्कूल कल्याण प्रशासन (एस.डब्ल्यू ए), चिकित्सा और मनोचिकित्सीय सामाजिक कार्य (एम पी एस डब्ल्यू.), परिवार और बाल कल्याण (एफ.सी डब्ल्यू), शहरी और ग्रामीण सामुदायिक विकास (यू.आर.सी.डी.), श्रम कल्याण, औद्योगिक संबंध एवं कार्मिक प्रबधन इसके विशेष क्षेत्र हैं।

निम्नलिखित विश्वविद्यालय इसके पाठ्यक्रम चलाते है। पात्रता 10+2 परीक्षा है।

ग्रामीण प्रबंधन

(Rural Management)

भारत की अधिकाश जनता ग्रामो में रहती है। भारत की वास्तविक तसवीर गाँवों मे प्रतिबिंबित होती है। वस्तुतः इसी अधि केंद्र से प्रगति का अभ्युदय होता है। नौवें दशक के दौरान इस क्षेत्र मे एक हजार आठ सौ तथा तीन हजार करोड़ रुपए के बीच अनुमानित निवेश किया गया था।

इस विकास क्षेत्र मे नौकरी के असख्य अवसर मौजूद हैं। इस क्षेत्र मे चुनौतियाँ है तथा साथ ही निम्नतम स्तर पर अर्थात् आधारभूत स्तर पर कार्य करने का मौका भी मिलता है। हम उन्हें समझ सकते है तथा देश के विकास में योगदान भी दे सकते हैं। विकास क्षेत्र में कार्य करके व्यक्ति को संतुष्टि मिलती है। यहाँ आप विकास-प्रक्रिया का अंतर्भूत भाग बनते है। इसके अलावा आपका मानवीय भावो तथा संस्कृति के साथ मपर्क स्थापित होता है और उत्कृष्ट अनुभव मिलते हैं।

इस क्षेत्र मे रोजगार की अनेक सभावनाएँ हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि यह क्षेत्र इतना व्यापक है कि किसी भी पृष्ठभूमिवाले लोग यहाँ आत्मसात् हो सकते है। इसलिए इस विकास क्षेत्र मे समाजशास्त्री, कृषि वैज्ञानिक, बैंकर्स, पत्रकार, संचार विशेषज्ञ, नृ-विज्ञानी, शिक्षाविद्, वकील, पर्यावरणविद्, माइक्रो जीव-विज्ञानी, आनुवंशिकी इंजीनियर आदि की जरूरत होती है। यह सूची अनत है और रोजगार की संभावनाएँ भी अनगिनत हैं। अनेक क्षेत्रो के विशेषज्ञ स्वयसेवियो के साथ मिलकर कार्य करते है, ताकि उपयुक्त नीतियाँ प्रतिपादित की जा सके, विशिष्ट समस्याओं का पता चल सके और व्यष्टि एवं समष्टि—दोनों स्तरों पर समस्याओं का सामना किया जा सके, जन चेतना तथा अभिमत सृजित किया जा सके। इस तरह निरंतर विकास प्रक्रिया चलती रहे। विकास के क्षेत्र मे विविध उप सेक्टर किसी एक या अन्य मुद्दे पर परस्पर अतिव्याप्त हो जाते हैं।

पर्यावरण अवक्रमण (degradation) सीधे देश के अनेक क्षेत्रो मे कृषि

परिपाटी से जुड़ा है अत क्षेत्राधिकार के अतर्गत वैज्ञानिको कृषि प्रबधको एव पर्यावरणविदों के बीच परस्पर संपर्क होना चाहिए। वनों की कटाई जैसे पर्यावरण अवक्रमण (degradation) का बाढ़ या अकाल रूप में प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यहीं से आपदा-प्रबंधकों का कार्य प्रारंभ होता है।

इस समस्या का हल वनीकरण है। वनीकरण की दिशा में सामाजिक कार्य बलों का मिलकर कार्य करना सर्वोत्तम हल है। यहाँ समाजशास्त्री सामाजिक व्यवस्था का आकलन करता है, ताकि यह जाना जा सके कि कहाँ पर संयुक्त कार्य बल तैयार किया जा सकता है। महिलाएँ उत्तम कोटि की वन-प्रबंधक हो सकती है। पर्यावरणीय कानून एवं अन्य प्रासंगिक कानूनो का भी महत्त्व हैं। सभी वनीकरण कार्यक्रमों के संबंध में पर्याप्त निवेश की जरूरत पडेगी, इसलिए बैंकर की भी जरूरत पड़ेगी।

भारत की अर्थव्यवस्था कृषि-प्रधान है, भले ही राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का हिस्सा कम हो चुका है। पाँचवें दशक में यह हिस्सा 50 प्रतिशत था, जबकि हाल ही के वर्षो में यह अनुपात घटकर 35 प्रतिशत तक ही रह गया है। लेकिन विनिर्माण क्षेत्र के समान ही यह क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण है।

कृषि व्यापक एवं विविधतापूर्ण उद्योग है। यहाँ युवा वर्ग के लिए असख्य रोजगार हैं। आजकल के वेब युग मे इस क्षेत्र के कैरियर को नजरअंदाज करना कठिन है। भारतीय अर्थव्यवस्था की शुरुआत से ही इस क्षेत्र में विकास की संभावनाओं में वृद्धि हुई है। यहाँ घरेलू और अतरराष्ट्रीय—दोनों स्तरों पर कृषि आधारित उत्पादों की भारी माँग मौजूद है। बढ़ते आयाम के कारण यहाँ प्रशिक्षित प्रबधकों की आवश्यकता है। इस क्षेत्र की सभावनाओ की पूर्ति के लिए अनुसंधान और विकास क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों का होना समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

अनेक लोग बागवानी, रेशम कीट उत्पादन, पुष्प उत्पादन जैसे इससे संबद्ध व्यवसाय में कार्यरत हैं। आकर्षक व्यवसाय होने के अलावा ये कृषि के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हिस्से भी हैं। कुछ वर्ष पहले तक आम धारणा थी कि खेती-बाड़ी या अन्य समतुल्य कार्यो के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की जरूरत नही है। तथापि बढ़ती स्पर्धा और उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रयोग के कारण इस क्षेत्र में रुचि रखनेवालो के लिए औपचारिक प्रशिक्षण लेना जरूरी हैं।

ग्रामीण प्रबंधन में निम्नलिखित दो सस्थान विशेष स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाते है—आई.आर.एम ए (ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनंद) गुजरात तथा चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार। ग्रामीण सेवाओं में स्नातक की

डिग्री के लिए ग्रामीण विज्ञान कॉलेज, वर्धा ग्रामीण संस्थान, श्री मौनी विद्यापीठ, गारगोटी, कोल्हापुर मे पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

आई आर.एम ए. ग्रामीण प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान है। एन.डी डी बी (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) की पहल पर तथा भारत सरकार, गुजरात सरकार ओर स्विस विकास निगम के सहयोग से सन् 1979 में इस बोर्ड की स्थापना की गई थी।

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता कम-से-कम 15 वर्ष की अवधि की शिक्षा सहित (10+2+3) स्नातक डिग्री है और सभी विषयों में कुल 50 प्रतिशत (अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए 45 प्रतिशत) अंक होने चाहिए। आई आर.एम.ए सहकारिताओं के कर्मचारियों, गैर-सरकारी संगठनो, सरकारी ग्रामीण विकास एजेंसियों तथा शीर्षस्थ ग्रामीण विकास वित्त पोषण संबंधी संगटनों को प्रशिक्षण लेने तथा अपने कर्मचारियो को प्रशिक्षण के लिए प्रायोजित करने की दिशा मे प्रोत्साहित करता है। इस परीक्षा मे चार खंड होते हैं—अंग्रेजी बोधात्मक ज्ञान, परिमाणात्मक योग्यता, विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति तथा सामाजिक मुद्दों की जानकारी, BIRD (बैंकर्स इंस्टीच्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट) ग्रामीण विकास बैंकिग क्षेत्र में प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा परामर्श संगठन है। यह स्वायत्त संस्था है तथा NABARD द्वारा इसे निधि एव संवर्धन मिलता है। BIRD ग्रामीण विकास तथा विकास बैंकिंग से जुड़े बैकों, वित्तीय संस्थानों तथा अन्य एजेसियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है।

हरित क्राति के कारण ग्रामीण क्षेत्रो मे रोजगार संबधी अनेक अवसर उत्पन्न हुए है। आप सरकारी एजेंसियों, राज्य कृषि विभागों, बैंकों तथा विभिन्न ट्रेड सगठनो मे लाभप्रद रोजगार पा सकते हैं। प्रत्येक राज्य का कृषि विभाग कृषि, फसलो, बीजों और उत्पादनों के संबंध में विकास योजनाएँ चलाता है। राज्य लोक सेवा आयोग के माध्यम से इन पदों पर भरती की जाती है। आई.मी ए आर (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्) तथा बागवानी अनुसंधान सस्थान भी विशेषज्ञता प्राप्त तथा अनुसंधान कार्य की पृष्ठभूमिवाले लोगों को नियुक्त करते हैं। ग्रामीण बैंकिग विभागोंवाले राष्ट्रीयकृत बैंक तथा NABARD जैसे ग्रामीण बैंक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) भी अपने यहाँ व्यावसायिक रखते हैं। अनेक कॉरपोरेट हाउस भी खाद्य प्रसस्करण या खाद्य उत्पादों के विपणन में प्रवेश कर चुके हैं। ये कॉरपोरेट हाउस शुरू-शुरू में छह हजार से आठ हजार रुपए तक वेतन देते है। स्व-रोजगार भी अन्य विकल्प हैं, लेकिन भूमि ओर आधारभूत सरचना की दृष्टि मे काफी पूँजी निवेश की जरूरत पड़ती है। □

ग्रामीण विकास

(Rural Development)

ग्रामीण प्रबंधन के अलावा पर्यावरण, स्वास्थ्य, महिला जगत्, शहरी शासन, माइक्रो उद्यम, संचार आदि के क्षेत्र में भी कार्य किया जा सकता है।

संचार या संप्रेषण

ग्रामीण विकास का मूल भाग संचार या सप्रेषण क्षेत्र में निहित है। जिस प्रकार से कोई विचार व्यक्त किया जाता है, उसके अनुसार परियोजना तथा समूची विकास प्रक्रिया बनती-बिगड़ती है। इस प्रकार संप्रेषण व्यवस्था विकास प्रक्रिया मे सर्वाधिक चुनौती भरा क्षेत्र नही है, बल्कि यह सबसे ज्यादा संवेदनशील है। यह क्षेत्र असीम है। कठपुतली शो, नाटक, नृत्य तथा संगीत जैसे पारंपरिक तरीके और संप्रेषण/संचार के आधुनिक साधनो से पूरी तसवीर सामने आती है। इस कार्य मे चुनौती तब उत्पन्न होती है जब आपको बोध स्तर पर ग्रामीणों के साथ सप्रेषण करना होता है। आप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कारकों से बँधे होते हैं। संप्रेषण किसी क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन है। इसे हम 'साधन' के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। आप ग्रामीण विकास में विशेषज्ञता प्राप्त पत्रकार के रूप मे या गैर-सरकारी संगठन के मीडिया विभाग में सक्षिप्त समाचार-पत्र निकालने, सूचना संबंधी पैफ्लेट एव अन्य साहित्य सामग्री तैयार करने का कार्य कर सकते हैं, ताकि जन-साधारण मे जागरूकता लाई जा सके।

महिला जगत्

देश की आबादी का एक-तिहाई हिस्सा महिलाएँ हैं। इनमें से आधी सख्या ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ी है। यद्यपि हम 'वसुधैव कुटुंबकम्' की सकल्पना की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे है, लेकिन तब भी महिलाओ की स्थिति शोचनीय है। सामाजिक तौर पर इनके अधिकार सीमित हैं तथा ये अनेक सामाजिक बंधनो मे

जकड़ा है पूरे विश्व मे महिला जगत् की प्रगति बहुत धीमी है उन्हे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। इससे इस क्षेत्र में कार्य करना और भी अधिक चुनौती भरा है। महिलाओं से संबंधित मुद्दों के बारे में आम धारणा मे बदलाव आया है। ये मुद्दे विकासात्मक परियोजनाओं का आंतरिक पक्ष हैं। कुछ क्षेत्रो मे महिलाएँ सशक्त हुई हैं। इस क्षेत्र में अनेक गैर-सरकारी सगठन कार्य कर रहे है। अनेक दाता एजेंसियों ने अलग डिवीजन बनाए हैं; जैसे—एन.सी.ई.आर टी । आप महिलाओं के प्रति सुग्राहिता (gender sensifisation), प्रचार, विधि, अनुसंधान, परामर्श, यौन-शिक्षा आदि क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं। इस कार्य के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है।

नेटवर्क

यदि जरूरी हो तो विकास-क्षेत्र के गैर-सरकारी संगठनों व अन्य एजेंसियो को सरकारी नीति के प्रतिपादन तथा आलोचना के बारे में जनमत तैयार करना होता है। इसलिए अन्य समतुल्य संगठनो के साथ नेटवर्क तैयार करने का कार्य विशेष क्षेत्र बन जाता है। ऐसे संगठन का मूल प्रयोजन नीति निर्माता एजेंसियों पर दबाव डालने एव प्रचार करनेवाले एजेटों के रूप मे कार्य करने के लिए सयुक्त मोरचा तैयार करना है।

पर्यावरण

यदि व्यक्ति की इस क्षेत्र में रुचि है कि लोग पर्यावरण के प्रति किस प्रकार बरताव करते हैं, तो यह क्षेत्र उस व्यक्ति के लिए काफी रोचक हो सकता है। पर्यावरण के क्षेत्र में काफी कुछ किया जा सकता है। हालाँकि पर्यावरण के क्षेत्र मे व्यावसायिक का कार्य सगठन के अनुसार अलग-अलग होता है, लेकिन इस कार्य में गोण डाटा संग्रह, अनुसंधान, नीति-निरूपण, प्रचार, परियोजनाओं के विधिक निरूपण के माध्यम से कानूनी काररवाई एवं कार्यान्वयन, संसाधन प्रबंधन, जागरूकता उत्पन्न करना और प्रमुख डाटा संग्रह शामिल है।

पर्यावरण से संबंधित ऐसे अनेक पाठ्यक्रम देश में चलाए जाते हैं, जहाँ इस क्षेत्र में औपचारिक प्रशिक्षण लिया जा सकता है। आप शोधकर्ता, वकील, कम्युनिकेटर आदि के रूप में सी.एस.ई. (विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र), डेवलपमेंट आल्टरनेटिव वातोवरन जैसे गैर-सरकारी संगठनों तथा (TERI) (टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीच्यूट) जैसी अनुसधान सस्थाओं, सरकारी एजेंसियों और विश्व प्रकृति निधि तथा संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनो में कार्य कर सकते हैं। अनेक कंपनियों में विशेष सैल

ें, जो पर्यावरण पर केंद्रित हैं। एसोचैम, फिक्की, सी II ऐसे प्रमुख कॉरपोरेट हाउस हैं, जहाँ पर्यावरण सैल हैं। अनेक गैर–सरकारी सगठन ग्रामीण विकास के क्षेत्र में युवा स्वयंसेवियों के प्रशिक्षण में कार्यरत है। सी.एस ई. में स्वयंसेवियों का कार्यक्रम चलाया जाता है, जहाँ स्वयंसेवी शोधकर्ताओं तथा अन्य व्यावसायिकों के साथ मिलकर कार्य करते हैं।

आप पर्यावरण विज्ञान मे अध्ययन के बाद सघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय वन सेवा परीक्षा में बैठ सकते हैं।

इस क्षेत्र मे कार्य कर रहे अधिकांश सगठन उत्तम संप्रेषण कौशल वाले स्नातकों को प्राथमिकता देते हैं। गैर–सरकारी संगठन में शुरू–शुरू में पाँच हजार से सात हजार रुपए तक पारिश्रमिक मिल जाता है। परियोजनाओं के आधार पर बाद मे अच्छा वेतन मिल सकता है। कॉरपोरेट क्षेत्र अधिक पारिश्रमिक देता है। ग्रामीण प्रबंधक को शुरू में थोडा कम पारिश्रमिक मिलता है। जहाँ तक पारिश्रमिक की सीमा का संबंध है, यह अनंत है।

विकास क्षेत्र में निम्नलिखित संगठन कार्यरत है—

1. टैरी, दरबारी सेठ ब्लॉक, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली।
2. डब्ल्यू.पी.एस आई. (वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन सोसाइटी ऑफ इंडिया), ई–71, ग्रेटर कैलाश 1, नई दिल्ली।
3. सी एस ई. 41 तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एशिया, नई दिल्ली।
4. सी ई.ई (सेंटर फॉर एन्वायरमेंटल एजुकेशन), साउथ रीजनल सैल, कमला मेंशन, 143, इन्फेंटरी रोड, बंगलौर।
5. चेतना, लीलावती बेन, लालभाई बँगला, सिविल कैंप रोड, शाहीबाग, अहमदाबाद।
6. अवार्ड, पहली मंजिल, इंस्टीट्यूशनल एरिया, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।
7 एस.पी डब्ल्यू.डी, श्रीराम भारतीय कला केंद्र बिल्डिंग, कॉपरनिकस मार्ग, नई दिल्ली।
8. मिरिडा, नं 2, सर्विस रोड, डॉमलर ले आउट, बगलौर।
9 जागौरी, सी-64 साउथ एक्सटेंशन II, नई दिल्ली।
10 ए.एफ.पी आर ओ. 25/1 ए, इंस्टीट्यूशनल एरिया, डी ब्लॉक, पखा रोड, जनकपुरी, दिल्ली।

□

चीनी प्रौद्योगिकी
(Sugar Technology)

चीनी विनिर्माण अत्यधिक विशेषज्ञता प्राप्त क्षेत्र है, जिसमें विभिन्न जैव-रासायनिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होने के अलावा भारत में चीनी उद्योग का कृषि उद्योग क्षेत्र में दूसरा स्थान है तथा यह सबसे बड़ा नियोक्ता उद्योग है।

चीनी उद्योग मे हाल ही में नाटकीय ढंग से परिवर्तन आया है। पूरे विश्व में चीनी का बारह करोड़ मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन होता है। विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी चीनी के विभिन्न ग्रेड तैयार करने में इस्तेमाल की जाती हैं। चीनी उत्पादन की तकनीकों का विस्तृत अध्ययन, चीनी रसायन, चीनी उबालने तथा खमीर उठाने की समझ-बूझ—ये सभी बाते चीनी उद्योग के अंतर्गत आती है। सफेद पिसी हुई चीनी से लेकर चाशनी तक और ब्राउन शुगर के मुक्त प्रवाह से लेकर चिपचिपी ब्राउन शुगर तक के सफेद और ब्राउन चीनी के विभिन्न प्रकार इसके अंतर्गत आते है।

इस क्षेत्र में शामिल लोगों का कार्य अनुसंधान द्वारा सर्वोत्तम ढंग से परिभाषित होता है। यह साधारण अनुसंधान कार्य नहीं है, क्योंकि चीनी विशेषज्ञ चीनी एवं इसके सहायक उद्योगो के कल्याणार्थ अनुसंधान कार्य करते हैं। यह कार्य मुख्यत विश्लेषणात्मक प्रयोगशालाओं में किया जाता है। ये प्रयोगशालाएँ अनुसंधान के लिए प्लेटफॉर्म होती है। इस प्रक्रिया में चीनी तकनीशियन, इंजीनियर एवं कृषि संबंधी विशेषज्ञ शामिल होते हैं। कृषि विशेषज्ञ आधारिक स्तर पर कार्य करते है। ये गन्ने की फसल पर कार्य करते हैं तथा यह सुनिश्चित करना उनकी ड्यूटी है कि फसल के दौरान इस उद्योग को नुकसान पहुँचानेवाली कोई विसंगति उत्पन्न न हो। चीनी तकनीशियन बुनियादी अनुसंधान संबंधी औपचारिकताओं के अलावा गुणवत्ता नियंत्रण संबंधी कार्य भी करते हैं। चीनी उत्पादन संयंत्र में सभी पर्यवेक्षी कार्य इनके द्वारा

किए जाते है। इनके पास इस प्रक्रिया में शामिल समस्त पहलुओं की संक्षिप्त जानकारी होती है, लेकिन किसी भी क्षेत्र मे विशेषज्ञता हासिल नहीं होती। वस्तुत यह कहना उचित होगा कि चीनी विशेषज्ञ चीनी उद्योग के समस्त ट्रेड के कर्ता-धर्ता होते है, लेकिन दुर्भाग्यवश वे किसी एक क्षेत्र के मास्टर नहीं होते। चीनी इजीनियर चीनी संयंत्र के यांत्रिक और वैद्युत् पहलुओं से संबंधित कार्य करते है। जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है, इस क्षेत्र मे चीनी का उत्पादन किया जाता है। चीनी इजीनियर की जिम्मेदारी है कि वे संयंत्र डिजाइन, संयंत्र उत्पादन और संयत्र प्रक्रिया का आरंभ करने के साथ-साथ प्रचालन कार्य की भी देखभाल करे।

चीनी प्रौद्योगिकी मे कैरियर बनाने के लिए आपके पास शुद्ध विज्ञान में स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। 10+2 स्तर पर भौतिकी, रसायन और गणित विषय होने चाहिए। आप विभिन्न विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे चीनी प्रौद्योगिकी में डिग्री या डिप्लोमाधारक भी हो सकते हैं। पंजाब और मेरठ विश्वविद्यालयो मे चीनी प्रौद्योगिकी में तीन वर्ष का डिग्री पाठ्यक्रम कराया जाता है। शेष सभी विश्वविद्यालयों में तीन से चार वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम कराया जाता है।

चीनी प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए आपकी भौतिकी, रसायन तथा गणित विषयों मे गहन रुचि होनी चाहिए। चीनी प्रौद्योगिकी मात्र चीनी उत्पादन से जुड़ी है। अत. यह स्पष्ट है कि चीनी के उत्पादन के लिए चीनी रसायन शास्त्र की विस्तृत समझ होनी जरूरी है। यह कार्बनिक रसायन की अनिवार्य शाखा है।

किसी अन्य क्षेत्र के समान इस क्षेत्र में भी अच्छा वेतन मिलता है। फैक्टरी प्रशिक्षणार्थी के रूप में व्यक्ति अच्छी धनराशि पा सकता है। चीनी प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा धारक चार हजार से पॉच हजार रुपए के बीच कमा सकता है। चीनी इजीनियरिंग में डिग्री धारक पाँच हजार से लेकर साढ़े सात हजार रुपए तक कमा सकता है। व्यावसायिक उन्नति के साथ-साथ वेतन भी बढ़ता जाता है।

चीनी प्रौद्योगिकी के अनेक क्षेत्र हैं। आप मुख्यत चीनी मिलों, अल्कोहलिक तथा गैर-अल्कोहलिक बेवेरीज उत्पादन कपनियों मे नौकरी पा सकते हैं। इफ्को तथा एन.एफ सी.एस एफ. (राष्ट्रीय को-ऑपरेटिव चीनी फैक्टरी परिसघ) जैसे विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी चीनी उपक्रमो में नौकरी के अवसर मौजूद है।

विभिन्न चीनी प्रौद्योगिकी संस्थानों में अनेक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। तथापि सर्वाधिक प्रचलित पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं—

1. चीनी प्रौद्योगिकी।
2 औद्योगिकीय किण्वन और अल्कोहल प्रौद्योगिकी।

3. चीनी इंजीनियरिंग डिप्लोमा।
4 चीनी इंस्ट्रूमेंटेशन प्रौद्योगिकी।
5. पर्यावरणीय विज्ञान।
6 लुगदी एव कागज प्रौद्योगिकी।
7 चीनी क्वथन (ब्वॉयलिंग) प्रमाण-पत्र।

दसवीं कक्षा पास करने के बाद छात्र यांत्रिक या वैद्युत् इंजीनियरिंग मे डिप्लोमा कर सकते हैं या भौतिकी, रसायन, गणित के साथ बारहवी कक्षा पास करने के बाद भी यह डिप्लोमा किया जा सकता है। किसी चीनी फैक्टरी मे सुपरवाइजर के रूप में कार्य करने के लिए आपके पास दो वर्ष का या सहायक प्रबंधक के रूप में कार्य करने का एक वर्ष का अनुभव होना चाहिए। 10+2 स्तर पर परीक्षा पास करने के बाद आप चीनी उद्योग में डिप्लोमा कर सकते हैं या भौतिकी, रसायन शास्त्र तथा गणित विषयों के साथ बी एस-सी. कर सकते हैं अथवा यांत्रिक या वैद्युत् इंजीनियरिंग में बी.ई., बी.टेक. कर सकते हैं। उत्तरवर्ती दो मामलों में आप चीनी प्रौद्योगिकी तथा चीनी इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर सकते हैं।



जन-संपर्क

(Public Relations)

जन-संपर्क चुनौतियों से भरा कैरियर है। दूसरे शब्दों में, यह छवि बनाने का कार्य है। हममें से हर व्यक्ति अपने तरीके से परिवार, मित्रगण, अध्यापकों तथा सहकर्मियों के साथ जन-संपर्क के नियम लागू करता है। व्यावसायिक दृष्टि से जन-संपर्क प्रबंधन का ऐसा साधन है, जिससे कॉरपोरेट, संगठन, सरकार तथा कुछ सीमा तक व्यक्ति की छवि बनाने में सहायता मिलती है।

यहाँ तक कि राज्य सरकारों ने भी जनमानस पर अनुकूल छाप छोड़ने के लिए जन-संपर्क कार्यों को महत्त्व देना आरभ कर दिया है। आंध्र प्रदेश की राज्य सरकार इसका उदाहरण है। काफी हद तक जन-संपर्क कार्यों से ही इस राज्य में विदेशी निवेश को बढ़ावा मिला है।

जन-संपर्क के माध्यम से संगठन निर्दिष्ट वर्ग से संपर्क बनाए रख सकता है। इस वर्ग में ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जो उसके उत्पाद खरीदते हैं या सेवाओं का लाभ उठाते हैं, या जो संगठन में निवेश करते हैं और यहाँ तक कि इस वर्ग में उस सगठन के कर्मचारी भी हो सकते हैं। सन् 1991 के बाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश तथा व्यवसायीकरण की प्रवृत्ति के साथ भारत में जन-संपर्क को बढावा मिलने लगा है। भावी स्पर्धा के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बराबरी करने के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्र के संगठनों मे भी जन-सपर्क कार्य-क्षेत्र को महत्त्व दिया जाने लगा है। सामाजिक वैश्वीकरण ने जन-संपर्क का क्षेत्र और अधिक व्यापक बना दिया है। आज जीवन के हर क्षेत्र में जन-संपर्क को महत्त्व दिया जाने लगा है। इस कार्य-क्षेत्र में कंपनी से लेकर उत्पाद, जनता, परियोजनाओं या विचारो तक सबकुछ शामिल है। जन-संपर्क कोर प्रबंधन का कार्य है तथा अनेक वर्षो से यह अनुकूल सक्रिय भूमिका निभाता आ रहा है।

जन-संपर्क का प्राय विज्ञापन के साथ भ्रम हो जाता है, लेकिन वस्तुतः यह

सप्रेषण की विशिष्ट शाखा है, इसमे लोगा को स'गठन के क्रिया कलापो या विचारधारा, उत्पाद, विचार या व्यक्ति को सूचना देने से संबंधित कार्य शामिल हे। कुछ कंपनियों में जन-संपर्क विभाग विद्यमान हैं, जबकि कुछ कंपनियाँ इस कार्य हेतु विशेषज्ञता प्राप्त परामर्शदाता या एजेंसियॉ नियुक्त करती हैं।

इस कैरियर का सार तत्त्व यही है कि इसमें लोगों के साथ सपर्क स्थापित करना और सगटन तथा जनता को परस्पर निकट लाना होता है। लोकप्रिय छवि बनाने के अलावा जन-संपर्क संगठन और इसके कार्य निष्पादन को आकार-व्यवहार देने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुसीबत की घड़ी में संगठन जन-संपर्क के सलाहकार की सलाह और सेवाएँ लेता है। अतः जन-संपर्क कार्य से जुड़े व्यक्ति के पास दबाव के समय विश्लेषणात्मक ढग से सोचने की क्षमता, आवश्यक सूचना हासिल करने तथा व्यावहारिक एवं प्रभावी हल ढूँढ़ निकालने की दक्षता होनी चाहिए। जन-सपर्क कार्य के लिए अन्य जरूरी गुण इस प्रकार हैं—वर्तमान समस्याओं को सुलझाने की कल्पना-शक्ति तथा भावी समस्याओं के लिए पूर्वानुमान कौशल, लोगो तथा समूह के साथ आमने-सामने सपर्क स्थापित करने के लिए लेखन क्षमता, आत्मविश्वास, संप्रेपण कौशल, अन्य लोगों के प्रति संवेदनशीलता, कूटनीति और दूसरो के स्थान पर स्वयं होने की कल्पना करने की सामान्य से अधिक क्षमता। जन-संपर्क क्षेत्र म सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति में संगठन तथा योजना बनाने की क्षमता एव अन्य व्यवसायो के समान आवश्यक प्रबंधकीय कौशल होने चाहिए।

चूँकि इस व्यवसाय में ग्राहको के साथ संबंध स्थापित करने की कार्यनीति का कार्यान्वयन शामिल है, अतः जन-संपर्क कार्यपालको के लिए जरूरी है कि उनमे विभिन्न लोगों के साथ तालमेल बैठाने का गुण होना चाहिए। उनमें लचीलापन तथा दबाव के बावजूद कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए।

प्रभावशाली जन-संपर्क कार्य-क्षेत्र मे अत्यधिक श्रम करना पड़ता है; क्योंकि किसी की राय बदलना कोई हँसी-खेल नहीं है। जब कंपनी या संगठन मे कुछ गलत घटित होता है, तब जन-संपर्क विभाग ही नकारात्मक प्रचार पर नियत्रण रखकर अनुकूल छवि बनाने की कोशिश करता है। यह कार्य चुनौती भरा हे।

संक्षेप में, सफल जन-सपर्क व्यवसायी में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

1. उत्तम संप्रेषण कौशल,
2. विनम्रता और शिष्टाचार,

3 मिलनसार और शांत स्वभाव,

4 चतुर एवं सूझ-बूझवाला,

5 दबाव के बावजूद कार्य करने की क्षमता,

6 सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं में रुचि,

7. लोगों से संपर्क रखना तथा संगठन की उत्तम क्षमता, और

8 आकर्षक व्यक्तित्व।

चूँकि जन-सपर्क में अनेक प्रकार के कार्य आते हैं, अतः इस क्षेत्र में योग्यताओं की कोई 'आदर्श' सूची नही है। अधिकाश लोग सोचते हैं कि जन-सपर्क कार्यपालक अत्यधिक मुखर एवं कल्पनाशील व्यक्ति होते हैं। लेकिन जन-सपर्क कार्यपालक के संबध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एकमात्र योग्यता यही है कि दबाव में भी निर्णय लेने की क्षमता हो। जन-संपर्क में व्यावसायिक डिग्री प्राप्त करना जरूरी नही है। लेकिन पहली कामयाबी सुनिश्चित करने में इस डिग्री से मदद मिलती है। जन-संपर्क अधिकारी के लिए अनिवार्य योग्यता किसी भी विषय मे स्नातक की डिग्री है। अनेक संस्थान जन-संपर्क स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहे हैं। इनमें से कुछ पाठ्यक्रमों में पत्रकारिता, विज्ञापन या जन-सचार शामिल है। कंप्यूटर साक्षरता शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है।

जन-सपर्क की दुनिया में स्थान बनाने के लिए आप संगठन के जन-संपर्क विभाग या प्रोफेशनल फर्म के जन-सपर्क विभाग में शामिल हो सकते हैं, जो ग्राहकों को जन-संपर्क सेवाएँ प्रदान करता है। ऐसी एजेंसियाँ संविदात्मक आधार पर कार्य करती हे। प्रारंभिक स्तर पर व्यक्ति को प्रशिक्षणार्थी के रूप में रखा जाता हे। प्रारंभ में जन-संपर्क के क्षेत्र में संगठन में से ही प्रशिक्षणार्थी की भरती की जाती है। अन्य विकल्प स्वयं परामर्श सेवा (कंसल्टेंसी) प्रदान करना है, बशर्ते व्यक्ति निस्संकोची ओर साहसी हो तथा मीडिया के साथ उसके संपर्क हों। कैरियर की दृष्टि से सरकारी नौकरी सुरक्षित रहती है। लेकिन जन-संपर्क से जुड़ी वास्तविक चुनौती गैर-सरकारी क्षेत्र में है।

जन-संपर्क आज के समय का ऊँचे रुतबेवाला व्यवसाय है। जन-संपर्क व्यवसायी (व्यावसायिक) आज प्रबंधन में शीर्ष पदों पर आसीन हैं। आज यह क्षेत्र समाज का केंद्रबिंदु है। जन-सपर्क प्रशिक्षणार्थी का प्रारंभ मे वेतन पाँच हजार रुपए से सात हजार रुपए के बीच प्रति माह होता है। यों वेतन किसी संगठन के स्वरूप पर निर्भर करता है। वरिष्ठ व्यवसायी बारह हजार रुपए से पच्चीस हजार रुपए के बीच कहीं भी, किसी भी सगठन में वेतन पा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र में जन-

संपर्क अधिकारी का वेतन संगठन के वेतन की संरचना या विशिष्ट स्तर पर अधिकारी के लिए निर्धारित सरकारी वेतनमान से निर्धारित किया जाता है। सामान्यतया शुरू में वेतन की राशि पाँच हजार रुपए प्रति माह होती है, जो आगे चलकर बीस हजार रुपए तक बढ़ सकती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा कॉरपोरेट में अधिक वेतन दिया जाता है।

जन-संपर्क कार्यालय व्यस्त स्थल होता है। कार्य का समय अनियमित होता है तथा बार-बार व्यवधान आता है। कनिष्ठ कर्मचारी को प्रेस तथा आम जनता द्वारा माँगी गई सूचना का जवाब फोन पर देना पड़ता है। निमंत्रण सूची से संबंधित कार्य करना होता है, प्रेस कॉन्फ्रेंस के विस्तृत ब्योरे तैयार करने पड़ते हैं, आगंतुकों तथा ग्राहकों के साथ-साथ चलना पड़ता है, शोध कार्य में सहायता करनी पड़ती है, विवरणिका (Brochure) लिखनी होती है, वह संपादन कार्यालय में प्रेस विज्ञप्ति पहुँचाता है तथा मीडिया की वितरण-सूची संकलित करता है।

इसके अतिरिक्त वह भावी बैठक के संबंध में प्रबंधन को संक्षिप्त जानकारी देता है; रिपोर्ट, भाषण, प्रस्तुतीकरण तथा पत्र-लेखन, शोध, केस-हिस्ट्री लिखने में सहायता देता है। डिस्पले तथा अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री, प्रूफ-शोधन कॉपी तैयार करने में सहायता देता है, प्रकाशनार्थ फोटोग्राफ चुनता है, अवकाश तथा अन्य अवसरों की व्यवस्था करता है, सर्वेक्षण कराता है, प्रश्नावलियों की तालिका तैयार करता है तथा शब्दांकन और मुद्रण व्यवस्थापकों के साथ मिलकर कार्य करता है। जन-संपर्क के कार्य निश्चित अवधि के भीतर संपन्न किए जाते हैं।

ऐसी अत्यधिक दबावपूर्ण स्थितियों में नौ से पाँच बजे तक की निर्धारित समय सीमा लागू नहीं होती है। जन-संपर्क कार्यपालक लंबे समय तक डेस्क पर कार्य नहीं करते। उन्हें बैठकें, कारोबार-लंच, सामुदायिक कार्य (समारोह), यात्रा संबंधी जिम्मेदारी, विशेष लिखित एवं मौखिक टिप्पणियाँ तथा आपत्काल के समय अकसर लंबे समय तक चलनेवाले अनिर्धारित कार्य करने पड़ते हैं। कार्यक्रम संपन्न होने के बाद जन-संपर्क व्यवसायी इसके परिणामों का अध्ययन करता है तथा कार्यक्रम की योजना, कार्यान्वयन की क्षमता तथा प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।

निम्नलिखित संस्थान जन-संपर्क पाठ्यक्रम चलाते हैं—

1. भारतीय जन-संचार संस्थान (IIMC), अरुणा आसफ अली मार्ग, जे एन यू कैंपस, नई दिल्ली।
2. जेवियर संचार संस्थान, सेंट जेवियर कॉलेज कैंपस, बिल्डिंग नं 3, पहला तल; महापालिका मार्ग, मुंबई।

3 मुद्रा सचार सस्थान, अहमदाबाद।

4 भारतीय विद्या भवन (भारत की सभी शाखाएँ)।

5 जन-सचार रिसर्च केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, ओखला, नई दिल्ली-1

6 वाई.एम सी.ए जन माध्यम अध्ययन, जयसिंह मार्ग, नई दिल्ली।

7 सेंट जेवियर सचार कॉलेज, मुबई।

8 सिंबीयोसिस इंस्टीच्यूट ऑफ जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन, पुणे।

9 यूनिट फॉर मीडिया एड कम्युनिकेशन, टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई।

10 एमिटी स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन, दिल्ली।



ज्योतिष विद्या

(Astrology)

आमतौर पर लोग ज्योतिष विद्या को संदेह की दृष्टि से देखते हैं और काफी बडी सख्या में लोग इस विद्या में विश्वास भी नहीं रखते। लेकिन ज्योतिष विद्या ज्ञान की एक रोचक विद्या है। रोम, चीन, भारत, मिस्र और पश्चिम एशिया की प्राचीन कालीन विज्ञान की यह शाखा धीरे-धीरे पूरे विश्व मे फैल गई।

ज्योतिष विद्या मात्र राशि-नक्षत्र का ही विषय नहीं है, बल्कि इसमें ग्रहों (सूर्य और चंद्र सहित) के बीच परस्पर प्रभाव तथा इनके लक्षणों का अध्ययन भी किया जाता है। इसमें ग्रहो के बीच संबंधों एवं पारस्परिक क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है। पत्र-पत्रिकाओ तथा समाचार-पत्रों मे बताया गया भविष्य एवं नक्षत्र और ग्रहो की स्थिति इसका अश मात्र है। ज्योतिष शास्त्र अनुसंधान का व्यापक और गूढ विषय है। सभवत. मानव को सबसे प्राचीन नक्षत्रों का ज्ञान है। इसका मानव के इतिहास पर गहरा असर पड़ा है। इसे सीखना आसान है, लेकिन इस विद्या में निष्णात होने मे पूरा जीवन लग जाता है।

ज्योतिष विज्ञान ब्रह्मांड के तत्त्वों, उनकी पारस्परिक क्रियाओं से संबंधित है। इसमें यह जानकारी दी जाती है कि ये हमें कैसे प्रभावित करते हैं तथा हमारे चारों ओर ससार पर इनका प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। सामान्यत: ज्योतिष विद्या रहस्य से जुडी है और इसे भविष्य-सूचक साधन माध्यम के रूप मे इस्तेमाल किया जाता है, किंतु वस्तुत: यह दर्शनशास्त्र हे, जिसमें आपके जीवन की ऊर्जा तथा इसकी चुनौतियों और सभावनाओं को स्पष्ट किया जाता है। ज्योतिष विद्या के अध्ययन में इस विषय से सबधित प्राचीन और आधुनिक साहित्य सागर की अथाह गहराइयों में उतरकर शोध किया जाता है। यहाँ हजारों जन्म-कुंडलियों का अध्ययन किया जाता है।

आधुनिक ज्योतिष विद्या बदल चुकी है। अब नए ग्रहों की भी खोज हो चुकी है। सबसे पहले सन् 1781 में यूरेनस तथा बाद में नेप्च्यून और प्लूटो का पता चला।

इसके अलावा चार दोहरी ऊर्जावाले उल्का पिंडो (asterolds) की भी जानकारी मिली है।

ज्योतिष विद्या के विभिन्न वर्ग है—चिकित्सा, व्यवसाय एवं स्टॉक मार्केट। प्रायः ज्योतिष विद्या का स्वास्थ्य या वित्तीय कारणों से उपयोग किया जाता है। 'मौसम ज्योतिष' भी कुछ स्थानो में प्रचलित है, जबकि 'सांसारिक ज्योतिष' राजनीति एवं विश्व की घटनाओ से जुडा है। 'वैकल्पिक ज्योतिष' में अनुकूल समय या विवाह, व्यवसाय शुरू करने, नई नौकरी आदि जैसे प्रश्न पूछे जाते है। 'एक घंटे (होरा) सबधी ज्योतिष' में विशिष्ट समय, क्षण-पल आदि के आधार पर प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है। जो लोगों का विश्लेषण करना चाहते हैं और प्रशंसा पाना चाहते है, उनके लिए 'जन्म संबंधी ज्योतिष' उत्तम है। निश्चित रूप मे यह ज्योतिष विद्या की लोकप्रिय शाखा है। इसमें जन्म के समय और स्थान के आधार पर लोगों का विश्लेषण किया जाता है।

कुछ लोग अपनी परख शक्ति से लोगो का मार्गदर्शन करते हैं। ज्योतिष विद्या ऐसे ही लोगो का कारोबार है। प्राचीन काल में ज्योतिषियो ने निरंतर अध्ययन से कतिपय ज्योतिष संबंधी नियम-सिद्धांत तैयार किए है। ये सिद्धात अनगिनत जन्म-कुडलियों के अध्ययन के आधार पर तैयार किए गए हैं। इस विद्या को ऐसे विज्ञान के रूप में भी परिभाषित किया गया है, जिसके माध्यम से ज्योतिषविद् जन्मपत्री के हिसाब से व्यक्ति को उसका भविष्य बताता है। व्यक्ति की लंबे समय से चली आ रही समस्याओं का समाधान निकालना ज्योतिषी कार्य है, ताकि व्यक्ति पर पड़नेवाले बुरे ग्रहों का प्रभाव कम किया जा सके। इस विद्या में व्यक्ति की जन्मपत्री बनाने से लेकर उसके जन्म के समय ग्रह की स्थितियों के अनुसार शुभ या अशुभ की जानकारी देने तक सभी कार्य शामिल हैं।

सफल ज्योतिषी बनने के लिए आपको इस विषय से गहराई से जुड़ना होगा तथा आपको अपने कार्य में पूरा विश्वास होना चाहिए। गणित का ज्ञान, खगोल तथा भूगोल का ज्ञान और आस्तिक होना जरूरी है। ज्ञान के साथ कठोर श्रम (कर्म)—ये दोनों बातें प्रतिष्ठित ज्योतिषी के लिए आवश्यक हैं।

इस व्यवसाय से वित्तीय लाभ काफी मिलता है। निजी प्रैक्टिस से व्यक्ति दस हजार रुपए से तीस हजार रुपए प्रतिमास तक कमा सकता है। उसकी आमदनी विश्वसनीयता, ज्ञान और उसकी ख्याति पर निर्भर करती है। आत्म-संतुष्टि होना जरूरी है। इस व्यवसाय मे इस गुण की कमी दिखाई देती है। विशेष तौर पर यह गुण उस समय आवश्यक होता है, जब व्यक्ति मे पूरी लगन हो। इस व्यवसाय मे

दस हजार रुपए प्रति मास वित्तीय लाभ मिलता है, बशर्ते आप अच्छी तरह से प्रशिक्षित हों।

ज्योतिष संस्थान मे प्रवेश के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता 10+2 है। आयु की कोई सीमा नहीं है। व्यावसायिक बनने के लिए आपके पास 'ज्योतिष विशारद' की डिग्री होनी चाहिए। भारतीय ज्योतिष शास्त्र परिषद्, चेन्नई द्वारा उक्त डिग्री दी जाती है। आई सी ए.एस दिल्ली, मुबई, चेन्नई और पुणे मे परीक्षाएँ आयोजित करता है। यह दो वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसकी कक्षाएँ चेन्नई में शनिवार और रविवार को होती है। भारतीय विद्या भवन में भी ज्योतिष पाठ्यक्रम चलाया जाता है। राष्ट्रीय ज्योतिष एवं हस्तरेखा स्कूल में एक एव दो वर्ष के पाठ्यक्रम चलाए जाते है। यह अवधि विशेषज्ञता के क्षेत्र पर निर्भर करती है। सफल ज्योतिषी बनने के लिए किसी गुरु से शिक्षा लेना नितांत जरूरी है।

ज्योतिष शास्त्र का भविष्य भारत और विदेशों में उज्ज्वल है। अधिकांश लोग कैरियर चुनने, नया उद्यम खोलने या उसके स्थान चुनने जैसे सवालो का जवाब पाने के लिए ज्योतिषी के पास आते है। इसलिए इस क्षेत्र में असीम अवसर उपलब्ध हैं। इसके अलावा सभी विश्वविद्यालयो मे अडरग्रेजुएट स्तर पर विषय के रूप मे ज्योतिष शास्त्र पढ़ाने का प्रस्ताव भी विचाराधीन है। यह विद्या दिन-प्रतिदिन विकसित होती जा रही है। अंडरग्रेजुएट स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के रूप मे विषय का अध्ययन प्रारभ होने से नौकरी के अवसर बढ जाएँगे।

वे संस्थान, जहाँ ज्योतिष विद्या की पढ़ाई होती है, इस प्रकार हैं—

1. राष्ट्रीय ज्योतिष और हस्तरेखा स्कूल, नई दिल्ली।
2. लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
3. गुरुकुल कॉगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
4 बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
5. भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली।
6 महाराज संस्कृत विद्यालय, जयपुर।
7. भागवत कृपा ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।
8. इंडियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजिकल साइंसेज, चेन्नई।

□

डिजाइनिंग

(Designing)

आज की दुनिया में डिजाइन कार्य प्राचीन (निएंडरथल) मानव की सकल्पना से नितांत भिन्न है। उस समय मनुष्य के पास पर्याप्त खाली समय था, लेकिन प्रौद्योगिकी का अभाव था। आज किसी भी कला में डिजाइनर के रूप में योग्यता हासिल करने के लिए आपके पास सुनिश्चित सोच होनी चाहिए तथा इस क्षेत्र मे सिद्धहस्त होने के लिए आपके पास आवश्यक दस्तावेज होने चाहिए। फैशन और टैक्सटाइल से अलग डिजाइनिंग में चमड़े, जूते, आभूषण तथा इंटीरियर जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं। वे कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं—

टैक्सटाइल डिजाइनिंग

टैक्सटाइल सामग्री एवं फैशन की प्रवृत्तियों का इस्तेमाल करते हुए परिधान, अपलहोलस्ट्री, गलीचे तथा अन्य वस्तुओं के लिए फैब्रिक डिजाइनिंग टैक्सटाइल डिजाइनर का कार्य है। डिजाइनर के पास डिजाइन कौशलों के साथ-साथ फैब्रिक एव रंगों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। आज विभिन्न प्रकार के डिजाइन तैयार करने के लिए कंप्यूटर संबंधी कार्यक्रम उपलब्ध हैं। उदाहरण के तौर पर, डिजाइन बनाना या उनकी दिशा या रंग बदलना।

फैशन डिजाइनिग के बेसिक पाठ्यक्रम मे डिजाइनिग के विभिन्न पहलू शामिल हैं। यह एम.बी.बी.एस. की डिग्री के समान है, जिममें सारे पक्ष शामिल होते हैं। इसके पश्चात्, व्यक्ति रुचि के अनुसार किसी भी क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करता है। टैक्सटाइल डिजाइनर के लिए फैब्रिक उद्योग (सज्जा और फैशन दोनो), रिटेलिंग और विभिन्न प्रकार के अन्य कैरियर मौजूद हैं।

आरंभ में व्यक्ति साढ़े तीन हजार से आठ हजार रुपए तक प्रतिमास कमा सकता है। यह सीमा पंद्रह हजार रुपए या इसके अधिक प्रतिमास तक बढ़ सकती है। स्वतत्र रूप से कार्य करनेवाले व्यक्ति की कोई आय सीमा नहीं है।

फैशन डिजाइनिंग

फैशन डिजाइनर सुबह से लेकर शाम तक चार पहरों की सभी प्रकार की पोशाकों की डिजाइनिंग, प्रदर्शनी तथा निर्माण अवस्था से जुड़ा होता है। आप धागे के सही चयन, कटाई एवं सिलाई, काट-छाँट, बटन, मार्केट रिसर्च तथा डिजाइन के स्केच बनाने तक जिम्मेदार होते हैं।

फैशन डिजाइनर वस्त्र निर्यात संगठनो मे मर्चेडाइजर या फैशन कोऑर्डिनेटर के रूप में कार्य करता है। अन्य आकर्षक क्षेत्र थिएटर और फिल्मों के लिए परिधानो की डिजाइनिग का कार्य है। आप फैशन लेखक के रूप में किसी फैशन संबधी पत्रिका में भी शामिल हो सकते हैं।

प्रशिक्षु के रूप में फैशन हाउस या डिजाइन हाउस मे कार्य करते समय शुरू-शुरू में दो हजार रुपए से लेकर ढाई हजार रुपए तक की छात्रवृत्ति मिलती है। जब आप वहाँ पैर जमा लेते है तब आपको शोहरत भी मिलती है। आगे बढने की संभावनाएँ भी अनंत है।

जूतों आदि की डिजाइनिंग

जूतों, चप्पलों आदि के डिजाइनर एडी से लेकर सैंडल की बकल तक हर दृष्टि से डिजाइन तैयार करते हैं। तकनीकी दृष्टि से ये डिजाइनर योग्यता प्राप्त प्रोफेशलन होते हैं। इनका कार्य आकृति, शैली तथा जूते, चप्पल आदि की सामग्री की संकल्पना तैयार करना है। आज कंप्यूटर सब जगह अपना स्थान बना चुका है तथा अधिकांश जूते सॉफ्टवेयर पैकेज से तैयार किए जाते है। अब भारत मे ये पैकेज उपलब्ध हैं।

सामान्यत: डिजाइनर बड़ी विनिर्माण संस्थाओं तथा बुटीक में स्वतंत्र रूप से या पूर्णकालिक आधार पर (फुल टाइम) कार्य करते हैं। इस क्षेत्र में पारिश्रमिक अच्छा-खासा मिलता है। किसी प्रतिष्ठित कंपनी मे कार्यरत डिजाइनर को पैंतीस हजार रुपए से लेकर पचास हजार रुपए तक प्रतिमास वेतन मिलता है। इस प्रकार फुटवीयर डिजाइनिग से अच्छा पैसा मिलता है।

आभूषण डिजाइनिंग

आभूषण डिजाइनिंग के व्यवसाय में सोने के मनकों की माला से लेकर चमकते हुए छोटे से हीरे की नक्काशी का कार्य तक शामिल है। इसलिए जरूरी है कि डिजाइनर को कीमती पत्थरों एवं धातुओं की अच्छी जानकारी हो तथा निश्चित रूप से विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कलात्मक रुझान भी हो।

आभूषण डिजाइनर किसी बड़े व्यावसायिक हाउस में कार्य कर सकता है अथवा स्वतंत्र रूप से भी कार्य कर सकता है। किसी डिजाइन हाउस में इनटर्न के रूप में व्यक्ति लगभग पाँच से छह हजार रुपए तक प्रति मास कमा सकता है। आरंभ में व्यक्ति का आठ हजार रुपए तक वेतन हो सकता है। तथापि कंपनी तथा कार्य के आधार पर व्यक्ति दस से पद्रह हजार रुपए प्रति मास के बीच कमा सकता है।

इंटीरियर डिजाइनिंग

इटीरियर डिजाइनिंग मे स्थान की योजना, विकास, स्थल तैयार करना एवं फर्नीचर की डिजाइनिंग शामिल है।

यह आकर्षक कैरियर है। जब आप स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं तब यह नौ बजे से लेकर पाँच बजे तक की नौकरी नहीं होती। आमतौर पर परामर्शदाता दस रुपए प्रति वर्ग फीट के हिसाब से ड्राइंग चार्ज करते हैं या परियोजना की कुल लागत का 10-15 प्रतिशत चार्ज करते है। औसतन स्वतंत्र डिजाइनर कम-से-कम दस हजार रुपए प्रति मास कमा लेता है।

ऑटोमोबाइल डिजाइनिंग

ऑटोमोबाइल डिजाइनर नए-नए ऑटोमोबाइल डिजाइन तैयार करता है या विद्यमान डिजाइन को पुन: तैयार करता है। इससे ऑटोमोबाइल आकर्षक होने के साथ-साथ अधिक किफायती और व्यावहारिक होता है।

जूनियर डिजाइनर को शुरू में लगभग दो लाख रुपए प्रति वर्ष वेतन मिल जाता है। यदि कोई ऑटोमोबाइल विनिर्माता निरंतर कारोबार में नए-नए परिवर्तन लाना चाहता है तो उसके लिए यह व्यवसाय विशेष महत्त्व रखता है। इसीलिए भारत और विदेशों में आटोमोबाइल उद्योग अपेक्षित सर्जनात्मक एव प्रेरणा शक्ति के साथ इस व्यवसाय पर पर्याप्त समय और धन खर्च करता है।

सैट डिजाइनिंग

सैट डिजाइनिग फिल्म और रंगमंच (थिएटर) के सैट की डिजाइनिंग से जुड़ी है। इस क्षेत्र में कैमरा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि प्रणाली आदि जैसे विषयो की तकनीकी जानकारी होना जरूरी हैं।

भारत में सैट डिजाइनिग का क्षेत्र हाल ही में काफी आकर्षक बना है। प्रारंभ में किसी व्यावसायिक कंपनी मे दस हजार रुपए या इससे अधिक कमा सकता है। यदि संविदा (कॉण्ट्रेक्ट) पर कार्य किया जाता है तो व्यक्ति लाखों कमा सकता है।

ग्राफिक डिजाइनिंग

किसी डॉट कॉम कंपनी मे ग्राफिक डिजाइनर साइट पर अलग-अलग पेज के लिए ग्राफिक डिजाइन तैयार करता है। वर्ल्ड वाइड वैड असीम माध्यम है, जहाँ व्यक्ति अपने डिजाइनों को जहाँ चाहे, दिखा मकता है।

आपको समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन, फिल्मों, विशेष प्रभाव उत्पन्न करने से जुड़ी कपनियों, प्रकाशन, विज्ञापन एजेंसियों आदि मे रोजगार मिल सकता है। किसी प्रकाशन संस्थान में डिजाइनर को 'इलस्ट्रेटर' के नाम से जाना जाता है। कॉलेज की पढाई पूरी करने के बाद तत्काल ऐसे डिजाइनर को तीन हजार से पॉच हजार रुपए प्रति मास तक तनख्वाह मिल सकती है। एक वर्ष बाद यह राशि आठ हजार से दस हजार रुपए तक बढ सकती है।

वेब डिजाइनिंग

वेब डिजाइनर का कार्य वेब साइट तैयार करके इसके भीतर और अधिक डिजाइन तैयार करना है। आपको वेब माइट के लिए आकर्षक एवं तकनीकी दृष्टि से व्यावहारिक नेविगेशन प्लान तैयार करना होता है। साथ ही इसके चारों ओर डिजाइन की संरचना बनानी होती है। वेब डिजाइनर साइट के भीतर पेज भी डिजाइन करता है।

आज बड़ी-बड़ी कंपनियो के लिए जरूरी हो गया है कि उनके पास आकर्षक एवं लुभाऊ नैट हों। इसीलिए उन्हे वेब मास्टर्स तथा वेब साइट डिजाइनर की जरूरत पड़ती है। यदि किसी के पास सही आधारभूत सरचना है तथा वित्तीय सहारा है तो वह अपनी वेब साइट भी तैयार कर सकता है। व्यक्ति हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी में भी अपना कारोबार फैला सकता है। वह तकनीशियन के रूप में वेब फर्म में कार्य कर सकता है या स्वतत्र रूप से वेब टेक्नोलॉजिस्ट के रूप मे भी कार्य कर सकता है।

वेब डिजाइनर सामान्यत: चार हजार से छह हजार रुपए तक कमा सकता है। वेतन फर्म पर निर्भर करता है। विशेषज्ञ वेब डिजाइनर दस हजार से लेकर बीस हजार रुपए तक तनख्वाह लेता है, जबकि रेड वेब डिजाइनर चालीस हजार रुपए तक प्रति मास वेतन पाता है। अधिकांश डिजाइनर प्रति पृष्ठ चार्ज करते हैं तथा व्यक्ति पाँच सौ या साढ़े तीन हजार रुपए प्रति पृष्ठ कमा सकता है।

निम्नलिखित संस्थान डिजाइनिंग के पाठ्यक्रम चलाते है—

क. टैक्सटाइल डिजाइनिंग और फैशन डिजाइनिंग

1. राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एन आई.एफ टी), दिल्ली।
2. एस एन डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई।

3. राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद।

4. अंतरराष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली।

ख. फुटवियर डिजाइनिंग

1 फुटवियर डिजाइन और विकास संस्थान (एफ डी डी आई) नोएडा, उत्तर प्रदेश।

2. सेंट्रल फुटवियर ट्रेनिंग सेंटर, चेन्नई।

ग. आभूषण डिजाइनिंग

1. एस एन.डी टी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई।

2 सोफिया पॉलिटेक्निक, बीच कैंडी, मुंबई।

3. निर्मल निकेतन, चर्चगेट, मुंबई

घ. औद्योगिक एवं ऑटोमोबाइल डिजाइनिंग

1 औद्योगिक डिजाइन सेंटर (आई डी सी), आई आई.टी , पुणे।

2 राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एन.आई.डी.), अहमदाबाद।



डिजीटल निदानात्मक विधियाँ

(Digital Diagnostics)

चिकित्सा जगत् अब पूर्णत· डिजीटल बनता जा रहा है। अब वे दिन लद गए, जब आपको एक्स-रे फिल्म के सामने आना पड़ता था, एक्स-रे डेवलप करना पडता था। उसके बाद डॉक्टर को एक्स-रे दिखाना पड़ता था। आज की दुनिया मे डिजीटल कैमरा इमेज लेकर तुरंत प्रोसेस के लिए पेश कर देता है। निस्संदेह, डिजीटल डाटा के लिए सॉफ्टवेयर होना जरूरी है। यह सॉफ्टवेयर इमेज तैयार करता है तथा इमेज को रगीन बनाता है। डाटा त्रि-आयामी रूप में तैयार किया जाता है। इमेज रोटेट की जाती है, रिकॉर्ड रखा जाता है तथा नेटवर्क पर पहुँचाया जाता है।

भारत मे डिजीटल चिकित्सीय निदान क्षेत्र तथा इमेजिग अभी भी विकासशील अवस्था में है। लेकिन खुशी की बात है कि चूँकि उद्योग निरंतर बढ़ता जा रहा है, अतः इस क्षेत्र मे लोगों को कामयाबी मिलने की अत्यधिक संभावनाएँ हैं। कुल मिलाकर चिकित्सा क्षेत्र पर उतार-चढ़ावो का असर नही पड़ता। मानव जीवन के लिए यह अनिवार्य जैसा बन गया है।

चिकित्सा क्षेत्र मे कैरियर की सभावनाएँ उज्ज्वल हैं। पिछले कुछ समय से डिजीटल युग के फायदे चिकित्सा जगत् में महसूस किए जाने लगे हैं। आज अस्पताल से बाहर घरों तक निदानात्मक इमेजिंग उपकरण पहुँचाने की जरूरत है। आघात पहुँचानेवाली निदानात्मक विधियो को हटाकर मानव के अनुकूल अ-हानिकारक तकनीक लाने की जरूरत है। विशेष प्रणाली में अधिक विशेषज्ञता होनी चाहिए तथा डॉक्टर इन्हें सहज ढंग से प्रयोग कर सकें। इस क्षेत्र मे माइक्रो-सर्जरी विकसित करनी है। टेली-मेडिसिन को पहचान मिलनी शुरू हो गई है। विश्व की निरतर बढ़ती आबादी के साथ यह माँग और भी बढ़ सकती है। जहॉ पर भी डिजीटल का प्रभुत्व होगा और बड़ी संख्या में सॉफ्टवेयर की जरूरत पड़ेगी।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर तीन प्रमुख क्षेत्रों से जुडी कंपनियों में कार्य करते हैं—

अधुनातन सुविधाए, औजार एव आधारभूत सरचना यह याद रखा जाए कि ये तैयार उत्पाद अगले दो वर्षों में मिलने शुरू होंगे। अधिकांश कपनियाँ इजीनियर की भरती दो वर्षो की अवधि को ध्यान में रखते हुए उनके प्रशिक्षण तथा मेडिकल सॉफ्टवेयर इजीनियर बनाने के लिए प्रयत्नशील है। ये कंपनियाँ चिकित्सीय वातावरण तथा तकनीकी योग्यताओं के बीच तालमेल स्थापित करना चाहती हैं, ताकि गति, शुद्धता एव दक्षता की दृष्टि से कोई समझौता न हो।

उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार, यह मात्र व्यवसाय नहीं है। इसका सबंध मानव जीवन मे है। यह क्षेत्र विश्लेषकों (analysers), प्रभाव डालनेवाली 'हर्ट-सर्जरी' के उपकरणों, चुंबकीय अनुनाद (MR) तथा कंप्यूटरीकृत टोमोग्राफी (CT) की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञता एल्गोरिद्म के चारों ओर घूमती है तथा वैज्ञानिक सॉफ्टवेयर विकास के लिए हाई एंड (High end) कंप्यूटिंग (परिकलन) से संबंधित है। कंपनियाँ अपने अनेक विकास-केंद्रों के किसी भी केंद्र में ग्लोबल कैरियर विकल्प प्रदान करती हैं। आप इस क्षेत्र में विशेषज्ञों के साथ मिलकर कार्य करते हैं। हर इजीनियर नवीनतम प्रौद्योगिकी में कार्य करने का सपना देखता है।

प्रारंभिक स्तर पर प्रोग्रामर प्रति माह अच्छा वेतन पाता है। आठ-दस वर्ष के अनुभव के बाद इजीनियर का मासिक वेतन काफी अधिक होता है। मेडिकल प्रणाली क्षेत्र में इंजीनियर प्रारंभिक स्तर के प्रोग्रामर्स के रूप मे कार्य करते है तथा सर्वोच्च स्तर पर इस क्षेत्र मे परामर्शदाता तक बन जाते हैं। जैसे-जैसे ये सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, मॉड्यूल लीडर बनते जाते है। ये किसी परियोजना के तहत लोगों की अगुआई करते हैं।



डिस्क जॉकी

(Disc Jockey)

डिस्क जॉकी (डी.जे.) एम.टी वी युग आरंभ होने के बाद जनता के सामने आया। कैरियर के रूप में सामान्य धारणा के प्रतिकूल डी.जे. के कार्य में दो गीतों के मिश्रण से अधिक और भी कार्य शामिल हैं। इसके लिए अच्छे व्यक्तित्व का होना जरूरी है। डी.जे. में शो मैन तथा जन–सपर्क—दोनो ही कार्य शामिल होते है। उसे श्रोताओं के मूड को समझना होता है तथा उसी के अनुकूल संगीत तैयार करना होता है।

डी जे की लोकप्रियता उसकी सर्जनात्मक शक्ति पर निर्भर करती है। वह मूल स्वरों के साथ कार्य करते हुए श्रोता के मानसिक दशा का पूरा ध्यान रखता है तथा इसी के अनुसार आरोह–अवरोह स्वरों की रचना करता है। उसे लोगों की सगत में बैठना है और संगीत सुनना है। डी.जे कार्य मे बुनियादी रूप से तकनीकी वाद्य यत्रों का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि ऐसा संगीत तैयार किया जा सके और अलग–अलग प्रकार के संगीत को इस प्रकार से मिलाया जाए कि नृत्य करनेवालो के पैर न थमें। डी.जे को कार्य करने का ऐसा जुनून हो कि रात भर जागकर लगातार कार्य कर सके तथा इस हद तक संगीत–प्रेमी हो कि वह बार–बार गीत की धुन बजाए, लेकिन वह फिर भी इस गीत को पसंद करता रहे। इसके अलावा डी जे अध्यापन का कार्य भी करता है, जहाँ वह श्रोताओं को यह जानकारी देता है कि किस प्रकार का संगीत सुनाया जा रहा है।

डी.जे. एक दिन में नही सीखा जा सकता। आप फ्लोर पर अनुभव से ही बहुत कुछ सीखते हैं। यह जरूरी है कि आपके पास संगीत और सर्किट में प्रतिष्ठित डी जे. द्वारा चलाए जा रहे स्कूलो में प्रयुक्त प्रौद्योगिकी की बुनियादी जानकारी हो। इसमें व्यक्ति की इमेज तथा संगीत मंथन के प्रकार के अनुसार ही वेतन मिलता है।

डी.जे. कैरियर की अद्भुत विशेषता यह है कि इस कार्य को आरंभ करने के

लिए कोई आयु सीमा नही है बस आपके पास लोकप्रिय सगीत की अच्छा जानकारी हो तथा आप सगीत-प्रेमी हो। डी जे मे विविध प्रकार के कार्य शामिल हैं, जैसे—म्यूजिक एलबम तैयार करना या रीमिक्स एलबम तैयार करना। आजकल अधिकांश रूप मे यही कार्य किया जा रहा है। आप अपना स्टूडियो भी खोल सकते हैं या समारोह मैनेजर भी बन सकते हैं। आज डी जे. कार्य को लोकप्रिय संगीत का विस्तृत रूप माना जाता है तथा डी.जे. से संबंधित प्रोद्योगिकी मे अधिकाधिक स्पर्धा बढती जा रही है।

डी जे का कार्य करते समय विभिन्न उपकरणों को सँभालना पडता है। इसमे सी डी. प्लेयर, रिकॉर्ड प्लेयर, मिक्सर, सैंपल, माइक तथा हैडफोन शामिल हैं। डी जे फ्लोर पर प्रकाश व्यवस्था के संबंध मे लाइट जॉकी का भी कार्य करता है। इस व्यवसाय के सूक्ष्मतर तारों को समझने व ग्रहण करने के लिए किसी संस्था में नाम लिखाना जरूरी है। यदि नीव मजबूत है तो नौसिखिया भी तेजी से सीख जाता है। इसमें अपना ज्ञान बढ़ाना आसान है। जब तक छात्र उत्तम कोटि के संगीत और खराब संगीत मे अंतर नहीं कर पाता तब तक वह अच्छी तरह से संगीत को मिक्स नही कर पाएगा। मूल रूप से संगीत मे स्वर-संयोजन रचना आसान नहीं है, लेकिन सुरो को रीमिक्स करना तथा साथ ही श्रोताओं की प्राथमिकता का ध्यान रखना—यह डी जे. का कार्यक्षेत्र है।

डी.जे. से संबधित पाठ्यक्रम निम्नलिखित संस्थाओं मे आयोजित किया जाता है—

1. साउंड ऑफ म्यूजिक, फ्लैट नं. 3546, सेक्टर डी, पाकेट 1, वसत कुज, नई दिल्ली।
2. स्टूडियो बेकर्स, बी-1/8, अप्सरा आर्केड, पूसा रोड, नई दिल्ली।

□

डेयरी फार्मिंग

(Dairy Farming)

अब वे दिन लद चुके, जब लोग घर-घर जाकर दूध और दूध की बनी वस्तुएँ बेचा करते थे। समय बदल चुका है और इसी के साथ डेयरी उत्पाद का स्वरूप भी बदल चुका है। अब इस क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रवेश हो चुका है। अब हमारे सामने ऐसा डेयरी उद्योग है, जिसका आधुनिकीकरण हो चुका है तथा तकनीकी परामर्श सगठन इस उद्योग की संरचना का हिस्सा बन चुका है।

देश भर में लगभग चार सौ डेयरी सयत्रों को डेयरी कार्मिकों की तलाश रहती है। इस उद्योग में काम करने के इच्छुक लोगों के लिए कैरियर के अनेक अवसर मौजूद हैं। चूँकि दूध और इससे बनी वस्तुएँ हमारे दैनिक खान-पान का आधार हैं, अत. इनकी बहुत अधिक माँग रहती है। इस माँग की पूर्ति के लिए सबद्ध आधारभूत संरचना भी आवश्यक है। इसी कारण डेयरी प्रौद्योगिकी की जरूरत पडती है। डेयरी फार्मिंग मे डेयरी प्रौद्योगिकी का समावेश इस उद्योग का सर्वोत्तम पहलू है।

डेयरी उत्पादों में दूध, मक्खन, घी और अन्य दूध उत्पाद शामिल हैं। इसके अलावा पुडिग, कस्टर्ड, योगर्ट आदि भी डेयरी के प्रमुख उत्पाद हैं। इस उद्योग का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य इन पदार्थो को तैयार करना है। वस्तुतः डेयरी उद्योग के कार्यो को प्रमुखत. दो भागो में बाँटा जा सकता है—1 उत्पादन (production), 2 प्रक्रमण (processing)। दुग्ध उत्पादन में दूध इकट्ठा किया जाता है, जिसके लिए अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का प्रजनन तथा पालन अनिवार्य है। अगले चरण में दूध का प्रक्रमण आता है। यह प्रक्रिया संयंत्र में दूध पहुँचने पर प्रारभ होती है। यहाँ वितरण के लिए दूध तैयार किया जाता है तथा इसे दुग्ध उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। यह डेयरी उत्पादों का सामान्य चित्रण है। डेयरी प्रौद्योगिकी मे इजीनियरिंग के सिद्धांतों को डेयरी से संबंधित किसी भी कार्य में इस्तेमाल किया

जा सकता है इसमे उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक पहुचने की अवस्था तक की प्रक्रियाए शामिल है। डयरी प्रौद्योगिकी के मूल तत्त्व जैव रसायन, जीवाणु विज्ञान तथा पोषण पर आधारित है।

डेयरी संयंत्र की कार्य-प्रणाली ऐसे प्रकार्यो के विशेष क्षेत्रों पर आधारित है, जिनमे तकनीकी ज्ञान तथा प्रकार्य के विशिष्ट क्षेत्र के हुनर की आवश्यकता होती है। चूँकि डेयरी प्रौद्योगिक (Technologist) को अत्याधुनिक फर्म चलाने की जरूरत होती है, इसलिए उसके पास फर्म को किफायती ढंग से चलाने तथा उत्पाद एव पैकिग की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सुपरवाइजर के कौशल के साथ-साथ तकनीकी कौशल भी होना चाहिए। उसे उत्पादों के वितरण कार्य का आयोजन करने तथा रिकॉर्ड रखने होते हैं। उसका एक मुख्य कार्य उप-उत्पादकों का इस्तेमाल करने के लिए नए-नए तरीके ढूंढ़ना भी है। प्रक्रमण उद्योग द्वारा तकनीकी परामर्शदाता की हैसियत से कार्य कर रहे लोगों के साथ मिलकर तकनीकी सहायता दी जाती है।

डेयरी उद्योग डेयरी तथा दुग्ध सहकारिता फर्मो, डेयरी अनुसधान प्रयोगशालाओ तथा खाद्य प्रक्रमण कंपनियों, जैसे—नेस्ले, स्मिथक्लिन बीचम आदि में कैरियर के पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। शिक्षण और अनुसंधान अन्य महत्त्वपूर्ण विकल्प है क्याकि अनेक डेयरी विज्ञान कॉलेज/देश के सस्थानो मे शिक्षको और अनुसंधानकर्ताओ के रूप में पर्याप्त संख्या में स्नातकों तथा स्नातकोत्तरों की जरूरत है। आपको तकनीकी परामर्शदाता के रूप मे नौकरी मिल सकती है। आप इस रूप में विभिन्न उच्च प्रौद्योगिकी डेयरी फार्मों में परामर्श सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं। उद्यमिता ऐसा क्षेत्र है, जहाँ व्यक्ति लघु स्तर पर दूध का संयंत्र तथा आइसक्रीम यूनिट खोल सकता है। आपको पूँजी के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अनेक सरकारी व अन्य एजेंसियाँ तथा बैंक ऐसी स्कीमो के लिए धन उपलब्ध कराते हैं और ऐसे उद्यमो को प्रोत्साहन देते है।

इस क्षेत्र का प्रमुख कैरियर पशु-विज्ञान है। जहाँ तक उत्पादन का संबध है, पशु-वैज्ञानिक पशुओं की देखभाल तथा इष्टतम उपयोगिता के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे डेयरी क्षेत्र मे कार्य करना या पशु प्रजनन केंद्र मे नौकरी पाना आसान हो जाता है। डेयरी प्रौद्योगिकीविद् दूध प्रापण अधिकारियों के रूप मे कार्य करते है। इनका कार्य विभिन्न स्रोतों से दूध इकट्ठा करना है।

इजीनियर के लिए इस क्षेत्र में संयंत्र के अनुरक्षण, विरचन, उपकरण और सयत्र डिजाइन तथा परियोजना-निष्पादन कार्य विद्यमान हैं। लेकिन इस क्षेत्र मे डिजाइनिग से जुड़े इंजीनियर को डेयरी प्रक्रियाओ, इनके लक्ष्य तथा कार्यों की

भलीभाँति जानकारी होनी चाहिए, जिसमे दूध तेयार करना तथा दुग्ध उत्पादको की गुणवत्ता भी शामिल है।

भोतिकी, रसायन शास्त्र तथा गणित विषयों के साथ 10+2 के बाद आप कृषि इंजीनियरिंग या डेयरी प्रौद्योगिकी में बी.टेक कर सकते है। इसके बाद भी अध्ययन जारी रखा जा सकता है। डेयरी प्रौद्योगिकी में एम.टेक. का विशिष्ट लाभ मिलता है। आप कृषि में इंजीनियरिंग या डेयरी प्रौद्योगिकी में बी टेक के बाद नौकरी पा सकते हैं। अन्य विकल्प कृषि में बी एस-सी. करके कार्य करना या एम टेक. करना है।

विशेषज्ञता के आधार पर पैसा मिलता है। लेकिन शुरू-शुरू में प्राय· सात हजार से नौ हजार रुपए तक प्रति माह वेतन मिलता है। पुन· प्रत्येक संगठन मे अलग-अलग वेतन दिया जाता हैं। प्रतिष्ठित कंपनियाँ अच्छे वेतनमान देती हैं। लेकिन उद्यम या स्वरोजगार में अधिक धन कमाया जा सकता है। व्यक्ति लघु दुग्ध सयत्र, डेयरी या क्रीम यूनिट खोल सकता है, जिसमें प्रतिष्ठित फर्म में शीर्ष पद पर आसीन व्यक्ति से दस गुना अधिक आमदनी होती है। इस क्षेत्र में दबाव मौजूद हैं। व्यक्ति को इनका आदी होने मे समय लगता है। प्रशिक्षणार्थी के रूप मे आपको छात्रवृत्ति मिल सकती है, वही आपको दूरवर्ती क्षेत्रों में घंटो कार्य करना पड़ता है।

जैसे-जैसे व्यक्ति एक विभाग का प्रभारी बनता है, उसपर जिम्मेदारियों का दबाव भी बढ़ता जाता है। प्रशिक्षणार्थी से महाप्रबंधक बनने तक या उद्यमी के रूप मे इस उद्योग मे पैर जमाने तक कठिन लंबी यात्रा तय करनी पडती है। लेकिन यहाँ कार्य से मिलनेवाली सतुष्टि अधिक महत्त्वपूर्ण है।

निम्नलिखित सस्थानों मे संबंधित पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1 सेठ एम.सी. कॉलेज ऑफ साइस, पी ओ. आनंद कृषि संस्थान, आनंद, गुजरात।
2. डेयरी साइंस कॉलेज, नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीच्यूट, करनाल, हरियाणा।
3 कॉलेज ऑफ डेयरी साइंस, उदयपुर, राजस्थान।
4. फैकल्टी ऑफ वेटेरिनेरी साइंस एड एनीमल हस्बेंडरी, पी.ओ कृषि विश्वविद्यालय, प. बंगाल।
5 इंडियन वेटेरिनरी रिसर्च संस्थान, इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश।
6. दि इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर, मध्य प्रदेश।
7 इंस्टीच्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, कामरेड्डी, आंध्र प्रदेश।



डेस्क टॉप पब्लिशिंग

(Desk Top Publishing)

भोजपत्रों पर कुरेदने से लेकर पांडुलिपि तथा मुद्रित दस्तावेज और वेब प्रकाशन, मल्टीमीडिया तक नई प्रौद्योगिकी ने लिखित शब्दों को नए आयाम दिए है। यह कार्य अधिकाधिक आकर्षक तथा रोमांचक होता जा रहा है। डी टी पी (Desk Top Publishing) विश्व में तेजी से बढ़ते सर्वोत्तम व्यवसायों में से एक है। डी टी पी और कुछ नहीं, प्रकाशन (पब्लिशिंग) दस्तावेजों की नवीनतम विधि है, जिसमें धातु की टाइप, कैंचियो और गोंद का इस्तेमाल नही किया जाता। डी टी पी सभी को आकर्षित करती है, क्योंकि इसमें अनेक विकल्प हैं। लेटर प्रेस के दिनो मे आपको हाथ से टाइप फेस की व्यवस्था करनी पड़ती थी, तब इसमें काफी समय लगता था और यह थका देने वाला श्रमसाध्य था। चारों ओर अफरा-तफरी फैली होती थी। यह स्थान भद्दा लगता था।

प्रकाशन (पब्लिशिंग) सॉफ्टवेयर से अब लेखक सामग्री में कई बार संशोधन कर सकता है तथा शब्दों को पुनः व्यवस्थित कर सकता है। फॉण्ट की टाईप, रंग, आकार तथा दस्तावेज पर प्रस्तुति कुंजी (Key) दबाकर या माऊस क्लिक करके बदली जा सकती है। इसके अलावा शब्दों की संख्या, पैराग्राफ आदि की भी जानकारी ली जा सकती है तथा तैयार कार्य की झलक भी देखी जा सकती है। सॉफ्टवेयर में शब्द का पठन अधिक सरल बनाने के लिए सचित्र जानकारी देने की भी व्यवस्था होती है।

अपेक्षा के अनुसार आरेख, ग्राफ और फोटोग्राफ पाठ्यांश में शामिल किए जा सकते हैं। ग्राफिक पुनः उद्धरण प्रक्रिया में पॉच अवस्थाएँ होती हैं—कला और कॉपी तैयार करना, इसे मुद्रण योग्य बनाना, बदले गए तत्त्वों को प्रिंटिंग इमेज कैरियर से जोड़ना, मुद्रण और अंततः जिल्दसाजी।

प्रकाशन उद्योग का मूल भाग प्रेस से पहले का हिस्सा है। इस स्थान पर

डिजाइन की दृष्टि से समूच दस्तावेज की सकल्पना तैयार की जाती है और विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयरों का इस्तेमाल करते हुए डिजाइन की संकल्पना को व्यावहारिक रूप दिया जाता है। कला (Art) तथा कॉपी तैयार करने के लिए पाठ्यांश में प्रयुक्त एडॉब पेजमेकर जैसे कुछ सर्वविदित सॉफ्टवेयर हैं। चित्रों के संबंध मे कार्य करने के लिए कॉरेल ड्रॉ, फोटोग्राफ तथा विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए एडॉब फोटोशॉप एवं पृष्ठांकन (Pagination) के लिए क्वार्क एक्सप्रेस का प्रयोग होता है।

अतिम रूप से तैयार दस्तावेज इमेज सैंटर के पास भेजा जाता है और तब प्रोसेसिंग अनुभाग में भेजा जाता है, जहाँ पॉजीटिव तैयार किए जाते है। इसके बाद प्लेटे तैयार करके प्रिंटिंग अनुभाग में सामग्री भेजी जाती है। समाचार-पत्रों जैसे कुछ प्रकाशन संस्थान अत्यधिक परिष्कृत (अधुनातन) उपकरण इस्तेमाल करते हैं। इससे दस्तावेज सीधे कंप्यूटर से प्लेट मेकिंग अनुभाग मे भेज दिया जाता है। यहाँ पॉजीटिव अवस्था पर कार्य नहीं किया जाता है।

डी पी.टी. ऐसी व्यापक शब्दावली है, जिसमें विशिष्ट सॉफ्टवेयर की पूरी रेज शामिल है। इनपर कार्य करना आसान है, क्योकि ये प्रयोक्ता के अनुकूल तैयार किए गए हैं। डी टी पी में प्रवीणता हासिल होने पर आपके पास नौकरियो की पूरी शृखला विद्यमान होती है। डिजीटल टाइप सेंटर से लेकर बहुराष्ट्रीय कपनियो मे प्रलेखन विशेषज्ञ तथा वेब डेवलपर तक नौकरियाँ मिल सकती हैं। इस क्षेत्र मे अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य प्रेस से पहले की अवस्था से जुड़े कार्यो का अनुभाग या डिजाइन विभाग का कार्य है तथा अन्य अनुभाग प्रिंटिंग (मुद्रण) है। तथापि पूर्ववर्ती हिस्सा अधिक चुनौतीपूर्ण है। डी टी.पी. सॉफ्टवेयर में आधारभूत प्रशिक्षण के बाद आप ग्राफिक डिजाइनर का कार्य कर सकते हैं या निजी कार्य आरंभ कर सकते हैं। डी टी पी. सॉफ्टवेयर में अनुभव से आप वेब डिजाइनिग जैसी वेब से सबंधित नौकरियाँ कर सकते हैं।

पश्चिम मे डी.टी पी. कौशल-संपन्न व्यक्ति को पंद्रह हजार से साठ हजार डॉलर तक प्रति वर्ष की आय होती है। ध्यानपूर्वक और निष्ठा से सीखनेवाला व्यक्ति इस कैरियर मे तेजी से आगे बढता है। वह डिजाइन सेक्शन का अध्यक्ष बन सकता है, जिसकी आय काफी अच्छी होती है। डी.टी.पी. यूनिटो के अलावा आप विज्ञापन एजेंसी मे भी काम कर सकते हैं। यदि आप वेब क्षेत्र मे जाते हैं तो यहाँ काफी संभावनाएँ हैं। आपके कार्य-कौशल के आधार पर आपको बहुराष्ट्रीय कंपनियों, विशेषत. डॉट कॉम में नौकरी मिल सकती है। प्रबंधकीय संवर्ग में अधिक वेतन मिलता है, जहाँ आपको प्रकाशन की प्रक्रिया में हाथ भी नहीं लगाना पड़ता।

इस कार्यक्षेत्र में आने के लिए जरूरी है कि उम्मीदवार कंप्यूटर पर अच्छी तरह से कार्य कर सकता हो। वह कल्पना करने में भी समान रूप से सक्षम हो। आपको प्रत्यक्ष से भी परे देखना पड़ता है। आप मे असीम धैर्य तथा प्रयोग करने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए। परस्पर व्यवहार की उत्कृष्ट क्षमता भी होनी चाहिए। टीम के रूप मे कार्य करने के प्रति उत्साह हो। साथ ही आलोचना बरदाश्त करने का सामर्थ्य हो। इन सबसे अलग स्पर्धा मे आने की सहज प्रवृत्ति होनी चाहिए।

इंटरनेट युग में प्रकाशन उद्योग को अधिक महत्त्व दिया जाता है। लेकिन कागज पर मुद्रित सूचना को आसानी से सँभाला जा सकता है। इससे लोग परस्पर अधिक संपर्क में आते हैं। इंटरनेट का विस्तार भारत में अभी कम है, मुद्रित शब्द का ही साम्राज्य है।



थिएटर

(Theatre)

जब भी थिएटर के बारे में सोचा जाता है, सबसे पहले अभिनेता, अभिनेत्री, सवाद और पटकथा ही हमारे मानस-पटल पर उभरते हैं। लेकिन अभिनय थिएटर के अनेक पहलुओं मे से एक पहलू है। इसके साथ पर्याप्त रूप से बाह्य कार्य-जगत् भी जुडा है। इस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करना अनिवार्य है। थिएटर के कार्य-जगत् में निर्देशन, निर्माण, सैट की डिजाइनिग, वेशभूषा की डिजाइनिग, कथा-लेखन, पटकथा-लेखन और रंगमंच की प्रकाश व्यवस्था शामिल है। प्रत्येक पहलू अपने आप मे अध्ययन का अलग क्षेत्र है तथा इसमें तकनीकी और अकादमिक दोनो प्रकार के कौशल शामिल हैं। प्रत्येक कौशल की नाटक में बराबर महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

प्रोडक्शन मे कार्यक्रम की सकल्पना तैयार करने एवं कलाकारों का चयन करने का कार्य शामिल है। इन कलाकारो मे प्रोडक्शन सहायक और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े कार्यपालक (एक्जीक्यूटिव) का चयन किया जाता है।

निर्देशन सबसे ज्यादा कठिन कार्य है। निर्देशक इस टीम का कप्तान होता है, जो रंगमंच तथा रंगमंच से इतर तकनीकी पक्षों से संबंधित प्रमुख निर्णय लेता है, जैसे—नाटक अभिनीत करने का क्षेत्र और सैट का डिजाइनिंग। निर्देशक पर अभिनेता और अभिनेत्री के चयन की जिम्मेदारी होती है। इसके बाद उसे नाटक को समझना पड़ता है तथा विभिन्न पात्रो को आकार देना होता है।

कथा और पटकथा-लेखन अन्य रोचक कार्य हैं, जिसके लिए नाटक की भाषा पर आधिपत्य होना चाहिए तथा लेखन की क्षमता होनी चाहिए। साथ ही किसी अन्य स्रोत (साहित्यिक विधा) से लोकप्रिय कथा को नाटक के अनुकूल बनाने की क्षमता होनी चाहिए। पटकथा लेखक थिएटर की बाधाओं का ध्यान मे रखकर लिखता है। वह सुनिश्चित करता है कि पटकथा श्रोता/दर्शकगणों को

प्राथमिकताओं की पूर्ति करती है, साथ ही वह इस बात का भी ध्यान रखता है कि ऐसा करते समय कथा का मूल भाव, उसकी आत्मा ही लुप्त न हो जाए।

कला निर्देशन और वेशभूषा डिजाइनिंग

ये दो अन्य सर्जनात्मक पहलू है। कला निर्देशन मूलतः रंगमंच के उपयोग की समझ-बूझ से संबंधित है। इसमे रंगमच के निर्माण से जुड़े तकनीकी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन की संकल्पना तैयार करना शामिल है। विद्यार्थी को इस संबंध में पूरा प्रशिक्षण कार्यक्रम सपन्न करना पड़ता है। इसमे वास्तुशिल्प, आंतरिक सज्जा तथा प्रत्यक्ष संचार/सप्रेषण का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।

वेशभूषा की डिजाइनिंग में रंगों तथा अभिनेता की भूमिका को समझने की कोशिश की जाती है। इस कार्य मे शैली और अभिव्यक्ति निर्णायक अंग है। डिजाइनर से उम्मीद की जाती है कि वह कथानक और पटकथा को ध्यान में रखते हुए रंगमंच का डिजाइन तैयार करे। बारबारता (अवधि), वेशभूषा, केश-सज्जा, आभूषण, जूते-चप्पल आदि तथा अन्य सामग्री इस कार्य का अनिवार्य भाग है।

सैट के डिजाइनर को निर्माण के दृश्यात्मक आकर्षण (अपील) उत्पन्न करने की जिम्मेदारी निभानी होती है। उन्हें दृश्यों की जानकारी दी जाती है, ताकि सैट सही ढंग से तैयार किए जा सकें। नट, अभिनेता, पेंटर, बढई, तकनीशियन इस दिशा मे समस्त आवश्यक उपकरण जुटाने के लिए कार्य करते हैं।

प्रकाश व्यवस्था एक उभरता हुआ व्यवसाय है। कार्य की मात्रा क्रमबद्ध रूप से रगमंच के 'शो' की संख्या पर निर्भर करती है। इस व्यवस्था में विविधता आ जाने से इस क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल है।

ध्वनि (साउंड) तकनीशियनों की आज काफी माँग है। विशेष रूप से यह माँग इस कारण बढ़ रही है कि संगीत से नाटक की आत्मा मंच पर अभिव्यक्त होती है।

थिएटर क्षेत्र में शामिल होने के लिए निम्नलिखित योग्यता होनी चाहिए—

कार्य के प्रति प्रतिबद्धता और कार्य का दबाव सहने की क्षमता, शांत स्वभाव, सर्जनात्मक क्षमताओं एवं प्रबंधकीय तथा प्रशासनिक जानकारी का मिश्रण, लोगों के बारे मे निर्णय लेने, उन्हें समझने की क्षमता, संप्रेषण कौशल और भाषा पर अधिकार लोक-रुचि का ज्ञान तथा देखने-समझने की प्रबल शक्ति।

ध्वनि तकनीशियन और इंजीनियरों के मामले मे तकनीकी योग्यता तथा इलेक्ट्रॉनिक्स की जानकारी होना जरूरी है। थिएटर के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सर्वाधिक अनिवार्य गुण यह है कि व्यक्ति प्रतिभा-संपन्न होना चाहिए, छोटी आयु

मे ही इस बात का पता चलता है तथा वर्ष-दर-वर्ष प्रतिभा परिपक्व होता जाता है। वर्षो तक कठोर श्रम के बाद असाधारण रूप से प्रतिभा-संपन्न कलाकार अपना स्थान बना पाता है। इसके अलावा व्यावसायिक मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण लेना भी महत्त्वपूर्ण है।

यद्यपि इस व्यवसाय के लिए किसी विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता की जरूरत नही है, फिर भी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रवेश के लिए जरूरी है कि छात्र स्नातक हो तथा स्कूल या कॉलेज स्तर पर कम-से-कम दस नाटको में भाग ले चुका हो। ध्वनि (साउंड) रिकॉर्डिंग के मामले में भौतिकी या इलेक्ट्रॉनिक्स में डिग्री प्राप्त करना जरूरी है। छात्र में फोटोग्राफी के प्रति रुचि हो और उसने चलचित्र विज्ञान (सिनेमेटोग्राफी) में डिग्री प्राप्त की हो।

रंगमंच के अधिकांश कलाकार व्यावसायिक थिएटर कंपनियो तथा ऑल इंडिया रेडियो, टेलीविजन स्टूडियो, मूवी स्टूडियो, फिल्म डिवीजन, गीत एवं नाटक डिवीजन आदि जैसे अर्द्ध-थिएटर संस्थानों में रखे जाते हैं। जो लोग मनोरंजन उद्योग में कुछ नया कर दिखाना चाहते हैं, वे थिएटर के माध्यम से लोगो मे लोकप्रिय होते हैं। घर में गैर-सरकारी (प्राइवेट) प्रशिक्षण देने तथा स्वतत्र रूप से नाटक लेखन और निर्देशन के रूप में स्व-रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध है।

थिएटर में लोगों को बहुत ज्यादा पारश्रमिक नही मिलता और जो लोग अपनी कलात्मक इच्छा को सतुष्ट करना चाहते हैं, उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होनी चाहिए। यदि किसी कलाकार को दर्शकों का सरक्षण प्राप्त है, केवल तभी यह व्यवसाय लाभदायी हो सकता है। थिएटर की दुनिया काफी बड़ी है, जहाँ हर व्यक्ति की अपनी-अपनी भूमिका होती है। यहाँ परदे के पीछे कार्य करनेवाले कलाकारों तथा परदे पर कार्य करनेवाले कलाकारों के मिले-जुले प्रयासो का ही परिणाम सामने आता है।

निम्नलिखित संस्थानों में ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, नई दिल्ली।
2. रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, 6/4, द्वारकानाथ टैगोर लेन, कोलकाता-700007।
3. भारतीय नाट्य अकादमी, लखनऊ।
4. नाट्य कला और डिजाइन अकादमी, नई दिल्ली।
5 भाषण और नाट्य विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब।
6 भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक महाविद्यालय, एम.एस बड़ौदा

विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात।

7. आंध्र विश्वविद्यालय वाल्टेयर, आंध्र प्रदेश-530003।
8. मैसूर विश्वविद्यालय, क्रॉफोर्ड हॉल, मैसूर-570005।
9 पांडिचेरी विश्वविद्यालय, कुलापेट, पांडिचेरी-605104।
10. मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, पलकलै नगर, मदुरै-625021।



निर्माण प्रबंधन

(Construction Management)

इमारत बनाने का कार्य मात्र ईटों को सीमेंट से जोड़ते हुए उनका चट्टा लगाना नहीं है। आज संरचना या निर्माण कार्य अत्यधिक विशेष क्षेत्र बन चुका है। इसमें भी ऐसी इमारतो को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है, जो भूकंप एवं आग लगने जैसी प्राकृतिक ओर मानव द्वारा खड़ी की गई विपदाओं मे भी सुरक्षित खडी रहें। इसके लिए योजना, उच्च तकनीकी जानकारी एव विशेष रूप से निर्माण कार्यो के ससाधनो का वृहदाकार प्रबधन ही नहीं, बल्कि समूची निर्माण-प्रक्रिया का प्रबंधन भी जरूरी है। इसी रूप में निर्माण-प्रबंधक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज निर्माण-प्रबंधन सिविल इंजीनियरिंग की अत्यधिक विशेषता-युक्त उप-शाखा बन चुका है।

प्रारंभ में भूमि प्राप्त करने, संबद्ध प्राधिकारी से अनुमति लेने तथा वास्तु-योजना पारित करने जैसे नीरस, कठिन कार्यों के बाद निर्माण प्रबंधक वास्तुकार, सिविल, इलेक्ट्रॉनिक और मैकेनिकल इंजीनियर जैसे अन्य तकनीशियनो के साथ मिलकर अनुबद्ध रूप से अपना कार्य प्रारंभ करता है। इस प्रकार परामर्श के बाद ढाँचे की अतिम योजना (*Plan*) पारित होती है। निस्सदेह यहीं पर निर्माण प्रबंधक की कहानी का अंत नहीं होता, बल्कि यह तो शुरुआत होती है।

निर्माण प्रबधक के कार्यों की रूपरेखा मे नियमित आधार पर विशेष निर्माण मशीनरी और उपकरणो का प्रबंध शामिल है। प्रबंधक कामगारों से लेकर इंजीनियर तक परियोजना में शामिल तमाम लोगों की भलाई सुनिश्चित करता है। बहुमंजिली इमारतों के (निर्माण) स्थलों के मामले में प्रत्येक स्थल मे अलग से प्रबंधक होता है, जो कामगार और सुपरवाइजर की देखभाल करता है। ये प्रबंधक मुख्य इंजीनियर या मुख्य निर्माण प्रबंधक के प्रति जिम्मेदार होते हैं।

इमारत खड़ी करना कोई आसान कार्य नहीं है। ईट और गारा-मसाले के बाद

नृत्य
(Dance)

इस सहस्राब्दी में मनोरंजन उद्योग में काफी उतार-चढ़ाव आया है। कला अब व्यक्ति की रचनात्मक प्रतिभा की संतुष्टि का माध्यम मात्र नहीं है, बल्कि यह आजीविका का भी आकर्षक साधन बनकर उभरी है।

प्राचीन काल में नृत्य सीखना सम्मानजनक परिवारों में वर्जित था; लेकिन अब विश्वव्यापी स्तर पर मनोरंजन उद्योग में व्याप्त ग्लैमर एवं चमक-दमक के कारण युवा पीढ़ी के लिए नृत्य सम्मानजनक कैरियर बनता जा रहा है। आजकल स्क्रीन पर असंख्य म्यूजिक वीडियो छाते जा रहे हैं। फिल्मों में नृत्य के दृश्यों में वृद्धि होती जा रही है। इस वजह से कैरियर के रूप में नृत्य सभी परिवारों में स्वतंत्र रूप से अपनाया जा रहा है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य का उत्साह एवं ऊर्जा अभी भी बरकरार है, लेकिन इसके साथ-साथ जॉज, बैलेट, वाट्ज, जिवे तथा टैप डांस जैसे पश्चिमी नृत्यों की भी फिल्म एवं वीडियो क्षेत्र में धूम मची हुई है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य की कोई भी शैली आठ-नौ वर्षों में सीखी जाती है। साधना और निष्ठा के बलबूते पर नृत्य सीखने की योग्यता विकसित होती है। यदि आपको कैरियर के रूप में भारतीय शास्त्रीय नृत्य सीखना है तो अनेक अवसर मौजूद हैं। भरत नाट्यम के लिए 'नाट्यवृक्ष', ओडिसी के लिए 'नृत्यग्राम', कत्थक के लिए 'गंधर्व महाविद्यालय', भरतनाट्यम के लिए नाट्यशाला, भारतीय कला केंद्र, दिल्ली जैसी उल्लेखनीय संस्थाएँ इस क्षेत्र में योगदान दे रही हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। व्यक्ति को पूरी निष्ठा से नृत्य सीखना पड़ता है। यह कहना भी उचित होगा कि शास्त्रीय नृत्य को सीखने के लिए कोई आयु सीमा या विशिष्ट अवधि नहीं है। लेकिन यह प्रशिक्षु की अभिवृत्ति, ईमानदारी, लगन एवं निष्ठा पर निर्भर करता है।

शास्त्रीय नृत्य मे पारगत होने के लिए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति निष्ठा, आदर और समझने की तीव्र आकाक्षा तथा कलाकार की मनोवृत्ति होना जरूरी है। बुनियादी तौर पर नृत्य स्वतत्र कार्य है। शास्त्रीय नृत्य ग्रुप में रंगमंच पर प्रदर्शित किए जाते हैं। अकेले स्टेज पर नृत्य करना बहुत जरूरी है। इससे जन-साधारण के सामने आने का समुचित अवसर मिलता है। व्यक्ति को अपनी प्रतिभा सिद्ध करने का भी मौका मिलता है। अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिष्य आगे चलकर अध्यापन क्षेत्र चुन सकता है या किसी भी कोरियोग्राफी ग्रुप में शामिल हो सकता है। देश में निष्पादन के लिए कोई ग्रुप एक शो के कम-से-कम पचास से साठ हजार रुपए तक लेता है।

अनेक वर्षो से भारतीय शास्त्रीय नृत्य विदेशों में अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है, क्योंकि अधिकाधिक संख्या में विदेशी इन नृत्य शैलियो को समझने लगे हैं। अत: यह क्षेत्र समूचे विश्व में पर्यटन का भी मौका देता है। सामान्यत: भारतीय सास्कृतिक अनुसधान परिषद् विदेशों मे दौरो पर जानेवाले छात्रों या कलाकारो को दी जानेवाली धनराशि तय करती है। यद्यपि दिल्ली मे नृत्य सीखने के लिए छात्रो को अधिकाधिक अवसर मौजूद हैं; लेकिन देश के दक्षिणी भाग में भी सीखने के असाधारण अवसर उपलब्ध है। उदय शकर अकादमी ऑफ क्रिएटिव डांस की दिल्ली और कोलकाता में शाखाएँ हैं। रचनात्मक नृत्यों के इस स्कूल में सर्जनात्मकता और नवाचार पर बल दिया जाता है। यह नौ वर्ष का पाठ्यक्रम है और तीन वर्षो की अवधि पर छात्र को डिप्लोमा दिया जाता है। पाठ्यक्रम के समापन पर छात्र की प्रतिभा और उत्कृष्ट स्तर के आधार पर यह संस्थान छात्र-छात्राओं को नियमित कलाकार के रूप मे ग्रुप मे शामिल कर लेता है। अन्यथा प्रशिक्षण के दौरान छात्र को स्कूल द्वारा आयोजित शो के माध्यम मे इतना मौका मिल जाता है कि वह व्यक्तिगत निष्पादन क्षमता के आधार पर अपनी शाखा खोल सकता है।

यद्यपि पश्चिमी नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य के समकक्ष नहीं हैं, फिर भी आज युवा पीढ़ी इस ओर आकर्षित होता जा रही है, क्योंकि इस क्षेत्र में पैसा अधिक मिलता है। पश्चिमी रचनात्मक नृत्यों का काफी ग्लैमर है। आजकल कुकुरमुत्ते के समान म्यूजिक एलबम तथा डांस वीडियो सर्वत्र छा रही हैं। हिंदी पॉप एलबम तथा डिस्को में हाई पॉप सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है। पारंपरिक रूप से सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य जाज है। इसकी अत्यधिक प्रशंसा की जाती है। जाज नृत्य सीखने मे कम-से-कम दो वर्ष लगते हैं। बैलेट के बारे में भी समान स्थिति है। इसमें शास्त्रीय और आधुनिक—दोनों रूप हैं। अनेक स्कूल खुल जाने के कारण पश्चिमी नृत्य

लोकप्रिय हो चुके हैं। सर्वोपरि स्थान शिमाक डावर इस्टीच्यूट आफ परफॉर्मिंग आर्ट्स का है। दिल्ली और मुंबई में इसकी शाखाएँ हैं।

आज प्रशिक्षित पश्चिमी नर्तक/नर्तकी के लिए कार्य की कोई कमी नहीं है। भारत में यह नया क्षेत्र है, अत: इसमें अनेक संभावनाएँ हैं। नर्तक/नर्तकी किसी भी कोरियोग्राफी टीम में शामिल हो सकते हैं, जो नियमित रूप से स्टेज पर प्रदर्शन करते है। सर्वाधिक लोकप्रिय रूप म्यूजिक एलबम है। विभिन्न कंपनियाँ संविदा के आधार पर नर्तक-नर्तकियाँ रखती हैं। इसके अलावा फिल्मों में हमेशा कोरियोग्राफी की बहुत माँग रहती है।

अपने कौशल के परिमार्जन तथा पश्चिमी नृत्य की जानकारी बढाने के लिए आप विदेशी विश्वविद्यालय मे जा सकते है। पॉल टेलर अकादमी, न्यूयॉर्क सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्था है। इसके अलावा मिल्स कॉलेज, कैलिफोर्निया प्राचीनतम संस्थाओं में से एक है। यहाँ सर्वाधिक प्रख्यात (आधुनिक नृत्य) शैलियाँ सिखाई जाती हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य और पश्चिमी नृत्य—दोनो के लिए पूर्व योग्यता होना जरूरी नही है। कोई भी साधारण व्यक्ति निष्ठा व लगन के साथ यह कला कुशलतापूर्वक सीख सकता है।

□

नृ-विज्ञान
(Human Science)

नृ-विज्ञान मानव विकास के अध्ययन से जुड़ा है, जिसमें मानव की उत्पत्ति तथा विश्व भर में भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक ढाँचे या संरचनाओं का भी अध्ययन शामिल है। विद्या के रूप में इसमें मनुष्यों के बीच विद्यमान भौतिक तथा सांस्कृतिक विविधता, एक ही समय में जीवन-यापन के ढंग तथा अलग-अलग वातावरण में विश्व के अलग-अलग हिस्सों का जीवन अध्ययन शामिल है।

नृ-विज्ञानी यह जानने का प्रयास करता है कि किन कारणों से मनुष्य जाति का रूप लेते हैं। अर्थात् समय, प्रणाली, भाषा आदि की दृष्टि से उनमें कौन-कौन सी शारीरिक समानताएँ पाई जाती है। धार्मिक मत, संस्कृति, परंपरा, सामाजिक परिपाटियों आदि के संबंध में मनुष्य परस्पर कैसे भिन्न हो जाते हैं। इस क्षेत्र मे मानव विकास तथा परिवर्तन—इन दो पक्षों पर फोकस होता है। नृ-विज्ञानी का मुख्य कार्य विभिन्न समाज और संस्कृतियों की तुलना करना है। इसमें क्षेत्र कार्य (फील्ड वर्क) शामिल है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गो के लोगों की अलग-अलग संस्कृति का उनके साथ रहकर अध्ययन किया जाता है।

नृ-विज्ञानी को कुल तथा समूह के बीच सबधों को ध्यान से देखकर रिकॉर्ड करना होता है तथा समाज के व्यवहार, भाषा तथा जीव-विज्ञान से संबंधित सूचनाओं को एकत्रित करना होता है। नृ-विज्ञानी को समाज के बारे में अधिक जानने के लिए अतीत और वर्तमान दोनों काल की वस्तुओं का अध्ययन करना होता है। वह उनके विकास के कारणों का पता लगाता है तथा ऐसे नए विचारों का परीक्षण करता है जिससे उस समाज मे उन्नति लाने में सहायता मिल सके, जहाँ हम रहते हैं। ये सरकार को एवं प्राइवेट संगठनों को सांस्कृतिक मसलों और विभिन्न समुदायो के मुद्दों पर सलाह देते है।

अध्ययन क्षेत्र के रूप मे नृ-विज्ञान चार अनिवार्य शाखाओं मे विभाजित है—

1. सामाजिक-सांस्कृतिक नृ-विज्ञान

यह शाखा सगठनों, बैंड, आदिवासी समुदायों या कार्यो के अध्ययन से जुडी है, जिनमें लोग स्वयं एकत्र होकर समूह बनाते है तथा उनका लोक-सगीत व नृत्यकला आदि मूर्त रूप लेते हैं। संस्कृति, मानव जाति, मध्य मार्ग, भाषा के सास्कृतिक पहलू तथा सप्रेषण एवं अन्य आर्थिक संबंध, रिश्ते, लिंग एव विवाह सामाजिकीकरण, सामाजिक नियंत्रण, राजनीतिक संगठन, श्रेणी, नास्तिकता, धम-सस्कृति के परिवर्तन जैसे पहलू इस अध्ययन-क्षेत्र में आते हैं।

2. जैव तथा भौतिक नृ-विज्ञान

यह शाखा मनुष्यों तथा भौतिक जैव (Organism) एवं जैविक विकास के स्थल के अध्ययन से सबधित हैं। शारीरिक परिवर्तन और प्रागैतिहासिक मानव की शारीरिक विशेषताओ के अवलोकन एव मापन द्वारा यह अध्ययन किया जाता है। यह आदि मानव के वर्गीकरण तथा मानव जातियो के बीच शारीरिक/भौतिक अतर, मानव आनुवंशिकी, मनुष्य में अनुकूलन क्षमता तथा परिवर्तन, नर-वानर विज्ञान और मानव विकास के जीवाश्म रिकॉर्ड, शरीर विज्ञान की दृष्टि से अनुकूलन क्षमता एव अलग-अलग भौतिक वातावरण के संबंध में विभिन्न प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है।

3. पुरातत्त्व नृ-विज्ञान

यह शाखा आदि मानव के विविध अवशेषो की जॉच एवं विश्लेषण से सबंधित है। प्रागैतिहासिक काल के पुरातत्त्वविद् का मुख्य कार्य खुदाई, अवशेषों की पहचान तथा वर्गीकरण करना है। इसमें अन्य क्षेत्रों से हड्डियॉ तथा अन्य सामान प्राप्त करना भी शामिल है, ताकि घटनाओं का कालक्रम निर्धारित किया जा सके। नृ-विज्ञानी साहित्येतर प्रमाण के आधार पर ऐतिहासिक पुनः संरचना का कार्य भी करते हैं, ताकि सांस्कृतिक विकास में आए प्रमुख परिवर्तनों या प्रवृत्तियों के संबंध मे अतर्दृष्टि विकसित हो तथा अतीत के समाज की अवशेष सामग्री को ढूँढ़ने, खुदाई करने, काल-निर्धारण एवं विश्लेषण की तकनीकों का भी विकास करते हैं।

4. भाषा नृ-विज्ञान

यह शाखा भाषा की उत्पत्ति तथा विकास के अध्ययन से संबधित है। भाषाविद् भाषा, विशेष रूप से इसके लिखित रूप, की संरचना से ही मुख्यत. सबध रखता है; जबकि भाषा नृ-विज्ञानी लिखित के साथ-साथ मौखिक भाषा-रूपों का भी अध्ययन करता है। साथ ही सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की महत्ता, शब्देतर

सप्रेषण तथा सरचना भाषा के प्रकार्य और इतिहास बोलिया पिजिन एव मिश्रित भाषा पर फोकस रखते हुए मानव सप्रेषण प्रक्रिया का भी अध्ययन करता है।

5. अनुप्रयुक्त नृ-विज्ञान

इस क्षेत्र में किए गए कार्य का सरकारी सेवाओं में इस्तेमाल किया जाता है, जैसे—कुपोषण की समस्या का समाधान, विकास में सहायता देना, यौन अपराध, चिकित्सा, उद्योगों में श्रमिकों के बीच पनपता रोष, कृषि की पद्धतियाँ, आदिवासी कल्याण, जन्म-नियंत्रण तथा पुनर्वास।

इस व्यवसाय का सर्वोत्तम पहलू

नृ-विज्ञानी को अनुसंधान कार्य के लिए देश-विदेश घूमना पड़ता है। अर्थात् जीवन-यापन की स्थितियाँ कठोर होती हे। कुछ नृ-विज्ञानी इस क्षेत्र के बारे मे विविध दृष्टिकोण अपनाते है तथा विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन करते हें; जैसे—भाषा-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, पोषण या व्यवहारमूलक विज्ञान और तब संस्कृति का निरंतर अध्ययन करने के लिए इन क्षेत्रों की विधियाँ इस्तेमाल करते है। इस कार्य मे प्रमुखतः लेखन, संपादन, क्षेत्र कार्य, शिक्षण, अन्य व्यवसायो को परामर्श देना एव दस्तावेज तैयार करना शामिल है। नृ-विज्ञानी विभिन्न संस्कृतियों की जाँच और विश्लेषण करता है, रिपोर्ट तैयार करता है और उनकी तुलना करते हुए यह जानने का प्रयास करता है कि संस्कृति कैसे विकसित होती है तथा एक संस्कृति कैसे अन्य सस्कृतियों के संपर्क में आती है।

नृ-विज्ञान में बी एस-सी के लिए 10+2 स्तर पर विज्ञान विषय होना जरूरी है। चयन प्रायः योग्यता के आधार पर किया जाता है। अनुसधान के लिए आगे अध्ययन करना जरूरी है, क्योंकि नृ-विज्ञान वस्तुत. शैक्षणिक विषय है।

नृ-विज्ञानी को प्रमुखतः तीन शाखाओं मे रोजगार मिलता है—शिक्षण, अनुसधान एव संग्रहालय। भारतीय नृ-विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता एव योजना आयोग जैसे सरकारी संगठनों तथा यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों मे इस क्षेत्र में शोध के लिए अनुसंधानकर्ता की नौकरियाँ विद्यमान हैं। वस्तुतः सभी बड़े प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक संग्रहालयो तथा कला सग्रहालयों में खुदाई कार्य से जुडे स्टाफ में नृ-विज्ञानी होते हैं। नृ-विज्ञानी खोज कार्य करते है तथा प्रागैतिहासिक स्थलों की यात्राएँ करते है; शिल्प कृतियो व अवशेषो का संरक्षण करते हैं, उन्हें वर्गीकृत करते हैं। ये लोग प्रदर्शनी की दृष्टि से अनुसंधान करते हैं तथा प्रदर्शी तैयार करने में सहायता करते हैं। जनजाति कल्याण

के लिए कार्यरत गैर-सरकारी सगठन, पोषण/चिकित्सा में कार्यरत स्थापनाएँ भी सामाजिक वैज्ञानिक के रूप में नृ-विज्ञानी रखते हैं। विभिन्न संस्कृतियों के संबंध में प्रबधकों के प्रशिक्षण, मानव संबंधों आदि के लिए विभिन्न कंपनियों के मानव ससाधन विभाग-संचार क्षेत्र मे भी रोजगार के विकल्प हैं। यद्यपि कुछ पश्चिमी देशों ने अपने पुलिस विभागों के अपराध शास्त्र एवं फॉरेंसिक प्रभागो में नृ-विज्ञानियो की भरती शुरू कर दी है; लेकिन भारत मे अभी भी इस तरह के पदो के बारे में नहीं सुना गया है।

आज जैसे-जैसे बाजार ग्राहक की ओर अधिक अभिमुख होता जा रहा है, नृ-विज्ञानी के लिए आंतरिक अनुसंधान विश्लेषक या परामर्शदाता के रूप में उत्पाद विकास, बाजार अनुसंधान तथा विज्ञापन कार्यनीतियों में सहायता देने के लिए सभावनाएँ बढ़ती जा रही हैं।

अधिकांश सरकारी एजेंसियों में प्रारंभ में लगभग बारह हजार रुपए प्रति माह वेतन मिलता है, जबकि भारतीय नृ-विज्ञान सर्वेक्षण में लगभग साढ़े आठ हजार रुपए प्रति माह वेतन मिलता है। इसमें सरकारी कर्मचारियों को मिलनेवाले विशेष भत्ते (Perks) शामिल नही हैं। गैर-सरकारी और अतरराष्ट्रीय सगठनों में इससे अधिक वेतन मिलता है।

हालाँकि पुराने जमाने (यूनानी काल) में भी नृ-विज्ञान विषय का अध्ययन होता था, लेकिन वाणिज्यवाद और अन्वेषण युग में यह विषय फलने-फूलने लगा था। अनुसंधान की संभावनाएँ भी उज्ज्वल हैं, क्योंकि मानव अधिकारो के प्रति विश्व स्तर पर जागरूकता बढ़ी है। पिछले वर्षो से इतिहास और संस्कृति के अध्ययन में पुनः रुचि जाग्रत् हुई है। आज समाज-कल्याण में सर्वाधिक रुचि ली जा रही है। संरक्षण तथा कौशल-सपन्न लोगों की इस क्षेत्र में माँग है। जैसे-जैसे यह क्षेत्र अधिकाधिक विशेषज्ञता प्राप्त करता जा रहा है, नृ-विज्ञान भी भू-विज्ञान, जीव-विज्ञान, समाज-शास्त्र, मानव जाति-विज्ञान, भाषा-विज्ञान आदि जैसी शुद्ध विज्ञान शाखाओं के साथ जुड़ता जा रहा है। दिलचस्प पहलू यह है कि सिविल सेवाओं में अधिकाधिक नृ-विज्ञानी आ रहे हैं। यदि आप नृ-विज्ञान में कैरियर नहीं बनाना चाहते तो सिविल सेवाएँ अति उत्तम विकल्प हैं।

यह पाठ्यक्रम इन संस्थानो मे चलाया जाता है—

1 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
2 कलकत्ता विश्वविद्यालय, सीनेट हाउस, 87, कॉलेज स्ट्रीट, कोलकाता।
3. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

4 संबलपुर विश्वविद्यालय, ज्योति विहार, बरला, संबलपुर, उड़ीसा।

5 श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, चित्तूर जिला, आंध्र प्रदेश।

6 कर्नाटक विश्वविद्यालय, पवाटे नगर, धारवाड़, कर्नाटक।

7 पंजाब विश्वविद्यालय, सेक्टर 14, चंडीगढ़।

8 गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बारडोली नगर, गुवाहाटी।

9 डॉ. हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, गौड़ नगर, सागर, मध्य प्रदेश।

10 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।



पर्यटन
(Tourism)

प्रतिवर्ष दुनिया भर में लगभग पचास करोड़ लोग मौज-मस्ती के लिए देश-विदेश की यात्राएँ करते हैं। इससे पर्यटन क्षेत्र आज विश्व का सबसे ज्यादा बड़ा उद्योग है, विश्व पर्यटन सगठन के अनुसार पर्यटन से प्रतिवर्ष चार सौ पचास अरब डॉलर की आमदनी होती है और यह आय निरतर बढती जा रही है। पर्यटन से पूरे विश्व को 10 प्रतिशत आय हो रही है तथा पूरे विश्व की श्रम शक्ति का दसवाँ हिस्सा इस क्षेत्र मे कार्यरत है।

पर्यटन उद्योग में घर से कोसों दूर यात्रा कर रहे लोगों को सेवाएँ दी जाती है। इसमें यात्रा टिकट के आरक्षण से लेकर भ्रमण की योजना बनाने तक का कार्य शामिल है। इस कार्य में काउंटर पर आमने-सामने ग्राहकों के साथ सीधे सपर्क स्थापित करना और उनके बजट तथा जीवन-शैली के अनुसार यात्रा की योजना बनाने मे सहायता करना शामिल है। ट्रेवल एजेट ट्रेवल एजेंसी और यात्री के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है।

इस उद्योग का विशेष पहलू टिकट की व्यवस्था करना है। इस कार्य में भ्रमण की योजना तैयार करने मे ग्राहकों को सहायता दी जाती है, यात्रा के मार्ग तैयार किए जाते हैं, गंतव्य स्थलों की सूचना प्रदान की जाती है, टिकटों की व्यवस्था की जाती है तथा ठहरने के लिए आरक्षण सुविधा का प्रबंध किया जाता है। इस उद्योग का महत्त्वपूर्ण हिस्सा यात्रा एवं गंतव्य प्रबधन है। टूर ऑपरेटर विशेष रूप से यह कार्य करते हैं। ये ऑपरेटर छुट्टियो का पेकेज देते हैं, जिसमें विशेप रुचि के पैकेज भी होते हैं। इसमें पुरातत्त्व से लेकर गोल्फ तक, वन्य जीवन और यहाँ तक कि ज्योतिष विद्या तक के क्षेत्र शामिल हैं। वस्तुत इस उद्योग का यह सर्वाधिक आकर्षक पहलू है, क्योकि पर्यटकों के गंतव्य का यह प्रारंभिक चरण है।

'गाइड' फिल्म के टूरिस्ट गाइड का जिक्र किए बिना पर्यटन की चर्चा करना

न्यायोचित नही लगता। टूरिस्ट गाइड अनजान जगहो मे अजनबी के लिए मशाल का काम करते है। इन्हें पर्यटकों के साथ गंतव्य स्थलों पर जाना होता है तथा उनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान रखना होता है, उनके भ्रमण अनुभव को यादगार बनाने की भूमिका निभानी होती है। इस नौकरी के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के पास पर्यटन स्थल की गहन जानकारी हो, साथ ही वाक्कला में उत्कृष्ट कौशल हासिल हो।

आजकल यात्रा और पर्यटन पर अत्यधिक दबाव डाला जा रहा है। परिणामस्वरूप भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में काफी नए और विशेष पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनमें से कुछ संस्थान इस प्रकार हैं—भारतीय यात्रा एव पर्यटन प्रबंधन संस्थान (IITTM), राष्ट्रीय जल खेलकूद संस्थान (NIWS) गोवा और शिग तथा पवर्तारोहण सस्थान (ISM), गुलमर्ग। इन सस्थाओ का लक्ष्य देश मे पर्यटन और यात्रा प्रवधन के क्षेत्र मे शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान सुलभ कराना है। यह पाठ्यक्रम यात्रा उद्योग में गौण नही, पूरक कैरियर है। उदाहरण के तौर पर—टूर ऑपरेशन, परिवहन आवास और दुभाषिए की सेवाएँ इत्यादि इस क्षेत्र में शामिल है।

यात्रा एवं पर्यटन के कैरियर के लिए कोई विशेष योग्यता नही चाहिए। लेकिन आज की परिस्थितियों को देखते हुए इस क्षेत्र में डिप्लोमा या डिग्री प्राप्त करना वांछनीय है। यदि आपकी उच्च स्तर तथा मध्यम स्तर पर प्रबधन कार्य मे रुचि है तो आप स्नातकोत्तर डिग्री ले सकते हैं। कुछ संगठनों में कंप्यूटर विज्ञान, भूगोल, संचार या विदेशी भाषाओं की पृष्ठभूमि रखनेवाले एजेंटो को प्राथमिकता दी जाती है। तथापि यदि आप ट्रेवल एजेंट बनना चाहते हैं तो आपके पास हाई स्कूल का प्रमाण-पत्र होना चाहिए। प्रायः अधिकाश ट्रेवल एजेंसियाँ अपने कर्मचारियों को 'ऑन-द-जॉब' प्रशिक्षण देती है, ताकि वे कप्यूटर के जानकार हों; क्योंकि एयरलाइन तथा केंद्रीयकृत आरक्षण प्रणाली ऑपरेट करने के लिए कंप्यूटर का ज्ञान होना जरूरी है।

अधिकाश एजेंट ट्रेवल एजेंसी मे स्वागतकर्ता (रिसेप्शनिस्ट) के रूप में कार्य करना शुरू करते हैं। अंततः वे कार्यालय प्रबधक या अन्य पदों पर पदोन्नति पाते है। उसके पश्चात् पूर्ण रूपेण ट्रेवल एजेट की हेसियत से कार्य करते हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता अपनी ट्रेवल एजेंसी खोलना है। इस कार्य के लिए आपके पास निश्चित सीमा तक ज्ञान एव विशेषज्ञता हो। आप अनुभव से ही इस मुकाम तक पहुँच सकते हे। इसलिए कुछ समय तक किसी ट्रेवल एजेंसी मे कार्य करना अनिवार्य है। भारत मे अनेक प्रमुख क्रूज लाइनें, रिजॉर्ट एवं विशेष यात्रा ग्रुप भाडे पर ट्रेवल एजेंट की सेवाएँ लेते हैं, ताकि प्रतिवर्ष भ्रमणार्थ आनेवाले लाखों सैलानियों के लिए 'ट्रेवल

पैकेज' बढ़ाया जा सके।

अर्जित ज्ञान और विशेषज्ञता के अनुसार ट्रैवल एजेंसियाँ वेतनमान देती है। यदि आप प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य आरंभ करना चाहते हैं तो आपको तीन हजार से लेकर साढ़े तीन हजार रुपए तक के बीच आय हो सकती है। टूरिस्ट गाइड दैनिक आधार पर वेतन पाता है। ट्रेवल एजेसी के अनुसार उसे पाँच सौ से आठ सौ रुपए तक प्रतिदिन आमदनी होती है। प्रबधन मे व्यक्ति दस हजार से तीस हजार रुपए तक प्रतिमाह कमा सकता है। पुनः यह धनराशि भी उस ट्रेवल एजेसी की स्थिति पर निर्भर करती हैं, जहाँ पर व्यक्ति काम करता है। अपनी एजेंसी चलाने पर आय की कोई सीमा नहीं है। एजेंसी टूर की अवधि, ग्राहक द्वारा माँगी गई सुविधाओं और कवर की गई निश्चित दूरी के अनुसार भुगतान करती है। इसलिए कोई पूर्ण निश्चित धनराशि वसूल नहीं दी जाती है। यह मुनाफे का कारोबार है, जिसमें जिम्मेदारी का भार अधिक होता है। आपको पर्यटकों की तमाम जरूरतों का ध्यान रखना होता है तथा उनकी शुभ एव मगलमय यात्रा सुनिश्चित करनी होती है।

इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष ग्राहकों का विश्वास हासिल करना है। अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ अच्छा लेखन कौशल, आकर्षक व्यक्तित्व, यात्रा में रुचि, प्रमुख पर्यटन गंतव्यो, होटलो और स्थानीय रीति-रिवाजों की जानकारी है। अच्छी आयोजना और समय-प्रबंधन, यात्रियों की जरूरतो के प्रति सवेदनशीलता, ऊर्जा, शक्ति आर उत्साह जैसे अन्य गुणों का भी होना जरूरी है। निस्सदेह, आप में इन गुणों के साथ-साथ उत्तम कोटि का ट्रेवल एजेट बनने का धैर्य भी होना चाहिए। ट्रेवल और पर्यटन कैरियर है; लेकिन इसमे मात्र आकर्षण या ग्लैमर नहीं है। इस क्षेत्र में कुछ कर दिखाने के लिए जरूरी है कि आप कठिन परिश्रम करने का सामर्थ्य रखते हो तथा साथ ही आपकी घूमने में रुचि हो।

☐

पर्यावरण विधि

(Environmental Law)

पर्यावरण का मुद्दा भौगोलिक सीमाओं ं ण चुका है। वैज्ञानिक उन्नति के लिए मानव द्वारा पर्यावरण को पहुँची क्षति क कारण आज मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड गया है। अब विश्व पर्यावरण को बचाने के तरीकों की तलाश में जुटा है। यह पर्यावरण हमारे अस्तित्व का आधार है।

सन् 1972 मे स्टॉकहॉम मे संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण कॉन्फ्रेंस हुई थी। उस कॉन्फ्रेंस में मानव पर्यावरण के संरक्षण एव संवर्धन में पूरे विश्व को प्रेरित करने तथा मार्गदर्शन के लिए सामान्य दृष्टिकोण और सिद्धांतों की आवश्यकता पर विचार किया गया। सन् 1992 में रियो डि जनेरियो में आयोजित संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण और विकास कॉन्फ्रेंस में निर्णय लिया गया कि प्रदूषण तथा अन्य पर्यावरणीय क्षति के शिकार लोगों को मुआवजा देने और इसके संबंध मे देयता सुनिश्चित करने हेतु राष्ट्रीय विधि कॉन्फ्रेंस के लिए देशों का आह्वान किया जाए। इससे उन लोगों के लिए कैरियर का नया क्षेत्र खुला है, जो अपने चारों ओर जीवन की सुरक्षा तथा सरक्षण के बारे में चिंतित हैं।

भारत के संविधान मे राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धातो तथा मूल अधिकारो मे पर्यावरण पर विचार किया गया है। सन् 1980 में पर्यावरण विभाग की स्थापना की गई थी, ताकि देश का स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सके। बाद मे यह विभाग सन् 1985 मे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में बदल गया। अनेक विधियों, अधिनियमो, नियमों तथा अधिसूचनाओं द्वारा सवैधानिक प्रावधानों का समर्थन किया गया है। भोपाल गेस त्रासदी के शीघ्र बाद पर्यावरण सरक्षण अधिनियम (EPA), 1986 लागू किया गया। इस अधिनियम से विद्यमान कानूनों के अतरालों को पाटने के लिए कानूनी सरक्षण मिल गया। इसके पश्चात् जैसे-जैसे समस्याएँ बढती गई, अनेक कानून अस्तित्व मे आते गए, जैसे—खतरनाक अवशिष्ट पदार्थो की हैंडलिंग और प्रबंधन नियमावली, 1989। इससे कानूनी अध्ययन अवसरों में विशेष क्षेत्र का प्रादुर्भाव हुआ।

आज प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण से सबधित मुद्दे उठा रहा है। उद्योगो को पर्यावरण विशेषज्ञों की अनुमति लेनी जरूरी है। इसलिए यह ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पर्यावरण विधि मे विशेषज्ञ को नौकरी मिल सकती है। यह मुद्दा इतना अधिक महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है कि दिल्ली विश्वविद्यालय मे एल-एल बी. की पाठ्यचर्या मे 'पर्यावरण विधि' अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

इस पाठ्यचर्या का लक्ष्य छात्रो को पर्यावरण विधि की मूलभूत विशेषताओ से परिचित कराना ही नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा ग्लोबल परिप्रेक्ष्यो में पर्यावरण मुद्दों को समझने के कौशल का विकास भी करना है। पर्यावरणीय मुद्दों को दिए जा रहे महत्त्व को देखते हुए अनेक संस्थानों में पर्यावरण विधि में 'क्रैश पाठ्यक्रम' प्रारंभ किए गए है।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम में दाखिला लेने की न्यूनतम योग्यता मान्यता प्राप्त भारतीय विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्री या विदेशी विश्वविद्यालय से समतुल्य डिग्री है। लेकिन प्रायः इस पाठ्यक्रम में विधि स्नातकों को प्राथमिकता दी जाती है।

भारतीय विधि संस्थान, भगवान दास रोड, नई दिल्ली में पर्यावरण विधि में एक वर्ष का डिप्लोमा कराया जाता है। विश्व प्रकृति निधि ग्लोबल संगठन भी है, जहाँ प्राकृतिक निधि को पहुँच रही क्षति को रोकने का प्रयास किया जाता है। यहाँ पर्यावरण विधि मे 5 माह का डिप्लोमा कार्यक्रम कराया जाता हे। यहाँ केवल तीस सीटे हैं, जिनमें से आठ सीटें संस्तुति के आधार पर सार्क देशो के विद्यार्थियों के लिए आरक्षित है। इस पाठ्यक्रम में विशद रूप से पर्यावरण विधि आती है। यह विषय अतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय श्रेणियों मे विभाजित है। पर्यावरण विधि से सबधित पाठ्यक्रम चलानेवाले अन्य विश्वविद्यालय नलसेर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद तथा लखनऊ विश्वविद्यालय है। इसके अलावा नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इडिया, बगलोर में भी तीन मास का क्रैश कोर्स चलाया जाता है।

यद्यपि इस क्षेत्र में अनेक दिशाएँ हैं, लेकिन कोई व्यक्ति तभी लाभ उठा सकता है जब उसकी पर्यावरण में रुचि हो। एक वकील के लिए यह आकर्षक क्षेत्र है, लेकिन यदि वह इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त, फैक्टरी और सरकारी सगठनों में भी विधाई पृष्ठभूमिवाले व्यक्तियों की भरती की जाती है, जो पर्यावरण विधि के विशेषज्ञ हों। इसके अलावा विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों में भी काफी सभावनाएँ मौजूद हैं, जो इस क्षेत्र से गहराई से जुडे हैं तथा काफी कुछ कर रहे है।

□

पशु चिकित्सा विज्ञान

(Veterinary Science)

पशु चिकित्सा विज्ञान ऐसा विषय है, जिसमें वन्य जीवन का क्षेत्र आता है और वन्य जीवन को मानव जगत् के विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के दायरे में लाता है।

इस शाखा का उद्देश्य बेजुबान पशुओ के दर्द एवं पीड़ा का एहसास करना तथा उसका इलाज करना है। यह कार्य-क्षेत्र बहुत अच्छा है। यह ऐसे मजबूत सुदृढ प्राणि जगत् से जुड़ा है, जो ताकतवर होने के बावजूद मानव पर अश्रित है। पशु विज्ञान चिकित्सा भी चिकित्सा विज्ञान की ही शाखा है, जो पशुओं के रोगों के उपचार और नियंत्रण से जुड़ी है। यह विषय पशु धन के वैज्ञानिक पालन-पोषण (breeding) तथा देखभाल से संबंधित है। इस कार्य में प्रमुखत पालतू पशु या पशुपालन शामिल है, जिसमे गाय, भैस, बैल, बकरी, घोड़ तथा मुरगी फार्म जैसे पशु भी शामिल हैं।

पशु चिकित्सा विज्ञान उभरता हुआ क्षेत्र है। वन्य जीवन के संरक्षण तथा पालतू पशुओं की देखभाल के प्रति लोगों की रुचि और जागरूकता बढ़ रही है। इस क्षेत्र मे विशेष अध्ययन की जरूरत है। स्नातक स्तर पर यह विषय लिया जा सकता है। पशु चिकित्सक के रूप मे कार्य करने के लिए पशु चिकित्सा विज्ञान में स्नातक (बी वी एस सी) की डिग्री लेना जरूरी है। बी.वी.एस.सी के लिए 10+2 स्तर पर भौतिकी, रसायन तथा जीव-विज्ञान विषय होने चाहिए। यह साढे चार वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके साथ एक वर्ष की प्रैक्टिकल इंटर्नशिप है। इस पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक पक्ष मे पशु-स्वास्थ्य, रोग और उपचार के लिए आवश्यक सभी विषय शामिल है। स्नातक स्तर पर अध्ययन में पशु शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान (फिजियोलॉजी), पैथोलॉजी, फार्माकोलॉजी तथा सबद्ध विषय शामिल है। क्लीनिकल अध्ययन में पशु चिकित्सा, स्वच्छता तथा पैथोलॉजी समाविष्ट है। व्यावहारिक प्रशिक्षण इस पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण घटक है।

भारतीय पशु चिकित्सा परिषद् अखिल भारतीय स्तर पर पशु-विज्ञान सबंधी कॉलेजों में प्रवेश परीक्षा आयोजित करती है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए पी सी बी और अंग्रेजी मे कम-मे-कम 50 प्रतिशत अक होने चाहिए। आई सी ए आर (भारतीय कृषि अनुसधान परिषद्) गज्य कृषि विश्वविद्यालयो में 15 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय डेरी अनुसधान संस्थान, करनाल और केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इंफाल में पशु चिकित्सा विज्ञान से संबधित विषयो की शत प्रतिशत सीटे भरने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा आयोजित करता है।

पशु चिकित्सक सर्जरी, ओषधि, नेत्र विज्ञान, डेटीस्ट्री. रेडियोलॉजी, एक्युपक्चर या कीरो प्रैक्टिस जैसे विषयो में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं। साथ ही, स्नातकोत्तर प्रशिक्षण एवं अन्य परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण करते हैं।

पशु चिकित्सा विज्ञान में दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम होता है। इस पाठ्यक्रम के लिए व्यक्ति को विशेषज्ञता हासिल करनी होगी। यहाँ विकल्प इस प्रकार हैं—पशु शरीर रचना विज्ञान, जैव-रसायन, पशुपालन, पशु-अर्थशास्त्र, पशु-पालन विस्तार, पशु-प्रजनन तथा पशु-धन विस्तार, पशु जेनेटिक्स, ब्रीडिंग डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी. डेयरी रसायन, डेयरी इंजीनियरिंग, डेयरी हाइक्रोबायोलॉजी, फूड हाइजन, फीड ओर चारा प्रौद्योगिकी, ऑब्स्टेट्रिक्स एव गाइनोकोलॉजी, माइक्रो-बायोलॉजी, ऊष्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पोषण, पैथोलॉजी, फीजियोलॉजी परजीवी-विज्ञान (पैरासिटोलॉजी), मुरगीपालन (पॉल्ट्री), विज्ञान एव प्रौद्योगिकी, सुअर पालन (पिगरी), औषध-विज्ञान (फार्माकोलॉजी), निवारणात्मक चिकित्सा, सर्जरी या साख्यिकी और विष-विज्ञान (टॉक्सिकोलॉजी)। समूचे भारत के विश्वविद्यालयो मे विभिन्न मास्टर एवं डॉक्टरल स्तर के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। पी-एच.डी मे तीन वर्ष या इमसे अधिक समय लग सकता है। यह थीसिस के स्वरूप पर निर्भर करता है।

पशु-चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे निरतर संभावनाएँ बढ़ रही हैं। इस क्षेत्र मे विदेशों में जाने के भी अवसर उपलब्ध हैं। तथापि भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान मे अनुसंधान की समुचित सुविधाओं का अभाव है। भारत मरकार उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है, लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है। कनाडा और ऑस्ट्रेलिया इस क्षेत्र मे अनुसधान और विकास के सर्वाधिक अवसर प्रदान करते हैं।

सरकारी सेवा मे कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी को प्राय: खंड (ब्लॉक स्तर पर) विस्तार कार्यक्रम आयोजित करने पड़ते है। पशु धन रखनेवाले किसानों को शिक्षित किया जाता है तथा प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि पशु धन की गुणवत्ता

बढाइ जा सके पशु चिकित्सक को डेयरी क्षेत्र फार्मास्यूटिकल कपनियो पाल्ट्री फार्म, पशु कल्याण सोसाइटी तथा आर.वी सी (आर्मी रिमाउट वेटेरिनरी कोर) मे नियुक्त किया जाता है। दुर्लभप्राय पशुओं की देखभाल एव उपचार और उनका उपयुक्त वास बनाए रखने के लिए चिड़ियाघरों एव वन्य जीव अभयारण्य मे भी रोजगार के अवसर मौजूद है। भेड़, बकरी, सूअर एवं मुरगी जैसे पशुओं से हमें खाद्य पदार्थ मिलते है। सरकारी सेवा में कार्यरत पशु चिकित्सक प्रायः इन पशुओ में रोग नियत्रण एवं उन्मूलन का कार्य करते हैं। अवशिष्ट पदार्थ, सदूषण तत्त्व तथा भोजन की गुणवत्ता का मॉनीटरन करते हुए ये खाद्य सुरक्षा का कार्य भी करते हैं।

पशु चिकित्सक तीन स्तरों पर शिक्षा सबंधी कार्य करते हैं—

(1) स्नातकोत्तर अनुसधान कार्य का पर्यवेक्षण, (2) पशु चिकित्सा नर्सिंग, पशु-प्रबंधन प्रयोगशाला और जैव विज्ञान जैसे स्नातक स्तर से नीचे के पाठ्यक्रम मे पढाना तथा (3) पशु रोगों का अध्ययन।

पशु स्वास्थ्य, पशुधन उद्योग, मैरीन अनुसंधान, मोलिक्यूलर विज्ञान, मानव पोषण एव वन्य जीवन तथा पारितंत्र जैसी अनेक अनुसंधान डिवीजनों में पशु चिकित्सकों की नियुक्ति की जाती है। पालतू पशुओ के आहार एवं पशुचारा कपनियों तथा कृत्रिम ब्रीडिग एवं प्रजनन प्रौद्योगिकी सेवाओं में भी इन चिकित्सको की जरूरत पड़ती है।

फर्मास्यूटिकल उद्योग में पशु चिकित्सकों की विभिन्न प्रकार की नौकरियाँ विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में पशुओ की नई दवा तैयार करने और उसके परीक्षण के लिए निरतर अनुसधान कार्य चल रहा है। ये चिकित्सक सरकारी पशु अस्पताल में नौकरी कर सकते है या अपना क्लीनिक खोल सकते है। डेयरी अनुसंधान या पॉल्ट्री फार्म मे भी पशु चिकित्सक की माँग रहती है।

इन दिनो पशु चिकित्सा विज्ञान काफी लोकप्रिय है। प्राय. सरकारी अस्पतालो मे पंद्रह हजार से बीस हजार रुपए तक प्रतिमास वेतन मिलता है। प्राइवेट प्रैक्टिस की स्थिति में व्यक्ति शुरू-शुरू में पॉच हजार रुपए प्रतिमास कम-से-कम कमा सकता है।

बडे-बड़े बूचड़खानो में पशु चिकित्सक 'मीट इंस्पेक्टर' भी बन सकते है। बीमा और बेकिंग कार्यालयों में भी अवसर मौजूद हैं, जहाँ पशु और पशुधन का मूल्य ऑका जाता है। विस्तार अधिकारी के रूप में सरकारी सेवा में लोगो को, विशेपत. किसानों को, पशुपालन, पशु धन की गुणवत्ता में सुधार लाने के विभिन्न तरीकों तथा पशुओं के अधिकाधिक लाभ (yield) के बारे में शिक्षित किया जाता

है, साथ ही पशु का स्वास्थ्य और जीवन/आयु भी सुनिश्चित की जाती है।

पशु चिकित्सक का कार्य चुनौती भरा है, उसमें काफी धैर्य एवं शक्ति तथा पशुओं के प्रति प्रेम भाव होना चाहिए। उसमे पशुओ के मनमाने व्यवहार मे निपटने की योग्यता होनी चाहिए। वह प्रतिकूल स्थितियो मे कार्य करने की क्षमता रखता हो और साथ ही उसमे पशुओ की व्यवहारमूलक विशेषताएँ समझने की क्षमता एवं जिज्ञासा होनी चाहिए।

उक्त पाठ्यक्रम निम्नलिखित संस्थानों में चलाया जाता है—

1. कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी साइंस, राजेंद्र नगर, हैदराबाद-500030
2. कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी खानपाडा, गुवाहाटी-781022
3. फैकल्टी ऑफ वेटेरिनेरी साइंस एंड एनिमल हस्बेंड्री, कॉके, रॉची-834007।
4. गुजरात कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी साइंस एंड एनिमल हस्बेंड्री, जिला खेड़ा आनंद-388001।
5. कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी साइंसेज, हिसार-125004।
6. बॉम्बे वेटेरिनेरी कॉलेज, परेल, मुबई-334001।
7. कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी साइंस एंड एनिमल साइंस, बीकानेर।
8. कॉलेज ऑफ वेटेरिनेरी साइंस एंड एनिमल साइंस, भुवनेश्वर- 751003।



पाक कला
(Cooking)

आज पूरा विश्व एक कुटुंब में समा गया है। इससे बावर्ची या शैफ का नया रूप सामने आया है। वह विशेषज्ञ है, टीप-टापवाला चुस्त व्यक्ति है। उसे वेतन मे मोटी रकम मिलती है। वह आतिथ्य उद्योग की रीढ़ की हड्डी बन चुका है। 'कांटिनेंटल' से लेकर 'ओरिएंटल' तक, विदेशी भोज्य पदार्थों से लेकर साधारण या देशज व्यंजनों तक बावर्ची की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अब भोजन तैयार करना केवल रुचि या शौक का विषय नहीं रहा है, बल्कि यह भोजन परोसने की कला तथा तकनीक बन चुका है।

इसलिए यदि आप अनूठे व्यंजन तैयार करने के शौकीन है और तीखा, चटपटा, स्वादिष्ट भोजन पका सकते हैं, यदि आप जानते हैं कि कितनी देर में अंडे उबल जाएँगे, आपको इस तरह से टमाटर काटना आता है कि वह सैटा जैसा दिखाई दे अथवा आपका मनपसद स्थान रसोईघर है तो निश्चित रूप से एक आकर्षक कैरियर आपके सामने हैं। किसी भी होटल का केंद्रबिंदु उसकी रसोई तथा स्टाफ होता है। रसोईघर का फ्रंट ऑफिस, अतिथि-सत्कार, गृह व्यवस्था जैसे अन्य विभागो के साथ समन्वय कार्य होता है जिससे अतिथिगण को आवश्यकता पड़ने पर विशेष सेवाएँ भी दी जा सकती हैं।

व्यावसायिक बावर्ची होने के लिए आपको तीन वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम करना होगा। होटल प्रबंधन से जुड़ी अनेक संस्थाएँ यह पाठ्यक्रम चलाती हैं। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम वैकल्पिक है। होटल प्रबंधन के छात्रों के लिए आवश्यक छह माह का औद्योगिक प्रशिक्षण लेने के पश्चात् व्यक्ति रसोईघर में 'ऑन-द-जॉब' प्रशिक्षण ले सकता है। पाकशाला कला एवं रसोई प्रशासन में तीन वर्ष का विशेष डिप्लोमा भी किया जा सकता है। ताज ग्रुप होटल, रेसॉर्ट तथा पैलेस के साथ मिलकर होटल प्रबंधन संस्थान ऐसा ही एक पाठ्यक्रम चलाता है।

यदि आप संबंधित डिप्लोमा के लिए असाधारण रूप से उपयुक्त पाए जाते है तो जहाँ आप आवेदन करते है वहाँ अर्जित कौशलो की परीक्षा लेने के बाद आपको सगठन में स्थायी रूप से रखा जा सकता है।

होटल प्रबंधन संस्थान में आवेदन के लिए आपके पास 10+2 स्तर पर कम-से-कम 50 प्रतिशत अंक होने चाहिए। आयु सीमा बाईस वर्ष है। अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 15 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए 7 5 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद दाखिला मिलता है। उम्मीदवारों की अंग्रेजी, अंकीय ज्ञान, वैज्ञानिक अभिरुचि, लॉजिकल व्यकलन (deduction), तर्कशक्ति विषयो मे परीक्षा ली जाती है। चयन के बाद सामूहिक परिचर्चा तथा साक्षात्कार होता है। इससे उम्मीदवार की प्रबंधकीय क्षमता और व्यक्तित्व को परखा जाता है। असाधारण रूप से योग्य विद्यार्थियों को संस्थान तथा इसकी स्वीकृत शाखाओं के अनुसार छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं।

किसी अन्य व्यवसाय की तरह रसोई विभाग मे भी पद क्रम होते है। शीर्ष पर कार्यकारी बावर्ची (शैफ) होता है/होते है। ये दो प्रकार के होते हैं—(1) प्रशासनिक चीफ शैफ—जो विभाग का स्टॉक सॅभालता है; यह पाक कला मे सक्रिय रूप से शामिल नही होता है। (2) पाकशाला चैफ—यह अतिथियों के समक्ष भोजन परोसने में सक्रिय रूप से शामिल होता है। कुछ होटलो में एक ही चैफ दोनो कार्य करता है तथा इसके अलावा 'सोल' चैफ एवं अन्य स्टाफ (सुपरवाइजरो सहित) भी कार्य करता है तथा अंत मे प्रशिक्षणार्थी शामिल होता है। कार्यकारी चैफ, सोल चैफ, स्टाफ तथा प्रशिक्षणार्थियों की सख्या विभिन्न होटलों मे अलग-अलग होती है। 'ऑन-द-जॉब' प्रशिक्षणार्थी तथा कार्यकारी प्रशिक्षणार्थी इस विभाग मे रखे जाते हैं। पद क्रम में शीर्ष पर पहुँचने की यात्रा चैफ के अनुभव और उसकी प्रतिभा एवं अभिरुचि पर निर्भर करती है।

रसोई मे काफी समय तक कार्य करना पड़ता है। यहाँ छुट्टी न के बराबर मिलती है। अवकाश के दिनों तथा त्योहारों के समय मे कार्य का अधिक बोझ रहता है। इससे भी ज्यादा परेशानी यह है कि ग्राहक के साथ कोई सीधा संपर्क नही रहता।

आम लोगों की यह धारणा है कि होटल उद्योग आकर्षक है। इसके विपरीत चैफ का कार्य ऐसा नहीं है। कम-से-कम तब तक ऐसा नही हो पाता जब तक वह कार्यकारी चैफ पद तक नही पहुँच जाता। चैफ टीम के एक ही बार में कम-से-कम तीन सौ लोगों को सॅभालना पड़ता है। इस कार्य में काफी शक्ति खर्च होती है।

लेकिन इसके परिणाम तुरत सामने आते है और प्रशसा भी तुरत मिलती है हर व्यक्ति अच्छा चेफ नहीं बन सकता। अच्छे चैफ मे भोजन के प्रति लगन होनी चाहिए। पाक कला तकनीकी विज्ञान है। अच्छे चैफ को नमीवाले ताप तथा शुष्क ताप के बीच अंतर जैसी बुनियादी बातों से भी परिचित होना चाहिए। वह सुगंध के प्रति लालायित हो तथा उसे यह जानना चाहिए कि विशेष तापमान एवं अन्य तत्त्वों के प्रति किसी तत्त्व की क्रिया क्या होगी।

अच्छा कुक बनने के लिए व्यक्ति को तीन वर्ष का पाक कला में प्रशिक्षण लेना होता है। छह माह का अनिवार्य व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने के बाद ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण के लिए रसोई विभाग चुनना होगा। इस अवधि के दौरान व्यक्ति विभिन्न व्यंजन बनाना सीखता है तथा उनमे से कोई विशेष क्षेत्र चुनता है। पाक कला के क्षेत्र मे अधिक-से-अधिक उन्नति करने के लिए आपको उदार विचारोंवाला तथा नए-नए व्यंजन बनाने का शौकीन होना चाहिए।

तनाव तथा पीछे रहने जैसी कमियो के बावजूद चैफ की नौकरी संतोषजनक है तथा काफी वित्तीय सुविधाएँ मिलती हैं। आप कहीं भी पाँच हजार से पचास हजार रुपए के बीच प्रतिमाह कमा सकते है और यहाँ तक कि ऊँचे पदों पर एक लाख रुपए तक भी कमा सकते हे। तत्पश्चात् आपको प्रतिष्ठा भी मिलती है। 'खाना खजाना' के संजीव कपूर तथा जिग्स कालड़ा और तरला दलाल जैसे नाम गिने जा सकते हैं।

बड़े-बडे होटलों और रेस्तराँ के अलावा क्लबों, क्रूजशिप, एयरलाइन खान-पान प्रबध, केबिन सेवाओं, बेकरी, पर्यटन संगठनों, औद्योगिक तथा संस्थागत खान-पान सेवाओ, बैंकों, बीमा के खान-पान विभागों, होलीडे रेसॉर्ट आदि में भी चैफ की सेवाओ की जरूरत पड़ती है। इस सूची का कहीं अत नही है।

यदि आप में कौशल है तथा इस क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव है तो आप अपना रेस्तराँ भी खोल सकते है। यदि आप गुणता, सेवा तथा अतिथि-सत्कार पर ध्यान केंद्रित रखते हें तो इस उद्योग की त्रुटियों से बचा जा सकता है। लेकिन आपके पास पर्याप्त अनुभव होना जरूरी है। आप 'कुकिंग स्कूल' भी खोल सकते हैं। इस क्षेत्र मे अनेक संभावनाएँ विद्यमान है, जिनका अभी पता लगाया जाना है। इस कैरियर मे सफलता की कुंजी दृढ निश्चय एव लगन है। विदेशों में भारतीय चैफ की काफी माँग है।

हालाँकि खाना पकाना महिला जगत् का कार्य माना जाता है, लेकिन इक्की-दुक्की महिला प्रशिक्षणार्थी ही रसोई को विशेषज्ञता क्षेत्र के रूप में चुनती हैं। इसके

पीछे दो कारण हैं—एक, होटल की रसोई पुरुषों से भरी रहती है। इससे महिलाओं को कार्य करने में परेशानी होती है। दूसरे, उन्हें भोजन से भरे बड़े-बड़े बरतन उठाने में दिक्कत होती है। कुल मिलाकर खूब सोच-समझकर रसोई को कैरियर के रूप में चुना जाए। हालाँकि यह कार्य करना कठिन है, लेकिन इसमें असीम परितोष मिलता है। इसलिए इस आश्चर्यजनक कैरियर के बारे में सोचें और खाना पकाने के लिए तैयार हो जाएँ।

पाक कला सिखानेवाले संस्थान इस प्रकार हैं—

1 इंस्टीच्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एंड एप्लाइड न्यूट्रीशियन (होटल प्रबंधन, खानपान प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषण संस्थान) (इसकी शाखाएँ समस्त भारत में मौजूद हैं)।

2. द वेलकम ग्रुप ग्रेजुएट स्कूल ऑफ होटल एडमिनिस्ट्रेशन, वैली व्यू, मनीपाल-576119, कर्नाटक।

3. प्रशिक्षण प्रबंधक, द ताजमहल होटल, मानसिंह रोड, नई दिल्ली- 110011।

4 ओबरॉय सेंटर ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट, 1 शमनाथ मार्ग, दिल्ली-110054।

5 इंस्टीच्यूट ऑफ एडवांस मैनेजमेंट एंड होटल मैनेजमेंट कॉलेज, एई-468, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-700064।

6 इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, मौलाना आजाद एजुकेशनल कैंपस, औरंगाबाद।

7. काडला कृष्ण राव मेमोरियल कॉलेज ऑफ होटल मैनेजमेंट, वुडलैंड्स होटल काम्प्लेक्स, 5 राजा राममोहन राय रोड, बंगलोर-560025।



पुनर्वास चिकित्सा
(Rehabilitation Medicine)

बीसवी सदी में अमेरिकी चिकित्सक हावर्ड ए. रस्क ने दो विश्वयुद्धो के दौरान जख्मी सैनिकों का पुनर्वास किया था। यहीं से विशेष चिकित्सा सेवा के रूप मे पुनर्वास चिकित्सा का विकास हुआ था।

यह विद्या अनिवार्य रूप से विकलांग व्यक्तियों के विकारों से सबधित है। आज पुनर्वास चिकित्सा शारीरिक और मानसिक रोगो के व्यापक क्षेत्र में फैल चुकी है। सार रूप मे, पुनर्वास चिकित्सक जख्मी, शारीरिक रूप से विकलांग, मानसिक या भावनात्मक रूप से परेशान या वाक् सबंधी दोषो से ग्रस्त एव श्रवण समस्याओं से प्रभावित लोगों के उपचार मे विविध तकनीकों एव यंत्रो-युक्तियो (डिवाइस) का इस्तेमाल करते हैं, ताकि रोगी एवं विकलांग सार्थक जीवन बिता सकें। ये चिकित्सक दैनदिन कार्य निपटाने तथा कामकाजी माहोल को सुचारु बनाने की योग्यता बढाने मे लोगों की सहायता करते है। ये ऐसे लोगो के साथ कार्य करते है, जो मानसिक, शारीरिक विकास या भावनात्मक दृष्टि से असमर्थ हैं। ये मूल मोटर कार्य तथा तार्किक योग्यताओ के समुन्नयन मे ही ग्राहकों (क्लाइंट) की सहायता नहीं करते, बल्कि स्थायी रूप से कार्य करने की क्षमता न रहने पर व्यक्ति के सामर्थ्य की प्रतिपूर्ति करते हैं। इनका लक्ष्य स्वतत्र, सार्थक एव सतुष्ट जीवन बिताने के लिए क्लाइट की सहायता करना है।

सात्वे दशक से मूलभूत एव विधियों की मनोवैज्ञानिक परामर्श, व्यावसायिक चिकित्सा, द्रव्य विज्ञान या वाक् (स्पीच) चिकित्सा, मानसिक पुनर्वास उपचार और अन्य अनेक प्रकार के उपचारों से पूर्ति हुई है तथा सवर्धन हुआ है।

डॉक्टर और सर्जन पुनर्वास कार्यक्रम को रोगी के उपचार का ही हिस्सा मानते है। इससे भौतिक चिकित्सकों के समान यहाँ भी विशेषज्ञ के लिए नए क्षितिज खुल गए हैं, जो घायल, अपाहिज, रोगी तथा हर आयु वर्ग की हड्डी टूटने, पीठ दर्द और डिस्क खिसक जाने जैसी बीमारियो का इलाज करने के लिए विविध चिकित्सा

पद्धतियाँ अपनाते हैं। ये टेस्ट करते है तथा उनकी व्याख्या करते हे ओर मासपेशीय सामर्थ्य शक्ति का मापन करते हैं। साथ ही, मोटर विकास कार्य क्षमता और श्वसन तथा रक्त-संचरण क्षमता को भी मापते हैं। स्वास्थ्य-परामर्श भौतिक चिकित्सक का आकर्षक विकल्प है। लेजर उपचार मे विशेषज्ञता प्राप्त भौतिक चिकित्सक 'लेजर चिकित्सक' कहलाते हैं।

चुबकीय चिकित्सा नवीनतम चिकित्सा-पद्धति है। यह मानव शरीर पर चुबकीय क्षेत्रों के जैव-प्रभावों पर आधारित है। इसमे काफी समय लगता है तथा एक बैठक मे कम-से-कम एक घंटा लगता है। अधिकांश चिकित्सक एक घंटे के एक सौ पचास रुपए लेते हैं। विशेष रूप से आज यह चिकित्सा का वैकल्पिक रूप नजर आता है।

खेलकूद भौतिक चिकित्सा उभरता हुआ विशेषज्ञता-युक्त क्षेत्र है और यदि पूर्वानुमान सही निकलते है तो इस क्षेत्र में व्यापक स्तर पर उन्नति होगी। इस विशेष क्षेत्र में चोट, मोच तथा खिलाड़ियों का स्वास्थ्य/आरोग्यता शामिल हे।

श्वसन चिकित्सक श्वास रोगियों के मूल्यांकन, उपचार एवं देखभाल का कार्य करता है। प्रदूषण से जुडे श्वसन विकारों की बढ़ती घटनाओं के कारण श्वसन चिकित्सक की काफी माँग है।

व्यावसायिक चिकित्सक

व्यावसायिक चिकित्सक व्यवसाय से जुडी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओ से ग्रस्त लोगों का आकलन एवं उपचार करते हैं। चिकित्सा तब प्रारभ होती है जब कार्य की अधिकता से मानसिक एवं शारीरिक अस्वस्थता काफी बढ जाती है, विशेष तौर पर बीमारी की उग्र अवस्था गुजर जाने के बाद इस चिकित्सा की जरूरत पडती है। परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता, मनोचिकित्सक एव मनोवैज्ञानिक—सभी मिलकर इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं।

श्रव्य वैज्ञानिक या वाक्-चिकित्सक उन लोगों का इलाज करते है, जो सुनने या बोलने संबंधी विकारों से ग्रस्त हैं। स्वचालित (ऑटोमेटिड) सेवाएँ तथा संकेत भाषा जैसे संपर्क स्थापित करने की वैकल्पिक विधियाँ सिखाई जाती हैं। ये प्रोफेशनल व तथा मौखिक परीक्षण करते हैं, ताकि असमर्थता की टाइप एवं सीमा निर्धारित की जा सके तथा रोगी व उनके रिश्तेदारों को इस असमर्थता का मानसिक आघात सहने और इससे निपटने के तरीके बताए जा सकें।

मनोचिकित्सक और चिकित्सक मांसपेशीय तंत्रिका विज्ञान, हृदवाहिनी व अन्य विकारों और उनके निदान और इलाज में विशेषज्ञ होते हैं। चिकित्सा की इस

शाखा का लक्ष्य उपचार की विभिन्न विधियो से रोगी की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक भलाई को बहाल करना है।

व्यतिरिक्त (Prosthetic) एवं कृत्रिम अंग (Orthotic) इंजीनियरिंग शारीरिक कमीवाले या रोग या चोट के कारण हाथ-पैरों के बेकार होने पर रोगियों के लिए साधन और यंत्रों के निर्माण कार्य से जुडी है।

भारत और विदेशों में प्रशिक्षण की अपेक्षाकृत कम अवधि तथा रोजगार की पर्याप्त संभावनाओं के कारण अनेक लोग भौतिक चिकित्सा एवं व्यावसायिक चिकित्सा की ओर आकर्षित होते हैं। भारत में चार वर्ष का भौतिक चिकित्सा का ग्रेजुएशन पाठ्यक्रम (बी पी टी) कराया जाता है। इस पाठ्यक्रम के अंतिम छह माह में किसी अस्पताल में इंटर्नशिप कराई जाती है।

पात्रता मानदंड भौतिकी, रसायन शास्त्र तथा जीव विज्ञान के साथ 10+2 की परीक्षा उत्तीर्ण करना है। प्रवेश परीक्षा सामान्य होती है। इसके फॉर्म मई-जून मे निकलते हैं।

अधिकांश भौतिक चिकित्सकों को मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य केंद्र में कार्य करने के बाद निजी तौर पर प्रैक्टिस करने के असाधारण मौके मिलते हैं। कॉरपोरेट मेडिकल सेंटर भी अपने बोर्ड में अनुभवी व्यावसायिक रखते हैं। पुनर्वास चिकित्सक प्राय अपने हिसाब से कार्य करते हैं और उन्हें घंटे के आधार पर भुगतान किया जाता है। सरकारी अस्पतालों की अपेक्षा प्राइवेट अस्पतालों में अधिक वेतन मिलता है।

सफल चिकित्सक बनने के लिए जरूरी है कि आप मे शात स्वभाव, असीम ऊर्जा तथा रोगियों के प्रति समानुभूति एवं सवाद कौशल जैसी विशेषताएँ हो। रोगी के साथ धैर्यपूर्वक व सहानुभूति से व्यवहार करें तथा प्रोत्साहित करनेवाला सकारात्मक दृष्टिकोण या रवैया अपनाना अनिवार्य है।

☐

पुस्तकालयाध्यक्ष

(Librarian)

प्राय. आम धारणा बनी हुई है कि पुस्तकालयाध्यक्ष अपनी सीट पर बैठे-बैठे शोर मचा रहे लोगों को डॉटता रहता है। किंतु ऐसा नही है। सूचना विज्ञान जगत् ने पुस्तकालयाध्यक्ष की इस उबाऊ छवि को बहुत ज्यादा बदल दिया है। आज पुस्तकालयाध्यक्ष प्रौद्योगिकी प्रयोक्ता (Techno-Savvy) है, जो कम्प्यूटर से कैटलॉग तैयार करता है, पुस्तकालय द्वारा दी गई पुस्तकों आदि का रिकॉर्ड रखता है तथा प्रशासनिक कार्य करता है। वह अनेक खडों मे भारी-भरकम पुस्तकों, पुराने समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं को माइक्रो फिल्म बनवाकर सुरक्षित रखता है। इसलिए आपके पास इन सबको सँभालकर रखने की जानकारी होना जरूरी है। पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए जरूरी है कि वह जानकारी माँगनेवालो को संतुष्ट कर सके, विभिन्न विषयो में नवीनतम घटनाक्रम का पता लगा सके, प्रश्नों का जवाब दे सके तथा प्रयोक्ताओं के लिए सूचना एकत्रित कर सके। इसके अलावा डाटा वर्गीकरण, कैटलॉग, स्टोर, शैल्फ, पुस्तकों, माइक्रो फिल्म, वीडियो, दस्तावेज आदि से सबंधित कार्य करना पडता है। पुस्तकालयाध्यक्ष मे आशा की जाती है कि वह पुस्तकालय का प्रबधन कर सके तथा यह सुनिश्चित कर सके कि पाठकों को तमाम सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, ताकि वे निश्चिंत होकर पढ़ सकें।

पुस्तकालय में किताबों और लोगो से जुड़ा कार्य होता है। पुस्तकालयाध्यक्ष को सारा समय इन्हीं के साथ बिताना पड़ता है। अत· उसमें लोगों के साथ संपर्क रखने की आंतरिक योग्यता होनी चाहिए। वह पुस्तको के नाम सुझा सके या अन्य सूचना दे सके तथा साथ ही अनुसधान कार्य में लोगों की मदद कर सके। उत्कृष्ट अतर्वैयक्तिक कौशलों के साथ-साथ पुस्तकालयाध्यक्ष के पास तीव्र स्मरण-शक्ति होनी चाहिए। उसे यह जानकारी होनी चाहिए कि कौन सी किताब कहाँ रखी है, जिससे तुरत और सही समय पर किताब उपलब्ध करा सके।

विश्वसनीय स्रोतो स सही जानकारी उपलब्ध कराना तथा अनुसधान के लिए धैर्य, सहायक मनोवृत्ति, उत्साह होना चाहिए, ताकि वह अच्छा पुस्तकालयाध्यक्ष बन सके। उसमें संगठनात्मक कौशल का होना जरूरी है।

पुस्तकालयाध्यक्ष बनने के लिए आपके पास पुस्तकालय और सूचना विज्ञान मे स्नातकोत्तर डिग्री होनी चाहिए। यह पाठ्यक्रम सरल, व्यवस्थित एवं वर्गीकृत रूप मे सूचना के विभिन्न स्रोत बनाए रखने, सरक्षण एवं सज्जित करने की जानकारी से जुडा है। इस पाठ्यक्रम में सूचना, संप्रेषण और समाज, सूचना स्रोत, प्रणाली और कार्यक्रम, सूचना संसाधन एवं सूचना केंद्र, सूचना प्रोद्योगिकी का इस्तेमाल, पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धात एवं पद्धति विषय पढाए जाते हैं। सूचना कैटलॉग सिद्धांत तथा पद्धति, संदर्भ ग्रंथ सूची तथा संदर्भ स्रोत, रेप्रोग्राफी, पुस्तकालयों की विभिन्न श्रेणियाँ, कॉपी राइट अधिनियम भी पढ़ाए जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में कार्य करने के लिए आपके पास किसी भी विषय में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंको के साथ स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्री हो अथवा पुस्तकालय में कम-से-कम पाँच वर्ष का अनुभव हो। आप डाटा संकलन, परिचालन, प्रशासन, अनुसंधान, जिल्दसाजी तथा संरक्षण, कैटलॉग बनाने, तकनीकी लेखन, संदर्भ ग्रंथ सूची, पुरालेखन, इंटरनेट आदि जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते है।

इस क्षेत्र में मान्यता बहुत कम मिलती है। वेतन औसत ही मिलता है तथा कार्यकारी घंटे निश्चित होते हैं। यह वेतन अनुभव, योग्यता तथा संस्था पर निर्भर करता है। कनिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष साधारण वेतन पाता है, जबकि सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष इससे कुछ ज्यादा वेतन पाता है। प्राइवेट पुस्तकालयों में अधिक देर तक कार्य करना पडता है, अत उन्हें वेतन भी अधिक मिलता है। लेकिन उनपर जिम्मेदारियाँ भी अधिक होती हैं। तकनीकी रूप से कुशल पुस्तकालयाध्यक्षों की मॉग हमेशा रहती है। उनका भविष्य उज्ज्वल है। जब तक पुस्तको की दुनिया रहेगी तब तक पुस्तकालयाध्यक्ष की जरूरत रहेगी

निम्नलिखित संस्थाओ मे यह पाठ्यक्रम चलाया जाता है—

1 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

2. जामिया मिल्लिया इस्लामिया, ओखला, दिल्ली।

3 राष्ट्रीय इदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली।

4. अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु।



प्रकाशन

(Publishing)

वर्तमान में प्रकाशन उद्योग खूब फल-फूल रहा है। 'प्रकाशन' शब्द को लेखक के विचारों को परिष्कृत उत्पाद, अर्थात् पुस्तक मे परिणत करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। पुस्तकें अनेक प्रकार की हो सकती हैं, जैसे—कथा-कहानी, कथा से इतर, बाल साहित्य, मजबूत जिल्दवाली किताबें आदि। प्रकाशक किसी भी विषय को ले सकता है। प्रकाशन का कार्य लेखक के साथ आरंभ होता है। जब कोई उपयुक्त लेखक मिल जाता है तब लेखक की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पांडुलिपि के बारे में निर्णय लिया जाता है। इसके बाद सौदा पक्का होता है और लेखक से परामर्श करते हुए कुछ परिवर्तनों के बाद पांडुलिपि प्रकाशन के लिए दे दी जाती है। कोई भी पुस्तक तीन महीने से लेकर एक वर्ष की अवधि तक प्रकाशित हो जाती है। यह अवधि पुस्तक के आकार और विषय-वस्तु पर निर्भर करती है। तकनीकी पुस्तकों में कुछ अधिक समय लगता है; लेकिन सामान्य पुस्तकों में थोडा कम समय लगता है, क्योंकि इन पुस्तकों में चित्र नहीं होते तथा अधिकांशत लिखित सामग्री होती है।

प्रकाशन सस्था (हाउस) बहुत बडा संगठन होता है और विभिन्न कार्य-कलापों को देखने के लिए उसमें अलग-अलग विभाग होते है। तथापि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संपादकीय विभाग, उत्पादन (प्रोडक्शन) विभाग एवं विपणन विभाग होते है।

संपादकीय विभाग चयन, नए संस्करण व पांडुलिपि तैयार करने संबधी कार्य सँभालता है। इसमे प्रूफ रीडिग, संशोधन, तथ्यों की दोबारा जॉच तथा कॉपीराइट कार्य शामिल हैं। अनेक प्रकाशन संस्थानों में अलग-अलग श्रेणी की पुस्तको के लिए अलग-अलग सपादक होते है। सपादक के पास विषय का गहन ज्ञान हो तथा इस बात की परख होनी चाहिए कि पांडुलिपि उत्तम कोटि की है या निकृष्ट। उनका भाषा पर आधिपत्य हो तथा कार्य के प्रति योजनाबद्ध दृष्टिकोण हो।

उत्पादन (प्रोडक्शन) विभाग पुस्तक तैयार करने से जुड़ा है। यह कार्य उच्च कोटि का होना चाहिए तथा मूल्य के मुताबिक किताब होना चाहिए। अनेक प्रकाशन सस्थाओं में कला विभाग होता हे, जो पुस्तक की सजावट से जुड़ा होता है। संपादक के परामर्श से ये पुस्तक की साज-सज्जा तय करते हैं जिसमें टाइप फेस, चित्र, पुस्तक का आकार शामिल हैं। प्रोडक्शन विभाग कागज के आपूर्तिकार, प्रिंटर्स, जिल्दसाज के संपर्क में रहता है तथा लागत एवं मार्केटिंग के पहलुओं पर भी कार्य करता है। प्रोडक्शन स्टाफ में कारोबार की अतर्दृष्टि तथा तकनीकी ज्ञान होना चाहिए। डिजाइनर में कार्य के प्रति लचीलापन होना चाहिए तथा ग्राहक की अपेक्षा पूर्ति के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रिंटिंग प्रौद्योगिकीविद् में रंग डिजाइन के प्रति कुदरती तौर पर रुझान होना चाहिए तथा पैनी दृष्टि एवं एकाग्रता होनी चाहिए।

विपणन (मार्केटिंग) विभाग पुस्तकों के संवर्धन तथा बिक्री से जुड़ा है। यह विभाग योजना, समीक्षा सूची तैयार करने, बिक्री अभियान चलाने, संवर्धनात्मक सामग्री तैयार करने तथा समतुल्य ऐसे कार्यो के लिए जिम्मेदार होता है, जिनका लक्ष्य प्रत्येक बुक स्टोर पर पुस्तक का दिखाई देना है, फिर चाहे स्टोर बड़ा हो, मध्यम हो या छोटा। संक्षेप में, यह विभाग देखता है कि पुस्तक प्रत्येक जगह उपलब्ध हो। लेकिन साथ ही पुस्तक के प्रचार कार्य को भी प्राथमिकता दी जाती हे। पुस्तक की सफलता काफी हद तक विपणन विभाग पर निर्भर करती है। इसके लिए व्यक्ति को सर्जनात्मक होना चाहिए। सर्जनात्मक शक्ति के साथ ही सुदृढ़ निर्णय शक्ति एवं लेखन कार्य में रुचि होना भी जरूरी है। अंततः लोगों के साथ सपर्क स्थापित करने की योग्यता होना आवश्यक है, क्योंकि व्यक्ति को जन-संपर्क का कार्य देखना पड़ता है।

प्रकाशन उद्योग में काफी संभावनाऐं विद्यमान हैं। अंग्रेजी पुस्तको के पाठको की सख्या मे वृद्धि के कारण इसकी संभावनाओं में काफी वृद्धि हुई है। सार्वजनिक क्षेत्र का प्रमुख प्रकाशक भारत सरकार का प्रकाशन विभाग है। यह सबसे बडा प्रकाशन उद्यम है। यहाँ रोजगार का व्यापक क्षेत्र है, विशेषत: तकनीकी व्यक्तियो का, क्योंकि प्रकाशन क्षेत्र में विशेषज्ञों का अभाव है। वेतन व्यक्ति की योग्यता और प्रवीणता के स्तर पर निर्भर करता है। प्रकाशन हाउस मे अन्य विभिन्न नौकरियाँ, प्रचार क्षेत्र, विज्ञापन, अनुवाद आदि उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की भी व्यापक सभावनाएँ हैं। ऑन-लाइन प्रकाशक ग्राफिक, श्रव्य तथा ध्वनि का सुदर मिश्रण करते हैं, ताकि असाधारण बहु आयामी पैकेज तैयार हो। यह लेखकों, सपादकों तथा ले-आउट डिजाइनर के लिए चुनौती है।

प्रकाशन से संबधित पाठ्यक्रम अग्रलिखित संस्थाओं में उपलब्ध हैं—

1 नेशनल बुक ट्रस्ट (एन.बी टी), ए-5, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016।

2. शंकर अकादमी ऑफ आर्ट एंड बुक पब्लिशिंग, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110 002।

3. गरवारे इंस्टीच्यूट ऑफ कैरियर एजुकेशन एड डेवलपमेंट, विद्यानगरी, कलीना, सांताक्रूज (पूर्व), मुंबई-400 098।

4 गुजरात विद्यापीठ, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380 014।

5 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

6 महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम-685 6700।



प्रणाली विश्लेषण

(Systems Analysis)

प्रणाली विश्लेषण अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है। लेकिन कंप्यूटर द्वारा स्वचालन (automation) से बहुत पहले, अनेक सदियों से प्रणाली विश्लेषक की माँग विद्यमान थी। उन्नीसवीं शती के मध्य में श्रम संगठन तथा शिक्षण विधि में प्रैक्टिशनर मौजूद थे। उन्होंने समुन्नत साधन तैयार कर रखे थे। प्रणाली विश्लेषक के सबध में यह पहला दृष्टिकोण था। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से प्रणाली विश्लेषण क्षेत्र मे प्रवीणता हासिल हुई हैं, जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर—दोनों क्षेत्रो में इस विषय का अनुप्रयोग होता है।

प्रणाली विश्लेषण ऐसा फेस है, जहाँ विश्लेषक 'क्या करना है' तथा 'कैसे करना है' की दृष्टि से प्रणाली विकास के लिए समाधान ढूँढता है। यह फेस प्रणाली विकास का फोकस है तथा ऐसी अवस्था है, जहाँ सरचनात्मक मुद्दों के अध्ययन से संबंधित समस्याओं को सुनिश्चित करने तथा निर्णय लेने और नियोक्ता या क्लाइट फर्मो के लिए संभव समाधान से संबंधित दो स्तरों पर कार्य किया जाता है।

प्रणाली विश्लेषक समस्या-क्षेत्रों के विश्लेषण तथा ऐसे प्रणाली की डिजाइनिग का कार्य करता है, जहाँ समस्या के समाधान के लिए कंप्यूटर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह कंप्यूटर के आवश्यक टाइप का पता लगाता है तथा यह जानने का प्रयास करता है कि उपलब्ध सूचना किस प्रकार से कंप्यूटर में फीड की जा सकती है और प्राप्त परिणाम किस प्रकार पुनः प्रस्तुत किए जा सकते हैं। साथ ही इस बात का ध्यान रखा जाता है कि कंप्यूटर में किस पकार डाटा तथा कितनी मात्रा फीड की जाएगी। उपभोक्ता कौन सा आउटपुट माँग सकता है तथा भावी विस्तार और विकास की कौन सी दिशा है। ये विश्लेषक किसी संगठन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूचना-तंत्र को समर्थ बनाते हैं। सूचना विश्लेषक योजना, मॉनिटरिंग, परीक्षण, लेखाकरण, पूर्वानुमान, समन्वयन, अनुसूची बनाने आदि प्रचालन कार्यों से संबंधित सभी पहलुओं से जुड़े मामलों पर कार्य करता है।

प्रणाली विश्लेषक नई प्रणालियो का डिजाइन तैयार करता है, जिसमे हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर अथवा कंप्यूटर पॉवर के बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए नए सॉफ्टवेयर का अनुप्रयोग शामिल है। विश्लेषक उपकरण, कार्मिक तथा व्यवसाय प्रक्रिया में निवेश से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए सगठन की सहायता करते हैं। ये नई प्रणाली की डिजाइनिंग के अलावा उत्पादन या कार्य-प्रवाह बनाए रखने अथवा नए प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विद्यमान प्रणाली में उन्नयन लाने के उद्देश्य से आशोधन संबंधी कार्य भी करते हैं।

कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के तेजी से हो रहे विस्तार के कारण नई हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर प्रणाली का डिजाइन बनाने और नई प्रौद्योगिकी का समावेश करने के लिए अत्यधिक प्रशिक्षित कामगारों की आवश्यकता उत्पन्न हो गई है। कंप्यूटर के प्रणाली विश्लेषको के कार्य में कंप्यूटर से संबंधित व्यवसायों की व्यापक रेज शामिल है। प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति के कारण कंप्यूटरो के अनुप्रयोग के साथ-साथ प्रणाली विश्लेपको की माँग बढने की भी संभावनाएँ मौजूद हैं। फैक्टरी और कार्यालय ऑटोमेशन तथा दूरसचार प्रौद्योगिकी में प्रगति और वैज्ञानिक अनुसधान ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जहाँ कंप्यूटर अनुप्रयोग बढ़ेगा। परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रो मे प्रणाली विश्लेषकों की माँग बढ़ेगी।

कंप्यूटर प्रणाली विश्लेषक के पास मजबूत तार्किक (लॉजिकल) अकीय तथा विश्लेषणात्मक कौशल होने चाहिए। किसी उद्योग मे शीर्ष स्थल पर पहुँचने के लिए जरूरी है कि प्रणाली विश्लेषको मे तकनीकी तथा यांत्रिक कौशल, तार्किक योग्यता, नई प्रौद्योगिकी जानने की अभिरुचि तथा उत्तम अतर्वैयक्तिक कौशल एव उच्चतर हस्त-कौशल होना चाहिए। इनमे संभावित समस्याओं से निपटने का तरीका सीखने की योग्यता होनी चाहिए। ये वस्तुनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, समस्या समाधान में रुचि रखनेवाले तथा तार्किक ढग से सोचनेवाले होने चाहिए। प्रणाली विश्लेपक ऐसे व्यक्ति होते है, जो सभी संभावित प्रयोक्ताओ से कार्य-प्रवाह का डाटा एकत्रित करते हैं तथा प्रणाली डिजाइन तैयार करते हैं। इस प्रकार परस्पर कार्य करने की क्षमता अपेक्षित है। ग्राहको की समस्याएँ सुनिश्चित करने तथा आवश्यकता का विश्लेषण करने के लिए विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। असाधारण गणितीय कौशल विश्लेषक की कार्य-क्षमता की संभाव्यता दरशाते हैं। इस व्यवसाय में कामयाबी पाने के लिए महत्त्वपूर्ण कारक दबाव के तहत भलीभाँति कार्य करने की योग्यता तथा धैर्य है। आई टी. उद्योग की तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी के साथ चलने के लिए जरूरी है कि इन कारकों को बनाए रखा जाए।

निम्नलिखित सेवाओ मे प्रणाली विश्लेषको की जरूरत पड़ती है कस्टम कृत कंप्यूटर प्रोग्रामिंग सेवाएँ तथा अनुप्रयोग और प्रणाली सॉफ्टवेयर डिजाइन, पैकेज से पूर्व कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का डिजाइन, विकास तथा उत्पादन, प्रणाली एकीकरण, नेटवर्किंग, पुनः इंजीनियरिंग सेवाएँ, डाटा प्रक्रमण तथा तैयारी सेवाएँ; सूचना रिट्रिवल सेवाएँ, जिनमें ऑन लाइन डाटा बेस तथा इंटरनेट सेवाएँ भी शामिल है, ऑन साइट कंप्यूटर सुविधा प्रबंधन, डाटा बेस का विकास और प्रबधन तथा परामर्श विशेषज्ञता प्राप्त सेवाएँ। ऐसी परामर्श फर्मे प्रणाली विश्लेषक रखती है, जो व्यक्तिगत आधार पर या बड़े संगठनों के लिए सॉफ्टवेयर तैयार करती हैं। ये अपनी आवश्यकताओ के अनुकूल सॉफ्टवेयर तैयार करने के लिए पूर्ण कालिक प्रणाली विश्लेषक रखती हैं।

प्रायः फर्मे प्रारभिक पदों पर कॉलेज स्नातकों को प्रणाली विश्लेषण के लिए रखती हैं। साथ ही, कुछ अधिक जटिल कार्यो के लिए ऐसे व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जाती है, जो कंप्यूटर में डिग्री प्राप्त है। आमतौर पर नियोक्ता व्यवसाय कार्यो के लिए लेखाकरण, व्यवसाय प्रबंधन या अर्थशास्त्र की पृष्ठभूमिवाले विश्लेषको को प्राथमिकता देते हैं, जबकि वैज्ञानिक सगठनों तथा सॉफ्टवेयर कंपनियों मे भौतिकी, गणित या इंजीनियरिंग पृष्ठभूमिवाले व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जाती है। अनेक नियोक्ता ऐसे आवेदकों को प्राथमिकता देते है जिनके पास कंप्यूटर विज्ञान, सूचना विज्ञान, सूचना प्रणाली या डाटा प्रक्रियन मे डिग्री है। कप्यूटर अनुप्रयोग, प्रणाली विश्लेषण तथा डाटा बेस प्रबंधन प्रणाली पाठ्यक्रम से इस क्षेत्र में कार्य के लिए अच्छे अवसर मिलते हैं।

कप्यूटर इंजीनियरिंग मे चार वर्ष की स्नातक डिग्री आदर्श है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक तथा इलेक्ट्रिकल इंजीनियर को भी अच्छा ब्रेक मिल सकता है। तीन वर्षीय कंप्यूटर विज्ञान में स्नातक डिग्री प्रारंभिक कार्यक्रम है। आपको कंप्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर या कप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिग्री लेनी चाहिए। नियोक्ता कप्यूटर इजीनियरिंग स्नातकों या एम.सी ए. अथवा बी.सी.ए. (तीन वर्ष) बी सी-एस. (तीन वर्ष), सूचना प्रौद्योगिकी में स्नातक, डी ओ ई ए सी सी बी स्तर पास आवेदकों की खोज में रहते हैं।

सभी उद्योगों से कंप्यूटर पर माँगें की जाती हैं। इससे सभी कार्यो के लिए औसत से ज्यादा तेज गति से आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इसलिए योग्य कंप्यूटर व्यावसायिक के लिए प्रणाली विश्लेषण उत्तम कैरियर विकल्प है, जहाँ आपको कार्य सतुष्टि मिलने के साथ-साथ पर्याप्त वेतन भी मिल सकता है। यहाँ सीखने का अनुभव भी मिलता है। □

प्रतिष्ठा प्रबंधन

(Reputation Management)

विश्व भर मे संगठनों की प्रतिष्ठा का प्रबंधन प्रमुख स्थान लेता जा रहा है। भारत में अभी यह सबसे नया व्यवसाय है और यदि उद्योग के भीतर कार्यरत लोगों के पूर्वानुमानों पर ध्यान दिया जाए तो आगामी वर्षो में यह सबसे ज्यादा चर्चित व्यवसाय होगा। आनेवाले वर्षो में प्रतिष्ठा प्रबंधन संगठनो और निगमों (कॉरपोरेट) का महत्त्वपूर्ण घटक बन जाएगा। यह माना जाता है कि सार्वजनिक क्षेत्र की कपनियाँ भी इस व्यवसाय के दायरे में आ जाएँगी।

किसी संगठन की प्रतिष्ठा का सही मूल्य आसानी से नहीं आँका जा सकता है। यद्यपि ज्यादातर लोग इस कारक को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अमूर्त संपदा मानते हैं, कुछ लोग संगठन की प्रत्यक्ष सपत्ति के साथ-साथ प्रतिष्ठा के मूल्य का भी आकलन करते हैं। किसी संगठन की प्रतिष्ठा का मापन करने के लिए कुछ विधियाँ विकसित की गई हैं। चूँकि आज के युग में अधिग्रहण तथा अर्जन सर्वोपरि हैं, अतः प्रतिष्ठा जैसे अमूर्त पक्ष के लिए निरंतर प्रयास किए जाते हैं।

प्रतिष्ठा प्रबधन में अनिवार्यतः किसी संगठन की साख बनाई जाती है और उसे बरकरार रखा जाता है। पश्चिम की प्रतिष्ठा प्रबंधन से जुड़ी कंपनियो के अनुसार, इस क्षेत्र में ऐसे कार्यकलाप शामिल हैं, जो पारंपरिक जन-संपर्क संबधी कार्यों से अधिक गहरे होते हैं। प्रतिष्ठा प्रबधन मे अनेक मानव संसाधनों तथा उपभोक्ता के साथ मूलभूत संबंधो का इस्तेमाल किया जाता है। इस क्षेत्र में व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, ताकि उन मुद्दों का पता लगाया जा सके, जिनका कंपनी पर प्रभाव पड़ता है; क्योंकि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एव प्रौद्योगिकीय ताकतों की प्रत्याशा तथा इनके संबंध में व्यक्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर कंपनी को आकार मिलता है और उसका विकास होता है।

अनिवार्यतः प्रतिष्ठा प्रबंधन में जरूरी है कि संगठन से जुडे लोगों के सद्भाव

की ८ दिशा हो ये लोग सगठन के कर्मचारी ग्राहक आपूतिकार शेयरधारक तथा इसके आस-पास रहनेवाले एवं इसके कार्यो से प्रभावित व्यक्ति होते हैं।

प्रतिष्ठा प्रबंधक अवस्था-प्रति-अवस्था प्रक्रिया अपनाते हैं, ताकि सगठनो या ग्राहकों को विद्यमान मूल मुद्दों की पहचान करके छवि बनाने मे सहायता कर सकें। साथ ही प्रबंधक प्रभाव का विश्लेषण करने, कार्यनीति संबंधी विकल्प तैयार करने, काररवाई की योजना तथा कार्यान्वियन व कार्यो के परिणामो के मूल्यांकन में भी मदद करता है। ये प्रबंधक बाहरी व्यक्ति की वस्तुनिष्ठ राजनीति या हस्तियों से मुक्त होकर कंपनी की प्रतिष्ठा में आनेवाली किसी चूक को प्रारंभ मे ही पहचानने में मदद करते हैं।

प्रतिष्ठा प्रबंधन की कला की प्रकृति उपचारात्मक होने के बजाय निवारणात्मक है। अतः प्रबंधक ऐसे हालात से बचने में सहायता करते है, जो प्रतिष्ठा प्रबंधन मे अस्पष्ट रूप से खतरनाक रुकावट डालते हैं। सीमित, लेकिन महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठा-मापन का तरीका कंपनी का मीडिया कवरेज है। अतः मीडिया से संबध प्रतिष्ठा प्रबधन का आंतरिक हिस्सा है। यह क्षेत्र आकर्षक लगता है, लेकिन यह सुनिश्चित करने में काफी श्रम करना पड़ता है कि कुछ गलत न हो।

अनेक बडे-बडे संगठनों में संभावनाएँ मौजूद हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ तथा परामर्श सगठन मे इस कैरियर की सभावनाएँ विद्यमान हैं। जन-संपर्क तथा प्रतिष्ठा प्रबधन के बीच बहुत सूक्ष्म अंतर है। अतः आप जन-संपर्क एजेंसियों में आवेदन कर सकते हैं। ये एजेंसियाँ आतरिक तथा बाह्य जगत् से संचार की देखभाल करती हैं। आंतरिक संचार में कर्मचारियों के लिए अनुकूल कामकाजी स्थितियाँ तैयार करना शामिल है, जबकि बाह्य संचार-संप्रेषण में शेयरधारकों, वितरण चैनल, भागीदारों, मीडिया तथा व्यापक स्तर पर ग्राहकों के साथ संबंध स्थापित किए जाते हैं। आप मीडिया सपर्क या नीतिगत विषयों या क्षेत्रों जैसे विशेषज्ञता क्षेत्रों में भी कार्य कर सकते हैं।

इस क्षेत्र मे सर्वाधिक आकर्षक कार्यक्षेत्र संभवतः परामर्श सेवा क्षेत्र है।

हालाँकि इस बारे में प्रतीत होता है कि अभी दिल्ली बहुत दूर है; लेकिन वास्तविकता ऐसी नहीं है। अनेक राजनीतिज्ञ तथा देश की जानी-मानी हस्तियाँ अपनी छवि सुधारने या बनाए रखने के लिए विशेषज्ञों को काम पर रखती हैं। कुछ लोग उद्योग पर नजर रखते हैं। इनके अनुसार निकट भविष्य में व्यक्तियों के सबध मे प्रतिष्ठा प्रबंधन विस्तृत और व्यापक उद्योग होगा।

अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अनुभवी व्यक्ति को आरंभ में कम-से-कम साठ हजार से अस्सी हजार रुपए तक प्रति माह वेतन देती हैं। परामर्शी संगठन या फर्म में आरंभ में व्यक्ति दस हजार रुपए प्रति माह वेतन पाने की उम्मीद रख सकता है। प्रतिष्ठा प्रबंधकों के लिए जरूरी है कि उनमें संपर्क/संप्रेषण की मूल वृत्ति हो। यह अनिवार्य है कि व्यक्ति में व्यवसाय करने के लिए अपेक्षित प्रकृति हो तथा अधिक दबाववाली स्थितियों का सामना करने की योग्यता हो। प्रबंधकों को संपर्क स्थापित करके अपना व्यवसाय चलाना होता है। अतः यह जरूरी है कि वे खुशमिजाज हों, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हों और उनमे दोस्ती करने की अधिक क्षमता हो। यहाँ टीम भावना से कार्य करना जरूरी है। इसलिए आवश्यक है कि प्रबंधकों की सक्षम टीम हो और वे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने योग्य हों।



प्रत्यक्ष बाजार व्यवस्था

(Direct Marketing)

प्रत्यक्ष बाजार व्यवस्था अनिवार्य रूप से घर-घर जाकर पारंपरिक मार्केटिंग का ही आधुनिक रूप है। लक्ष्यबद्ध उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए बडी कंपनियाँ इस व्यवस्था को अपनाती हैं। तथापि आज प्रत्यक्ष बाजार व्यवस्था अधिक जटिल है। इसे बहु-स्तर या नेटवर्क मार्केटिंग नाम से जाना जाता है। यह व्यवस्था ऐसे विचार पर आधारित है, जिसमें अनेक लोग साथ-साथ एक ही उत्पाद की मार्केटिंग करते हैं तथा परिचित लोगों तक स्वयं उत्पाद पहुँचाते है। साथ ही व्यवसाय की योजना तथा कार्य व्यापार की जानकारी देते हैं, ताकि वे यह जानकारी अन्य लोगो तक पहुँचा दें।

प्रत्यक्ष बाजार व्यवस्था की प्रमुख विशेषता यह है कि इस तरीके से खरीदे गए उत्पाद दुकानों पर नही मिल सकते। अतः ये उत्पाद महँगे होते हैं और उपभोक्ताओं के विशिष्ट वर्ग को ध्यान में रखकर तैयार किए जाते हैं। अधिकाश कंपनियाँ सुनिश्चित करती हैं कि इस क्षेत्र मे व्यक्तियो के बीच मेलजोल बढता है।

प्रत्यक्ष बिक्री क्षेत्र तैयार करने के लिए विनिर्माता चुनिदा आधार पर वितरको की नियुक्ति करता है। साथ ही व्यवसाय वॉल्यूम के विभिन्न स्तरों पर निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार बोनस भी देता है। वितरक,अन्य वितरक प्रायोजित (sponser) करके अपनी आय बढ़ा सकते हैं। ऐसे मामले में विनिर्माता प्रायोजित वितरकों के माध्यम से बेची गई विभिन्न वस्तुओ के कुल मूल्य का कुछ मुनाफा उस वितरक को देता है, जो उन्हें इस व्यवसाय में लाया था। अतिरिक्त वितरको को प्रायोजित करते समय प्रत्येक वितरक उद्यमी के रूप मे कार्य करता है। हर वितरक की अपनी शृंखला बनती है। परिणामस्वरूप कपनी के लिए वितरको की संख्या मे असाधारण वृद्धि होती है। उत्पादों पर उसे 20 से 30 प्रतिशत तक रिटेल मार्जिन मिलता है। विनिर्माता आरंभ मे उत्पाद की जानकारी और इस्तेमाल के बारे मे प्रशिक्षण देता है। प्रत्येक कंपनी

विभिन्न स्तरो पर मान्यता देती है डीलर से प्रबधक तथ प्रबधक से वितरक पोजीशन बनाए रखने के लिए बिक्री का निश्चित स्तर बनाए रखना पड़ता है।

वितरकों को दो स्तरों पर कमीशन मिलता है। अपने द्वारा की गई खरीद या उपभोक्ता को की गई बिक्री पर कमीशन तथा उसके द्वारा नियुक्त वितरकों द्वारा अर्जित कमीशन।

ई-टेलिंग में इंटरनेट के माध्यम से उत्पाद बेचे जाते हैं। विश्व भर में प्रत्यक्ष बिक्री 68 अरब यू एस डॉलर है। इसमें 1.8 करोड़ लोग शामिल हैं। प्रतिदिन हजारों उत्पाद नेटवर्क के जरिए खरीदे-बेचे जाते हैं। प्रत्यक्ष मार्केटिंग में, विशेषतः व्यक्तिगत देखभाल संबंधी उत्पादो में बहुस्तरीय दृष्टिकोण विदेशो मे अत्यधिक लोकप्रिय हुआ है।

भारत में यह उद्योग दो दशकों से आरंभ हुआ है। लेकिन अभी भी एवॉन तथा टपरवेयर जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को समुचित स्थान नहीं मिल पाया है। वृद्धि दर की दृष्टि से भारत मे विश्व का सबसे बडा बाजार उभर रहा है, क्योकि यहाँ उपभोक्तावाद तथा गुणवत्ता के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

इस व्यवसाय में कोई आयु सीमा नही है और न ही योग्यता संबंधी कोई शर्त। वस्तुतः बिक्री क्षेत्र में दक्ष कोई भी व्यक्ति इस व्यवसाय में आ सकता है। भारतीय प्रत्यक्ष बिक्री सघ के अनुसार लोगों की छह प्रकार की श्रेणियाँ प्रत्यक्ष बिक्री कर रही हैं—अंशकालीन, अधिकांशतः कॉलेज के छात्र, जो अतिरिक्त जेब खर्च के लिए धन कमाना चाहते हैं; गृहिणियाँ, जो अपनी पहचान बनाना चाहती हैं तथा खाली समय का सदुपयोग करना चाहती हैं; उद्यमी, जो बहुत ज्यादा पैसा व्यवसाय में नही लगाना चाहते और जिन लोगो को थोड़े समय मे अधिक पैसा कमाना है, उपभोक्ता, जो विशेष उत्पाद के लाभ मे अपनी हिस्सेदारी चाहते हैं तथा अपने मित्रों मे भी बॉटना चाहते हैं; वे लोग, जो बहुस्तरीय वितरण नेटवर्क बनाना चाहते हैं, जिससे पूरे ग्रुप की बिक्री से उन्हें कमीशन मिलेगा।

हालाँकि पहले इस क्षेत्र में महिलाओं की प्रधानता थी। लेकिन अधिकाधिक पुरुष भी खाली समय में प्रत्यक्ष मार्केटिग से मिलनेवाले लाभों के प्रति लालायित होने लगे। यह कार्य पुरुषो को भी आकर्षित करने लगा। अधिकांश कंपनियाँ सरसरी तौर पर प्रशिक्षण देती हैं। यह प्रशिक्षण दो घटे से लेकर एक सप्ताह की अवधि तक होता है। लेकिन व्यक्ति की वास्तविक परीक्षा व्यक्ति में विद्यमान बिक्री की योग्यता पर टिकी है। प्रत्यक्ष मार्केटिंग मे सफलता की प्रमुख पूर्वापेक्षा मित्रो तथा परिवार का बडा दायरा होना है, जहाँ आप उत्पाद बेच सकते हैं। आपके द्वारा बोले गए शब्दों

प्रशासनिक सेवाएँ

(Civil Services)

प्रशासनिक सेवा सर्वाधिक प्रतिष्ठित सेवा मानी जाती है, साथ ही इस देश के युवा जन इन सेवाओं को सबसे ज्यादा प्राथमिकता देते हैं। प्रशासनिक सेवा का अर्थ अधिकार शक्ति है तथा यही शक्ति प्रतिवर्ष लाखों आवेदकों को आकर्षित करती है। भारत में विद्यमान सर्वोत्तम परिलब्धियाँ एवं विशेषाधिकार इन लोगों को मिलते है। इसके अलावा इससे सामाजिक शोहरत और सरकारी प्रतिष्ठा भी जुड़ी है। निस्सदेह आज तक सिविल सेवाओं का आकर्षण बराबर बना हुआ है; जबकि बहुराष्ट्रीय कपनियों में ग्लैमर तथा अधिक धन प्राप्ति के अवसर मौजूद हैं। लेकिन आपको यह भी स्वीकार करना होगा कि इस पद के साथ अत्यधिक जिम्मेदारी जुडी हई है, क्योकि नौकरशाही मे प्रशासनिक सेवाएँ देश की सुचारु प्रणाली के लिए जिम्मेदार हैं।

प्रशासनिक सेवा के लिए व्यक्ति को स्नातक होना चाहिए। उसकी आयु कम-से-कम इक्कीस वर्ष तथा अधिक-से-अधिक तीस वर्ष हो। तथापि विभिन्न श्रेणियों के उम्मीदवारों को, विशेषतः अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों को आयु सीमा में छूट दी गई है।

सिविल सेवा परीक्षा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्रो में समय-समय पर इसकी घोषणा की जाती है। यह परीक्षा बडी कुशलता से आयोजित की जाती है। इसमे त्रुटि की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाती। इस परीक्षा में चयन के तीन स्तर हैं—

1 व्यक्ति की अपने विषयों में अनिवार्य समझ का पता लगाने के लिए प्रारभिक परीक्षा आयोजित की जाती है। ये प्रश्न वस्तुनिष्ठ होते हैं तथा व्यक्ति को दो पेपर (पत्र) देने होते हैं। एक पेपर ऐच्छिक विषय से संबंधित होता है। उम्मीदवार तेईस विषयों की सूची में से अपनी पसंद का विषय चुनता है। दूसरा विषय सामान्य ज्ञान/अध्ययन का होता है।

प्रत्येक पेपर की अवधि दो घंटे होती है। ऐच्छिक पेपर 300 अंकों का होता है, जबकि सामान्य ज्ञान/अध्ययन के 150 अंक होते हैं। ऐच्छिक पेपर डिग्री के समकक्ष होता है। सामान्य अध्ययन में इतिहास, राजनीति, समसामयिक समाचार, सामान्य विज्ञान तथा अर्थव्यवस्था का +2 के समकक्ष होता है। तीनों परीक्षाओं में प्रारंभिक परीक्षा सबसे ज्यादा कठिन है; क्योंकि इसी स्तर पर अधिकांश उम्मीदवारों के नाम रद्द कर दिए जाते हैं। अत: यह सलाह दी जाती है कि प्राथमिक परीक्षा को सबसे ज्यादा गंभीरता से लिया जाए। एक बार यह बाधा दूर हो जाने पर व्यक्ति अगली परीक्षा की तैयारी आरंभ कर सकता है।

2 मुख्य परीक्षा विषयनिष्ठ होती है। उम्मीदवार के ज्ञान की थाह पाने के लिए यह परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षा में नौ पेपर होते हैं—

पेपर I	—	भारतीय भाषा—300 अंक
पेपर II	—	अंग्रेजी—300 अंक
पेपर III	—	निबंध—200 अंक, अवधि तीन घंटे
पेपर IV और V	—	सामान्य अध्ययन—300 अंक प्रति विषय
पेपर VI और VII	—	ऐच्छिक विषय I—300 अंक प्रति विषय
पेपर VIII और IX	—	ऐच्छिक विषय II—300 अंक

उम्मीदवार को पच्चीस विषयों में से अपनी रुचि के दो विषय चुनने होते हैं। पेपर I तथा II का स्तर मैट्रिक परीक्षा के समकक्ष होता है तथा यह अर्हक प्रकृति का होता है। इन पत्रों में प्राप्तांकों पर अंतिम रैंकिंग में ध्यान नहीं दिया जाता है। लेकिन अन्य सात पत्रों का मूल्याकन तभी किया जाएगा, जब वह पेपर I तथा II मे न्यूनतम स्तर प्राप्त कर लेगा। अत: मुख्य परीक्षा का प्रत्येक स्तर महत्त्वपूर्ण होता है। इसके पश्चात् साक्षात्कार आता है।

3 साक्षात्कार में व्यक्तित्व एवं कौशलों का पता लगाया जाता है। इसके 300 अक होते हैं। यह साक्षात्कार सामान्य साक्षात्कार से भिन्न होता है। इस साक्षात्कार का लक्ष्य उम्मीदवार की अपेक्षाओं—बुद्धि कौशल एवं व्यक्तित्व—की जानकारी लेना है। इसके बाद सिविल सेवाओं में उपयुक्त नौकरियों के साथ मिलान करने की कोशिश की जाती है। इटरव्यू बोर्ड व्यक्ति की विशिष्टता और खूबी जानने की कोशिश करता है तथा नेतृत्व

गुण एव नौकरी के लिए अपेक्षित स्तुलित निर्णय शक्ति जैसे गुणो का पता लगाया जाता है।

सिविल सेवा परीक्षा मे सामान्य श्रेणी का उम्मीदवार चार बार बैठ सकता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उम्मीदवारों के लिए पहला प्रयास अनुभव मात्र होता है। निस्संदेह सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी से व्यक्ति का ज्ञान बढ़ता है।

सिविल सेवा की तैयारी का सबसे ज्यादा महत्त्व है। इसके प्रति एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इसके अलावा, प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी करते समय मुख्य परीक्षा का भी ध्यान रखना पड़ता है। वस्तुत: सिविल सेवा परीक्षा का निर्णायक कारक विषयो का चयन है। ये विषय उम्मीदवार की रुचि के अनुकूल हो। अधिकांश उम्मीदवार ऐच्छिक विषय के रूप में ऑनर्स विषय चुनते हैं, लेकिन ऑनर्स विषय से इतर विषय भी चुना जा सकता है। हमें मात्र यही ध्यान रखना होगा कि हम चाहे जो भी विषय चुने, हमें उस विषय की भलीभाँति जानकारी हो। इसके लिए आपको विभिन्न पुस्तकों तथा सूचना के अन्य स्रोतों के माध्यम से अपनी जानकारी बढ़ानी है।

सिविल सेवा परीक्षा के माध्यम से निम्नलिखित सेवाओं/पदो पर भरती की जाती है—

1 भारतीय विदेश सेवा (आई.एफ.एस)
2 भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए एस)
3. भारतीय पुलिस सेवा (आई पी एस.)
4 भारतीय राजस्व सेवा, ग्रुप 'ए'
5 भारतीय डाक सेवा, ग्रुप 'ए'
6 भारतीय सीमा शुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद सेवा, ग्रुप 'ए'
7. भारतीय रक्षा लेखा सेवा, ग्रुप 'ए'
8 भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा, ग्रुप 'ए'
9 भारतीय डाक एवं तार लेखा तथा वित्त सेवा, ग्रुप 'ए'
10 भारतीय सिविल लेखा सेवा, ग्रुप 'ए'
11 भारतीय आयुध फैक्टरी सेवा, ग्रुप 'ए'
12. भारतीय रेलवे ट्रैफिक सेवा, ग्रुप 'ए'
13. भारतीय रेलवे कर्मी सेवा, ग्रुप 'ए'
14. भारतीय रक्षा संपदा सेवा, ग्रुप 'ए'
15. भारतीय सूचना सेवा, ग्रुप 'ए'

16. भारतीय व्यापार सेवा, ग्रुप ए

17. रेलवे संरक्षण बल, ग्रुप 'ए'

18 असिस्टेंट कमांडेंट का पद, ग्रुप ए—केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

19 डिप्टी सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस, ग्रुप ए, केंद्रीय जाँच ब्यूरो

20. केंद्रीय सचिवालय सेवा, ग्रुप 'बी'

21. रेलवे बोर्ड सचिवालयी सेवा, ग्रुप 'बी'

22. सशस्त्र बल मुख्यालय, सिविल सर्विस, ग्रुप 'बी'

23 भारतीय संघ-शासित क्षेत्र की सिविल सेवा, ग्रुप 'बी'

24 भारतीय संघ-शासित क्षेत्र की सिविल सेवा, ग्रुप 'बी'

25 पांडिचेरी सिविल सेवा, ग्रुप 'बी'।

चुने गए आई ए एस तथा आई.पी एस अधिकारियों को निचले स्तर पर अर्थात् जिला स्तर पर कार्य आरंभ करना होता है। यह आई.ए.एस. तथा आई.पी एस. का विकास-काल होता है, जब वे वास्तविकताओं के संपर्क में आते हैं और जिम्मेदारी लेना शुरू करते हैं। इसके बाद ये लोग पद क्रम में निश्चित अवधि में पदोन्नति पाकर शीर्ष पर पहुँचते हैं। कुल मिलाकर सिविल सेवा की सर्वाधिक माँग है, क्योंकि इसके साथ प्रशासनिक शक्ति, सामाजिक हैसियत, प्रतिष्ठा व उत्तम धन लाभ जुड़ा है।



प्राकृतिक दृश्य वास्तुशिल्प

(Landscape Architecture)

आम धारणा के विपरीत प्राकृतिक दृश्य तथा वास्तुशिल्प फूल, पेड़-पौधे तथा झाड़ियाँ लगाना और पेड़-पौधों की काट-छाँट मात्र नहीं है। सार रूप में, प्राकृतिक चित्रण आउटडोर डिजाइनिंग है। पुनः घर की बाहरी दीवारें, पगडंडी, गेट, प्रकाश व्यवस्था या गैराज तक सभी इसमें शामिल हैं। जिस प्रकार पारंपरिक वास्तुकार द्वारा रूपरेखा के डिजाइन तैयार किए जाते हैं और इंटीरियर डिजाइनर आंतरिक सज्जा से संबधित कार्य करता है उसी प्रकार प्राकृतिक दृश्यो का वास्तुकार बाह्य सज्जा का डिजाइन तैयार करता है। इसीलिए इस कार्य मे विज्ञान और कला का इस्तेमाल करके प्राकृतिक कच्चे माल को कलात्मक कृति में बदल दिया जाता है।

प्राकृतिक चित्रण के वास्तुकार अधिकाशतः परियोजना के सिविल इंजीनियर, वास्तुकार एवं शहरी प्लानर जैसे बिल्डिग व्यावसायिक के साथ कार्य करता है। कल्पना करते समय तथा दिए गए क्षेत्र की डिजाइनिंग के समय प्राकृतिक दृश्यों के वास्तुकारों को क्षेत्र मे मौजूद जलवायु तथा वनस्पति और प्राणिजगत् (flora and fauna) का भी ध्यान रखना होगा। गुजरात के समुद्र के निकट क्षेत्रों में उगनेवाले पेड़ हर जगह नही उग सकते। यहाँ जीव-वैज्ञानिकों, पारिविदो, बागवानी विशेषज्ञों, हाइड्रोलॉजिस्ट, भू-वैज्ञानिकों तथा अन्य विशेषज्ञों की भी सेवाएँ ली जाती हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए इजीनियरिग, मृदा-गतिक तथा बागवानी में रुचि एवं जानकारी होना जरूरी है।

इस बारे में सुखद समाचार यह है कि लैडस्केप (प्राकृतिक दृश्य) डिजाइनर बनने के लिए डिग्री की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इस क्षेत्र में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप अपने काम मे दक्ष हों। डिजाइन की मूलभूत बातें, सतुलन लाने की अच्छी समझ और सौंदर्य-बोध होना जरूरी है। प्रकृति के साथ गहरा लगाव और प्राकृतिक सौंदर्य का भरपूर इस्तेमाल करने की योग्यता होनी चाहिए।

यदि आप अपने आस-पास के माहौल के प्रति सजग नही हैं तो आप अच्छे लैडस्केप डिजाइनर नहीं हो सकते। तथापि डिग्री या डिप्लोमा को प्राथमिकता दी जाती है। लैंडस्केप वास्तुकला मे स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के लिए जरूरी है कि आपके पास वास्तुशिल्प या बागवानी में डिग्री हो।

इस पाठ्यक्रम में प्राकृतिक दृश्यों की अच्छी समझ, प्राकृतिक चित्रण का ज्ञान, विवरण तथा व्याख्या, पर्यावरण का सार, विद्यमान परंपरा और संस्कृति शामिल हैं। पर्यावरण के प्रति जागरूकता, छोटे पैमाने पर स्थल, आयोजना एवं पारितंत्र के सिद्धांत, मुख्यत. अमूर्त डिजाइन एवं अनिवार्य ग्राफिक तकनीकें भी सिखाई जाती हैं।

बाहर के देशों में भू-दृश्य डिजाइनर बहुत बडी टीम का हिस्सा होते हैं। ये नगर-आयोजकों, शहरी डिजाइनर, सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियर, सिविल इंजीनियर तथा अन्य तकनीशियनों के साथ मिलकर कार्य करते है। भारत में यह व्यवसाय अभी भी प्रारभिक अवस्था में है। अधिकांशत. प्राइवेट परियोजनाओं तक ही यह कार्य सीमित है। हालाँकि नौवें दशक के अंत में इस क्षेत्र में काफी अंतर आया है। अधिकाधिक प्लानरो का भू-दृश्य/प्राकृतिक दृश्यो के लिए स्थान बनता जा रहा है। वस्तुत: बिल्डिंग के कॉम्प्लेक्स मे कुल क्षेत्र का 60 प्रतिशत हिस्सा प्राकृतिक दृश्यों की डिजाइनिंग के लिए छोडा जाता है। निश्चित रूप में लैंडस्केप वास्तुकार की संभावनाएँ विकसित हुई हैं। संभवत: पर्यावरण के प्रति लोगों मे आई जागरूकता के कारण इस क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है। हालाँकि अपने अपार्टमेंट के पास व्यक्ति जंगल नहीं उगा सकता; लेकिन उसके अपार्टमेंट के पास एक खूबसूरत बगीचा तो हो ही सकता है।

इस क्षेत्र में प्रारंभ मे सहायक के रूप में वास्तुकार के साथ कार्य किया जाता है। सभी संबंधित डिग्रियों तथा ड्राइग के साथ पोर्टफोलियो तैयार करना निर्णायक घड़ी होती हे। इसका कार्यक्षेत्र व्यापक है तथा अच्छा पारिश्रमिक भी मिलता है। सर्वोत्तम विकल्प यही है कि पर्याप्त अनुभव लेने के बाद परामर्श सेवा संगठन प्रारभ करे या स्वतंत्र रूप से कार्य करें।

□

फोटोग्राफी

(Photography)

फोटोग्राफी सबसे ज्यादा चित्ताकर्षक कला रही है। इससे हम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षणों को फ्रेम मे कैद कर लेते हैं। स्मृतियों को अधिक आसानी से सँभालकर रखा जा सकता है।

लेंस या कैमरे से जुड़ा जीवन रोमांचक यात्रा है। इसमें प्रकाश और रंगों का अद्‌भुत मेल होता है, जहाँ एक फ्रेम के भीतर कुछ खास घटनाओं को कैद कर लिया जाता है।

लेंस के पीछे जीवन को चित्रित करने के लिए वस्तुतः क्या जरूरी होता है? गहन तकनीकी कौशल के आधार पर नित नए प्रयोग करने का स्तर हो, शूट करने के लिए रचनात्मक दृष्टि हो, साथ ही फोकस करने की क्षमता हो। यह नियमित व्यवसाय नहीं है। व्यक्ति को निरंतर जागरूक एवं प्रयत्नशील रहना पड़ता है। भावनात्मक स्तर पर फोटोग्राफ लिया जाता है तथा फोटोग्राफर को गहराई से दृश्य आदि चित्रित करना पड़ता है। वस्तुतः व्यक्ति का शौक ही बाद में उसका व्यवसाय बन जाता है।

आप जिस भी शैली के फोटोग्राफर हों, चाहे औद्योगिक फोटोग्राफर हो या फोटो पत्रकार हों या लाइफ स्टाइल लेंसमैन हों, आपको अत्यधिक दबावों, समय की बाधाओं तथा माँगों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी माहौल भी अलग-अलग होता है। हालाँकि फोटो पत्रकारों का नियमित समय नही होता है, लेकिन औद्योगिक और वाणिज्यिक फोटोग्राफर का कार्य अधिक आसान होता है। दूसरी ओर वन्य जीवन के फोटोग्राफर को घंटो प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अनेक दिनों तक, यहाँ तक कि महीनों तक सर्वाधिक प्रतिकूल स्थल पर प्रतीक्षा करनी पड़ती है, ताकि बिलकुल सही 'शॉट' लिया जा सके।

फोटोग्राफी का कैरियर 'वाइन' के समान होता है, जहाँ समय और अभ्यास

के साथ-साथ व्यक्ति परिपक्व होता जाता है। तथापि सफलता का मापदंड यह है कि अनेक शॉट्स में से कोई एक अच्छी तसवीर चुनने की बजाय प्रत्येक तसवीर फ्रेम की उत्कृष्टता की अभिव्यक्ति हो।

औद्योगिक क्षेत्र

आज उद्योगों का अर्थ धुआँ उगलते कारखाने नहीं हैं, जहाँ ढेर सारे लोग कार्य करते हैं। कॉरपोरेट की दुनिया अधिकाधिक चमक-दमकवाली होती जा रही है। यहाँ औद्योगिक फोटोग्राफर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। औद्योगिक फोटोग्राफर उद्योग से जुड़ी विशिष्ट तसवीरें लेता है। इसमें परिष्कृत तैयार उत्पाद, उत्पाद के मॉडल, फैक्टरी उद्योग के अहाते एवं कर्मचारी शामिल है। पैंफलेट, संगठन की पत्रिकाओं, रिपोर्टों, ट्रेड जर्नल और उत्पाद के ब्रोशर में ये तसवीरें छपती हैं। भारत में उद्योग इस ओर बहुत ज्यादा आकर्षक नहीं है। यहाँ सबसे बड़ी चुनौती देखने में भद्दे स्थल को विश्व के सबसे सुंदर स्थान के रूप में दरशाना है। उद्योगों में बहुत ज्यादा अवसर उपलब्ध नहीं होते हैं।

खेलकूद

खेलकूद फोटोग्राफी संभवतः सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण कार्य है। क्षण की प्रेरणा, जीत का आनंद और हार की झुँझलाहट तथा मौका छिन जाने की निराशा को प्रभावशाली ढंग से कैमरे में बंद करना आसान कार्य करना नहीं है। खेल जगत् में ऐसी तसवीरें मिलने की गुंजाइश रहती है, जिनमें वास्तविक जीवन के मनोभाव व्यक्त होते है। एक क्षण की भी देरी से हम मौका चूक जाते है। फोटोग्राफ के विभिन्न पहलू होते हैं। प्रत्येक पहलू की अलग-अलग अपेक्षाएँ होती है। खेल फोटोग्राफी में व्यक्ति के पास फैशन कार्य की तुलना में अधिक बड़े, अधिक क्षमता वाले लेंस की जरूरत पड़ती है।

चित्रकला (पोर्ट्रेचर)

पोर्ट्रेचर पूरी तसवीर को क्लिक करने की कला है। इसमें विषय की वास्तविक खूबसूरती को कैद करना है। इसमें मनोभावों और शारीरिक मुद्रा को नहीं छुआ जाता। पोर्ट्रेट फोटोग्राफी स्टूडियो में की जाती है तथा मॉडलिंग और अभिनय के लिए पोर्टफोलियो के संकलन की आज बहुत अधिक माँग है। इस कला में प्रत्येक विषय अलग-अलग ढंग से दरशाया जाता है। व्यक्ति को पहले चेहरे का बारीकी से अध्ययन करना पड़ता है और तब सबसे ज्यादा खूबसूरत विशेषताओं को अभिव्यक्त करना पड़ता है। आयु और स्त्री-पुरुष के मुताबिक अलग-अलग प्रकाश

कोण और लेस का इस्तेमाल किया जाता है।

वैज्ञानिक, तकनीकी और चिकित्सा संबंधी क्षेत्र

डी एन ए की एकल लडी जैसी तसवीर देखकर कभी आश्चर्य हुआ है ? या गर्भ में पल रहे बच्चे की तसवीर देखकर अचंभा हुआ है ? यद्यपि ये तसवीरे अप्राकृतिक, अलौकिक दिखाई दती हैं, तथापि ये वास्तविक तसवीरें हैं। इस सबध मे हम वैज्ञानिक और चिकित्सीय फोटोग्राफर के शुक्रगुजार हैं। वैज्ञानिक फोटोग्राफो का अनुसंधान और औद्योगिक पत्रिकाओं, सगठन पत्रिकाओं एवं शिक्षण पुस्तको मे विशेष स्थान है। विशेषज्ञता के लिए वैज्ञानिक भाषा की गहरी समझ और जीवन की प्रक्रियाओं के प्रति गहन संवेदनशीलता की जरूरत है। भारत में अभी यह क्षेत्र प्रारंभिक अवस्था में है।

फोटो पत्रकारिता

जो बात या विचार हम हजारों शब्दो में व्यक्त नहीं कर पाते, वह मात्र एक तसवीर से व्यक्त हो जाता है। प्रेस में अनेक घटनाओं, कहानियों-खबरों को समझाने के लिए फोटोग्राफ पर अधिक-से-अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। फोटो पत्रकारिता एक आकर्षक एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। हमें फौरन सहज होकर कैमरा क्लिक करना है, अन्यथा महत्त्वपूर्ण क्षण खिसक जाएगा। प्रेस फोटोग्राफर को हर समय कैमरे के साथ घूमते रहना पडता है, ताकि विविध प्रकार की घटनाओं को कवर किया जा सके। उन्हें घूम-घूमकर विभिन्न विषयों तथा घटनाओं को 'शूट' करना पड़ता है। उनके कार्य के घटे निश्चित नही होते है। सफल फोटोग्राफर बनने के लिए व्यक्ति के पास समाचारो की गहरी समझ होनी चाहिए। धुन या लगन इस व्यवसाय में कामयाबी की कुंजी है। व्यक्ति को धैर्यवान् होना चाहिए; विशेष तौर पर इस वजह से धैर्य रखना होगा कि इस क्षेत्र मे तत्काल परिणाम सामने नहीं आते हैं। किसी भी खास 'स्टोरी' पर कार्य करने के लिए व्यक्ति के पास विचार (आइडिया) होना जरूरी है। किसी अन्य नियमित व्यवसाय (व्यवसाय) की तुलना में फोटो पत्रकारिता मे अधिक कटिबद्धता की जरूरत होती है। कार्य करते समय व्यक्ति को वास्तव में तन एवं मन से कार्य-स्थल पर मौजूद रहना होता है। फोटो पत्रकार बनने के लिए व्यक्ति को सभी कार्य स्वय करने पड़ते हैं। शुरू-शुरू में उसे सभी जिम्मेदारियाँ स्वयं स्वतत्र रूप से निभानी पडती हैं। तब धीरे-धीरे वह किसी संगठन से जुड़ता है। भारत मे फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र से जुडा कोई विशेष पाठ्यक्रम नही चलाया जा रहा है।

विज्ञापन और फैशन

फैशन फोटोग्राफर को परिधान, अन्य सामग्री तथा मॉडल का ध्यान रखना पडता है। इस क्षेत्र में व्यक्ति डिजाइनर की सर्वोत्तम रचना को व्यक्त करता है तथा किसी परिधान को मॉडल के साथ या मॉडल को परिधान के साथ जोड़कर नही देखता। विज्ञापन फोटोग्राफर को ग्राहक की विचारधारा के अनुसार कार्य करना है या फिर उसे विज्ञापन एजेंसी को ध्यान में रखना है।

व्यावसायिक क्षेत्र

व्यावसायिक (कमर्शियल) फोटोग्राफर अपने हिसाब से कार्य करता है। पासपोर्ट पिक्चर तथा फोटोग्राफी से सबंधित तमाम वाणिज्यिक जरूरतें उसके कार्य-क्षेत्र में शामिल होती हैं। वह सामाजिक घटनाओं के संबंध में फोटोग्राफी की सेवाएँ आदि प्रदान करता है। व्यावसायिक फोटोग्राफर प्रचार-सेवाएँ भी प्रदान करता है। व्यावसायिक कार्य डॉक्यूमेंट या प्रयोग—दोनों स्तरों का हो सकता है। फोटोग्राफर का कार्य आयाम खोलना है। स्वतत्र रूप से कार्य करने का भी विकल्प उपलब्ध है, लेकिन प्रारंभिक अवस्था मे किसी भी व्यक्ति को ऐसा करने की राय नहीं दी जा सकती। व्यक्ति पुर्णकालीन आउटडोर फोटोग्राफर का कार्य कर सकता है तथा स्टॉक पिक्चर एजेंसी को ट्रासपैरेंसी या फोटोग्राफ भेज सकता है।

फोटोग्राफर बनने के लिए व्यक्ति के पास सबसे पहले 28 मि.मि से 80 मि मी तक या 28 मि मी से 200 मि.मी तक जूम लेंस का स्वचालित SLR कैमरा होना चाहिए। अनेक संस्थाओं में फोटोग्राफी के तीन मास से एक वर्ष की अवधि के डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। ऐसे पाठ्यक्रम मे प्रवेश लेने की न्यूनतम योग्यता 10+2 स्तर की परीक्षा है। ऐसे पाठ्यक्रम मे विद्यार्थियों को फोटोग्राफी के विभिन रूपों की जानकारी दी जाती है, ताकि वे पाठ्यक्रम के समापन के बाद मनपसंद क्षेत्र चुन सकें। तब पोर्टफोलियो पर कार्य करना जरूरी हो जाता है।

आज भारत में फोटोग्राफी के विशेष पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं हैं। किसी भी पाठ्यक्रम मे यह नहीं सिखाया जाता कि व्यक्ति को क्या, कहाँ और कब अच्छी तसवीर शूट करनी है। अधिकाधिक लोग ऐसे विभिन्न अल्पकालीन पाठ्यक्रम चुन लेते हैं, जो अचानक ही इस क्षेत्र में उभर जाने हैं। खेद की बात है कि इनसे विद्यार्थियों को कोई विशेष लाभ नही मिलता। इसके बाद, अच्छा पोर्टफोलियो बन जाने के बाद, विद्यार्थी को व्यावसायिकता के साथ कार्य करना होता है। किसी प्रतिष्ठित फोटोग्राफर के साथ कार्य करना अनिवार्य है। सहायक फोटोग्राफर के रूप

मे व्यक्ति इस व्यवसाय के महत्त्वपूर्ण पहलुओ को जान पाता है फोटोग्राफी उच्च महत्त्वाकांक्षी लोगों का व्यवसाय है। यह कार्य अभिव्यक्ति अभिव्यंजना से जुड़ा है। यदि कोई व्यक्ति थोडे पैसे मे ही संतुष्ट हो जाता है तो वह उत्तम कोटि का फोटोग्राफर बन सकता है। हालाँकि शुरू में थोड़ा ज्यादा पैसा लगाना पड़ सकता है, फिर भी इस कैरियर से अच्छा वेतन मिल सकता है।

शौकिया फोटोग्राफर तथा प्रशिक्षणार्थी प्रतिमास साढे तीन हजार से लेकर साढे सात हजार रुपए तक कमा सकते हैं। जब आपके इस व्यवसाय में पैर जम जाते हैं तब प्रति शूट दस हजार से लेकर पैंतीस हजार रुपए या इससे अधिक धनराशि कमा सकते है। इन-हाउस फोटोग्राफर सगठन की क्षमता पर निर्भर करते हुए पॉच हजार रुपए से लेकर पचास हजार रुपए तक कमा सकता है। फोटोग्राफर का वेतन विशेषज्ञता के स्तर के अनुरूप अलग-अलग होता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति इस कला का कैसे उपयोग करता है तथा किस प्रकार से अपनी कलाकृति को बाजार मे लाता है। स्व-रोजगार के रूप में इस कैरियर की कोई सीमा नहीं है।

माँग मे वृद्धि के कारण इस उद्योग में 120 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा, मीडिया का ध्यान अधिक आकर्षित हुआ है तथा नौकरी के अवसर बढ़े हे। अब फोटोग्राफी अधिक प्रभावशाली कैरियर बन चुका है।

निम्नलिखित संस्थानों मे फोटोग्राफी के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं—

1 इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
2 सेंट जेवियर इंस्टीच्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, मुंबई।
3. इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफिक कौंसिल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली।
4 श्रीअरविंदो इंस्टीच्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, अरविंदो मार्ग, नई दिल्ली।
5 नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली, मुंबई एवं बगलोर।
6 एकेडेमी ऑफ फोटोग्राफी, कोलकाता, प बंगाल।
7 त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली।
8 इंडो-अमेरिकन सोसाइटी, मुंबई।

☐

फ्रंट ऑफिस
(Front Office)

किसी होटल का फ्रंट ऑफिस आतिथ्य उद्योग (hospitality industry) के समस्त कार्यकलापों का केंद्रीय भाग माना जाता है। किसी होटल में सबसे पहले इसी क्षेत्र मे अतिथि के साथ संपर्क होता है। फ्रट ऑफिस के कारण होटल या रेस्तराँ की अतिथि पर पहली छवि पडती है तथा अन्य विभागों के साथ दक्षतापूर्वक तालमेल बैठाना भी इसी ऑफिस की जिम्मेदारी है, ताकि सुचारु कार्य प्रणाली के साथ-साथ अतिथि को पूरा आराम मिले।

फ्रट ऑफिस में व्यक्ति को एक ही समय पर अनेक अतिथियों के साथ पेश आना पड़ता है, ताकि कोई भी अतिथि यह महसूस न करे कि उसकी उपेक्षा हो रही है। साथ-ही-साथ तुरत टेलीफोन पर अतिथि को जवाब देना तथा देर तक खड़े रहना और इसके बावजूद हँसमुख दिखाई देना—ये सब इस कैरियर के अनिवार्य अंग हैं। सलीके से तैयार होना जरूरी है। इस नौकरी में इतनी चमक-दमक नहीं है जितनी दिखाई देती है। व्यक्ति को लगातार दस घंटे खड़े रहना पडता है या ऐसी परिस्थितियो का सामना करना पडता है, जब गुस्से से भरा अतिथि यह शिकायत करता है कि लाउड्री स्टाफ ने उसकी कमीज का बटन ही तोड़ दिया है। फ्रट ऑफिस का कार्य चुनौती भरा है। प्रभावी फ्रंट ऑफिस निम्नलिखित पक्षों के साथ कार्य करता है—(क) आंतरिक एवं अंत: विभागीय कार्य-प्रणाली के लिए प्रभावशाली संप्रेषण कार्य, (ख) स्पष्ट रूप से परिभाषित सर्विस डिलीवरी प्रणाली; (ग) प्रयोक्ता के अनुकूल सूचना प्रबधन प्रणाली और (घ) प्रयोक्ता पर फोकस रखते हुए भली प्रकार से प्रशिक्षित किया गया कर्मचारी।

फ्रंट ऑफिस मे निम्नलिखित घटक होते है—

स्वागत

स्वागत कार्य-क्षेत्र में वरिष्ठ स्वागत सुपरवाइजर, स्वागत सुपरवाइजर, फ्रट ऑफिस सहायक तथा फ्रंट ऑफिस प्रशिक्षणार्थी सहायक कार्य करते है। स्वागत

काउंटर पर—विभाग में अतिथि का रजिस्ट्रेशन, अतिथि के सवाल, संदेश, पैकेट तथा पार्सल, विशेष अनुरोध जैसे कार्यों से निपटा जाता है। अन्य कार्य के रूप में अतिथि को उसके कमरे तक पहुँचाना होता है। यह विभाग आने और जाने का भी ध्यान रखता है।

आरक्षण

आरक्षण डेस्क पर वरिष्ठ आरक्षण सुपरवाइजर, आरक्षण सुपरवाइजर, आरक्षण सहायक और प्रशिक्षणार्थी आरक्षण सहायक कार्य करते हैं। आरक्षण करवाने तथा सीटो की पुष्टि करने के अलावा यह डेस्क अतिथियों के सवालों का जवाब देना, ओवर बुकिंग, आंतरिक सम्मेलन तथा अत्यधिक मूवमेट (आवाजाही) के लिए भी जिम्मेदार होता है।

अतिथि संबंध

इस उप-विभाग में अतिथि संबंध कार्यपालक तथा अतिथि संबंध सहायक होते हैं। यह स्टाफ अतिथियों द्वारा की जानेवाली पूछताछ, शिकायतों एवं अनुरोध का ध्यान रखता है। ये 'अभिवादन कॉल' करते हैं—अर्थात् अतिथियों का अभिवादन करते हैं। इनके कार्यों में अतिथियों का एस्कोर्टिंग तथा उनके प्रस्थान से पहले उनसे मिलना भी शामिल है। यह अनुभाग शिष्टमंडलों के ग्रुप लीडर्स के बीच समन्वय कार्य करता है, लॉबी ऑपरेशन मे सहायता करता है तथा होटल मे विशिष्ट अतिथियों की देखभाल करता है।

बिजनेस सेंटर

यह सेंटर सीधे बिजनेस सेंटर सेक्रेटरी के अंतर्गत आता है। यह सेंटर कॉन्फ्रेंस, साक्षात्कार बैठक, अतिथियो के आने-जानेवाले फैक्स सबंधी कार्य सॅभालता है। अतिथियों को इंटरनेट तथा अन्य सचिवीय सेवाएँ भी प्रदान की जाती हैं एव विशेष अनुरोध और शिकायतें सुनी जाती हैं।

बेल डेस्क

इस उप-विभाग मे वरिष्ठ बेल कैप्टेन, बेल कैप्टेन तथा बेल ब्वाय होते है। यह विभाग सामान की देखभाल, स्टोरेज पेजिग, वेकअप कॉल तथा विशेष अनुरोध का ध्यान रखता है।

टेलीफोन

इस विभाग में टेलीफोन ऑफिसर, टेलीफोन ऑपरेटर तथा प्रशिक्षणार्थी

टेलीफोन ऑपरेटर होते हैं। यह विभाग कॉल कनेक्ट करने, वेकअप कॉल तथा विशेष अनुरोध के लिए भी जिम्मेदार है।

हेल्थ क्लब

इसमें हेल्थ क्लब परिचर होता हैं। फ्रंट ऑफिस के अन्य विभागों से भिन्न इसमें केवल चौदह-पंद्रह घंटे काम चलता है। यहाँ मालिश, सोना, जिम आदि सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। फ्रंट ऑफिस के अन्य सभी विभाग चौबीस घंटे कार्य करते हैं तथा आधा सप्ताह में सातों दिन कार्य होता है।

फ्रंट ऑफिस में सुविकसित पैटर्न होता है। प्रत्येक विभाग के वरिष्ठ सुपरवाइजर तथा कार्यपालक लॉबी कार्यपालक के प्रति जिम्मेदार होते हैं। लॉबी प्रबंधक सहायक फ्रंट ऑफिस प्रबंधक के प्रति जवाबदेह होता है, जो सीधे फ्रंट ऑफिस प्रबंधक के नियंत्रणाधीन होता है। कुछ होटलों में फ्रंट ऑफिस और लॉबी कार्यपालक के बीच प्रबंधक फ्रंट ऑफिस होता है। प्रशिक्षणार्थियों की संख्या होटल के अनुसार अलग-अलग होती है।

फ्रंट ऑफिस का हिस्सा बनने के लिए व्यक्ति को खुशमिजाज होना चाहिए तथा सभी प्रकार के ग्राहकों के साथ शांत व्यवहार करना चाहिए। वह विनोदप्रिय और चौकन्ना हो। आप में सीखने की योग्यता होनी चाहिए और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि आपको अपना अह भाव संतुलित रखना चाहिए। अंततः आप में समय पर कार्य करने की विशेषता होनी चाहिए। व्यक्ति को सलीकेदार वेशभूषा में होना चाहिए। उसमें संप्रेषण कौशल होना चाहिए तथा विदेशी भाषा धाराप्रवाह बोलने का गुण हो। यह कैरियर उत्कृष्ट क्षेत्र है तथा कार्य-निष्पादन इस बात पर निर्भर करता है कि आप किसी स्थिति से किस प्रकार से निपटते है।

इस व्यवसाय मे आने के लिए आपके पास होटल प्रबधन मे स्नातक डिग्री होनी चाहिए। छह माह का औद्योगिक प्रशिक्षण लेने के बाद आप आन-कार्य प्रशिक्षण के लिए फ्रंट ऑफिस चुन सकते हैं।

होटल प्रबंधन पाठ्यक्रम में आवेदन के लिए आपके पास 10+2 स्तर पर कम-से-कम 50 प्रतिशत अंक होने चाहिए। प्रवेश परीक्षा के आधार पर चयन किया जाता है। यहाँ अंकीय ज्ञान, वैज्ञानिक प्रवृत्ति, तर्कशक्ति तथा सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए क्रमशः 15 और 7.5 प्रतिशत आरक्षण है। लिखित परीक्षा के बाद साक्षात्कार और सामूहिक परिचर्चा में चुने गए छात्रो के सामान्य ज्ञान तथा व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है।

फ्रंट ऑफिस में कार्य के संबंध में अत्यधिक पारिश्रमिक मिलता है। जैसे-जैसे पदोन्नति होती है, संगठन की स्थिति पर निर्भर करते हुए वेतन मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। यदि व्यक्ति निरंतर दबाव में भी खुश रह सकता हो, निरंतर कार्य कर सकता हो, कार्य की चुनौतियों का सामना कर सकता हो, तभी यह कैरियर उसके लिए उपयुक्त है। इस क्षेत्र में वित्तीय एवं व्यावसायिक दृष्टि से काफी संतोष मिलता है; लेकिन यहाँ कड़ी स्पर्धा होती है।

होटल उद्योग काफी फल-फूल रहा है। इसके साथ-साथ फ्रंट ऑफिस स्टाफ की माँग भी बढ़ती जा रही है। अधिकाधिक नौकरियाँ उपलब्ध है और संभावनाएँ भी काफी हैं। फ्रंट ऑफिस प्रबंधक क्षेत्रीय प्रबंधक या समतुल्य पद तक आगे बढ़ सकता है।



बाजार अनुसंधान

(Market Research)

प्रश्न, प्रश्न, प्रश्न—क्या इस शैंपू से वाकई मेरे सिर से रूसी खत्म हो जाएगी ? क्या नई वस्तु पहले से इस्तेमाल की जा रही वस्तु से बेहतर है ? क्या यह उत्पाद ग्राहक की पहुँच में है ? तेंदुलकर ज्यादा लोकप्रिय है या गांगुली ? ये प्रश्न ऐसे हर व्यक्ति को प्रभावित करते है, जो बाजार मे आगे बढ़ना चाहता है। इन प्रश्नो का उत्तर ढूंढ़ने के लिए और अनेक अन्य सवालों के जवाबों का पता लगाने के लिए प्रति वर्ष लाखों रुपए खर्च किए जाते हैं।

यहीं से बाजार शोधकर्ता का कार्य आरंभ होता है। बाजार शोधकर्ता ऐसे अनेक सवालों का जवाब ढूँढ़ने के लिए विभिन्न गुणात्मक तथा परिमाणात्मक उपायों का उपयोग करता है। ग्राहको के व्यवहार का आकलन करके वह उद्योगो की सहायता करता है, जिससे उद्योग सफलतापूर्वक नए उत्पाद ला सकते है, परिणामस्वरूप बाजार में उद्योग एवं उत्पाद बना रहता है।

आम धारणा है कि बाजार अनुसंधान में घर-घर जाकर प्रश्नावलियाँ भरनी होती हैं। इस प्रक्रिया में ग्राहक बोर हो जाता है और शोधकर्ता को देखते ही घर का दरवाजा बंद कर लिया जाता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है। निश्चित रूप मे यह सब अनुसंधान का हिस्सा मात्र है। सूई की नोक के बराबर है।

वैकल्पिक उत्पादो की माँग का पूर्वानुमान लगाने के लिए बाजार अनुसधान मे फर्में सांख्यिकी तकनीकों का इस्तेमाल करती हैं। ये फर्में सर्वेक्षण डाटा संग्रह करके उसका विश्लेषण करती हैं ताकि बाजार में नए या बदलकर तैयार किए गए उत्पादों की संभावनाओं का आकलन किया जा सके। उच्चतर कोटि की बाजार अनुसंधान की फर्में अधुनातन अर्थमितीय तकनीको का इस्तेमाल करती हैं, जिससे स्वयं द्वारा निर्धारित मूल्य, प्रति-मूल्य तथा वैकल्पिक उत्पादों की माँगों के संदर्भ में आय संबंधी लचीलेपन का अनुमान लगाया जा सके। इन वैकल्पिक उत्पादों की माँगो की

जनांकिकी (demographic) संरचना की जॉच-पड़ताल के लिए जनगणना डाटा का भी इस्तेमाल किया जाता है।

सार रूप में, बाजार अनुसंधान उद्योग की परिधि मे तीन पहलू होते हैं—

विपणन

यह बाजार मे उत्पाद खरीदने या बेचने का कार्य या प्रक्रिया है। अथवा उत्पादक से ग्राहक तक सामान के अंतरण में शामिल वाणिज्यिक कार्य है।

राय

किसी विशिष्ट पदार्थ या वस्तु के बारे मे लिया गया निर्णय, विचार या मूल्याकन। आमतौर पर बनी राय। छाप से अधिक मजबूत विश्वास, लेकिन यह सकारात्मक ज्ञान जितना मजबूत नहीं होता।

अनुसंधान

विद्वत्तापूर्ण या वैज्ञानिक तरीके से की गई जॉच या तहकीकात अथवा पूरी तरह से अध्ययन करना, ताकि प्राप्त जानकारी विस्तारपूर्वक तथा सही ढंग से दी जा सके।

निचले या आधार स्तर पर अनुसंधान के दो प्रकार होते है—परिमाणात्मक तथा गुणात्मक। परिमाणात्मक अनुसंधान में प्रतिशत या औसत के मान को सामने रखकर विशिष्ट जन-समूह की राय का सांख्यिकीय आकलन करने के लिए अनुसंधान विधि का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान मे प्राय. बडा नमूना दिया जाता है और जवाब देनेवालों का बहुत कम समय लिया जाता है। टेलीफोन, मेल, घर-घर जाना, इंटरनेट या वेब सर्वेक्षण तथा संगठन के भीतर (इन-हाउस) अध्ययन जैसी विधियाँ परिमाणात्मक अनुसधान में इस्तेमाल की जाती हैं—अर्थात् इस कार्य में दिमाग पर बहुत जोर पड़ता है।

गुणात्मक बाजार अनुसंधान में बाजार से संबंधित वस्तु के बारे में गहन समझ-बूझ उत्पन्न होती है। इस प्रकार यह विशिष्ट रूप से कम सख्या मे लोगों पर फोकस है, जो गहराई में जाकर सवालों का जवाब देते हैं। इसमें चर्चा करने के लिए जॉच बिंदुओं की अपेक्षा प्रायः प्रश्नावली का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार के अनुसधान में व्यक्तिशः, ग्रुप या आमने-सामने साक्षात्कार पर फोकस रखते हुए सर्वेक्षण किया जाता है। हालाँकि इटरनेट जैसे माध्यमो का दिन-प्रतिदिन प्रयोग बढता जा रहा है, फिर भी बुनियादी रूप से सवालों का जवाब पाने के लिए मनोविज्ञान तथा अन्य गुणात्मक पैरामीटर का सहारा लिया जाता है।

पहली सीढ़ी प्रशिक्षणार्थी के रूप मे कार्य करना है तथा इस अवस्था में कार्फ ऊब भी उत्पन्न हो जाती है। बाजार अनुसंधान-प्रशिक्षणार्थी को कठोर कार्यक्रम क अनुभव लेना होता है, जहाँ उसे डाटा संग्रह से लेकर डाटा संकलन तक अनुसंधान के तमाम क्षेत्रों का प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। प्रशिक्षण के लिए आई एम.आर.बी. मे आवेदन किया जा सकता है। बाजार अनुसंधान के कार्य में व्यक्ति निम्नलिखित विभिन्न क्षेत्रो से जुड़ता है—

क. इस क्षेत्र में अनुसंधान प्रवर्तक या खरीदार विनिर्माता, खुदरा विक्रेता, सेवा प्रदाता, राजनीतिज्ञ तथा अन्य गैर-सरकारी एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठान होते हैं, जहाँ जाने-माने विपणन तथा कारोबार संबंधी निर्णय लेने के लिए अपेक्षित जानकारी की जरूरत होती है।

ख परामर्शदाता अनुसंधान-व्यवसायी होते हैं, जो अपने वर्षों के अनुभव से अनुसंधान समुदाय के भीतर एक या अधिक क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करते हैं।

ग. ऐसी कंपनियाँ विक्रेता (Vendors) होती हैं, जो सॉफ्टवेयर, उपकरण, सैंपलिंग तथा प्रौद्योगिकी (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग) जैसे मार्केटिंग तथा अभिमत (opinion) अनुसंधान उद्योग को उत्पाद एवं सेवाएँ प्रदान करती हैं।

घ. किसी उत्पाद, सेवा या खुदरा सुविधाएँ सुनिश्चित करने की दृष्टि से स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्य क्षेत्रों से किए डाटा संग्रह को व्यवस्थित करके एवं इनकी व्याख्या करके बाजार अनुसंधान विश्लेषक बाजार की स्थितियों पर शोध कार्य करते हैं।

कोई भी व्यक्ति पूर्णकालिक रूप से अनुसंधान कंपनियों में कार्य कर सकता है। ये कंपनियाँ अनुसंधान के डिजाइन, कार्यान्वयन, डाटा संग्रह, डाटा प्रक्रमण तथा सूचना के विश्लेषण से लेकर प्रयोक्ता को सुझाव देने तक बाजार अनुसंधान के समस्त पहलुओं में विशेषज्ञता प्राप्त होती हैं। डाटा संग्रह कंपनियाँ प्रयोक्ता, अनुसधान आपूर्तिकार (सप्लायर) या परामर्शदाता द्वारा तैयार विधि का इस्तेमाल करने मे विशेषज्ञ होती हैं। डाटा सग्रह की विधियों में उपभोक्ताओं तथा व्यवसायियो का साक्षात्कार लेना, फोकस ग्रुप या व्यक्तियों के साक्षात्कार के लिए प्रतिवादियो की भरती तथा साक्षात्कार स्थल का चुनाव आदि शामिल हैं।

डाटा प्रक्रमण कंपनियाँ डाटा संकलित करके इसे विशिष्ट रूप (फॉर्मेट) में रखती हैं, जिससे डाटा सग्रह कंपनियों द्वारा एकत्रित सूचना का विश्लेषण किया जा

सके। बाजार अनुसंधान फर्म में कार्य करने के अतिरिक्त व्यक्ति खासतौर पर तेजी से बढ रही उपभोक्ता माल (FMCG) जैसी मार्केटिंग कंपनियों, विशेष रूप से विभिन्न मुद्दो मे विशेषज्ञता प्राप्त ब्रांड योजना की अनुसंधान फर्मों तथा विज्ञापन एजेंसियों में भी कार्य कर सकता है। अपनी परामर्श कंपनी (कंसल्टेंसी) खोलना भी अन्य आकर्षक विकल्प है। लेकिन अनुभव का महत्त्व यहाँ भी सर्वोपरि है।

कोई भी व्यक्ति बाजार शोधकर्ता हो सकता है; लेकिन विशेषज्ञता हासिल करना अतिरिक्त योग्यता है। विपणन, अनुसधान, व्यवसाय प्रशासन, सांख्यिकी/गणित, कंप्यूटर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, संचार एवं मनोविज्ञान में डिग्री पाठ्यक्रम भी इस क्षेत्र में होता है। चूँकि आई एम आर बी विभिन्न प्रकार का अनुसंधान कार्य करती है, अत: प्रबंधन, मनोविज्ञान, वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र जैसी अलग-अलग पृष्ठभूमिवाले व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जाती है। परिमाणात्मक अनुसंधान के लिए गणित एवं अर्थशास्त्र मे शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा स्नातकोत्तर स्तर पर मार्केटिंग का अनुभव होना अनिवार्य है, जबकि गुणात्मक अनुसंधान के लिए मनोविज्ञान या किसी अन्य क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करना उपयोगी हो सकता है। इस उद्योग मे बड़ी उपलब्धियाँ पाने के लिए विश्लेपणात्मक, बिक्री या अंतर्वैयक्तिक अनुभव, योजना संबंधी लेखन कौशल तथा हर ब्योरे पर ध्यान देना और प्रस्तुतीकरण कौशल अर्जित करना जरूरी है।

प्राय: बाजार शोधकर्ता ऐसी टीम में कार्य करते है, जिसमें साख्यिकीविद् भी शामिल होते हैं। इस टीम में अभिप्रेरणात्मक अनुसंधान विशेषज्ञ होते हैं, जो सर्वेक्षण सबंधी प्रश्न, पोलस्टर्स (Pollsters), साक्षात्कार की रूपरेखा तैयार करते हैं। इन विशेषज्ञो के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ तथा अन्य संबद्ध क्षेत्रों के विद्वान् इस टीम में कार्य करते है। अत यहाँ टीम भावना से कार्य करना जरूरी है। परियोजना के स्वरूप पर निर्भर करते हुए व्यक्ति को प्रति सप्ताह पैंतीस से पैंसठ घटे तक कार्य करना पड़ता है।

इस क्षेत्र में आमदनी भी अच्छी होती है। यह उद्योग निरतर आगे बढ रहा है तथा अनेक वर्षो से इसकी वृद्धि दर अच्छी रही है। किसी विषय मे विशेषज्ञता प्राप्त कर आमदनी बढ़ाई जा सकती है, जो समय के साथ-साथ बढ़ती जाएगी। इसलिए स्नातक परीक्षा के तुरत बाद योजना बना लें। विशेषज्ञता प्राप्त करने से आपकी कद्र बढ़ जाएगी।

मध्यम आकार की एजेसी में विशेषज्ञों का प्रारंभिक वेतन लगभग 1.5 लाख प्रतिवर्ष हो सकता है तथा शीर्ष एजेंसियाँ 2 3 लाख प्रतिवर्ष तक वेतन दे सकती है।

जैसे—ओ आर.जी –मार्ग, आई.एम.आर बी. । यदि आप अंकों की गणना आसानी से कर सकते है और आप में संपर्क में आनेवाली हर छोटी-बड़ी वस्तु का विश्लेषण करने की रुचि है तो यह कार्य-क्षेत्र आपके लिए सर्वोत्तम है।

निम्नलिखित संस्थानों में इसके पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1. एम आई.सी ए —www mica-india net
2. भारतीय प्रबधन संस्थान, बगलौर
3. भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता।



बिक्री और विपणन

(Sales and Marketing)

बिक्री विश्व का सबसे पुराना व्यवसाय है। बिक्री ऐसी प्रक्रिया है, जिसमे कीमत चुकाकर उत्पाद हासिल किया जाता हैं। पुराने जमाने में बिक्री के लिए अदला-बदली (Barter) प्रणाली विद्यमान थी, अर्थात् उत्पाद लेने के लिए कोई उत्पाद दिया जाता था। मुद्रा के प्रयोग के साथ लोग उत्पाद की खरीद-फरोख्त करने लगे। आज वस्तु खरीदने और बेचने की सबसे सरल संकल्पना का कायापलट हो गया है और यह मार्केटिंग के तहत विशेष प्रोफेशन बन चुका है। हालाँकि आम व्यक्ति के मार्केटिंग और बेचने का अर्थ एक ही है; लेकिन इन दोनों मे सकल्पना का अतर है। तथापि इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता कि भारत में बेचने और मार्केटिंग के प्रोफेशन में सबसे ज्यादा लोग कार्यरत है। बिक्री सदाबहार प्रोफेशन है। चाहे कुछ भी हो जाए, लोग वस्तुएँ तथा सेवाएँ तब तक खरीदते रहेंगे जब तक मानव जाति का अस्तित्व रहेगा।

पच्चीस-तीस साल पहले व्यवसाय के रूप में बिक्री को अच्छी नजर से नही देखा जाता था। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश के साथ ही बिक्री प्रोफेशन को भी गरिमा मिलने लगी है। युवा वर्ग इस प्रोफेशन को रोजगार पाने का सर्वाधिक अच्छा तरीका मानता है। प्रतिदिन राष्ट्रीय स्तर के दैनिक समाचार-पत्रो में सैकड़ों रिक्तियाँ छपती हैं। यहाँ तक कि अंडर-ग्रेजुएट भी इस व्यवसाय मे आ रहे है। प्रबधन अध्ययन के बाद मार्केटिंग में काफी नौकरियाँ विद्यमान हैं। इसके अलावा वृद्धि की भी काफी संभावनाएँ हैं।

अभिनय की तरह ही बिक्री कला किसी को सिखाई नहीं जाती। अनुभव से ही यह प्रोफेशन सीखा जा सकता है। प्रबंधन प्रक्रिया के भाग रूप में मार्केटिंग का अत्यधिक विशेषज्ञता प्राप्त क्षेत्र के रूप में अध्ययन किया जाता है। वस्तुत: बिक्री मार्केटिंग का एक पहलू है। इसमे विज्ञापन, सवर्धन और अन्य तत्त्व मार्केटिंग में आते हैं।

बिक्री व्यवसाय की खास बात यह है कि कोई भी व्यक्ति सेल्समैन बन सकता है। इस व्यवसाय में व्यक्ति बहिर्मुखी तथा मस्तमौला होना चाहिए। वह आसानी से मित्र बना सकता हो तथा किसी के भी साथ मिलकर कार्य कर सकता हो। इस प्रोफेशन में व्यक्ति की दो रूपों में तरक्की होती है—एक, वह अच्छा धन कमाता है तथा दूसरे, उसके मित्रों और परिचितों का दायरा बढ़ता है। पुराने समय में बीमा एजेंट ऐसा व्यक्ति माना जाता था, जो समाज में हर तबके के लोगों को जानता था। इस प्रोफेशन मे आनेवाला व्यक्ति शीघ्र ही अपनी पहचान बना लेता है।

लेकिन साथ ही इस क्षेत्र में अनुशासन की जरूरत होती है। समय की पाबन्दी आवश्यक कारक है। व्यक्ति में धैर्य, उत्तम संप्रेषण कौशल तथा कारोबार संबंधी कुशाग्रता होनी चाहिए। बिक्री लाइन में ग्राहक का ध्यान रखना पड़ता है तथा बिक्री व्यवसाय मे व्यक्ति के पास उत्तम संप्रेषण कौशल होना चाहिए। इसके साथ सा[illegible] सेल्समैन को सलीकेदार वेशभूषा पहननी चाहिए। उसमें शिष्टाचार हो, ताकि उत्पादों की खरीद के समय ग्राहक पर अच्छा प्रभाव पड़ सके।

अब वे दिन लद चुके, जब लोग घर पर बैठकर वस्तुएँ बेचा करते थे, उन्हें हाथ-पैर नहीं हिलाना पड़ता था। आज, यहाँ तक कि महिलाएँ भी, इस प्रोफेशन में आ चुकी हैं। पुरुष-प्रधान इस क्षेत्र में महिलाओं के प्रवेश से यह कारोबार [illegible] ग्लैमर-युक्त नहीं बना, बल्कि इसमें स्पर्धा अधिक बढ़ गई है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पर्याप्त संख्या में महिलाओं की बिक्री और मार्केटिंग, विशेषतः सेवा क्षेत्र मे, भरती कर रही हैं। आज रिटेलिंग की सकल्पना तेजी से बढ़ रही है [illegible] अधिकांश कंपनियाँ शो-रूम में सेल्स गर्ल्स को प्राथमिकता देती हैं। इस प्रकार यह व्यवसाय स्त्री-पुरुषों—दोनों को बराबर अवसर प्रदान करता है और पूर्ण मेहनत से व्यक्ति आगे बढ़ता है।

बिक्री और मार्केटिंग क्षेत्र में पैसा भी अधिक मिलता है। यह [illegible] प्रोफेशन है, जहाँ व्यक्ति अपनी मेहनत के अनुरूप कमा पाता है। जितनी मेहनत उतना फल। अतः यह देखकर आश्चर्य नही होना चाहिए कि [illegible] अनेक बिक्री एजेंट अच्छी-खासी रकम वेतन के रूप में पाते हैं। सेल्समैन की आमदनी में प्रोत्साहन प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके अलावा यदि सेल्समैन अधिक सक्षम तथा परिणामोन्मुखी पाया जाता है तो कंपनी में उसका [illegible] जाता है और उसे पर्याप्त विशेष सुविधाएँ दी जाती हैं। किसी अन्य व्यवसाय की तुलना में इस व्यवसाय में तरक्की के ज्यादा अवसर मिलते हैं।

व्यवसाय स्कूलों के अलावा अनेक सस्थाएँ अंशकालीन तथा पूर्णकालिक [illegible]

डिप्लोमा पाठ्यक्रम बिक्री तथा मार्केटिंग क्षेत्र में चलाती है, जहाँ प्रबंधन पाठ्यक्रम में मार्केटिंग विशेष विषय होता है। व्यवसाय स्कूल में दो वर्ष का पाठ्यक्रम कराया जाता है। विद्यार्थियों को विज्ञापन, संचार, मार्केटिंग तथा समतुल्य क्षेत्रो में प्रशिक्षण दिया जाता है। भारतीय प्रबंधन सस्थान सर्वोत्तम संगठन है।

निम्नलिखित संस्थाएँ इससे संबंधित पाठ्यक्रम चलाती हैं —

1 ए पी जे. स्कूल ऑफ मार्केटिंग, 54, तुगलकाबाद इंस्टीच्यूशनल एरिया, एम बी रोड, नई दिल्ली–110062।

2. टाइम्स स्कूल ऑफ मार्केटिंग, 10, दरियागंज, नई दिल्ली–110002।

3. वाई.एम सी.ए, जयसिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 001।

4 भारतीय जन–संचार संस्थान, अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली–110007।

5. जेवियर्स इंस्टीच्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुबई–400 001।

6 प्रबधन अध्ययन संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110 007।

7 सिंबोसिस इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, पुणे–411 004।

8 मुद्रा इंस्टीच्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, अहमदाबाद–380 058।

9 नरसी मोंजी इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुबई–400 056।

10 भारतीय विद्या भवन, देश भर में।

11 स्कूल ऑफ स्टडीज इन कॉमर्स एंड मैनेजमेट, ग्वालियर–474 011।

12 इंस्टीच्यूट ऑफ डेवलपमेट स्टडीज, लखनऊ–226 007।



बीमा

(Insurance)

संसद् में बीमा नियमन प्राधिकार विधेयक (Insurance Regulatory Bill) पेश किया गया था। इससे नौ अरब रुपए के बीमा क्षेत्र में उद्यम स्थापित करने की दृष्टि से गैर-सरकारी बीमा कंपनियों के साथ-साथ विदेशी बीमा कंपनियों के मार्ग मे आनेवाली अडचनें भी दूर हो गई हैं।

वर्तमान में सन-लाइफ ऑफ कनाडा, इंग्लैड की प्रूडेंशियल तथा स्टैंडर्ड लाइफ, अमेरिकन बीमा कंपनी मैक्स और रॉयल तथा सन एलाइंस जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर की बडी-बड़ी कंपनियों के अलावा सत्रह से भी ज्यादा गैर-सरकारी संगठन (P S U) बीमा क्षेत्र मे प्रतिस्पर्धा में लगे है।

सीधे-सादे शब्दों मे, बीमा अप्रत्याशित घटना के कारण होनेवाले वित्तीय नुकसान के समय ढाल का काम करता है। यह दो पार्टियों के बीच समझौता है, जिसके द्वारा एक पार्टी बीमाकर्ता दूसरी पार्टी अर्थात् बीमाधारक द्वारा निश्चित धन राशि के भुगतान के बदले में कतिपय घटना के समय निश्चित धनराशि देने का वायदा करती है।

सन् 2000 तक भारतीय बीमा क्षेत्र प्रारंभिक अवस्था से ही गुजर रहा था। आकलनों के अनुसार, तीन सौ लाख मध्य वर्गीय परिवार के लोगों में से मात्र बीस लाख लोगो ने ही स्वास्थ्य बीमा करवाया था। इस समय भी बीमा क्षेत्र विकास के प्रारंभिक दौर से ही गुजर रहा है। फिर भी, भारतीय बाजार का बहुत बड़ा आकार इसके आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहा है। सिग्मा रिपोर्ट के अनुसार, बीमा व्यवसाय का वर्तमान बाजार क्षेत्र तीस हजार करोड़ रुपए है और यहाँ 201 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि हो रही है।

आँकड़ों से पता चलता है कि भारत में बीमा क्षेत्र में लगभग पाँच लाख लोग रोजगार मे लगे है, जबकि इंग्लैड में यह संख्या छह लाख है। लेकिन अन्य

आकलनों से पता चलता है कि सन् 2001 की समाप्ति तक भारत में मात्र एक नई बीमा कंपनी को ही दस हजार सेल्स एजेंट एवं एक हजार दो सौ अधिकारियो की जरूरत पड़ेगी।

भारत में मध्य वर्गीय लोगों की आय के स्तर (strata) का अधिकांश भाग उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। यह क्षेत्र सोने की खान है, जहाँ 3.2 लाख भावी बीमा-क्रेता मौजूद है। वर्तमान बीमा मेजर्स के साथ आकर्षक स्कीमों का अभाव है। लेकिन इस बाजार की ओर अब आकर्षण बढा है। कहा जा सकता है कि जब व्यापक रूप से इस क्षेत्र मे कार्य होगा तब विभिन्न प्रकार की नौकरियों के सुनहरे अवसर मिलेंगे।

पेट्रोकेमिकल तथा पॉवर सेक्टर जैसे विविध क्षेत्रों में इंजीनियर तथा प्रणाली व्यवसायी, सांख्यिकीविद् एवं चिकित्सा क्षेत्र के व्यवसायी के साथ-साथ मार्केटिंग, वित्त, मानव संसाधन व्यवसायी (व्यावसायिक) से संबंधित माँग हमेशा रही है। आशा की जाती है कि बीमा एजेंटों और दावा-प्रबधकों की माँग भी कई गुना बढ़ जाएगी। हालाँकि दावा-प्रबंधन किसी परियोजना से जुड़े जोखिम को आँकने की कला है, जबकि बीमा कार्य मूल्य तय करने की कला है।

आमतौर पर विदेशी बीमा कंपनियाँ चिकित्सा या जीवन-विज्ञान की पृष्ठभूमि वाले बीमाकर्ताओं (Underwriter) को प्राथमिकता देती है, लेकिन इस क्षेत्र मे कार्य करने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के पास एसोसिएटशिप एक्जामिनेशन ऑफ दि इंश्योरेंस इस्टीच्यूट ऑफ इंडिया जैसी संस्था से व्यावसायिक योग्यता हो। इस परीक्षा में बीमा एवं जोखिम प्रबंधन का भी पत्र होता है। शुरू-शुरू में इस क्षेत्र में लगभग छह लाख रुपए प्रतिवर्ष आमदनी हो सकती है।

बीमांकिकी विज्ञान ऐसा क्षेत्र है, जिसकी माँग निरतर बनी रही है। प्रत्यक्ष व्यावहारिक अनुभव से इस क्षेत्र में आगे चलकर बहुत मदद मिलती है। हालाँकि अभी यह क्षेत्र पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया है, लेकिन निकट भविष्य में बीमा क्षेत्र मे बीमांकिकी विज्ञान आवश्यक विषय बन जाएगा। इस विधा की जानकारी अधिकांशतः जोखिम घटक, मृत्यु दर के पूर्वानुमान, बोनस लेवल प्रीमियम तथा निश्चित लाभ के परिकलन मे इस्तेमाल की जाती है। बीमांकिकी बनने के लिए आपके पास कम-से-कम तीन-चार वर्ष का अनुभव होना जरूरी है। आपके पास एक्चुएरिल सोसाइटी ऑफ इंडिया (भारतीय बीमांकन सोसाइटी) से व्यावसायिक योग्यता होनी चाहिए। ऐसे कार्य के लिए गणित एवं सांख्यिकी विषय के स्नातक उपयुक्त रहते है, क्योंकि यह कार्य गणित एवं सांख्यिकीय कौशलों पर आधारित है। प्रारंभिक अवस्था

में व्यक्ति का वेतन लगभग आठ लाख रुपए प्रतिवर्ष हो सकता है।

ऐसा भी समय था, जब बचत की सूची में बीमे को सबसे बाद में स्थान दिया जाता था। लेकिन अब इसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता माना जाता है। परिणामस्वरूप, बीमा कंपनियाँ घर-घर जाकर पॉलिसी बेचनेवाले एजेंटों की इमेज छोड़कर बीमा सलाहकार की छवि अपनाने की कोशिश कर रही हैं। अब एजेंटों को पॉलिसी नही बेचनी है, बल्कि उन्हें ग्राहक की जीवन-शैली और आय को ध्यान में रखते हुए उनके लिए सर्वोत्तम पॉलिसी का चयन करना है। इस क्षेत्र का शुभारभ बीमा कंपनियों के लिए ही वरदान साबित नहीं हुआ बल्कि इससे सूचना प्रौद्योगिकी जैसे सहयोगी क्षेत्रों को भी बढ़ावा मिला है।

एसोचेम (एसोसिएटिड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री) द्वारा प्रकाशित लेख के अनुसार, बीमा क्षेत्र के शुभारंभ से सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए भी नए-नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। यह अनुमान लगाया है कि मात्र 5 प्रतिशत बीमा कैरियर्स सीधे बीमा बेचते हैं। प्रणाली व्यवसायियों के लिए आवश्यक होगा कि वे निर्णय लेने एवं उत्पाद (पॉलिसी) के मूल्य-निर्धारण में संगठनो की सहायता करने के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली तैयार करें। चूँकि बाजार की दृष्टि से अब बीमा पण्य (वस्तु) बन चुका है, अत: संगठनों की छवि बनाने के उद्देश्य से विज्ञापन एव विक्रय संवर्धन से जुड़े लोगों की सेवाएँ लेना भी जरूरी हो गया है। बीमा उत्पाद की मार्केटिंग जितनी आसान दिखाई देती है उतनी आसान वह है नहीं। यह किसी भी अन्य उत्पाद की मार्केटिंग के ही समान है। अत. बीमा मार्केटिंग के लिए विशेषज्ञता हासिल करना जरूरी है।

व्यवसायी ब्रोकर्स की माँग भी बढती जा रही है। अन्य उदीयमान चैनल सेल्स एजेंट (वितरण माध्यम के रूप में) हैं, जो स्वतंत्र रूप से दावे के समायोजक के रूप मे कार्य करते सर्वेक्षकों को नए अवसर प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे यह क्षेत्र ग्राहकों पर केंद्रित होता जा रहा है, योग्य, गुणवान् सलाहकारों की जरूरत पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिक कठोर है और इसी प्रकार भरती संबंधी योग्यता की शर्तें भी सख्त हैं। ऐसे अनेक गैर-सरकारी मँजे हुए खिलाडी है, जो बीमाकिकी विज्ञान के शिक्षण क्षेत्र मे प्रवेश कर चुके है। तथापि किसी भी अन्य व्यवसाय के समान इस क्षेत्र में भी व्यावहारिक अनुभव काफी मायने रखता है।

बीमा नियमन एव विकास प्राधिकरण (IRDA) ने एजेंटों को भरती के समय दिए जानेवाले प्रशिक्षण के संबध में काफी कठोर मानदंड तैयार किए है। इसमे जीवन तथा बीमे के सामान्य क्षेत्रो के प्रशिक्षण के लिए सौ घंटे तय किए गए है। राष्ट्र

व्यापी स्तर पर अब पचास से भी अधिक प्रशिक्षण संस्थान पंजीकृत एवं आई.आर.डी ए. द्वारा अनुमोदित हैं। ये संस्थान आजकल प्री-लाइसेंसिंग प्रशिक्षण आयोजित कर रहे है। बीमा क्षेत्र मे व्यापक स्तर पर संभावनाएँ मौजूद हैं, जिनका अभी उपयोग किया जाना है।

बीमा या बीमांकिकी विज्ञान में निम्नलिखित संस्थानो में बी एस-सी. पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं—

1. दिल्ली, मुंबई और अलीगढ विश्वविद्यालय।
2 अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई नगर-608002 (तमिलनाडु) द्वारा डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
3 कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी, नाडिया-741235 पश्चिम बंगाल।
4. एमिटी स्कूल ऑफ इंश्योरेंस एंड एक्च्युरियल साइंस (एमिटी बीमा एव बीमांकिकी स्कूल), नोएडा।
5. भारतीय सांख्यिकी संस्थान (स्नातकोत्तर पी-एच.डी), कोलकाता।



बैंकिंग

(Banking)

भारत में बैंकिंग क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षो से कायाकल्प हुआ है। अँधेरे, गंदे, सुस्ती भरे हॉलवाले बैंक की इमेज गुजरे जमाने की बात होती जा रही है, जहाँ बाबू लोग पान चबा रहे हैं, साथ ही लंबी कतार में खड़े लोगों को पैसा देने के लिए चैक जारी किए जा रहे हैं। आज म्युचुल फड, वेंचर केपिटल कंपनियाँ, लीजिग कपनियाँ, मर्चेंट बेंक जैसे नए वित्तीय संस्थान सक्रिय होते जा रहे हैं, जिससे बैंक की प्राथमिकताओं में भी विविधता आ रही है। आज प्रौद्योगिकी पर बल दिया जा रहा है तथा बिक्री, बीमा, म्युचुअल फंड जैसी सेवाओ की व्यापक रेंज तथा निवेश अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।

31 मार्च, 2001 तक तैंतीस प्राइवेट बैंक थे तथा तैंतालीस विदेशी बैंक देश मे कार्य कर रहे थे, जबकि सत्ताईस सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का अभी भी इस देश मे सबसे ज्यादा शेयर है। यहाँ 83 प्रतिशत कुल जमा धनराशि है तथा 80 5 प्रतिशत कुल अग्रिम सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण देश मे बैंकिंग क्षेत्र को नया आयाम मिला है। अधिकाधिक बैंक इटरनेट बैकिंग सेवाएँ अपना रहे हैं। इससे बैंक ग्राहक संपर्क अधिक तकनीकी हो गया है।

इस लोकप्रिय एवं गलत धारणा के बावजूद कि बैंकिंग में डेबिट और क्रेडिट का ही कार्य होता है, अन्य बहुत से काम भी होते हैं। विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति बैंक मे शामिल हो सकता है—जैसे क्लर्क, ग्रेड I अधिकारी के रूप में या ग्रेड II अधिकारी अथवा प्रबंधक के रूप में। हालाँकि क्लर्क की नौकरी काउंटर पर कार्य से जुडी है, उसे लेखा-जोखा सँभालना पड़ता है, लेकिन दूसरी ओर प्रबंधकीय कार्य मे सगठन या समग्र रूप में पर्यवेक्षण कार्य शामिल है।

बैंक क्लर्क के कार्यो में लेखाओं, ऋण, बंधक-पत्र के रिकॉर्ड रखने जैसे अनेक प्रचालन कार्य करना शामिल है। यह वेतन पत्रक एवं उपभोक्ता को फेहरिस्त

सबधी लेखाकरण जैसी सेवाएँ प्रदान करता है। टाइपिस्ट, सेक्रेटरी, अभिरक्षक, सदेशवाहक—सभी इसी श्रेणी के अंतर्गत कार्य करते हैं। कठोर प्रशिक्षण तथा विभिन्न विभागो मे उनके कौशलो को मान्यता मिलने पर उन्हें निम्नलिखित मे से किसी भी विभाग में कार्य सौंपा जा सकता है—वाणिज्यिक तथा औद्योगिक ऋण, सतर्कता विश्लेषक, उपभोक्ता क्रेडिट विभाग, बाजार अनुसधान, जन-संपर्क, टैलर, बुक कीपिंग आदि।

दूसरी ओर, बैंक प्रबंधक लाभ, ग्राहकों तथा संसाधन प्रबंधन एवं ऐसी कार्य नीतियाँ तैयार करने के लिए जिम्मेदार होता है, जिनसे बैंक और ग्राहकों को अधिकाधिक लाभ मिल सके। अधिकांश बैंक कंप्यूटरीकृत हो चुके है, इसलिए यह जरूरी हो गया है कि व्यक्ति कंप्यूटर का जानकार हो, ताकि वह दैनिक लेन-देन मे सॉफ्टवेयर पैकेज का इस्तेमाल कर सके।

शाखा कार्यालयों में क्षेत्र अधिकारी व्यवसाय बढाने के लिए कार्य करते है। इसमें सामान्य प्रबंधन कार्य भी शामिल है। प्रबधकों को आस-पास के क्षेत्र, उपभोक्ताओं के प्रकार, उनकी पृष्ठभूमि तथा आवश्यकताओं, बैंक द्वारा बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने के ढंग आदि के बारे में जानकारी रखनी होती है। यह भी अपेक्षित है कि उसे सुरक्षित निवेश के बारे में ग्राहकों को सलाह देने, ऋण स्वीकार करने से पूर्व ग्राहकों के सामर्थ्य (Credibility) के आकलन तथा ऋण के लिए प्रतिभूति/जमानत के रूप में दी गई सपत्तियो का पर्यवेक्षण करने या ऋण से खरीदी गई फेक्टरी और उपकरण देखने के लिए भी थोड़ा समय दिया जाए।

कुछ महत्त्वपूर्ण बैंकिंग कार्य इस प्रकार हैं—

कॉरपोरेट बैंकिंग व्यापार के विलय तथा अधिग्रहण पूँजी बढ़ाने और बडे प्रतिष्ठित संगठनों की अन्य बैंकिंग गतिविधियों से यह कार्य जुड़ा है। ये सभी कार्य कॉरपोरेट वित्त के तहत आते हैं। कॉरपोरेट वित्त के लिए एम.बी.ए. योग्यता का अतिरिक्त लाभ मिलता है। बैकिंग क्षेत्र जमा राशि की प्राप्ति, निधि के अंतरण एव क्रेडिट तथा ऋण मंजूरी से जुड़ा है।

दूसरी ओर, निवेश बैंकिंग का निहितार्थ निवेश प्रबधन से जुड़ा कार्य है। निवेश प्रबंधक ग्राहको को वित्तीय संगठन के उच्च स्तर के मुद्दो पर सलाह देते है। ये ब्रांड जारी करने, अधिग्रहण की कार्यनीतियाँ सुझाने तथा निष्पादित करने एव जनता को कंपनी के शेयर बेचने सबंधी कार्यो का प्रबधन करते हैं। इस प्रकार से उनके कार्य में वित्तीय विश्लेषण शामिल होते है, जिसके लिए वित्त तथा अर्थशास्त्र मे ठोस पृष्ठभूमि होना जरूरी है। निवेश प्रबंधकों के लिए व्यक्तिगत तथा कार्यनीति-

परक कौशल बहुत अधिक महत्त्व रखते हैं, क्योंकि ये ग्राहकों के लिए नीति-निर्माता के रूप में कार्य करते हैं, वित्तीय योजना तैयार करने में सहायता देते है तथा साथ ही कार्यनीतियों के कार्यान्वयन में भी मदद देते हैं। निवेश प्रबंधक घंटो बैठकर कार्य करते हैं तथा उन्हे यात्राओं पर काफी समय देना पड़ता है, ताकि वे संभावित या वर्तमान ग्राहकों तक अपने विचार पहुँचा सके या ग्राहकों द्वारा खरीदी जा रही कपनियों में उपलब्ध सुविधाओं की जाँच की जा सके। व्यक्तिगत बैंकिंग में ऋण, क्रेडिट, बंधक पत्र, निवेश योजना, पेशन निधि, बीमा पॉलिसी का प्रबंध कार्य किया जाता है तथा वित्तीय मामलों में सलाह दी जाती है।

रिटेल बैंकिंग मे जमा धनराशि तथा आहरण संबंधी कार्य व्यापार, धन के अतरण, ट्रेवलर्स चैक भुनाने आदि का कार्य किया जाता है।

ग्रामीण बैंकिंग प्रमुखत: ग्रामीणो के कल्याण एवं गाँवों के उत्थान से जुडी है।

कोषागार बैंकिंग का अन्य पहलू है। यह विदेशी मुद्रा के 'रिजर्व' से जुडा है। कोपागार प्रबधक को विदेशी मुद्रा मे आनेवाले उतार-चढाव की जानकारी रखनी होती है तथा यह सुनिश्चित करना होता है कि इन उतार-चढ़ावो के कारण उनके विदेशी मुद्रा के पोर्टफोलियो का मूल्य कम नहीं हुआ है। कोपागार प्रबंधक को बैक मे सबसे ज्यादा वेतन मिलता हे।

स्वचालित सेवाओं के कारण इस उद्योग में बड़ी संख्या में कंप्यूटर विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है—कंप्यूटर रख-रखाव एवं सॉफ्टवेयर दोनों क्षेत्रों में। प्राइवेट कंप्यूटर संविदाकारों की काफी माँग है। बी ई या एम.सी.ए डिग्री से इस कार्य मे मदद मिलती है।

राष्ट्रीयकृत बैंकों में दो स्तरो पर भरती की जाती है—क्लर्क तथा अधिकारी स्तर। नई अर्थव्यवस्था के प्रारंभ होने तक राष्ट्रीयकृत बैंको मे नौकरियॉ सुरक्षित मानी जाती थीं। वतन भी अच्छा-खासा मिलता था, जबकि मुख्य आकर्षण विशेप भत्ते आदि थे। आज प्राइवेट तथा विदेशी बैंको के प्रवेश से वेतन तथा भत्ते दोनों ही आकाश को छूने लगे हैं। लेकिन प्राइवेट तथा विदेशी बैंकों में नौकरी की गारंटी नही है। पहले राष्ट्रीयकृत बैंकों में बी एस आर.बी (बैंकिंग सेवा भरती बोर्ड) द्वारा आयोजित परीक्षा के माध्यम से नौकरी मिलती थी। किंतु अब यह बोर्ड समाप्त कर दिया गया है। अब राष्ट्रीयकृत बेकों मे बैंक रिक्रूटमेट बोर्ड या राष्ट्रीय बैंक द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा के माध्यम से भरती की जाती है।

प्राइवेट और विदेशी बैंकों में सीधी भरती होती है। ये बैंक सीधे अधिकांशत. एम बी.ए तथा सी.ए की भरती करते हैं। इसके बाद प्रत्यक्ष मार्केटिंग कार्यपालक,

वैयक्तिक बैंकिंग कार्यपालक तथा होम बैंकिंग कार्यपालक के रूप मे स्नातकों की भरती करते हैं।

बैंकिंग सेवा में उत्कृष्ट पारिश्रमिक, विशेषतः भत्ते मिलते है। जैसे कम ब्याज पर ऋण, आवास ऋण, कार ऋण, विवाह ऋण तथा भत्ते। परिवीक्षा अधिकारी को राष्ट्रीयकृत बैंको में निश्चित वेतनमानों के अनुसार वेतन मिलता है।

अच्छा बैंकर वह व्यक्ति है, जिसके पास सुविचारित (Well-organised) मस्तिष्क है तथा जो हर सूक्ष्म ब्योरे पर पैनी नजर रखता है। अधिकारी के रूप में कार्य-भार ग्रहण करनेवाले कर्मचारियों में नेतृत्व शक्ति, अभिप्रेरणा तथा बैंक स्टाफ के प्रबंधन की योग्यता होनी चाहिए। अच्छी वाक् शक्ति तथा लेखन संबधी संप्रेषण कौशल से वह ग्राहकों और स्टाफ के साथ प्रभावी ढग से तालमेल बैठा सकता है। धन, स्टाफ और ग्राहकों के संबध मे कार्य करते समय निष्ठा और ईमानदारी प्रमुख भूमिका निभाती है। विदेशी मुद्रा के लेन-देन के लिए जिम्मेदार व्यक्ति को तेज, दुरुस्त एवं विश्लेषणात्मक मस्तिष्कवाला होना चाहिए।



भारतीय वन सेवा

(Indian Forest Service)

जैव विकास के प्रति बढती जागरूकता तथा विश्व मे इसकी महत्ता के कारण भारतीय वन सेवा आकर्षक कैरियर बन चुका है। भारत में दस जैव-ग्राफिक जोन है तथा पच्चीस जीव-संबंधी प्रदेश हैं, जहाँ पौधों की उनचास हजार किस्में है तथा पशुओं की अठारह हजार दो सौ इक्यावन प्रजातियाँ हैं। कुल भू-क्षेत्र का 19 5 प्रतिशत भाग वनो से ढका है, जिसमें चौरासी राष्ट्रीय पार्क हें और चार सौ सैंतालीस (वन्य) जीवो के अभयारण्य हैं। राष्ट्रीय वन नीति के प्रतिपादन के साथ सरकार ने वन सरक्षण तथा उनके विकास और उपयोगिता के संबंध में गहरी चिता जताई है। बाघ परियोजना क्षेत्र तथा जैव मंडल आगार (रिजर्व) स्थापित किए गए हैं, ताकि भारत की जैव विविधता को बनाए रखने के लिए मजबूत आधारशिला तैयार की जा सके।

पात्रता मानदंड में आयु सीमा इक्कीस से तीस वर्ष तक है। अधिकतम आयु सीमा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों को छूट दी जा सकती है। पशुपालन तथा पशु चिकित्सा विज्ञान, कृषि, वानिकी, वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, भू-विज्ञान, भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित, सांख्यिकी विषय सहित विज्ञान मे डिग्री पूर्व-अपेक्षा है। संघ लोक सेवा आयोग प्रतिवर्ष परीक्षा आयोजित करता है।

चयन प्रक्रिया दो चरणों में विभाजित है। पहला चरण लिखित परीक्षा का है, जिसमें दो अनिवार्य प्रश्न पत्र तथा दो वैकल्पिक होते हैं। अनिवार्य प्रश्न पत्र मे सामान्य अंग्रेजी तथा सामान्य विज्ञान विषय शामिल हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र के 150 अक है। प्रत्येक प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे होती है तथा प्रश्न विषयनिष्ठ होते है। केवल अंग्रेजी भाषा में उत्तर दिए जाते हैं। इसलिए परीक्षा में बैठनेवाले उम्मीदवारो की अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता होनी चाहिए। सामान्य अंग्रेजी विषय में

निबंध, बोध तथा शब्दों (Vocabulary) की परीक्षा ली जाती है। इस प्रश्न पत्र का उच्च स्तर होता है। सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्र में भारतीय संविधान, भारतीय इतिहास, भूगोल, सामान्य विज्ञान और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दो से सबंधित समसामयिक घटनाओं की जानकारी शामिल है। वैकल्पिक पत्र काफी विस्तृत होता है, जिसमें विषय के बारे में उम्मीदवार की जानकारी परखी जाती है।

इंटरव्यू को हलके रूप मे नहीं लिया जा सकता। इस दौरान प्रायः सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जागरूकता के साथ-साथ विषय के ज्ञान को भी थाह ली जाती है। उसके समूचे व्यक्तित्व पर ध्यान दिया जाता है, इसलिए इंटरव्यू को गभीरता से लिया जाए।

यह प्रतियोगिता काफी कठिन होती है। तथ्य यह है कि इस क्षेत्र में बहुत कम रिक्तियाँ होती हैं और आवेदन-पत्र काफी सख्या मे प्राप्त होते हैं। इसलिए उम्मीदवार को वस्तुत. चयन की दृष्टि से हरफनमौला होना चाहिए। वैकल्पिक विषय पर कमांड के साथ-साथ जागरूकता होना भी जरूरी है। व्यक्ति को कटिबद्ध होना चाहिए।

चुने हुए उम्मीदवारों को सिविल सर्वेट के समान प्रारभिक प्रशिक्षण के लिए लाल बहादुर शास्त्री अकादमी मे भेजा जाता है जहॉ उन्हे इतिहास, विधि, लोक प्रशासन, कार्मिक प्रबंधन तथा कंप्यूटर जैसे विषयों की जानकारी दी जाती है। उन्हें आत्मसात् कर अपनाई जानेवाली सरकारी समिति से अवगत कराया जाता है। प्रशिक्षण के बाद उम्मीदवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून मे भेजा जाता है। यहाँ आदिवासी कल्याण, वन प्रबंधन, मृदा संरक्षण, वन्य जीव प्रबंधन, अस्त्र की व्यवस्था, सर्वेक्षण करने तथा अन्य विभिन्न ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के बाद साहस एवं निष्ठा की भावना से युक्त भारतीय वन अधिकारियों के साथ उसकी तैनाती की जाती है।

विशिष्ट वन अधिकारी पहले संरक्षणवादी होना चाहिए, उसके बाद सुपरवाइजर, अर्थशास्त्री, तकनीशियन एवं योग्य प्रशासक होना चाहिए। उसे पारितंत्र के बारे मे जानकारी होनी चाहिए और उस समय संवेदनशील होना चाहिए, जब उसे वन्य जीवन तथा प्रकृति को समझना होता है। इस कार्य मे तस्करों और शिकारी चोरो (पोचरो) का थोड़ा खतरा रहता है। भारतीय वन अधिकारी के संवर्ग में निम्नलिखित रैंक होते है—सहायक वन संरक्षक, जिला वन संरक्षक, वन संरक्षक, प्रमुख वन सरक्षक, प्रधान वन संरक्षक, वन महानिरीक्षक। प्रारंभिक अवस्था में मुख्य जिम्मेदारी नीतियों का निचले स्तर पर कार्यान्वियन है। धीरे-धीरे यह जिम्मेदारी बढ़ती जाती

है। उच्च स्तरों पर नीतिगत निर्णय लेने होते हैं। उम्मीदवार की नेशनल पार्क, प्राणि/वनस्पति उद्यानों में तैनाती की जा सकती है। इनकी वन्य जीव अभयारण्य में तैनाती की जाती है, साथ ही उम्मीदवार को कार्यालयेतर फील्ड ड्यूटी भी दी जा सकती है। भारतीय वन सेवा में कैरियर बेजोड़ के साथ-साथ जोखिम से भरा है।

इस पद पर आकर्षक वेतन मिलता है, साथ ही आवास सुविधा, चिकित्सा प्रतिपूर्ति, अवकाश, रियायती अवकाश यात्रा जैसे विशेष लाभ भी मिलते हैं और विभिन्न अन्य विशेष सुविधाओं के कारण यह विकल्प महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

इस नौकरी के इच्छुक उम्मीदवार में स्वभावगत साहसिक कार्य करने की विशेषता होनी चाहिए। व्यक्ति को अधिकांश समय घर से बाहर रहना पडता है तथा कम आबादीवाले क्षेत्रों में भी जाना पड़ता है, जहाँ आदिवासी लोग ही रहते हैं। उसे आदिवासी क्षेत्रों के कल्याणार्थ सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन मे सक्रिय रूप से भाग लेना पड़ता है। इसके लिए व्यक्ति को शांत होना चाहिए। साथ ही धैर्य एव सयम अन्य आवश्यक विशेषताएँ हैं, क्योंकि उसे नीतियो के कार्यान्वयन के समय अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसे जन-संपर्क में भी कुशल होना चाहिए, क्योंकि उसे सरकारी एव सामाजिक संगठनों के साथ संपर्क में आना पडता है। सबसे ऊपर व्यक्ति प्रकृति-प्रेमी हो और जैव विविधता के संरक्षण एवं समाज में वन की महत्ता के बारे में लोगों को बताने में रुचि रखता हो। यदि व्यक्ति मे ये कौशल हैं तो वह वन अधिकारी के रूप में उपयुक्त पात्र है।



भू-विज्ञान

(Earth Science)

भू-विज्ञान भूगोल विषय का ही एक अंग है। लेकिन अलग विषय के रूप में इसकी पूर्णतः उपेक्षा होती रही है। फिर भी आज शैक्षणिक विधा के रूप में यह विषय लोकप्रिय होता जा रहा है।

भू-विज्ञान की अनेक ऐसी शाखाएँ हैं, जिनमें व्यक्ति विशेषज्ञता हासिल कर सकता है। जैसे स्तर कम विज्ञान, संरचनात्मक भू-विज्ञान, जीवाश्म-विज्ञान तथा भू-संसाधन। इसके अलावा मानचित्र, अन्वेषण, पर्यावरण-विज्ञान, भूकंप-विज्ञान, सामुद्रिक भू-विज्ञान और हिमनद-विज्ञान में भी विशेषज्ञता हासिल की जाती है। भू-विज्ञान का प्रमुख हिस्सा संरचनात्मक भू-विज्ञान पर बल देता है। इसमें संरचनाओ के विरचन के रूपों तथा यांत्रिकी (मेकेनिक्स) का अध्ययन शामिल है। इस विषय का बुनियादी कार्य/लक्ष्य जटिल तराई (Terrain) के विरूपण के इतिहास की परतें खोलने में सहायता देना है। इस कार्य मे क्षेत्र (Field) तथा प्रयोगशाला की तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है। इस दृष्टि से व्यक्ति को अवतलन (fold), भ्रंशन (fault) तथा कोण संधि (Joint) के निर्माण का अध्ययन करना पड़ता है।

जब किसी क्षेत्र में संरचना (tectonic) सबंधी गतिविधि होती है तो चट्टान टूटती है और हिमालय जैसी नई भू-विज्ञान सबधी संरचनाएँ उत्पन्न होती हैं। तनाव के कारण या तो चट्टान मुड जाती है या अवतल बन जाता है अथवा चट्टान बिखर जाती है और इससे भ्रंशन एवं कोण संधि निर्मित हो जाती है।

जीवाश्म विज्ञान में जीवाश्मों का अध्ययन किया जाता है। यह भू-विज्ञान का सर्वाधिक रोचक विषय है। अतीत की पुन: संरचना का कार्य असाधारण होता ह। वह उस समय और भी अधिक असाधारण हो जाता है, जब केवल चट्टानें और मृदा ही उस युग की गवाह होती हैं, जिसकी मात्र कल्पना की जा सकती है। यदि आप अतीत की वनस्पति तथा पशु जीवन का अध्ययन करना चाहते हैं तो जीवाश्म ढूँढना

प्रमुख कार्य होता है। यदि जीवाश्म मिल जाता है तो यह जरूरी नहीं कि प्रासंगिक जानकारी मिलेगी ही। यह मुश्किल कार्य है। चूँकि यह विषय रोचक है और साथ ही आकर्षक भी है, इसलिए इसमें व्यक्ति लगा रहता है। जीवाश्म विज्ञान के भीतर भी अनेक विधाएँ हैं, जैसे—डायनासोर का अध्ययन, वनस्पति-जीवाश्म, सिफालोपॉड ब्राचीपॉड, गैस्ट्रोपॉड, पेलीसिपॉड, जीवाश्मकरण, जीवाश्म का इस्तेमाल तथा वर्गीकरण।

भू-विज्ञान का अन्य महत्त्वपूर्ण विषय भू-संसाधन है। भूमि में ऐसे अनेक प्राकृतिक संसाधन हैं, जो मनुष्यों के लिए लाभदायक हैं, जैसे—पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा कोयला। यह विषय ऐसे स्थानों का पता लगाने से संबंधित है जहाँ ये संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं तथा परवर्ती अवस्था में इन संसाधनों का खनन कार्य किया जाता है। खनन कार्य आजकल आकर्षक व्यवसाय बन चुका है तथा अनेक लोग यह कैरियर अपना रहे हैं। इस क्षेत्र में काफी पैसा है, रचनात्मकता है, क्योंकि यह कार्य खोज से जुड़ा है।

भारतीय भू-विज्ञान सर्वेक्षण प्रशिक्षण संस्थान के लखनऊ, राँची, हैदराबाद, रायपुर, ज्वार और चित्रदुर्ग में केंद्र हैं। लेकिन आपको इसके लिए परीक्षा देनी होगी। इस परीक्षा में भू-विज्ञान ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी जैसे अन्य बेसिक विषय भी शामिल हैं। भारतीय शिक्षा सेवा द्वारा भू-विज्ञान तथा हाइड्रोलॉजी में प्रशिक्षण एवं डिग्री—दोनों कार्यक्रम चलाए जाते हैं। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् तथा प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास में भू-विज्ञान पाठ्यक्रम के बाद अन्य पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

भारत में अधिकांश कॉलेज अवर स्नातक स्तर पर भू-विज्ञान पाठ्यक्रम चलाते हैं। लेकिन स्नातकोत्तर स्तर पर विशेष पाठ्यक्रम में शामिल होना भी जरूरी होता है। विदेशों में अध्ययन की काफी संभावनाएँ हैं; क्योंकि अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में भू-विज्ञान तथा इससे जुड़े विषयों, विशेषतः स्नातकोत्तर स्तर पर ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। शुरू-शुरू में भू-विज्ञान कठिन होता है, लेकिन रुचि जाग्रत् होने पर विषय आसान लगने लगता है। यह बहुआयामी विषय है, इसलिए इसमें रुचि बनी रहती है।

भारतीय भू-विज्ञान सर्वेक्षण तथा केंद्रीय भू-जल बोर्ड संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के माध्यम से भू-वैज्ञानिकों की भरती करते हैं। चुने गए उम्मीदवार को पहले दो वर्ष की अवधि के लिए परिवीक्षाधीन रखा जाता है। जी.एस.आई. प्रशिक्षण के माध्यम से नए सिरे से उम्मीदवारों की भरती की जाती

है और देश के किसी भी भाग में उनकी तैनाती से पूर्व आंतरिक स्तर पर परीक्षा ली जाती है।

भू-विज्ञान/अनुप्रयुक्त भू-विज्ञान/समुद्री भू-विज्ञान/खनिज अन्वेषण/हाइड्रो भू-विज्ञान में स्नातकोत्तर या भारतीय खान स्कूल, धनबाद मे अनुप्रयुक्त भू-विज्ञान के एसोशिएट इस परीक्षा में बैठ सकते हैं। इनकी आयु सीमा इक्कीस से तीस वर्ष है। इस परीक्षा मे पाँच प्रश्न-पत्र होते हैं। एक पेपर अंग्रेजी, दो पेपर हाइड्रो भू-विज्ञान तथा दो पेपर भू-विज्ञान के होते हैं।

भू-वैज्ञानिक परामर्शदाता के रूप में प्राइवेट क्षेत्र मे कार्य करते हैं या अन्वेषण और सर्वेक्षण के क्षेत्र में कार्य करते हैं। अनेक सरकारी संगठन सर्वेक्षण या अन्वेषण सबधी कार्य के लिए भू-वैज्ञानिकों की नियुक्ति करते हैं। भू-वैज्ञानिको की आज बहुत माँग है। ओ एन जी.सी., कोल इंडिया, हिंदुस्तान जिंक लि., मिनरल एक्सप्लोरेशन लि आदि जैसी कपनियाँ भी इनकी भरती करती हैं। वाडिया इंस्टीच्यूट ऑफ हिमालयन ज्योलॉजी, नेशनल ज्योफिजिकल रिसर्च इंस्टीच्यूट, सेंटर फॉर अर्थ स्टडीज, नेशनल इस्टीच्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी और इंडियन इस्टीच्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेटीरियोलॉजिकल जैसे सस्थान भू-वैज्ञानिकों को काम पर रखते है तथा लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के माध्यम से उनका चयन किया जाता है। प्रमुख अनुसधान नियुक्तियों के लिए डॉक्टरेट की उपाधि जरूरी है।

मध्य केंद्र स्तर पर सरकारी सेवा मे आने के बाद मूल वैज्ञानिक विषयों की पृष्ठभूमिवाले लोग आसानी से क्लास I व II अधिकारी बन सकते हें। इन पदो पर आकर्षक वेतन मिलता है। राज्य सरकारें खनन संबंधी सर्वेक्षण कराती हैं। इस क्षेत्र मे भी रोजगार मिल सकता है।

ओ एन जी सी जैसे तेल उद्योग तथा परमाणु खनिज डिवीजन एवं खनिज अन्वेषण कंपनियाँ ऐसी पृष्ठभूमिवाले लोगो की तलाश में रहती हैं और इन्हे प्रशिक्षण देती हैं। शैक्षणिक अभिविन्यासवाले लोग पी-एच डी. स्तर तक शोध कार्य कर सकते हैं। इस प्रकार भू-विज्ञान में अनेक आकर्षक कैरियर संबंधी विकल्प मोजूद है।

□

तथा मई या जून में यह परीक्षा ली जाती है। यह तीन वर्ष का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है, जिसके बाद छह माह अस्पताल मे 'इंटर्नशिप' की अवधि है।

भौतिक चिकित्सा में शरीर-विज्ञान, शरीर रचना-विज्ञान, भौतिकी, शरीर सचालन के सिद्धात एव व्यावहारिक पक्ष, वैद्युत् चिकित्सा तथा हस्त-कौशल प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इस पाठ्य विवरण में चिकित्सा और सर्जिकल स्थितियों का अध्ययन शामिल है, जिसके लिए भौतिक चिकित्सा व्यवहार में लाई जाती है।

व्यावसायिक चिकित्सा में शरीर रचना-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, मनोविज्ञान, चिकित्सा, सर्जरी एव मनोचिकित्सा शामिल है। अशक्तता के संबध में व्यावसायिक तकनीकें पाठ्यचर्या का अंग हैं तथा विद्यार्थियों को सिखाया जाता है कि अनुरंजनात्मक कार्यकलाप, सास्कृतिक कार्यकलाप, कला एव शिल्प कार्य और शारीरिक व मानसिक अशक्तता की व्यावसायिक चिकित्सा-पद्धति मे महत्त्वपूर्ण सिद्धांत और नियमों को किस प्रकार से संगठित किया जाए। प्राइवेट कॉलेज मे भौतिकी चिकित्सा पाठ्यक्रम की फीस योग्यता के आधार पर मिलनेवाले दाखिले के संबंध में चार हजार रुपए प्रति वर्ष से लेकर भुगतान करके प्राप्त की गई सीट पर पैंतीस हजार रुपए प्रतिवर्ष तक है।

शारीरिक और व्यावसायिक चिकित्सा मे अन्य स्वास्थ्य सबधी कर्मियों से अलग स्वतत्र रूप से कार्य किया जाता है। प्राइवेट प्रैक्टिस के अलावा आप अस्पताल मे नर्सिंग होम तथा पुनर्वास केंद्रो में परामर्शदाता के रूप मे कार्य कर सकते है। व्यावसायिक चिकित्सक बाल चिकित्सक तथा मनोचिकित्सक के रूप में कार्य कर सकते है।

आज फिटनेस का जमाना है। ऐसे मे भौतिक चिकित्सक असंख्य हेल्थ क्लब एव स्पास में कार्य कर सकता है। आजकल शहरी क्षेत्रो मे ये केद्र कुकुरमुत्तो के समान फल-फूल रहे हैं। कुछ बड़ी कपनियों में भौतिक एवं व्यावसायिक चिकित्सको की सेवाएँ ली जाती हैं। पारिश्रमिक कार्य एव संस्था की प्रकृति के अनुसार मिलता है। निश्चित रूप से परामर्श का आकर्षक विकल्प है।

यह पाठ्यक्रम निम्नलिखित संस्थाओं मे चलाया जाता है—

1 एस एम.एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर।
2 स्कूल ऑफ फिजियोथेरैपी, एस एस जी अस्पताल, वडोदरा।
3 जी.एस. सेठ मेडिकल कॉलेज, परेल, मुंबई।
4 ऑल इंडिया इस्टीच्यूट ऑफ फिजिकल मेडिसिन एड रिहेबिलिटेशन, हाजी अली, महालक्ष्मी, मुबई।

5 स्कूल ऑफ फिजियोथैरेपी, के ई.एम अस्पताल, मुंबई।

6. क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लौर।

7. ऑक्यूपेशनल थैरेपी ट्रेनिग स्कूल, सर डी.बी. ऑर्थोपायडिक्स सेंटर, मुंबई।

8. इंस्टीच्यूट ऑफ रिहैबिलिटेशन मेडिसन, चेन्नई।

9 पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल, पटना।

10 गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फिजियोथैरेपी, त्रिचगपल्लो।



मनोविज्ञान
(Psychology)

हमारे जीवन में दिन-प्रतिदिन बढ़ते तनाव के कारण आजकल मनोवैज्ञानिको की माँग भी काफी बढ़ रही है। आज मनोवैज्ञानिक के पास जाना वर्जित नहीं माना जाता है; जबकि विगत कुछ वर्षो तक लोग मनोवैज्ञानिक के पास जाना पसंद नहीं करते थे। अब तो कुछ स्कूल और कॉलेजो मे मनोवैज्ञानिक या परामर्शदाता की नियमित व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था विद्यार्थियों और अध्यापकों—दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हुई है।

मनोविज्ञान अपनी पूर्णता में एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ कैरियर से जुडे अनेक विकल्प है। अधिकांश लोग मानसिक रोग का उपचार करनेवाले कुछ चिकित्सको से परिचित हैं। अन्य ऐसे विशेषज्ञो की व्यापक स्तर पर जानकारी नही है, जो समुन्नत कंप्यूटर प्रणाली का डिजाइन तैयार करने में सहायता देते हैं या यह अध्ययन करते हैं कि स्मरण-शक्ति कैसे बढ़ाई जाए। अधिकतर लोकप्रिय शाखाओं के अलावा औद्योगिक तथा खेल मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रो मे भी नौकरी के अवसर बढ़े हैं। ये दोनों शाखाएँ अभी भी भारत में प्रारंभिक या मूल अवस्था मे है। लेकिन इनके विकास की संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं।

वस्तुत: अन्य व्यवसायों की औसतन दर के समान ही तीव्र गति से मनोवैज्ञानिकों की भी माँग बढ़ रही है। स्वास्थ्य देखभाल सबंधी रोजगार के अवसर बढ़ते जा रहे है। इसी प्रकार मनोविकार तथा आचरण संबधी दुर्व्यवहार के उपचार के क्लीनिक भी खुलते जा रहे हैं। स्कूलों, सामाजिक सेवा की सरकारी एजेंसियो तथा प्रबधन परामर्श सेवाओ में भी रोजगार के अनगिनत द्वार खुल गए हैं। सर्वेक्षण, डिजाइन, विश्लेषण और अनुसंधान के क्षेत्र में कंपनियाँ मनोवैज्ञानिकों की विशेषज्ञता का लाभ उठा रही हैं, ताकि बाजार मूल्यांकन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सके। इस क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं, लेकिन भारत मे अभी तक उनका उपयोग नही किया गया है।

मनोविज्ञान की मूलभूत एव अनुप्रयुक्त—दोनो प्रकार की शाखाएँ हैं। इसकी महत्त्वपूर्ण शाखाएँ सामाजिक एव पर्यावरण मनोविज्ञान. संगठनात्मक व्यवहार/मनोविज्ञान, क्लीनिकल (निदानात्मक) मनोविज्ञान, मार्गदर्शन एवं परामर्श, मनोमिति, औद्योगिक मनोविज्ञान, विकासात्मक, आपराधिक, प्रायोगिक परामर्श, पशु मनोविज्ञान आदि हैं। अलग-अलग होने के बावजूद ये शाखाएँ परस्पर संबद्ध हैं।

10+2 तथा अधिकांश विश्वविद्यालयो मे बी.ए. स्तर पर मनोविज्ञान विषय पढ़ाया जाता है। स्नातक के बाद विद्यार्थी मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री की पढ़ाई कर सकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर इस विषय में विशेष पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इसके अलावा दो वर्ष का एम.फिल. पाठ्यक्रम चलाया जाता है। देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों मे मनोविज्ञान विषय में पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। अनेक संस्थानो में बाल मार्गदर्शन और परामर्श सेवा में एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता है। अल्पकालीन पत्राचार पाठ्यक्रम भी उपलब्ध है। इग्नू (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) भी ऐसी ही एक संस्था है। विशेष शिक्षा या मानसिक दुर्बलता के क्षेत्र में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। एन.सी ई आर.टी. में एक वर्ष तथा डेढ़ वर्ष की अवधि के विशेष पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

क्लीनिकल मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम मे कम-से-कम तीन माह का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें प्रशिक्षु को विकास एव मानसिक स्वास्थ्य से जुडे किसी केद्र मे नियुक्त किया जा सकता है। इसके पश्चात् अस्पताल के मनश्चिकित्सा विभाग में भी कार्य किया जा सकता है। निमहंस, बगलौर क्लीनिकल मनोविज्ञान का सर्वोत्तम सस्थान माना जाता है। केंद्रीय मनोविज्ञान सस्थान, रॉची; जामिया मिल्लिया इस्लामिया तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में क्लीनिकल मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

न्यूरोटिसिज्म, साइकोन्यूरोसिस, साइकोसिस जैसी क्लीनिकल समस्याओ एवं शिजोफ्रेनिया, हिस्टीरिया, ऑब्सेसिव-कपलसिव विकार जैसी समस्याओ के कारण क्लीनिकल मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। ऐसे मनोवैज्ञानिक का प्रमुख कार्य रोगो का पता लगाना और निदानात्मक तथा विभिन्न उपचारात्मक तकनीको का इस्तेमाल करना है।

महानगरीय जीवन पर दिनोदिन अधिकाधिक पड़ रहे दबाव एव बढ़ते तनाव के कारण क्लीनिकल मनोवैज्ञानिक की मॉग कई गुना बढ़ गई है। एक अरब से अधिक आबादीवाले इस देश में इस कैरियर की संभावनाओं में निश्चित रूप से

पर्याप्त वृद्धि हुई है, जबकि इस देश मे क्लीनिकल मनोवैज्ञानिको की सख्या मात्र कुछ सौ है। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के अलावा सामान्य अस्पताल, मानसिक स्वास्थ्य केंद्रो और प्राइवेट क्लीनिक जैसे अन्य संगठनों में क्लीनिकल मनोवैज्ञानिको की बड़ी संख्या पाई जाती है। इस कैरियर मे अत्यधिक पारिश्रमिक मिलता है।

मनोवैज्ञानिक सत्रों या बैठकों (sitting) के आधार पर शुल्क लिया जाता है। यह सत्र एक घंटे का होता है। प्रति एक घंटा दो सौ रुपए या पाँच सौ रुपए तक फीस ली जाती है। यह फीस मनोवैज्ञानिक की ख्याति पर निर्भर करती है। कुछ सत्र महीनों चलते हैं।

विकास-मनोविज्ञान में जीवन भर घटित होनेवाले मनोवैज्ञानिक संज्ञानात्मक तथा सामाजिक घटनाक्रम शामिल हैं। इसमें शैशवावस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के दौरान व्यवहार या वयस्क से वृद्धावस्था तक होनेवाले परिवर्तन का अध्ययन होता है। बी.ए ,एम ए. तथा पी-एच डी स्तरों पर नौकरी के अवसर विद्यमान हैं। बी ए स्तर पर व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य-समाज/सेवा क्षेत्र में नौकरियाँ मिलती है। छात्र बाल संरक्षण कामगार, आवासीय युवा परामर्शदाता या मानसिक स्वास्थ्य प्रदाता के रूप मे कार्य करते हैं। संगठन के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है। किसी भी सरकारी संगठन में व्यक्ति कम-से-कम दस हजार रुपए प्रतिमाह कमा सकता है। इस राशि में अन्य मिलनेवाली सुविधाएँ शामिल नही हैं। समय के साथ-साथ विस्तार क्षेत्र तथा पारिश्रमिक भी निश्चित रूप में बढ़ता हैं।

आपराधिक मनोविज्ञान चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ अपराधियो के व्यवहार विशेष के सबंध में कार्य किया जाता है। अपराध शास्त्र मनोविज्ञान आपराधिक विज्ञान की शाखा है, जो अपराध तथा संबंधित तथ्यों की तहकीकात से जुड़ी है। इस क्षेत्र का विशेषज्ञ सुरक्षा सेवाओं जैसे क्षेत्रों में रोजगार पा सकता है। निश्चित रूप मे, यहाँ आकर्षक वेतन मिलता है। सरकारी सेवा में पंद्रह हजार से बीस हजार रुपए तक कमाया जा सकता है तथा अन्य सुविधाएँ और भत्ते भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

पशु मनोविज्ञान एक अद्भुत शाखा है। पशु मनोवैज्ञानिक 'पशु सहायता प्राप्त चिकित्सा पद्धति' तथा 'पशु सहायता प्राप्त कार्य-कलाप' जैसे क्षेत्रों में मनुष्य के कल्याण के लिए पशुओ के व्यवहार संबधी ज्ञान का इस्तेमाल करता है। कैरियर की संभावनाएँ पर्याप्त हैं। पशु मनोवैज्ञानिक को मनोविज्ञान, जीव विज्ञान तथा प्राणि विज्ञान विभाग में अध्यापन पदों पर रखा जा सकता है। नृविज्ञान, समाजशास्त्र, कीट विज्ञान, पशु तथा मुरगीपालन विज्ञान, वन्य जीवन विषयक जीव विज्ञान तथा पारितंत्र और चिकित्सा एवं पशु चिकित्सा कॉलेजों में भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

अनुप्रयुक्त कार्य मे रुचि रखनवाले पशु मनोवैज्ञानिको के लिए पशु व्यवहार परामर्श, पशुधन उत्पादन, वन्य जीव प्रबंधन, पालतू पशु या अन्य घरेलू पशुओं की व्यवहार–मूलक समस्याओं के समाधान जैसे विभिन्न कैरियर इस क्षेत्र में मौजूद हैं।

संगठनों की एवं कार्य की वैज्ञानिक संरचना से औद्योगिक/सगठनात्मक मनोविज्ञान जुड़ा है, ताकि कार्य कर रहे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। कैरियर संबंधी संभावनाएँ काफी आकर्षक हैं। किसी भी कॉरपोरेट क्षेत्र तथा विभिन्न सरकारी विभागों में रोजगार मिल सकता है। आकर्षक आय प्राप्त होती है। आज अधिकांश सगठनों में मानव संसाधन विकास विभाग हैं। यह विभाग सगठन में विभिन्न मानव संबंधों से जुड़ा है। किसी-भी संगठन में कार्मिक प्रबंधन विभाग में नौकरी मिल सकती है। कॉरपोरेट क्षेत्र में प्रारंभ मे बीस हजार से चालीस हजार रुपए तक वेतन मिलता है। कंपनी की हैसियत के अनुसार वेतन दिया जाता है। समाज के मनोविज्ञान भी इसी विषय की शाखा है। यह लोगों के सोच, प्रभाव तथा परस्पर संबंधों के वैज्ञानिक अध्ययन का विषय है। वस्तुतः हर प्रकार के रोजगार विन्यास में समाज–मनोवैज्ञानिकों की जरूरत पड़ती है। इसमें शैक्षिक सस्थाएँ, लाभ न कमाने वाले संगठन, निगम, सरकारी संगठन और अस्पताल शामिल है।

इस क्षेत्र में कार्य करनेवाले को शांत एवं धैर्यवान् होना चाहिए। सफल मनोवैज्ञानिक के लिए जरूरी है कि वह दूसरों के प्रति सहृदय हो। उसे निराश व्यक्ति के मन–मस्तिष्क को समझने के लिए सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाना होगा। इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक के पास विश्लेपणात्मक मनोवृत्ति हो, लेकिन उसे एकदम निर्णय नहीं लेना चाहिए। उसमें व्यक्ति को स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। यदि ये गुण विद्यमान हैं तथा साथ ही आप जिज्ञासु हैं तो निश्चित रूप से यह कैरियर आपके लिए सर्वोत्तम है।



मर्चेंट नेवी

(Merchant Navy)

देश-विदेशों में भ्रमण के मौके तथा अच्छी-खासी आमदनी के कारण ही युवा वर्ग इस ग्लैमर-युक्त कैरियर की ओर आकर्षित होता है। लेकिन कभी-कभी व्यक्ति को एकाकीपन तथा उकताहट या नीरसता भी झेलनी पड़ती है। खतरे, रोमांच तथा चुनौतियाँ इस कैरियर का दूसरा पक्ष है। वस्तुतः एक वाक्य में, मर्चेंट नेवी मे जीवन साहस एव चुनौती भरा होता है तथा नौकरी में ऐसे पर्याप्त अवसर आते हैं, जब विभिन्न देशों के लोगों से मिलने और ऐसी वस्तुएँ खरीदने का मौका मिलता है, जो अपने देश में नहीं मिलती।

मर्चेंट नेवी की नौकरी समुद्र एवं महासागर से जुड़ी है। जहाजों में यात्री या कार्गो तथा तेल जैसा सामान लदा होता है। ये जहाज भारतीय जहाज कपनियो एवं विदेशी जहाज कपनियों के होते है। यहाँ काफी ज्यादा आमदनी होती है। सविदागत नौकरी में यदि व्यक्ति वर्तमान जहाज कंपनी से संतुष्ट नहीं है तो उसे अधिक अच्छी तनख्वाह पर किसी अन्य कंपनी को अपनाने की छूट होती है। इसलिए एक प्रकार से यह नौकरी बाध्यकारी नही होती और इसीलिए उन लोगों के लिए अच्छी होती है, जो किसी विशेष कंपनी के साथ बँधकर कार्य नहीं कर सकते।

निस्संदेह, इस नौकरी में समुद्र के बीचोबीच बहुत ज्यादा खराब जलवायु या जहाज के साथ कोई दुर्घटना जैसे खतरे शामिल होते हैं; लेकिन यहाँ इतने अधिक लाभ मिलते हैं कि सारी कमियों की भरपाई हो जाती है। इसके अलावा यह नौकरी आदर्श रूप मे ऐसे व्यक्तियों के लिए उपयुक्त है, जो समुद्री यात्रा और देशाटन मे रुचि रखते है। इसके अलावा कंपनी के साथ सविदागत देयता पूरी होने पर व्यक्ति अपने परिवार के साथ छुट्टियाँ मनाने भी जा सकता है।

मर्चेंट नेवी में शामिल होने के लिए व्यक्ति को तटस्थ स्वभाव का होना

चाहिए अन्य उपयोगी गुण कार्य स्थल पर पर्यवेक्षण एव नियत्रण रखने की योग्यता है। इसके साथ उसमें जिम्मेदारी उठाने की क्षमता होनी चाहिए और तुरत निर्णय लेने एव आदेश मानने की इच्छा तथा पद क्रमानुसार जिम्मेदारी स्वीकार करने की योग्यता होनी चाहिए।

ट्रेनिंग शिप 'चाणक्य' में समुद्र-विज्ञान में डिग्री पाठ्यक्रम कराया जाता है। यह जहाज मुंबई विश्वविद्यालय से जुडा है। यह शिप समुद्र संबंधी पूरी शिक्षा देने के लिए तैयार किया गया है। इस प्रशिक्षण में समुद्र से संबंधित विषयों के बुनियादी तत्त्वों तथा प्रोफेशन के व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया जाता है।

शारीरिक प्रशिक्षण इस पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग है, ताकि विद्यार्थी स्वस्थ और आरोग्य रहे। वह समुद्र में कठिन और साहसिक कैरियर के लिए उपयुक्त रहे। टी एस चाणक्य, मुंबई में तीन वर्ष का पाठ्यक्रम चलाया जाता है। यह बी एस-सी डिग्री के समकक्ष है।

मैरीन इंजीनियरिंग और रिसर्च इंस्टीच्यूट, कोलकाता मे चार वर्ष का मैरीन इंजीनियरिंग डिग्री पाठ्यक्रम चलाया जाता है। दोनों पाठ्यक्रम एक-दूसरे से अलग हैं, लेकिन ये दोनों एक ही कैरियर से जुड़े हैं। पाठ्यचर्या में अग्रेजी और सप्रेषण कौशल, अनुप्रयुक्त गणित, भौतिकी, इलेक्ट्रॉनिकी, कंप्यूटर विज्ञान तथा मैरीन प्रबधन विषय शामिल हैं। साथ ही अभ्यास कार्य भी सिखाया जाता है। इसके अलावा ये छात्र खगोल विज्ञान, नौकाचालन, चार्ट-कार्य, चुबकीय तथा जाइरो कपास, राडार, उपग्रह आदि जैसे इलेक्ट्रॉनिक साधनों की भी जानकारी प्राप्त करते है। यहाँ सीखने और अध्ययन के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।

जहाज टकराने की दुर्घटना रोकने, जहाज के अनुरक्षण, कार्गो कार्य तथा मैरीन संप्रेषण का भी इस पाठ्यचर्या मे महत्त्व है। समुद्र संबंधी वाणिज्य, कानून, मौसम विज्ञान, महासागर विज्ञान, भू-विज्ञान, हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण, समुद्री प्रदूषण तथा समुद्र अभियांत्रिकी एवं नियंत्रण प्रणाली को समुचित स्थान दिया गया है। सभी उम्मीदवारों के लिए जरूरी है कि शारीरिक प्रशिक्षण के लिए नौका-चालन, क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल जैसे खेलों में भाग ले। एथलेटिक एवं जल खेलकूद कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

तीन वर्षीय प्रशिक्षण और अध्यापन अवधि के दौरान इंस्टीच्यूट उम्मीदवार पर नजर रख सकता है तथा आकलन कर सकता है, ताकि उनके मन में मर्चेंट नेवी कार्य के लिए अपेक्षित गुणों का विकास किया जा सके। प्रशिक्षण से उम्मीदवार मजबूत

टीम-नेता के रूप में विकसित होता है तथा उसमें अधिकारी जैसे गुण विकसित होते हैं। प्रशिक्षण मे जहाज या स्टाफ के सदस्य किसी दुर्घटना या चोट की जिम्मेदारी नहीं लेते।

निम्नलिखित संस्थाओं में प्रशिक्षण दिया जाता है—

1 टी.एस चाणक्य, कार्वे, नेरूल, नवी मुंबई—400 706।

2. मैरीन इजीनियरिंग एंड रिसर्च इंस्टीच्यूट, पी-19, तारोला रोड, कोलकाता-700 088।



मॉडलिंग
(Modelling)

सुष्मिता सेन और ऐश्वर्य राय ने 'मिस यूनिवर्स' तथा 'मिस वर्ल्ड' का खिताब जीतकर देश भर में मॉडलिंग के क्षेत्र में क्रांति ला दी। सैकड़ों युवक-युवतियाँ समझने लगे कि मॉडलिग मात्र समय बिताने या तेजी से बहुत ज्यादा खुशी हासिल करने का तरीका नही है। देश में मॉडलिग सम्मानजनक व्यवसाय बन गया है तथा देश के सामाजिक वातावरण मे भी काफी बदलाव आया है।

आज मॉडल बनना भारत मे भी एम.बी.ए या सरकारी कर्मचारी बनने के समान ही है। अब इस व्यवसाय को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता, बल्कि इसकी बजाय अब यह सम्मानजनक, स्वीकृत तथा अत्यधिक पारिश्रमिक से जुडा व्यवसाय समझा जाता हे। अदिति गोविरितिकर डॉक्टर है, राहुल देव कमर्शियल पायलट है। इन्होंने मॉडल बनने के लिए अपने आकर्षक कैरियर को छोड़ दिया था।

इस संबंध में महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठते है कि मॉडल कैसे बन सकते हैं तथा कौन बन सकते हैं? मॉडल के रूप मे कार्य आरंभ करना आसान नही है। इसके लिए अच्छे नैन-नक्श का होना जरूरी है, लेकिन इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण आपकी अभिवृत्ति है। सही दृष्टिकोण या अभिवृत्ति अधिक अनिवार्य है। मॉडलिंग का अर्थ घंटों तक निरंतर मेहनत करते रहना है। इसीलिए टॉप मॉडल शौकिया मॉडल से अलग हो जाते हैं। आपको नवीनतम फैशन परिपाटी से हमेशा अवगत रहना चाहिए। आपको हमेशा स्फूर्तिवान् बने रहने का प्रयास करना चाहिए। आप स्वस्थ तथा सुडौल हों—यह इस व्यवसाय की पूर्वापेक्षा है। हालाँकि पतले होने से ही प्रभाव नही पड़ता। मॉडलिंग का अनुभव पर आधारित नियम है—छरहरा बदन, लेकिन दुर्बल नहीं। अलग-अलग मॉडलों के कुछ मानदंड हैं। उदाहरणार्थ, रैप मॉडल बनने के लिए कम-से-कम निर्धारित कद होना चाहिए।

जब आप यह निर्णय कर लेते हैं कि आप देखने में अच्छे हैं, तो आपको क्या

करना चाहिए? क्या आप घंटो तक कार्य कर सकते हैं? क्या आप वास्तव मे कामयाब होना चाहते हैं?

सबसे पहले आपको पोर्टफोलियो तैयार करना है। पोर्टफोलियो पर मॉडल की सफलता निर्भर है। इससे उसका पूरा व्यावसायिक कैरियर ही बदल जाता है। इसके लिए सर्वोत्तम विकल्प यही है कि किसी अच्छे कुशल फोटोग्राफर के पास जाएँ। हालाँकि फोटोग्राफी महँगी पड़ती हैं; लेकिन कुछ पाने के लिए पैसा तो लगाना ही पड़ता है। पोर्टफोलियो काफी महँगे होते हैं। लेकिन शुरू-शुरू में ऐसे खर्चे जरूरी होते हैं। बाद मे आगे चलकर यही पोर्टफोलियो लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

पोर्टफोलियो तैयार करना इतना आसान कार्य नहीं है जितना प्रतीत होता है। सही फोटोग्राफर का चुनाव करना जरूरी है, जो नैन-नक्श को कैमरे में बंद कर लेता है तथा विज्ञापनदाता और फैशन डिजाइनर के सामने सबसे सुंदर चेहरे के रूप मे उसका फोटोग्राफ प्रस्तुत करता है। यह फोर्टफोलियो एजेंसी या कोरियोग्राफर या ऐसे व्यक्ति को दिया जाए, जो शो एव विज्ञापन अभियान के लिए मॉडल की भरती करता है। अर्थात् साधारण मेकअप में खींचे गए पाँच-छह फोटोग्राफ दिए जाएँ, जिनसे मॉडल के इच्छुक व्यक्ति की त्वचा एवं बालों के आकर्षण का अंदाज हो सके।

इसके बाद अगले चरण में एजेसियों, मॉडल समन्वयक (कोऑर्डिनेटर), प्रोडक्शन हाउस, विज्ञापन एजेसियों और डिजाइनर के चक्कर लगाने पड़ते हैं। यहाँ उन्हे पोर्टफोलियो देने के बाद इंतजार करना पड़ता है। समय-समय पर उन्हें याद भी दिलाना पड़ता है। यह कार्य आसान नहीं है। आपको ध्यान में रखना होगा कि हजारों लोग वही कर रहे हैं, जो आप कर रहे हैं।

मॉडलिग की मूलभूत पूर्वापेक्षा अच्छी त्वचा, बाल, आकार तथा हाथ-पैर है। तब अमूर्त पक्ष अर्थात् आपकी 'अभिवृत्ति' और 'रवैया' आदि आता है। इस व्यवसाय मे इस पक्ष की अधिक महत्ता है। हम किसी व्यक्ति को चलने, उठने-बैठने का सलीका सिखा सकते हैं; लेकिन रवैया एवं अभिवृत्ति आंतरिक पक्ष हैं, रैंप या स्क्रीन पर प्रस्तुत होना, लोगो तक पहुँचने का मार्ग है। आत्मज्ञान या स्वयं की जानकारी अन्य पक्ष है। यह जरूरी है कि आप शीशे के सामने देर तक खडे रहे, लेकिन स्वयं पर सम्मोहित न हो। ऐसा करके आप कैमरे का सामना करते समय अपनी इमेज की कल्पना कर सकते हैं। आपको यह जानना होगा कि कौन सी मुद्रा (Pose) सर्वोत्तम है।

भारत में अभी तक ऐसी मॉडलिंग एजेंसी नहीं है, जो पूर्णकालीन मॉडल्स

को काम पर रखे तथा उनके लिए कार्य ढूँढ़ सके। जबकि विदेशों में रिकार्डो ग्रे, मेट्रोपोलिटन जैसी एजेंसियाँ अपने मॉडल्स के लिए कार्य ढूँढ़ने के लिए कार्य करती हैं। परंतु इसके विपरीत, भारत अभी भी इस व्यवसाय की प्रारंभिक अवस्था में है। यहाँ भावी मॉडल किसी मॉडल समन्वयक के साथ मिलकर कार्य करते हैं, जो मूलत एजेंट हैं। ये समन्वयक पोर्टफोलियो को विभिन्न विज्ञापन एजेंसियों, फैशन डिजाइनरों के पास भेज देते है। सामान्यतः मॉडल समन्वयक स्वतत्र उद्यमी होते है तथा ये किसी फर्म या एजेंसी के साथ नहीं जुड़े होते हैं। ये विज्ञापन एजेंसियों एवं मॉडल के बीच महत्त्वपूर्ण कडी होते है; लेकिन ये संविदा के आधार पर कार्य करते हैं। मॉडल समन्वयक प्रायः मॉडल की आमदनी का 30 प्रतिशत कमीशन लेते है। इसलिए यदि आप समन्वयक की सेवा नहीं लेते तो आपको यह कार्य स्वयं करना पडेगा।

पिछले कुछ वर्षो मे इस उद्योग में फेमिना मिस इंडिया, ग्रेसिम मिस्टर इंडिया तथा ग्लार्ज सुपर मॉडल द्वारा साझा प्लेटफॉर्म/मंच तैयार हुआ है। भव्य समारोहों एवं शो के इन विजेताओ के नाम घर-घर तक पहुँचते हैं। विदेशों में मॉडलिंग एजेसियो के अनुसार मॉडलिग करानेवाली कुछ एजेंसियाँ मौजूद हैं। लेकिन ये परिधान प्रदर्शनी तथा मनोरंजन कंपनियों के रूप में कार्य करती हैं। इनकी सूची नीचे दी गई हे।

ब्वॉयज इवेंट्स एड एंटरमेंट कौंसिल ट्रेड की दृष्टि से मॉडलिंग को बढ़ावा दे रही है। ये कौंसिलें उनके नाम प्रायोजित करती हैं तथा पोर्टफोलियो 'शूट' करती हैं और उनके लिए कार्य ढूँढ़ती हैं। इन एजेंसियों के पास मॉडल के लिए दो पैकेज हैं। पहले पैकेज में कार्य पर ध्यान न देते हुए मॉडल को मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। दूसरे पैकेज में एजेसियाँ मॉडल के लिए प्रचार करती है तथा उनकी आमदनी का कुछ प्रतिशत लेती है। इंटरनेट पर ऐसी विभिन्न साइट्स हैं, जहाँ इच्छुक/उभरते हुए मॉडल अपनी तसवीर तथा परिचय भेजते हैं। इनमें से कुछ साइट www modellıng career com www the-ramp com, www ıamamodel com हैं।

यह सामान्य धारणा गलत है कि मॉडलिंग में एक ही छलॉग में अपना लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। प्रारंभिक अवस्था मे अच्छी आमदनी नही होती। नए मॉडल्स प्रति माह पॉच हजार से सात हजार रुपए तक कमा सकता है। यह आमदनी प्रचार अभियान के प्रकार पर निर्भर करती है। जबकि प्रतिष्ठित मॉडल प्रतिमाह पचास हजार से एक लाख रुपए तक कमा सकता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि मॉडल का कैरियर बहुत छोटा होता है। प्रायः अधिकाधिक चार-पाँच वर्ष होता है।

तथापि मॉडलिंग की दुनिया में कैरियर मिलने के बाद आपको अनेव
हैं। यदि आप मॉडलिंग उद्योग में बने रहना चाहते हैं तो आप मॉडल
शो कोरियोग्राफर बन सकते हैं। बॉलीवुड या टी.वी धारावाहिको मे
रहती है। अनेक मॉडल म्यूजिक चैनल पर आते हैं तथा VJ बन जा

निम्न प्रतिष्ठित एजेंसियाँ मॉडलिंग से जुड़ी हैं—

1. लिजा जसप्रीत इवेंट्स प्राइवेट लिमिटेड।
2. मेडिसन मीडिया।
3. मीडिया एड लिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
4 ब्वॉयज इवेट्स एंड एंटरटेनमेट।

योग शिक्षक

(Yoga Instructor)

परंपरागत दृष्टि से योग शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप में स्वस्थ जीवन बिताने की कला है। प्राचीन भारत मे यह उपचार और लोकोत्तर अनुभव प्राप्त करने की प्रमुख विधि थी। योग नियमित दिनचर्या का अग है, जिसमे शारीरिक और ध्यान-साधना के सभी व्यायाम/प्रकार शामिल हैं। आज के युग मे इतना अधिक तनाव मौजूद है कि विद्यार्थियों सहित लोग मानसिक और शारीरिक राहत के लिए योग की ओर अधिकाधिक आकर्षित हो रहे हैं।

योग में अनेक क्षेत्र हैं। दो प्रमुख क्षेत्र हैं—(क) अध्यापन और अनुसंधान, (ख) रोगों का उपचार। यदि कोई व्यक्ति योग शिक्षक बनना चाहता है तो उसे योग की तमाम अपेक्षित जानकारी होनी चाहिए। जहाँ तक रोगों के उपचार का संबंध है, योग मन और शरीर—दोनो का इलाज करता है। किंतु यह जानना जरूरी होता है कि किस आसन से कौन सा रोग ठीक होता है।

मधुमेह, स्पॉण्डिलाइटिस, वर्टिगो (चक्कर आना) ऐसे कुछ रोग हैं, जो योग के माध्यम से ठीक हो सकते हैं। यदि रोगी मार्जन प्रक्रिया चाहता है तो थोडे समय के लिए उपचार को महत्त्व दिया जाता है। यदि किसी की शारीरिक समस्या है तो आसन तथा प्राणायाम (श्वास व्यायाम) पर बल दिया जाता है। प्राणायाम (श्वास व्यायाम) के साथ-साथ ध्यान भी लगाया जाता है। मानसिक समस्याओं के मामले में, जैसे अवसाद या चिंता, आसन की बजाय ध्यान लगाने और प्राणायाम पर बल दिया जाता है।

इन सभी समस्याओं की पृष्ठभूमि में योग प्रमुख कैरियर विकल्प के रूप में उभरा है। आम लोगों को योग से काफी लाभ पहुँचा है। विद्यार्थियों के लिए विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं, जहाँ उन्हे विभिन्न आसन और योग के अन्य पहलू सिखाए जाते है।

योग एसी कला है, जो व्यक्ति की प्रकृति मे आत्मसात् होनी चाहिए। याग के सिद्धांतों का अध्ययन करने से विषय को अधिक गहराई से समझने में सहायता मिलेगी। हमारे पास योग पर अनेक ग्रंथ हैं। इन ग्रंथो में योग पर इतना कुछ लिखा गया है कि हम पढ़कर योगाभ्यास की सही तकनीकें समझ सकते हैं।

योग में प्रशिक्षण लेना जरूरी है, क्योकि यदि व्यायाम सही ढंग से नही किया जाता तो समस्या बढ़ सकती है, जबकि योग अत्यधिक लाभप्रद होता है। यदि समुचित प्रशिक्षण के बिना योग किया जाता है तो यही योग हानिकारक भी हो सकता है। वर्तमान में भारत में पैंतीस कॉलेजों में योग विषय में स्नातक एव स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

किसी भी क्षेत्र के स्नातक योग से संबंधित पाठ्यक्रम में शामिल हो सकते है। लेकिन दर्शनशास्त्र के स्नातकों को इसमे प्राथमिकता दी जाती है। स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर ये पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, अथवा स्नातकोत्तर डिप्लोमा स्तर का एक वर्ष का पाठ्यक्रम कराया जाता है। यहाँ यह भी जानना आवश्यक है कि पैंतीस कॉलेजो के अलावा देश भर मे पद्रह योग अध्ययन केंद्र भी है।

योग सिद्धांत में निम्नलिखित विषय शामिल हैं—शरीर रचना, दर्शन, ध्यान, व्यायाम तथा योग और ध्यान का सिद्धांत व नियम। व्यावहारिक पक्ष में योगासन, सूर्य नमस्कार तथा प्राणायाम जैसे विभिन्न आसन सिखाए जाते है। संस्कृत का ज्ञान निश्चित रूप से लाभप्रद होता है, क्योकि अधिकाश प्राचीन योग साहित्य सस्कृत भाषा में उपलब्ध है।

इस क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ हैं। प्रशिक्षण के बाद आप स्वय योग-कक्षाएँ लगा सकते है। इसके लिए सिर्फ आपके पास साफ-सुथरा स्थान तथा स्वस्थ माहोल होना चाहिए। खुली जगह सर्वोत्तम रहती है। स्वय प्रशिक्षण केंद्र खोलना आदर्श रहता है। यदि मान्यता प्राप्त संस्थान से प्रशिक्षण लिया हे तो आप स्कूल, कॉलेज मे भी कक्षाएँ ले सकते हैं। आप स्कूल-कॉलेज तथा विभिन्न स्वास्थ्य/आरोग्य केंद्रो मे योग शिक्षक के रूप में कक्षाएँ ले सकते है। चिकित्सक और शोधकर्ता के रूप मे आप रोगों तथा विकारों के संबंध मे कार्य कर सकते हैं।

योग से संबंधित पाठ्यक्रम निम्नलिखित संस्थान चलाते हैं—

1. डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
2 अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र।
3 गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात।
4 गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तरांचल।

5 मुबई विश्वविद्यालय, एम.जी. रोड, फोर्ट, मुबई।

6 अंत:प्रज्ञा, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली। (योग कार्यशाला)

7 हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश।

8 डॉ. हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, गौड़ नगर, सागर, मध्य प्रदेश।

9 शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

10 श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश।



राष्ट्रीय रक्षा अकादमी

(National Defence Academy)

युवावस्था में या कम आयु में रक्षा सेवाओं में शामिल होना भारत के लाखो युवकों का स्वप्न रहा है। रक्षा सेवाएँ अनुशासन सिखाती हैं तथा युवकों का आकर्षक एव सुदृढ़ व्यक्तित्व बनाती हैं, जो आगे चलकर श्रेष्ठ नागरिक बनते है। ड्यूटी के प्रति एकनिष्ठ तथा देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी वर्ष मे दो बार (अप्रैल-मई, सितबर-अक्तूबर) परीक्षाएँ आयोजित करती है तथा भारतीय सेना, भारतीय नौसेना एवं भारतीय वायुसेना—इन सभी विंग में रक्षा सेवा का अधिकारी संवर्ग यहीं से तैयार होता है।

पात्रता मानदंड के अनुसार यहाँ अविवाहित पुरुष शामिल हो सकते हैं, जिनकी आयु आवेदन के समय साढे सोलह से उन्नीस वर्ष के बीच हो। उम्मीदवार ने +2 या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो। वायुसेना और नौसेना के लिए जरूरी है कि +2 पर भौतिकी तथा गणित विषय हो।

चयन प्रक्रिया दो चरणों में विभक्त है। पहले चरण मे लिखित परीक्षा होती है। यह वस्तुनिष्ठ होती है तथा इसमें गणित और सामान्य अध्ययन के पेपर शामिल होते हैं। गणित के पेपर में 120 प्रश्न होते है, यह कुल 300 अंको का पेपर होता है जबकि सामान्य अध्ययन के पेपर मे 150 प्रश्न होते हैं, यह पेपर 600 अकों का होता है। दोनों पेपर्स की अवधि 120 मिनट होती है। दोनो के लिए माध्यमिक स्कूल स्तर तक की जानकारी पर्याप्त रहती है। गणित के पेपर में अंकगणित बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति विषय शामिल होते हैं। समुच्चय (set) सिद्धांत और साख्यिकी भी होते हैं। सामान्य अध्ययन के पेपर के दो हिस्से होते हैं। भाग 'क' में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग और बोध से सबंधित प्रश्न होते हैं। इसमें त्रुटियो का पता लगाना, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, पैरा लिखना, वाक्य-पूर्ति तथा सक्षिप्त रूप में बोध-प्रश्न शामिल होते हैं। भाग 'ख' सामान्य ज्ञान, समसामयिक

विषय, भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, भौतिकी और जीव विज्ञान विषय शामिल है। लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उम्मीदवारों को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाता है।

दूसरे चरण मे एस एस.बी. द्वारा इंटरव्यू लिया जाता है। इस इंटरव्यू का लक्ष्य अधिकारी के अनुकूल गुण-संपन्न व्यक्ति का चयन करना है। एस.एस बी. का चार दिनों तक इंटरव्यू चलता है। यह इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि केवल उन्ही व्यक्तियों का चयन होता है, जो बुद्धि, निष्ठा, साहस, निश्चय, उत्तम संप्रेषण कौशल, जिम्मेदारी की भावना, प्रभावी पारस्परिक कार्यकलाप, तार्किक योग्यता, तथा देशभक्ति की भावना का प्रदर्शन कर पाते है। एस एस बी. ग्रुप टेस्ट तथा शारीरिक आरोग्यता परीक्षण करता है। ग्रुप टेस्ट मे दो सामूहिक परिचर्चाएँ होती हैं। पहली परिचर्चा मे सामूहिक विकल्प होना है, जबकि दूसरी परिचर्चा में ग्रुप टास्क अधिकारी होता है। इसके बाद संक्षिप्त भाषण/वार्त्ता होती है। भाषण या वार्त्ता का लक्ष्य यह देखना है कि उम्मीदवार किस प्रकार से अपने विचार व्यक्त करते हैं। इसके अलावा बाधा दौड़, कमांड टास्क तथा फाइनल कमांड टास्क के साथ एस.एस बी का कार्य पूरा होता है। अंततः उम्मीदवार की गहन जानकारी एवं समूचे व्यक्तित्व का मापन करने के लिए इंटरव्यू लिया जाता है।

चुने गए उम्मीदवारों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन.डी ए)/नौसेना अकादमी मे रखा जाता है तथा वहीं से परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्हें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से डिग्री दी जाती है। एन डी.ए उत्तीर्ण करने के बाद उम्मीदवार सुदृढ़ और परिपक्व व्यक्तित्व का हो जाता हैं। उसे सशस्त्र सेनाओ मे भरती के लिए आई एम ए भेजा जाता है या वायुसेना अकादमी, हैदराबाद भेजा जाता है अथवा फ्लाइग प्रशिक्षण के लिए बी एफ टी एस., इलाहाबाद भेजा जाता है। नौसेना के सबध में छह मास से एक मास तक प्रशिक्षण के लिए नेवल शिप पर भेजा जाता है।

सशस्त्र सेनाओं में नौकरी के समय कई विशेप सुविधाएँ मिलती हैं, जैसे— सामूहिक बीमा कवर, नि:शुल्क चिकित्सा सेवा, रियायती आवास, यात्रा रियायत, हलका भार लाने-ले जाने सबंधी तथा अन्य लाभ दिए जाते हैं। इसी कारण यह नौकरी बड़ी आकर्षक है।

सेना में तकनीकी शाखाओ के लिए पात्रता मानदंड में अविवाहित उम्मीदवार की आयु सीमा साढे सोलह से साढ़े उन्नीस वर्ष है। उसमे +2 या समकक्ष परीक्षा 70 प्रतिशत अंकों सहित भौतिकी, रसायन शास्त्र एव गणित जैसे विषयों मे उत्तीर्ण की हो। कद 157 सें मी हो तथा इसी अनुपात में वजन भी हो। नेत्र-दृष्टि सामान्य हो।

चुने गए उम्मीदवारों को इटरव्यू के लिए बुलाया जाता है। एन.डी ए पैटर्न पर एस एस बी इंटरव्यू लेता है। प्रशिक्षण अवधि साढे चार वर्ष है। यह निम्नलिखित अवस्थाओं में विभाजित है—

(क) छह माह का आधारभूत प्रशिक्षण—आई एम ए , देहरादून।

(ख) अवस्था I—कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग, पुणे में ढाई वर्ष का पाठ्यक्रम।

(ग) अवस्था II— पुणे, सिकंदराबाद तथा महू में अलग-अलग कॉलेजो मे एक वर्ष का पाठ्यक्रम।

(घ) अवस्था III—उपर्युक्त किसी सस्था में छह माह का पाठ्यक्रम। प्रशिक्षण के सफल समापन पर इजीनियरिंग डिग्री दी जाती है। इसके बाद कैडेट को तकनीकी शाखाओ मे सेना में स्थायी कमीशन दिया जाता है। अर्थात् ई एम ई , सिग्नल्स, इजीनियर्स।

नौसेना कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, लोनावाला, पुणे में प्रवेश के लिए पात्रता मानदंड सोलह-उन्नीस वर्ष तक की आयु एवं अविवाहित होना, जो +2 या इसके समकक्ष परीक्षा 70 प्रतिशत अंको में भौतिकी, रसायन शास्त्र एवं गणित विषय के साथ उत्तीर्ण हो। कक्षा X या XII में अंग्रेजी में कम-से-कम 50 प्रतिशत अंक हो। न्यूनतम कद 157 से.मी हो तथा कद के अनुपात मे वजन हो। नेत्र-दृष्टि उत्कृष्ट हो।

चयन प्रक्रिया में एन डी ए के समान एस.एस बी. द्वारा इंटरव्यू लिया जाता है। चुने गए उम्मीदवार को साढ़े चार वर्ष की अवधि के प्रशिक्षण पर भेजा जाता है। इसमे छह माह तक नौसेना अकादमी, गोवा मे प्रशिक्षण दिया जाता है तथा चार वर्ष तक नौसेना कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग आई एन एस , शिवाजी लोनावाला में दिया जाता है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम के समापन पर उम्मीदवार को बी टेक. की डिग्री जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा दी जाती है।

डिग्री प्राप्त करने के बाद उम्मीदवार को नौसेना मे तकनीकी अधिकारियो के रूप मे कमीशन दिया जाता है। साढे तीन वर्ष के प्रशिक्षण के बाद कैडेट को मिडशिपमैन की पदोन्नति दी जाती है तथा छह माह की अवधि के बाद मिडशिपमैन को सब-लेफ्टिनेंट रैंक पर पदोन्नत किया जाता है।

रक्षा सेवाओं से सेवानिवृत्ति के बाद अधिकाश कर्मी कॉरपोरेट सेक्टर या बैंको मे तथा बीमा कंपनियों में अनुशासनबद्ध जीवन के कारण रख लिये जाते हैं। इसलिए यही ऐसी नौकरी है, जहाँ व्यक्ति अपनी इच्छानुसार समय तक कार्य करता रहता है। ☐

रेडियो जॉकी

(Radio Jockey)

आज मनोरंजन उद्योग की प्रगति का जमाना है। भारत में आर्थिक उदारीकरण तथा केबल टी वी. के प्रवेश से यह उद्योग प्रारंभ हुआ है। रेडियो ने भी इस उद्योग की नवीन परिपाटियां का अनुकरण किया है। नौवें दशक में टाइम्स एफ.एम मे रेडियो की धमाकेदार वापसी हुई। तब से रेडियो जॉकी का प्रोफेशन चर्चित व्यवसायो की सूची में आ गया है।

द टाइम्स ग्रुप, रेडियो वन, एच टी. प्रसारण (ब्रॉडकास्टिंग), लिविंग मीडिया तथा जी ऐसे कुछ बडे नाम हैं, जिनकी बड़ी-बडी ब्रॉडवे हैं। इससे व्यक्ति रेडियो जॉकी को व्यवसाय के रूप में देखने लगा है। इसका कारण मात्र इस क्षेत्र मे निजीकरण की वजह से बढ़ते रोजगार के अवसर ही नहीं हैं, बल्कि यहाँ कई गुना अधिक वेतन भी मिलता है।

यहाँ अच्छा पारिश्रमिक मिलता है। प्राइवेट चैनल स्वतंत्र रूप मे कार्य करने वालों को आठ सौ से लेकर दो हजार रुपए तक प्रति शो भुगतान करते हैं और नियमित रूप से कार्य करनेवालों को बारह हजार रुपए प्रति माह तक वेतन देते है। ऑल इंडिया रेडियो प्रत्येक शो के लिए पाँच सौ से छह सौ रुपए तक भुगतान करता है। लेकिन यह नियमित आधार पर रेडियो जॉकी नहीं रखता। संभवतः इस कार्य मे सबसे वडी सुविधा यह है कि शहरो मे तुरत आपकी पहचान बन जाती है। इससे व्यक्ति रेडियो में कार्य करना नियमित व्यवसाय मानता है, न कि जेबखर्च पाना। हालाँकि यह जेब खर्च का विकल्प भी है।

ऑल इंडिया रेडियो में रेडियो जॉकी बनने के लिए आपके पास स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। प्राइवेट चैनल अडरग्रेजुएट को भी काम देते हैं तथा इस संबंध मे उन्हें इन-हाउस प्रशिक्षण दिया जाता है। रेडियो जॉकी के पास अच्छी मधुर आवाज व सूझ-बूझ तथा आत्मविश्वास हो। अनेक रेडियो जॉकी स्वर संबंधी

प्रशिक्षण की कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं तथा सस्थाओं में प्रतिभा शक्ति का विकास करते हैं।

बड़े शहरों में रेडियो व्यवसाय की काफी संभावनाएँ हैं। इस उद्योग पर नजर रखनेवाले भविष्यवाणी करते हैं कि प्राइवेट चैनल शीघ्र ही छोटे कस्बों तक भी फैल जाएँगे। रेडियो क्रांति राष्ट्रीय घटना बनने जा रही है, जिससे अनेक लोगों को लाभ मिलेगा। इसलिए यदि आप रेडियो जॉकी को अपना कैरियर बनाना चाहते हैं तो 'ऑल इंडिया रेडियो' दिल्ली में 3715411 (4862) पर संपर्क करें।



लागत प्रबंधन

(Cost Management)

आई.सी.डब्ल्यू.ए.आई. (इंस्टीच्यूशन ऑफ कॉस्ट एंड वर्क्स एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया) देश के आर्थिक, औद्योगिक एव वाणिज्यिक विकास के लिए जनशक्ति प्रदान करने में सक्रिय प्रमुख (Premier) व्यावसायिक संस्थान है।

वित्तीय प्रबंधन क्षेत्र, पारंपरिक लेखाकरण तथा लेखा परीक्षा में बदलाव के साथ अर्थव्यवस्था के उदारीकरण की प्रासगिकता है। अब समय आ गया है, जब लागत और प्रबंधन लेखाकार को कम विनीय तथा भूमि संसाधनो का इष्टतम प्रयोग करना है और अपने संगठनों की वृद्धि के लिए कार्यनीति संबंधी निर्णय लेने हैं। संसद् अधिनियम के तहत चार दशक पूर्व लागत और संकार्यों के लेखाकार-प्रोफेशन की जननी आई.सी.डब्ल्यू.ए आई संस्था की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य भारत में लागत एवं प्रबंधन लेखा-पद्धति का विकास और नियमन करना है। तथापि सबसे पहले द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सन् 1944 में सीमित (लिमिटेड) कंपनी के रूप में इस संस्थान की स्थापना की गई थी। इस संस्थान के सदस्यों और विद्यार्थियों की दृष्टि से वास्तव में प्रगति हुई थी। पहले यहाँ एक सौ तीस सदस्य थे और एक हजार से भी कम विद्यार्थी। लेकिन आज यहाँ तेईस हजार सदस्य है और 1 5 लाख विद्यार्थी। संघ सरकार ने लागत और प्रबधन लेखाकारों का महत्त्व समझा है, इसलिए सन् 1982 में भारतीय लागत लेखा सेवा के नाम से अखिल भारतीय संवर्ग (कैडर) तैयार किया गया। आई.सी.ए एस. केंद्र सरकार की प्रथम श्रेणी की सेवाओं के समतुल्य है तथा ये अधिकारी विभिन्न वित्तीय और कर संबंधी मामलो मे सलाह देते हैं।

सत्रह वर्ष की आयु का कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में स्नातक के बाद छात्र के रूप में इस संस्थान के इटरमीडिएट पाठ्यक्रम मे नाम पंजीकृत करा सकता है। यहाँ तक कि स्नातक की परीक्षा के परिणामों की प्रतीक्षा करनेवाले भी

इंटरमीडिएट कोर्स में अस्थायी आधार पर प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं। जिनके पास स्नातक डिग्री की योग्यता नहीं है, लेकिन 10+2 परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, वे अपना नाम लिखवा सकते हैं, किंतु उन्हें इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए विद्यार्थी के रूप में प्रवेश से पहले फाउंडेशन पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी। फाउंडेशन पाठ्यक्रम, इंटरमीडिएट तथा फाइनल परीक्षाएँ प्रति वर्ष दो बार—जून और दिसंबर में पूरे भारत में साठ केंद्रो में तथा विदेशों में सात केंद्रों में आयोजित होती है।

फाउंडेशन पाठ्यक्रम मे निम्नलिखित पेपर है—

- व्यवसाय के मूलभूत सिद्धांत और अर्थशास्त्र
- प्रबंधन और संगठन
- आधारभूत गणित और सांख्यिकी
- वाणिज्यिक विधि

इंटरमीडिएट तथा फाइनल परीक्षा में निम्नलिखित विषय होते हैं—

1. इंटरमीडिएट अवस्था I

- वित्तीय लेखाकरण
- लागत लेखाकरण
- कॉरपोरेट विधि और सचिवीय पद्धति
- प्रत्यक्ष कर प्रणाली

2. इंटरमीडिएट अवस्था II

- लागत और प्रबंधन लेखा प्रणाली
- लेखा परीक्षा
- अप्रत्यक्ष कर प्रणाली और परिमाणात्मक विधियाँ

3. अंतिम अवस्था III

- उन्नत वित्तीय लेखा प्रणाली
- सूचना प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर अनुप्रयोग
- प्रचालन प्रबंधन और नियंत्रण
- परियोजना प्रबंधन और नियंत्रण

फाइनल (अंतिम) अवस्था IV

- उन्नत प्रबंधन लेखा प्रणाली की तकनीकें और अनुप्रयोग
- उन्नत वित्तीय प्रबंधन
- उन्नत प्रबंधन लेखा प्रणाली

- कार्यनीतिपरक प्रबंधन
- लागत लेखा परीक्षा

आई.सी डब्ल्यू.ए आई. परीक्षाएँ प्रवीणता सबंधी उच्च मानकोवाली समझी जाती हैं। योग्य एवं अनुभवी लागत तथा प्रबंधन लेखाकारों की ट्रेड और उद्योग तथा अन्य संगठनों में वरिष्ठ एवं मध्य स्तर के कार्यपालक पदों पर हमेशा माँग रहती है।

आई.सी.डब्ल्यू.ए.आई. के प्रमुख स्थल

1. आई.सी डब्ल्यू ए.आई., 12, सदर स्ट्रीट, कोलकाता–700016
2. आई.सी डब्ल्यू.ए आई., रोहित चैंबर्स, चौथी मंजिल, जन्मभूमि मार्ग, फोर्ट, मुंबई–400001
3. आई.सी.डब्ल्यू.ए आई. भवन, 65, मोंटीथ लेन, एग्मोर, चेन्नई–600008
4. आई.सी.डब्ल्यू.ए आई. भवन, 3, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003



वाणिज्यिक पायलट
(Commercial Pilot)

'पायलट' शब्द ग्लैमर, विशेष भत्तो और ऊँची उड़ान से जुड़ा है। वस्तुत. इस कैरियर मे अत्यधिक आकर्षण शक्ति है, जबकि अन्य सामान्य नौकरियों मे इसका अभाव है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि सफलता की ऊँची उडान भरने के लिए इच्छुक पायलट को अग्निपरीक्षा मे गुजरना पड़ता है, जिसमें बहुत कम लोग सफल हो पाते हैं। यद्यपि यह कैरियर बहुत पुराना है, फिर भी इस क्षेत्र में नए-नए अवसर मिलते रहते हैं। आज तो भारत के आकाश में घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय उडानों की भरमार होती जा रही है।

एयर इंडिया ने सबसे पहले सन् 1948 में लंदन की ओर उड़ान भरी थी और आज भारत का सिविल तथा वाणिज्यिक एयरवे क्षेत्र काफी विस्तृत हो चुका है। वैश्वीकरण के कारण नौवें दशक मे भारत द्वारा अपनाई गई नीति से व्यवसाय, उद्योग एव पर्यटन क्षेत्र में वृद्धि की प्रक्रिया जारी है। एयरलाइन ट्रेड की संभावनाएँ आर्थिक कार्यो से जुड़ी हैं। अगले पॉच वर्षो के भीतर वाणिज्यिक पायलट की आवश्यकता दुगुनी हो जाएगी।

वाणिज्यिक पायलट का कार्य काफी मानसिक दबाववाला होता है, क्योंकि उसके कधों पर सैकड़ों यात्रियों की जिम्मेदारी होती है। ऐसे पायलट को केवल उड़ान प्रक्रिया से ही भलीभाँति परिचित नहीं होना चाहिए बल्कि उसे मौसम-विज्ञान, वायु-संचालन, अत्यधिक अधुनातन उपकरण व मशीनरी की जटिलताओं का भी ज्ञान होना चाहिए। इसके अतिरिक्त सफल पायलट बनने के लिए आपके पास समुचित मानसिक योग्यता एवं शीघ्र प्रतिक्रिया करने की क्षमता भी होनी चाहिए। उच्च स्तरीय मानसिक योग्यता के बलबूते पर पायलट को तूफान, एयर ट्रैफिक नियंत्रण से संपर्क टूट जाने पर अचानक यांत्रिक रुकावट तथा विमान अपहरण जैसे खतरों से बचाव के लिए तुरंत निर्णय लेने पड़ते हैं। इसके बाद

पायलट क प्रशासनिक अनुसूचियो से सबधित कार्य आते है , उन्हे उड़ान की समय सारणी, रिफ्यूलिंग अनुसूची, फ्लाइट पाठ्यक्रम आदि तैयार करने होते हैं। उड़ान से पहले पायलट और उनकी टीमों को मौसम-विज्ञान की रीडिंग, उपकरण की स्थिति, वायुदाब और वायुयान के भीतर का तापमान दो बार चेक करना पड़ता है। ये लोग विमान की यांत्रिक एँरोनॉटिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग क्षेत्र में विशेषज्ञ होते है। पायलट को यह भी सुनिश्चित करना पड़ता है कि वायुयान का भार समुचित रूप से सतुलित तथा इष्टतम है। दूसरे शब्दों मे, पायलट सुचारु उड़ान, यात्रा एव विमान उतरने की प्रक्रिया के लिए जिम्मेदार होता है।

इसके कार्यक्षेत्र में सहायक पायलट, कर्मी दल की संक्षिप्त जानकारी देना शामिल है। वह रिफ्यूलिग और कार्गो/सामान रखने (लोडिग) का पर्यवेक्षण करता है। पायलट को फ्लाइट के दौरान तनाव के दौर से गुजरना पड़ता है। विमान के उपकरण अति आधुनिक होते हैं और जरा सी त्रुटि जानलेवा साबित हो सकती है। पायलट को यंत्रों एवं कंट्रोल बॉर्ड पर प्रस्तुत डाटा का विश्लेषण करना पडता है। वह अति आधुनिक कंप्यूटर की सहायता से यह कार्य करता है। उड़ान के सर्वाधिक जटिल पहलू—उड़ान भरना तथा जमीन पर उतरना है। पायलट को उडान के दौरान मौसम की स्थितियों या तकनीकी रुकावटों के आधार पर समायोजन करना होता है।

वाणिज्यिक पायलट का प्रारंभिक वेतन काफी अच्छा होता है। यह राशि एयरलाइन और उडान घंटों पर निर्भर करती है। बाद मे आय की कोई सीमा नहीं है। उच्च वेतन के अलावा पायलट अनेक विशेष सुविधाओ का भी हकदार है, जैसे ड्यूटी के समय नि:शुल्क आवास सुविधा, उसके एव परिवार के लिए बिना टिकट विश्व में कहीं भी घूमने की सुविधा आदि। चूंकि पायलट का कार्य जटिल होता है अत: उसमें आत्मविश्वास, धैर्य एवं शांत स्वभाव जैसे गुण होने चाहिए। अच्छा स्वास्थ्य, आरोग्यता, सामान्य नेत्र दृष्टि आदि महत्त्वपूर्ण अर्हताएँ हैं।

वाणिज्यिक उडान का लाइसेंस लेना इच्छुक/भावी पायलट की पूर्व अपेक्षा है। विद्यार्थी पायलट लाइसेंस (SPL) किसी पंजीकृत उड़ान क्लब से लेना चाहिए। यह क्लब वाणिज्यिक विमानन के महानिदेशक कार्यालय से जुड़ा होता है। एस.पी एल लेने के बाद आप प्राइवेट पायलट का लाइसेंस (PPL) लेते हैं, इसके बाद वाणिज्यिक पायलट लाइसेस (CPL) मिलता है। सी.पी एल. वाणिज्यिक पायलट की अंतिम पात्रता है।

एस पी.एल प्राप्त करने के लिए प्रत्येक राज्य में फ्लाइंग क्लबो द्वारा आयोजित

सैद्धांतिक परीक्षा देनी होती है। इस परीक्षा मे वायु-नियंत्रण, विमानन-मौसम विज्ञान, वायु-संचालन आदि विषय शामिल हैं। प्रत्याशी की आयु सोलह वर्ष हो तथा उसने दसवी कक्षा उत्तीर्ण कर ली हो। इन मूलभूत शर्तो के अलावा प्रत्याशी को चिकित्सा प्रमाण-पत्र देना होता है, साथ ही सुरक्षा संबधी अनुमति एवं दस हजार रुपए की बैक गारंटी देनी होती है। प्रत्याशियो को परीक्षा से एक मास पूर्व अपना नाम लिखाना पड़ता है। लिखित परीक्षा मे चयन हो जाने पर उन्हें साक्षात्कार देना होता है। दोनों स्तरों पर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद चिकित्सा परीक्षा ली जाती है। वायुसेना की केंद्रीय चिकित्सा स्थापना (AFCME) बंगलौर के पास आरोग्यता प्रमाण-पत्र देने का अंतिम प्राधिकार है। चिकित्सा परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद व्यक्ति को एस पी.एल मिलता है।

एस.पी एल मिलने के बाद शिक्षक द्वारा प्रारंभिक फ्लाइंग प्रशिक्षण दिया जाता है। इस अवधि को (dual flying) 'द्वैत फ्लाइग' माना जाता है। इसमें पद्रह घटे की उडानें शामिल हैं। इसके बाद प्रत्याशी स्वतत्र रूप से हवाई जहाज उडाता है। कुल साठ घंटे की अवधि तक उड़ान भरना जरूरी है, जिसमें से बीस घंटे अकेले उड़ान भरनी है तथा पाँच घंटे क्षेत्र से पार उडान भरनी होती है। पी.पी.एल. की पात्रता सत्रह वर्ष की आयु तथा +2 परीक्षा है। पी पी एल. प्राप्त करने के बाद ही सी पी एल. मिल सकता है। अधिकांश फ्लाइग क्लब एक सौ नब्बे घटे का व्यावहारिक उड्डयन अनुभव प्रदान करते हैं, जिसमे यथा विनिर्दिष्ट अकेले फ्लाइग से लेकर क्षेत्र पार मापन यंत्र (इंस्ट्रूमेंट) तथा रात के दौरान उडान भरना शामिल है। सी पी एल की परीक्षा के बाद प्रत्याशी को दो सौ पचास घंटे की फ्लाइंग पूरी करनी होती है, जिसमें पी.पी.एल के साठ घंटे शामिल हैं।

डी.जी सी.ए. के अनुसार अपेक्षित है कि सी.पी एल. आवेदक के पास लाइसेस की बोली (बिड) की तारीख तक कम-से-कम छह मास में दस घंटो का फ्लाइंग अनुभव होना चाहिए। इन दस घंटों की फ्लाइंग में कम-से-कम पॉच घंटे रात्रि की उडानें हों और दस उड़ानें भरने तथा जमीन पर जहाज उतारने का अनुभव हो।

भारत में दो प्रमुख एयरलाइंस हैं। इडियन एयरलाइंस घरेलू सरकारी एयरलाइस है तथा दूसरी एयर इंडिया है। इसके अलावा प्राइवेट घरेलू एयरलाइंस हैं, जैसे—जैट एयरवें और सहारा। इन एयरलाइंस के अलावा यूनाइटेड एयरलाइस, लुफ्थासा, के एल एम.जे ए एल. जैसी अन्य विश्व की प्रमुख एयरलाइंस हैं। भारत में वाणिज्यिक पायलट की रोजगार संभावनाएँ काफी व्यापक हैं—

भारत में निम्नलिखित फ्लाइंग संस्थान हैं—

पूर्वी क्षेत्र

1. फ्लाइंग ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट बहाला, कोलकाता–700 060।
2. जमशेदपुर को–ऑपरेटिव फ्लाइंग क्लब लि., साँसी हवाई अड्डा, जमशेदपुर।
3. बिहार फ्लाइंग इंस्टीच्यूट, सिविल एयरोड्रॉम, पटना।
4. गवर्नमेंट एविएशन ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट, सिविल एयरोड्रॉम, भुवनेश्वर।
5. असम फ्लाइंग क्लब, गुवाहाटी एयरपोर्ट, गुवाहाटी, असम।

पश्चिमी क्षेत्र

1. मुंबई फ्लाइंग क्लब, जुहू एयरोड्रॉम, सांताक्रूज (पश्चिम) मुंबई।
2. राजस्थान स्टेट फ्लाइंग स्कूल, साँगनेर एयरपोर्ट, जयपुर।
3. नागपुर फ्लाइंग क्लब, सोनगाँव एयरोड्रॉम, नागपुर।
4. फ्लाइंग क्लब, सिविल एयरोड्रॉम, हाँमी रोड, बडोदरा।
5. अजंता फ्लाइंग क्लब, औरंगाबाद।

उत्तरी क्षेत्र

1. स्कूल ऑफ एविएशन, साइंस एंड टेक्नोलॉजी दिल्ली फ्लाइंग क्लब लिमिटेड, सफदर जंग एयरपोर्ट, नई दिल्ली।
2. गवर्नमेंट फ्लाइंग क्लब, एयरोड्रॉम, लखनऊ।
3. स्टेट सिविल एविएशन, उ.प्र. गवर्नमेंट फ्लाइंग ट्रेनिंग सेंटर, कानपुर और वाराणसी।
4. पटियाला एविएशन क्लब, पटियाला, पंजाब।
5. एम.पी. फ्लाइंग क्लब, सिविल एय रोड्रॉम, भोपाल।
6. करनाल एविएशन क्लब, कुंजपुर रोड, करनाल, हरियाणा।

दक्षिणी क्षेत्र

1. गवर्नमेंट फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल, जाकुर एयरोड्रॉम, बंगलौर।
2. आंध्र प्रदेश फ्लाइंग क्लब, हैदराबाद एयरपोर्ट।
3. मद्रास फ्लाइंग क्लब लि., सिविल एयरपोर्ट, चेन्नई।
4. कोयंबतूर फ्लाइंग क्लब लि., सिविल एयरोड्रॉम, कोयंबतूर।
5. केरल एविएशन ट्रेनिंग सेंटर, सिविल एयरोड्रॉम, फेहाह, तिरुवनंतपुरम्।

प्राइवेट फ्लाईंग स्कूल

1 उड़ान (UDAN), इंदौर।
2. अहनदाबाद एविएशन अकादमी।
3. ऑरिएंट फ्लाइट स्कूल, सेंट थॉमस माउंट, मद्रास।
4 बंगलौर एयरोनॉटिक्स एंड टेक्नीकल सर्विस, बंगलौर।



वायु सेना में कैरियर

(Career in Airforce)

भारतीय वायुसेना का विश्व में चौथा स्थान है। इसके पास अद्भुत क्षमता है। इसके वायुयानों की सूची में मिग–29, मिराज 2000, आई.एल –76 तथा एम आई -35 जैसे उल्लेखनीय अधुनातन विमान शामिल हैं। भारतीय वायुसेना में व्यक्ति फ्लाइंग कमीशन, तकनीकी या भूमि पर ड्यूटी शाखाएँ अपना सकता है।

भारतीय वायुसेना की किसी भी शाखा में अधिकारी के रूप में व्यक्ति अनुशासनबद्ध सैनिक का चुनौतियों से भरा जीवन बिताता है। यहाँ हर अधिकारी 'योद्धा' है तथा हर कोई महत्त्वपूर्ण है, चाहे वह फ्लाइंग ब्रांच का कार्मिक हो या ग्राउड स्टाफ का सदस्य हो। प्रत्येक को कोई–न–कोई भूमिका निभानी पडती है और अपने–अपने स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति योद्धा है।

सशस्त्र सेनाओं की इस शाखा में अनेक प्रकार के कार्य शामिल हैं। फ्लाइंग ब्रांच ऑफिसर के रूप में व्यक्ति जगुआर, मिराज, एस यू.–30 जैसे अधुनातन लड़ाकू विमान तथा मिग श्रेणी के विमान उड़ा सकता है। यदि किसी का ट्रासपोर्ट विमान उड़ाने की ओर झुकाव है तो उसे आई एल.–76 और ए.एन.–32 जैसे विमान उड़ाने का सर्वोत्तम मौका मिल सकता है। कोई भी व्यक्ति शत्रु के साथ युद्ध मे देश की सेवा कर सकता है, सेना के साथ निकट संबंध रखते हुए उड़ान भर सकता है, आपातकालीन स्थितियों में फँसे लोगों को बाहर निकालने में मदद कर सकता है, प्रमुख चौकियों पर पैरा–ड्रॉपिंग टुकड़ियो में शामिल हो सकता है और प्राकृतिक आपदाओं में घिरे लोगों की सेवा के लिए खाद्य सामग्री जैसा सामान विमान से गिराकर लोगों को राहत दिला सकता है।

निम्नलिखित अलग–अलग फ्लाइंग शाखाओं में व्यक्ति प्रवेश ले सकता है—

1. राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन.डी.ए.)

यह विश्व की प्रमुख अंतरसेवा प्रशिक्षण संस्थाओं में से है। वायुसेना अकादमी

मे पायलट प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य आरंभ करने से पूर्व यहाँ पर तीन वर्ष का पाठ्यक्रम कराया जाता है। इस पाठ्यक्रम मे प्रवेश की आयु सीमा साढ़े सोलह वर्ष से उन्नीस वर्ष है तथा न्यूनतम शैक्षिक योग्यता भौतिकी और गणित के साथ 10+2 है।

2. वायुसेना अकादमी (सी.डी.एस.)

आयु सीमा उन्नीस से तेईस वर्ष है। योग्यता भौतिकी या गणित विषय के साथ बी.एस-सी. (तीन वर्ष का पाठ्यक्रम) या बी ई (चार वर्ष का पाठ्यक्रम) है। सफल उम्मीदवारों की चिकित्सा परीक्षा होती है तथा योग्यता सूची में आने पर पायलट प्रशिक्षण के लिए सीधे वायुसेना अकादमी में प्रवेश लिया जा सकता है। एन.डी ए तथा सी.डी.एस. के माध्यम से प्रवेश के लिए संघ लोक सेवा आयोग द्वारा लिखित परीक्षा ली जाती है। इसके बाद एस एस.बी. परीक्षाएँ ली जाती हैं।

3. राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

इसमें आयु सीमा उन्नीस से तेईस वर्ष है। योग्यता भौतिकी या गणित के साथ बी.एस-सी (तीन वर्ष का पाठ्यक्रम) या बी ई. (चार वर्ष का पाठ्यक्रम) है। एस.एस.बी. परीक्षाओं के बाद चिकित्सा परीक्षा ली जाती है। उसके बाद योग्यता सूची में स्थिति निर्धारित की जाती है। चुने गए उम्मीदवारों को वायुसेना अकादमी मे प्रशिक्षण दिया जाता है।

निम्नलिखित विभिन्न तकनीकी शाखाओं में भी प्रेरणादायी, चुनौती भरे तथा जिम्मेदारीवाले कैरियर विकल्प विद्यमान हैं। सीधे प्रवेश की योजनाएँ इस प्रकार हैं—

1. वैमानिकी इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रॉनिक्स)

योग्यता—इच्छुक उम्मीदवारो के पास इलेक्ट्रॉनिक्स/दूरसंचार तथा अन्य सबद्ध क्षेत्रों में या इन विषयों के साथ इजीनियरिंग डिग्री हो, साथ ही उन्होंने ए एम.आई.ई की परीक्षा उत्तीर्ण की हो या समकक्ष योग्यता हो और मान्यता प्राप्त सेवा/विनिर्माण संगठन में इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में दो वर्ष का व्यावहारिक अनुभव।

2. वैमानिकी इंजीनियरिंग (मैकेनिकल)

योग्यता—वैमानिकी/मैकेनिकल/प्रोडक्शन/औद्योगिक प्रोडक्शन में इजीनियरिंग की डिग्री या भौतिकी, गणित और रसायनशास्त्र में बी एस-सी. और ए एम.आई.ई या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो अथवा भारतीय वैमानिकी सोसाइटी विषयों के साथ एसोशिएट मेबरशिप परीक्षा पार्ट II और पार्ट III और (डिजाइन और प्रोडक्शन) या ग्रुप के विषयों के साथ (अनुरक्षण, मरम्मत और ओवर हॉल) उक्त परीक्षा

उत्तीर्ण की हो और मान्यता प्राप्त सेवा विनिर्माण संगठन में न्यूनतम दो वर्ष का अनुभव हो। आयु सीमा अठारह से अट्ठाईस वर्ष है।

विश्वविद्यालय प्रवेश योजना

स्थायी कमीशन या शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए इंजीनियरिंग कॉलेज के अंतिम वर्ष/अंतिम वर्ष से पूर्व वर्ष में पढ़ रहे छात्रों का तकनीकी शाखा में प्रवेश के लिए चयन किया जाता है। आयु सीमा और योग्यता संबंधी शर्तें सीधे प्रवेश लेनेवाले उम्मीदवारों के समान ही हैं। लेकिन एकमात्र अपवाद यह है कि आवेदन इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष या अंतिम वर्ष से पहले वर्ष का छात्र हो।

ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं में निम्नलिखित विकल्प हैं—

1. प्रशासनिक और लॉजिस्टिक शाखा

स्नातकों के लिए आयु सीमा बीस से तेईस वर्ष है तथा स्नातकोत्तर उम्मीदवारों के लिए बीस से पच्चीस वर्ष है। योग्यता—60 प्रतिशत या इससे अधिक अंक लेकर स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की हो तथा 50 प्रतिशत या इससे अधिक अंक लेकर स्नातकोत्तर परीक्षा अथवा 50 प्रतिशत अंकों सहित एम.बी.ए. या स्नातकोत्तर व्यवसाय प्रशासन में डिप्लोमा किया हो।

2. लेखा शाखा

स्नातकों के लिए आयु सीमा बीस से तेईस वर्ष है। स्नातकोत्तर उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा बीस से पच्चीस वर्ष है। योग्यता—60 प्रतिशत तथा इससे अधिक अंकों सहित बी.कॉम./बी.कॉम. (ऑनर्स) या 50 प्रतिशत तथा इससे अधिक अंकों सहित एम.कॉम.।

3. शिक्षा शाखा

आयु सीमा बीस से पच्चीस वर्ष है। योग्यता—अंग्रेजी/मनोविज्ञान/रक्षा अध्ययन/गणित/भौतिकी/सांख्यिकी/कंप्यूटर विज्ञान में 50 प्रतिशत तथा इससे अधिक अंकों सहित एम.ए./एम.एस-सी. अथवा बी.ए./बी.एस-सी. स्तर पर भौतिकी, गणित, सांख्यिकी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान या रक्षा अध्ययनों में से कम-से-कम दो विषयों के साथ 50 प्रतिशत अंक लेकर ए.आई.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाओं से एम.बी.ए. या व्यवसाय प्रशासन (Business Administration) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

भारतीय वायुसेना सशस्त्र सेना का पहला विंग है, जिसमें महिलाओं को युद्ध

क्षेत्र में लड़ने की भूमिका दी गई है। अविवाहित महिला उम्मीदवार भारतीय वायुसेना के अधिकारी संवर्ग (cadre) मे शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए आवेदन कर सकती है।

भारतीय वायुसेना वेतन और भत्तों का आकर्षक पैकेज देती है। सभी स्तरों (रैंक) के लिए वेतनमान निर्धारित हैं। फ्लाइंग अधिकारी का रुपए 8,250–300–10,050 तथा फ्लाइंग लेफ्टिनेट का रुपए 9,600–300–11,400 वेतनमान है। जितना ऊँचा रैंक उतना अधिक वेतनमान। समय-समय पर वेतनमान संशोधित होते रहते हैं। एयर-स्टाफ चीफ का मासिक वेतन तीस हजार रुपए (निर्धारित) होता है। अधिकारी गण अन्य भत्तो तथा प्रसुविधाओं (Benefits) के भी हकदार होते हैं।



विज्ञापन

(Advertising)

आज दुनिया में कड़ी स्पर्धा चल रही है। उत्पाद को बेचने की कला या समतुल्य ब्रांडों के बराबर बिक्री विज्ञापन के माध्यम से की जाती है। किसी-न-किसी रूप में विज्ञापन का हर क्षेत्र में प्रचार हो चुका है, चाहे वह प्रिंट मीडिया हो अथवा रेडियो, श्रव्य-दृश्य साधन हो या समारोह प्रबंधन। वस्तुतः टी.वी. तथा रेडियो और अब इंटरनेट जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में विज्ञापनों का प्रमुख स्थान है। यह सर्वाधिक प्रतियोगी, आकर्षक एवं चुनौती भरा कैरियर है।

विज्ञापन सर्जनात्मक ढंग से ब्रांड की प्रस्तुति है तथा यह ऐसी कला है, जिसमें उत्पाद को बेचने के अद्‌भुत तरीके विद्यमान हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं बड़े कॉरपोरेट, जैसे पेप्सी में ब्रांड को बढ़ावा देने के लिए अत्यधिक मात्रा में विज्ञापन बजट रखा जाता है—लगभग तीन सौ करोड़ रुपए। हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड प्रति वर्ष छह सौ सत्तर करोड़ रुपए बजट आकलित करती है, जबकि छोटी कंपनियाँ लाखों में बजट रखती हैं।

प्रतियोगी ब्रांड की बिक्री संबंधी कार्यनीतियों को मात देने के लिए बिक्री के अद्‌भुत तरीके निकाले जाते हैं। चाहे वह कार हो, कोल्ड ड्रिंक हो या चिप्स हो। कोई व्यक्ति उत्पाद के कोर मूल्यों के आधार पर ब्रांड की इमेज में अंतर कर लेता है तथा ब्रांड पहचान लेता है और इसे कार्यनीतिपरक परिणाम के रूप में इस्तेमाल करता है। टेलीविजन पर प्राइम टाइम के समय श्रोता/दर्शकों को अभिभूत करने में वस्तुतः वर्लपूल, ब्रिटानिया, फिफ्टी-फिफ्टी, नेस्ले, नेस्कैफे जैसी प्रमुख कंपनियों द्वारा समर्थन मिलता है। ऐसे कार्यक्रमों के लिए मीडिया-प्रयोक्ताओं को प्रीमियम देना पड़ता है। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से ब्रांड लोकप्रिय होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर अन्य विरोधी प्रतिद्वंद्वी कंपनियाँ प्राइम चैनल पर ध्रुवीकृत हो जाती हैं। इससे मीडिया डिलीवरी इन चैनलों पर फेल हो जाती है। सामान्यतः ऐसे संवर्धन कार्यक्रमों

का प्रभाव उच्च लागत के प्रभावों एव कम लागत के चैनलो में बँट जाता है।

अनिवार्यत: उत्तम विज्ञापन कौशलों या मार्केटिंग का सार तत्त्व यही है कि व्यवस्थित विज्ञापन कार्यनीति द्वारा ब्रांड की स्थिति (पोजीशन) एवं रचनात्मकता के माध्यम से बिक्री बढ़ाई जा सकती है। इस कार्य के लिए जिम्मेदार लोग विज्ञापन एजेंसियों में रचनाधर्मी निदेशक होते है। इन निदेशको के साथ पूरी टीम कार्य करती है। यहाँ रचनात्मक हेड यूनिट, कॉपी राइटर, मीडिया प्लानर्स तथा लेखा-कार्यपालक, विशेषज्ञ क्लाइंट (ग्राहको) के लिए सर्विस स्टाफ, विजुएलाइजर, कलाकार होते हैं। ये सभी इस एजेंसी की आधारभूत संरचना होते हैं। इससे इस क्षेत्र में आनेवाले को आकर्षक अवसर मिलते हैं।

विज्ञापन बिक्री संबधी अद्‌भुत तरीकों पर फोकस करते हैं, जिनके कारण उपभोक्ता का इनसे तादात्म्य हो जाता है या उपभोक्ता वशीभूत हो जाते है। उदाहरण के लिए, खूबसूरत गोरे रंग की महिला किमी साबुन के लिए मॉडलिंग करती है तो महिलाओ/उपभोक्ताओं का उसके साथ तादात्म्य हो जाता है और वे यह मानने लगती हैं कि इस साबुन से उनकी त्वचा पर जादुई असर पड़ेगा। इतना असर होता है—किसी विज्ञापन का, वास्तव में, कभी-कभी रचनात्मक विज्ञापन अभियान इतने प्रभावी होते हैं कि वे अवचेतन में उस ब्रांड को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं तथा विज्ञापन के ये प्रकार अवचेतन (Subliminal) से जुड़े विज्ञापन कहलाते हैं। आज कार निर्माता संकल्पनाएँ बेचते हैं, गृहिणियाँ व्यावहारिकता या लचीलापन देखती हैं और विज्ञापनों में यही मकल्पनाएँ दरशाई जाती हैं। और यदि एजेंसी का लक्ष्य व्यवसाय (Tycoons) है तो विज्ञापनों से श्रेणी, प्रोफाइल और शक्ति उजागर होती है।

श्रोतागण का ऑन लाइन निर्धारण एवं उन्हें धन के महत्त्व की दृष्टि से उत्पाद प्रदान करना चुनौती भरा कार्य है। इसके अलावा यह कार्य अधिक संवेदनशील है और विज्ञापन से पड़नेवाले प्रभाव से लक्ष्य-पूर्ति का मापन किया जाता है। इसमें ई-शोध, ई-केंद्रित योजना, विशेष विपणन आदि शामिल हैं, क्योंकि ये विज्ञापन तुरंत स्थल पर ही इस्तेमाल किए जाते हैं। सार रूप में, ब्रांड ग्राहकों तक पहुँचनी चाहिए और इतनी असाधारण हो कि सभी का ध्यान बरबस खिंचता चला जाए। अब प्रसारण, डॉट कॉम कंपनियो जैसे क्षेत्रों तथा अन्य संबद्ध क्षेत्रों में नए-नए अवसर मौजूद हैं।

विज्ञापन कंपनियाँ अच्छा-खासा वेतन देती हैं। विभिन्न विभागो में नौकरियों के अवसर मौजूद रहते हैं। लेखा-कार्यपालक को ग्राहको को आवश्यक सेवाएँ प्रदान

करनी होती हैं तथा उनकी विशिष्ट   ओं की पूर्ति करनी होती है

विज्ञापन संकल्पना की संक्षिप्त जानकारी देनी होती है, विज्ञापनों का स्थान निर्धारण करना होता है। उपभोक्ता सेवा विभाग उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। मीडिया कार्यपालक सर्वोत्तम मीडिया प्लान तैयार करते हैं, ताकि अभियान से अधिकाधिक लाभ प्राप्त किए जा सकें। अभीष्ट श्रोतागण को सर्वोत्तम ढग से प्रभावित किया जा सके। विज्ञापन अभियान के सर्वोत्तम संभव स्लॉट की बुकिंग और बाजार के बारे में प्राप्त जानकारी के आधार पर वित्तीय समझौते किए जाते हैं। बाजार अनुसंधान का सर्वोपरि महत्त्व है तथा लगभग प्रत्येक अभियान में यह निर्णायक भूमिका निभाता है। एजेंसी की सफलता सर्जनात्मक (क्रिएटिव) विभाग पर निर्भर करती है। सर्जनात्मक निदेशक इस विभाग का अध्यक्ष होता है, जो कॉपी राइटर्स, पटकथा लेखक, फोटोग्राफर, कलाकारों/डिजाइनर आदि के कार्य का पर्यवेक्षण करना है। कॉपी राइटर विज्ञापन की विषय-वस्तु लिखने के लिए जिम्मेदार होता है तथा पटकथा लेखक रेडियो और टेलीविजन की वाणिज्यिक पटकथा देखता है। अलग-अलग मीडिया के संबंध में अंतिम रूप में विज्ञापन तैयार करने के लिए फोटाग्राफर, ऑडियो, स्टूडियो तथा वीडियो फिल्म की वाणिज्यिक यूनिटों के साथ संपर्क रखना पडता है और अंतत. उपभोक्ता द्वारा विज्ञापन स्वीकृत किए जाते हैं। वास्तव में, यह टीम द्वारा किया जानेवाला कार्य है और प्रत्येक विभाग अभियान की सफलता में अपनी भूमिका निभाता है।

ग्राहक और मीडिया एजेंसियों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए व्यावसायिकता एवं विशेष कौशलों की जरूरत पड़ती है, ताकि अत्यधिक दबाव में भी कार्य किया जा सके। विज्ञापन उन लोगों के लिए लाभप्रद एवं सतोषजनक कैरियर हो सकता है, जिनमे सर्जनात्मक गुण मौजूद हैं तथा जो साहसपूर्वक चुनौतियों का सामना कर सकते है। लेखा प्रबंधन स्टाफ समूहों में कार्य करता है और अलग-अलग लेखा सँभालता है। लेखा कार्यपालक ग्राहकों और विज्ञापन एजेंसी के बीच कड़ी है। इन्हे ग्राहकों के उत्पादों और अपेक्षाओ से भलीभाँति परिचित होना चाहिए। इसमें मीडिया कार्यनीति तैयार करने के लिए मीडिया प्लानर के साथ कार्य करना भी शामिल है। प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य करने के लिए एजेंसी मे भी अवसर उपलब्ध हैं। प्रारंभ में संपादकीय कार्य एवं ग्राहकों के समक्ष प्रस्तुतीकरण में सहायता करनी होती है। कुछ अनुभव मिलने के बाद इन्हें छोटे-मोटे लेखे सँभालने के लिए सौंपे जाते है। उसके बाद बड़े लेखे सौंपे जाते है।

एम.बी.ए. के लिए बेहतर संभावनाएँ हैं। हालाँकि विज्ञापन में पी.जी.

डिप्लोमा पर्याप्त योग्यता है प्रतिष्ठित व्यवसाय स्कूल स एम बी ए बाद मे भी किया जा सकता हैं। कॉपी राइटर के लिए विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता की जरूरत नहीं है; हालाँकि यह अपेक्षा की जाती है कि वे उत्तम कोटि की कॉपी लिखने में कुशल हों। वे उत्पाद या सेवा की विशेषता उजागर करने में सक्षम हों। किसी भी क्षेत्र के स्नातक विज्ञापन मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा कर सकते हैं। ग्राफिक डिजाइनर मे कलात्मक प्रतिभा एवं रचनाधर्मिता का सुदर सामंजस्य होना जरूरी है।

निम्नलिखित संस्थान सबद्ध पाठ्यक्रम चलाते हैं—

1. जेवियर इंस्टीच्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, सेट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई।
2 भारतीय जन-संचार संस्थान, अरुणा असिफ अली मार्ग, नई दिल्ली।
3. मुद्रा इंस्टीच्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, अहमदाबाद।
4. नरसी मोंजी इस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुबई।
5. सिंबोसिस इंस्टीच्यूट ऑफ व्यवसाय मैनेजमेंट, सेनापति बापट मार्ग, पुणे।
6. सर जे जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई।
7. नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद।
8. क्लोरियन कॉलेज कम्युनिकेशन, कोलकाता।
9 कॉलेज ऑफ आर्ट, कोलकाता।
10 टाइम्स स्कूल ऑफ मार्केटिंग, नई दिल्ली।



महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

हाल के कुछ वर्षो में न्यायपालिका के प्रति लोगों का विश्वास डगमगाता देखा गया है। विलंब और महँगी मुकदमेबाजी के कारण लोग न्यायालय से बाहर समझौता करने के लिए आधार तलाश करते हैं। स्वयं न्यायपालिका यह अनुभव करती है कि व्यवसाय के रूप में विधि क्षेत्र व्यवसायीकृत हो गया है। इसके अलावा अन्य महत्त्वपूर्ण अंतर यह आया है कि इस क्षेत्र में महिला वकीलों की संख्या में बढोतरी हुई है। विधि अब पुरुषों का ही गढ़ नही रहा है। अधिकाधिक महिलाएँ इस क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं तथा पुरुषों के समान सक्षम पाई गई हैं। तथापि अधिकाश महिलाएँ नियमित प्रैक्टिस की बजाय फर्मों या कॉरपोरेट क्षेत्र मे विधि व्यवसाय अपनाती हैं। महिला वकील फौजदारी मुकदमों की बजाय तलाक के मामलो को प्राथमिकता देती हैं।

सबसे बड़ा कारक सूचना प्रौद्योगिकी तथा वर्ल्ड वाइड वेब का प्रभाव है, जिससे देश मे वकालत के तरीके मे विशिष्ट या उल्लेखनीय बदलाव आया है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी युग आ चुका है; क्योंकि लगभग सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव पडा है। किसी भी मामले का शोध कार्य अधिक सरल हो गया है। आज डिजीटल दस्तावेज फौजदारी मामलों में साक्ष्य समझे जाते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विधेयक पारित हो जाने से विधि के क्षेत्र में एक नया अध्याय खुल गया है। इंटरनेट पर कानूनी और गैर-कानूनी पक्ष के बीच विद्यमान सूक्ष्म अतर रेखा के कारण जरूरी हो गया है कि साइबर विधि का अलग सैट तैयार किया जाए।

विशेष रूप से सन् 1995 के बाद उदारीकरण प्रक्रिया के कारण देश के वकीलों का कार्य-क्षेत्र बढ़ गया है। सन् 1995 में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना तथा बाद में भारत द्वारा इसमें शामिल हो जाने से भारतीय विधि क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। डंपिंग, आई.पी आर., आर्थिक सहायता से भारतीय विधि क्षेत्र को नया आयाम मिला है। आज अनेक कानून अब प्रयोग में नहीं आते। वैश्वीकरण की वजह से विश्व सिमट गया है और इसीलिए जटिल तथा अतिव्याप्त विधायी मुद्दो को पैदा करनेवाली समस्याएँ भी पूरे विश्व से जुड़ गई हैं। इस प्रकार अतरराष्ट्रीय विधि पर्याप्त महत्ता हासिल कर चुकी है। इनमें से किसी भी क्षेत्र मे व्यक्ति विशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है।

कॉरपोरेट

कपनी अधिनियम, साझेदारीवाली फर्मो, कॉरपोरेट के ड्राइंग विलेख (deeds) आदि से संबधित विधायी मुद्दे कॉरपोरेट विधि को सर्वोत्तम ढंग से परिभाषित करते

हैं। सरल शब्दो मे, कॉरपोरेट वकील योजनाकार तथा परामर्शदाता की भूमिका निभाता है। वह कॉरपोरेट तथा वाणिज्यिक पद्धति में सफलता के लिए अपेक्षित बौद्धिक मूल वृत्तियाँ (instinct) विकसित करता है। उसके कार्य में मर्जर करारनामों तथा ऐसे दस्तावेजों का विश्लेषण शामिल है, जो सार्वजनिक या प्राइवेट ऋण या इक्विटी शेयर जारी करने, बैंक वित्त पोषण करारनामे, लाइसेंस करारनामे या शेयर-धारकों के करारनामे से संबंधित है। कॉरपोरेट विधि में आपको विधायी अधिकारों, देयताओ तथा विशेषाधिकारों के बारे में कॉरपोरेट को सलाह देनी पड़ती है। भारत में पृथक् विषय के अध्ययन के रूप में कारपोरेट विधि का पिछले कुछ वर्षों से ही महत्त्व समझा जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ तथा छोटी फर्मे वित्तीय मामलों एवं कपनी के व्यवसाय को सँभालने के लिए कॉरपोरेट वकील रखती है। कॉरपोरेट वकील का न्यूनतम प्रारंभिक वेतन काफी ऊँचा है।

फौजदारी

फौजदारी वकील सम्यक् रूप से विधिक जटिलताओंवाले चोरी, हत्या, बलात्कार, अपहरण, कालाबाजारी, डकैती आदि मामलो को निपटाता है। फौजदारी वकील को भारतीय दंड संहिता की तमाम धाराओं तथा अधिनियमों से अवगत होना चाहिए। साथ ही फौजदारी प्रक्रिया संहिता से भलीभाँति परिचित होना चाहिए। एडवोकेट के रूप में फौजदारी वकील अपने मुवक्किल के समर्थन में दलीलें देकर आपराधिक परीक्षण (Trial) मे अपने पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सलाहकारो के रूप में फौजदारी वकील अपने मुवक्किल को विधायी अधिकारों व देयताओं के बारे मे परामर्श देते हैं तथा संबंधित मुद्दे पर सही और विशिष्ट उपाय का सुझाव देते हैं। फौजदारी वकील बहुत अच्छा पैसा कमा सकता है। यह उसकी बाजार माँग (मार्केट वैल्यू) तथा मुवक्किल और परीक्षण (मुकदमे) की अवधि पर निर्भर करता है। निश्चित रूप से यह विधि का सर्वाधिक रोमाचक विशेषज्ञता-युक्त क्षेत्र है।

पर्यावरण

आज ग्लोबल परिदृश्य पर पर्यावरणीय मुद्दे अधिक हावी होते जा रहे हैं। भारत मे पर्यावरण विधि अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है तथा यह अनिवार्य रूप से पर्यावरण पर प्रभाव डालनेवाली नीतियों से संबंधित है। आज अधिकांश कॉरपोरेट पर्यावरण विधि व्यावसायिक रखते हैं, ताकि पर्यावरणीय मुद्दों से जुड़े नियमों का उल्लंघन न हो। विश्व प्रकृति निधि का पर्यावरण विधि केंद्र है, जहाँ डिप्लोमा कराया जाता है। इस विधि क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त लोग गैर-सरकारी संगठनो,

सरकारी एजेंसियों तथा उद्योगों के साथ कार्य कर सकते हैं।

उपभोक्ता संरक्षण

बाजार में सभी उपभोक्ताओं का संरक्षण होना जरूरी है। उपभोक्ता संरक्षण विधि बाजार में मिलनेवाली विफलताओं का संशोधन करने में सक्षम बनाती है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि उपभोक्ता के पक्ष में न्याय हो। उपभोक्ता संरक्षण विधि ऐसी संविदाओं की शर्तों से संबंधित है, जिनके अंतर्गत उपभोक्ता को आपूर्तिकर्ता के द्वारा सामान और सेवाओं की आपूर्ति की जाती है। यदि संविदा का उल्लंघन होता है तो फर्म को उपभोक्ता के प्रति उचित क्षतिपूर्ति करनी होगी।

श्रम विधि

यह क्षेत्र कामगारों, अनेक संगठनों, कामकाजी स्थितियों, मजदूरों के अधिकारों और कर्तव्यों आदि से जुड़ा है। बहुधा श्रम विधि में विशेषज्ञता प्राप्त वकील को प्रबंधन एवं कर्मचारियों के बीच मुद्दों को सुलझाना होता है।

कर विधि

कर विधि आय कर, संपदा कर, भूमि कर, फ्रेंचाइज, उत्तराधिकार की समस्याओं आदि से संबंधित है।



विमान परिचारिका

(Air Hostess)

पेरिस मे विमान यात्रा। लदन में दिन की शुरुआत। केप टाउन में दिन का अंत। आकाश से नीचे जमीन को देखना। सफेद बादलों से घिरा आकाश। बादलो के बीच में घूमना। क्या आपका यही स्वप्न है?

यदि ऐसा है तो एयरलाइंस की दुनिया तथा एयर होस्टेस का व्यवसाय आपके लिए उत्तम है।

आगे पढने से पहले चौकन्ने हो जाएँ। एयर होस्टेस होने का अर्थ यह नहीं है कि आप हॉलीवुड जैसा ग्लैमर से भरा आकर्षक एवं आरामदेह जीवन बिताएँगे। यहाँ एयर होस्टेस को मेहनत करनी पड़ती है। यह कार्य-क्षेत्र यात्री के आराम से लेकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने तक विस्तृत है। उड़ान के दौरान यात्री को कई बार अनुशासन में रखना कठिन हो जाता है। एयर होस्टेस को अनेक प्रकार से जन-संपर्क का कार्य करना पडता है। इसलिए यदि आप अपने पडोस के चार वर्ष के बच्चे को काबू नहीं कर सकते, जो लगातार चॉकलेट लेने के लिए जिद कर रहा है, तब आप इस क्षेत्र में आने के निर्णय पर दोबारा विचार करें।

आपको आधारभूत जन-संपर्क कौशलों में ही सिद्धहस्त नहीं होना है, बल्कि एयर होस्टेस के रूप मे आपको लगातार सावधान रहना है तथा याद रखना है कि यात्रियो की सुरक्षा आपका पहला कर्तव्य है। एयर होस्टेस की ड्यूटी इस सीमा से आगे भी जाती है। उन्हें चेक-इन समय से पहले एयरपोर्ट पर आना होता है तथा वरिष्ठ फ्लाइट स्टेंडेट द्वारा दी जा रही सक्षिप्त जानकारी सुननी होती है। इसमें सुरक्षा, उडान तथा फ्लाइट के दौरान सेवा संबंधी प्रक्रियाओ पर लेक्चर दिया जाता है। इसके बाद एयर होस्टेस सुरक्षा उपकरणों, लाइफ जैकेट, माइक आदि सहित अन्य जरूरी सुरक्षा वस्तुओं की जॉच करती है।

एयर होस्टेस को यह सुनिश्चित करना होता है कि विमान में तकिए, कंबल,

पुस्तके, भोजन, प्लेटे, गिलास, नैपकिन और दवाएँ जैसी तमाम सुविधाएँ स्टॉक मे मौजूद है।

विमान में यात्रियों के चढ़ने के बाद ही वस्तुत एयर होस्टेस की ड्यूटी प्रारंभ हो जाती है। बोर्डिंग पास सौंपने के बाद एयर होस्टेस को यात्रियों की मदद करनी होती है तथा यात्रियों को सीटो पर बैठाने व सुरक्षा संबंधी एहतियात समझाने का कार्य करती हैं। लेकिन यात्रियों के साथ व्यवहार करना हमेशा आसान नहीं होता है। यदि व्यक्ति भाग्यशाली है तो उसे उड़ान के समय परेशानियाँ खडी करनेवाले दो-तीन यात्रियों का सामना करना पड़ेगा। आमतौर पर यात्री समझदार होते हैं, लेकिन कुछ यात्री अनेक परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं। उन्हें शांत करना तथा उनकी देखभाल करना बहुत ज्यादा कठिन होता है और उन्हें संतुष्ट करना अत्यत थकाऊ कार्य होता है। इसके बावजूद एयर होस्टेस को खुशमिजाज रहना चाहिए तथा उसे झुँझलाना नहीं है। ऐसी स्थिति में दूर रहना ही एकमात्र रास्ता है, या फिर सीनियर फ्लाइट अटेंडेंट को मामला सौंप दिया जाए।

चिकित्सा, तकनीकी, विमान अपहरण या अन्य आपातकालीन स्थिति का सामना करना कठिन और तनावपूर्ण होता है। लेकिन एयर होस्टेस को इसका प्रशिक्षण दिया जाता है।

शिफ्टे लंबी और थकाऊ होती है। हालाँकि घरेलू उड़ान के समय एयर होस्टेस की सामान्य शिफ्ट लगभग पाँच से छह घंटे की होती है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के समय बारह से पंद्रह घंटे तक की शिफ्ट में कार्य करना होता है।

आम धारणा है कि एयर होस्टेस बनने के लिए अत्यधिक खूबसूरत होना जरूरी है। लेकिन सच्चाई यह है कि एयर होस्टेस के लिए मिस इंडिया होना जरूरी नहीं है। भारत में ऐसी अनेक संस्थाएँ हैं, जहाँ एयर होस्टेस का अल्पकालीन डिप्लोमा कराया जाता है। सभी पब्लिक और प्राइवेट एयर-कैरियर में उन्नीस से पच्चीस वर्ष तक के आयु वर्ग में से भरती की जाती है। न्यूनतम कद 157.5 से मी चाहिए। सामान्य दृष्टि शक्ति (*eye sight*) होना जरूरी है। *अनिवार्यत:* आपको सलीकेदार, आत्मविश्वास से भरपूर एवं उत्कृष्ट सप्रेषण कौशल संपन्न होना चाहिए।

समझ-बूझ, जिम्मेदारी की भावना, संकट से उबरने की योग्यता तथा कतिपय परिस्थितियों मे पहल करने की शक्ति, अधिक सीमा तक धैर्य शक्ति—एयर होस्टेस की ये अन्य प्रमुख विशेषताएँ हैं। होटल मैनेजमेंट में डिग्री या डिप्लोमा करने से अतिरिक्त लाभ मिलेगा। विदेशी भाषा की अच्छी जानकारी हो तो उसको प्राथमिकता दी जाती है।

अधिकांश एयरलाइनों में संविदा (कॉण्ट्रेक्ट) आधार पर भरती की जाती है। अधिकांश संविदाओं की अवधि दो से तीन वर्ष की होती है। संविदा की अवधि की समाप्ति तक व्यक्ति उस एयरलाइन में कार्य करने के लिए बाध्य है। विभिन्न एयरलाइंस समय-समय पर विज्ञापन देती रहती हैं तथा सीधे (Walk-in) साक्षात्कार लिये जाते हैं।

एक बार चुन लिये जाने पर व्यक्ति को पहले प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण की अवधि एयरलाइंस पर निर्भर करती है। यहाँ व्यक्ति को कार्य से जुड़ी प्रत्येक बात सिखाई जाती है। प्रशिक्षण के समय सिद्धांत से लेकर जमीन पर कार्य करने एवं फ्लाइट के समय उनकी ड्यूटी तथा जिम्मेदारी से जुड़ा व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रारंभिक हफ्तों में विमानन प्रौद्योगिकी, एयरलाइन के इतिहास, विमान के विस्तृत ब्योरे, एयरलाइन ऑपरेशन के स्टेशन, भूगोल, समयांतर, यात्रियो को सँभालना, बार सेल तथा विदेशी मुद्रा, यात्रियों के दस्तावेज और यात्रा एव पर्यटन के विनियमों की शिक्षा दी जाती है।

उड़ान के दौरान व्यंजन, चीज, शराब, भोजन परोसने, शिक्षाप्रद स्पीच तथा स्वर का प्रशिक्षण दिया जाता है। अधिकांश एयरलाइस आधारभूत प्रशिक्षण के दौरान किफायती श्रेणी में यात्रियों की सेवा से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाता है। कुछ वर्षो बाद एयर होस्टेस को एक्जीक्यूटिव और प्रथम श्रेणी के कार्य का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'एयर इंडिया' जैसी कुछ एयरलाइस में शुरू में ही हर श्रेणी के यात्रियो के लिए कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। सुरक्षा संबंधी पूर्णतः सुसज्जित अभ्यास कार्यों में फ्लाइट सुरक्षा की कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। यहाँ विमान खाली करने से संबधित अभ्यास कराया जाता है। एयर होस्टेस को ये सभी अभ्यास कार्य करने होते हैं तथा केबिनकर्मी प्रशिक्षण केंद्र इनकी समीक्षा करके पहली उडान की इजाजत देता है।

अधिकांश एयरलाइंस केबिनकर्मी दल के लिए नियमित रूप से पुनश्चर्या पाठ्यक्रम चलाती रहती हैं, ताकि स्टाफ को अधुनातन प्रौद्योगिकी से भलीभाँति अवगत रखा जा सके। एयर होस्टेस को आपात स्थिति में विमान उड़ाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यदि आप पदोन्नति चाहती हैं तो आपको नियमित अंतराल पर परीक्षाएँ देनी होगी। आप जूनियर होस्टेस से कैरियर शुरू करके कुछ वर्षो बाद सीनियर फ्लाइट अटेंडेंट के पद तक उन्नति कर सकती है। इसके बाद आप 'हेड अटेंडेंट' बन सकती हैं। पाठ्यक्रम में अनेक विषय होते हैं। प्रत्येक विषय विमान के तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों पहलुओं से जुड़ा है।

यहाँ अच्छा 'कैश' मिलता है। अधिकांश एयरलाइंस (घरेलू) पाँच सौ रुपए प्रति फ्लाइट भुगतान करती हैं। जूनियर (घरेलू) एयर होस्टेस चौदह हजार रुपए प्रति माह कमा सकती हैं। जब व्यक्ति सीनियर होस्टेस के पद पर पदोन्नत हो जाता है तब उसे छह सौ रुपए प्रति फ्लाइट भुगतान किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय एयरलाइंस मे बेहतर पारिश्रमिक मिलता है। किसी प्रतिष्ठित एयरलाइंस में कम-से-कम चालीस हजार रुपए प्रति माह भुगतान किया जाता है। उच्चतम सीमा कोई नही है।

इस सेवा के संबंध में निम्नलिखित संस्थान पाठ्यक्रम चलाते हैं—

1. ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट फॉर ट्रेवल ट्रेड, शॉप नं 1 देव दरशाद, ओल्ड नगरदास रोड, अंधेरी ईस्ट, मुंबई।
2. द विंग्स इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, 30, के. दुभाष रोड, काला घोड़ा, फोर्ट, मुंबई।
3. सहारा इंडिया एविएशन अकादमी, 249/250. ब्लॉक ए, रोड नं. 6, नेशनल हाइवे नं 8, महिपालपुर, नई दिल्ली।
4. स्काईलाइन एजुकेशनल इंस्टीच्यूट, हौज खास, नई दिल्ली।
5. एयर होस्टेस अकादमी, सी-33 अमर कॉलोनी मार्केट. लाजपत नगर, नई दिल्ली।



वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियाँ

(Alternative Therapies)

नई और वैज्ञानिक उपचार विधियों के इस युग में पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियाँ भी तीव्र गति से लोकप्रिय हो रही हैं। आज इस तथ्य को अधिकाधिक स्वीकार किया जा रहा है कि स्वास्थ्य का अर्थ 'मात्र रोग से मुक्ति' नहीं है बल्कि इसमें शरीर से भी अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य पहलू शामिल हैं। पुन., वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धति में विशेष रोग के इलाज की बजाय प्रकृति का ही एक अंग समझकर मरीज का उपचार किया जाता है। इस क्षेत्र में अधिक-से-अधिक लोग शामिल होते जा रहे है।

वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ-साथ जन-चेतना अभियान के अंतर्गत यह तथ्य प्रमाणित किया जा रहा है कि पारंपरिक चिकित्सा-पद्धति की तुलना में वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियाँ अधिक कारगर, किफायती, कम दुष्प्रभाव वाली तथा कम नुकसान पहुँचानेवाली है। वस्तुत विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकलन के अनुसार, पैंसठ प्रतिशत से अस्सी प्रतिशत तक विश्व की आबादी स्वास्थ्य देखभाल के रूप में वैकल्पिक उपचार पर भरोसा करती है। वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धति को परिभाषित करना कठिन है, क्योंकि अलग-अलग लोग अलग-अलग दृष्टिकोण से वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति का अर्थ ग्रहण करते हैं।

सामान्यत: इस चिकित्सा-पद्धति मे स्वास्थ्य की देखभाल के सभी रूप एवं तकनीके शामिल हैं, जो पारपरिक एलोपैथिक व्यवसायी (प्रैक्टिशनर) इस्तेमाल नही करता। इसमें आयुर्वेद, होम्योपैथी, एक्युपंक्चर, रेकी, नैचुरोपैथी आदि जैसी चिकित्सा-प्रणालियाँ भी शामिल है। वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियों की सूची अंतहीन है तथा इस क्षेत्र मे अनेक कैरियर मौजूद हैं।

सर्वाधिक रोचक पहलू यह है कि सामान्य एम.बी.बी.एस. कोर्स से भिन्न इस अध्ययन पर अधिक समय दिए बिना व्यक्ति इस क्षेत्र मे आ सकता है; जबकि

एम.बी.बी.एस. में व्यक्ति को पाँच वर्ष तक पढ़ना पड़ता है तथा इसके बाद विशेषज्ञता प्राप्त करनी पड़ती है।

आम धारणा के विपरीत, चिकित्सा जगत् अब विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए ही सुरक्षित नहीं है। रेकी और एक्युपंक्चर जैसी वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियों को किसी भी पृष्ठभूमि का व्यक्ति अपना सकता है। रेकी प्राचीन तिब्बती/भारतीय उपचार विधि है। जापानी भिक्षु डॉ. मिकाओ युजु ने इसकी पुनः खोज की थी। यहाँ 'रे' (ब्रह्मांड) तथा 'की' (जीवन, शक्ति, ऊर्जा) का संयुक्त रूप 'रेकी' है। रेकी या किसी भी वैकल्पिक चिकित्सा का अध्ययन करना कोई कठिन कार्य नहीं है। कोई भी व्यक्ति रेकी या चुंबक-चिकित्सा अथवा एक्युप्रेशर के सिद्धांतों का इस्तेमाल करना सीख सकता है। आपके पास मानव शरीर के मूलभूत पक्षों की जानकारी होनी चाहिए। रेकी चिकित्सक मानव शरीर के विभिन्न ऊर्जा केंद्रों (सात प्राण ऊर्जा) को सक्रिय करता है। इसके साथ ही उपचार प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। इन ऊर्जा केंद्रों में असंतुलन आ जाने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

यहाँ अध्ययन के चार स्तर हैं—प्रक्रिया का प्रारंभ, दिव्य दृष्टि/टेलीपैथी, मनोचिकित्सीय सर्जरी तथा मास्टर। यहाँ चिकित्सक की हथेलियों से शक्ति प्रवाहित होती है तथा दूर से ही उपचार किया जाता है। यद्यपि इस पाठ्यक्रम को सिखाने के लिए कोई सरकारी मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है, लेकिन कुछ प्राइवेट संस्थाएँ उभरकर सामने आ रही हैं, जो विभिन्न स्तर पास कर लेने के बाद प्रमाण-पत्र देती हैं।

एक्युपंक्चर अन्य वैकल्पिक चिकित्सा है। एक्युपंक्चर के पारंपरिक चीनी सिद्धांत में शरीर की प्रतिकूल शक्तियों—'यिन' और 'यंग' के बीच संतुलन के बारे में बताया गया है। रोग का उपचार करने के लिए मानव शरीर के कुछ चैनलों के निश्चित बिंदुओं को उद्दीप्त किया जाता है। आजकल इन्हें इलेक्ट्रिकल—मेकेनिकल हाइपर प्वॉइंट कहा जाता है। हर रोग के लिए एक्युपंक्चर की उपयोगिता ज्ञात नहीं है। हाँ, यह साठ प्रतिशत सफलता दर के साथ पुराने दर्द से ग्रस्त मामलों में इस्तेमाल की जाती है। बेहतर है कि इसके साथ-साथ नियमित चिकित्सा का पाठ्यक्रम भी किया जाए।

नैचुरोपैथी में विकारों के उपचार में विभिन्न प्राकृतिक दुष्प्रभाव-रहित इलाज किए जाते हैं। इसके अंतर्गत, हाइड्रोपैथी, इन्फ्रारैड, मड, मालिश, चुंबक-चिकित्सा पद्धति आदि इस्तेमाल की जाती हैं। हैल्थ रिसॉर्ट, क्लबों, अस्पतालों तथा योग-केंद्रों में इस क्षेत्र से संबंधित रोजगार की काफी संभावनाएँ हैं।

रेकी और अन्य वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियों के लिए चिकित्सक द्वारा कम-ज्यादा, सभी तरह से फीस ली जाती है। यह फीस घंटे के हिसाब से सत्र या पूरी चिकित्सा-पद्धति की अवधि के हिसाब से वसूल की जाती है। फीस अनुभव, ज्ञान और चिकित्सक के स्थल (Locality) पर निर्भर करती है। अधिकांश रेकी मास्टर्स तथा अन्य वैकल्पिक चिकित्सा-व्यवसायी कक्षाएँ भी लेते है। जब व्यक्ति की इस क्षेत्र में धाक जम जाती है तब आय की कोई सीमा नही रहती।

यद्यपि शुरू-शुरू में वैकल्पिक चिकित्सा की ओर बहुत कम लोग आते थे, तथापि एलोपैथिक और अन्य आधुनिक चिकित्सा संबंधी रूपों के बारे में बढते संभ्रम के कारण पूर्वी और पश्चिमी देशों के लोग वैकल्पिक चिकित्सा-पद्धतियों की ओर अधिकाधिक संख्या में लौट रहे हैं।

भारतीय वैकल्पिक चिकित्सा बोर्ड द्वारा चालित अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय अकादमी है। भारत व विदेशों में प्राकृतिक एवं पूरक चिकित्सा और स्वास्थ्य संवर्धन के क्षेत्र मे यह अग्रणी संस्था है।

डिग्री कोर्स

प्रत्येक पाठ्यक्रम दो वर्ष की अवधि का है तथा न्यूनतम योग्यता इंटरमीडिएट या बारहवीं कक्षा या समतुल्य है। पाठ्यक्रम इस प्रकार है—

प्राकृतिक चिकित्सा और योग, रेकी उपचार, एक्युप्रेशर और चुबक चिकित्सा, ओषधि—हर्बलिज्म, वैद्युत्-होम्योपैथी, जैव-कैमिक (रसायन), हाइप्नो-थेरैपी, मेडिकल ज्योतिष विद्या, एरोमा (सुगंध) चिकित्सा, रेडियोस्थिशिया और रेडियोनिक्स, बैच-फ्लॉवर।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम . OIUAM तीन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाता है—

1. वैकल्पिक चिकित्सा में डॉक्टर, 2. वैकल्पिक चिकित्सा, दर्शनशास्त्र में डॉक्टर, 3. वैकल्पिक चिकित्सा विज्ञान में डॉक्टर।

अधिक जानकारी के लिए यहाँ संपर्क किया जा सकता है—इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ आल्टरनेटिव मेडिसिन, 80, चौरंगी रोड, कोलकाता-700020



व्यावसायिक अध्ययन

(Vocational Studies)

आज यह आवश्यक है कि आप दूसरों से एक कदम आगे ही रहें। यह जरूरी हो गया है कि कॉलेज डिग्री के अलावा आपके पास कुछ अन्य शिक्षण-प्रशिक्षण भी हो। इसी वजह से अल्पकालीन पाठ्यक्रम चलाए जा रहे है। ऐसे पाठ्यक्रम से व्यक्ति की प्रतिभा एव कौशल विकसित होते हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से आप अधिक मित्र बना सकते हैं, आप मे अधिक आत्मविश्वास आता है तथा आपको दुनिया की अधिकाधिक जानकारी मिलती है। आपका जीवनवृत्त (बायोडाटा) अधिक प्रभावी बन जाता है। ऐसे अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रम हैं, जिनमें उत्तीर्ण होकर आप अच्छी-खासी आजीविका चला सकते हैं।

कंप्यूटर

निस्संदेह सर्वाधिक लोकप्रिय विकल्प कंप्यूटर है। आज कंप्यूटर सीखना अनिवार्य हो गया है। कंप्यूटर पाठ्यक्रम के लिए आपके पास वाणिज्य या विज्ञान की पृष्ठभूमि का होना आवश्यक नहीं है। कंप्यूटर मे डिप्लोमा होने पर आप अन्यो की तुलना में बेहतर स्थिति में आ सकते हैं। किसी भी कंप्यूटर सेंटर मे यह पाठ्यक्रम करने के लिए लगभग पच्चीस से लेकर पचपन हजार रुपए तक खर्च आता है। जावा के अलावा, C++ तथा अन्य उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमों की असाधारण रोजगार संबधी संभावनाएँ हैं। तथापि उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमो में एकमात्र समस्या यही है कि बहुत जल्दी ये पाठ्यक्रम पुराने पड़ जाते हैं; लेकिन तब भी कंप्यूटर मे आधारभूत पाठ्यक्रम निश्चित रूप से सहायक होते हैं।

कमर्शियल आर्ट

यदि आपकी शैक्षणिक क्षेत्र मे रुचि नहीं है तथा आप ऐसा कुछ करना चाहते है, जिससे आपकी रचनात्मक और कलात्मक प्रकृति को संतोष मिले तो आपको

कमर्शियल आर्ट से जुड़े स्कूलों मे जाना चाहिए। बुटीक पेंटिंग, बाइंडिंग, छपाई (प्रिंटिंग), कागज से वस्तुएँ बनाने, फैब्रिक पेंटिंग, फूल बनाने, पैच वर्क, तैल चित्रकला जैसे अल्पकालीन अनेक क्षेत्र हैं, जिनसे आपका बायोडाटा या संक्षिप्त परिचय प्रभावशाली बन सकता है। फैशन डिजाइनिंग का छात्र ऐसे पाठ्यक्रमो से अधिक लाभ उठा सकता है। यहाँ पर पाँच सौ से पंद्रह हजार रुपए प्रति मास तक लागत आती है। यह खर्च पाठ्यक्रम या संस्थानो पर निर्भर करता है।

पुस्तक प्रकाशन

संप्रेषण के किसी भी माध्यम की तुलना में लिखित शब्द मे अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली होती है। यदि लेखन में आपकी रुचि है तो प्रिंटिंग और प्रकाशन के पाठ्यक्रम आपके लिए अधिक उपयुक्त होंगे, ताकि आप संपादकीय जिम्मेदारी उठा सकें। शकर कला अकादमी, बहादुर शाह जफर मार्ग में पुस्तक प्रकाशन मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा कराया जाता है, जबकि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी टी) में पुस्तक प्रकाशन में हर वर्ष अक्तूबर में चार सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की जाती है। शंकर अकादमी में चलाए जा रहे पाठ्यक्रम की फीस लगभग पाँच हजार रुपए है, जबकि एन बी टी में तीन हजार रुपए फीस ली जाती है। पुस्तकों आदि की मार्केटिंग तथा बिक्री के प्रबंधन के लिए बड़े और प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रबंध क्षेत्र में स्नातकोत्तरों की भरती की जाती है।

रेडियो-जॉकिंग

क्या आपकी आवाज में इतना जादू है कि आप लोगों का मन जीत सकें, मन बहला सकें, श्रोतागण भावातिरेक में डूब जाएँ, चटपटी बातें सुना सकें, साथ ही उदासी या गंभीर विषय को भी प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकें ? यदि आपका उत्तर 'हॉ' मे है तो रेडियो-जॉकिंग क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त है। आपको सिर्फ संगीत, बैंड, उनके इतिहास, सजीव वर्णन, लोकप्रिय ट्रैक तथा बहुत अधिक लोकप्रिय न हो सकी हस्तियों तथा घटनाओं में रुचि होनी चाहिए, इनकी जानकारी होनी चाहिए। अकादमिक अध्ययन के साथ-साथ आप पब्लिक स्पीकिंग या प्रसारण का पाठ्यक्रम भी कर सकते हैं। भारत भर के विभिन्न जन-संचार संस्थानो में उक्त पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। फिर भी कहना होगा कि रेडियो-जॉकिंग का पाठ्यक्रम बहुत कम संस्थानों में चलाया जा रहा है। हॉ, मीडिया से जुड़ी प्रख्यात हस्तियाँ, समाचार-वाचक तथा रेडियो-जॉकी इस प्रकार की कार्यशालाएँ चलाते रहते हैं। ऐसी भी व्यवस्था विद्यमान है कि आप चाहे तो थिएटर अपना सकते है या समाचार-वाचन का रास्ता चुन सकते हैं।

फोटोग्राफी

यदि आप मीडिया का हिस्सा बनना चाहते हैं, लेकिन रेडियो-जॉकिंग का क्षेत्र आपको वस्तुत. प्रेरित नही कर रहा है तो फोटोग्राफी का पाठ्यक्रम आपका कैरियर बन सकता है। यह व्यवसाय के साथ-साथ कला-साधना भी हे। जरूरत इस बात की है कि रंग, शेड और छाया के प्रति जागरूकता तथा प्रकाश व्यवस्था मे आपकी रुचि हो। एन.आई.एफ.टी. ने इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल फोटोग्राफी (आई.सी पी पी) ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर का फोटोग्राफी पाठ्यक्रम आरंभ किया है। एन आई एफ टी में छह माह के इस पाठ्यक्रम की कुल फीस अस्सी हजार रुपए है तथा जे डी इस्टीच्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी में फैशन फोटोग्राफी में तीन मास के व्यापक पाठ्यक्रम की फीस इकहत्तर हजार रुपए है। इसके अलावा, त्रिवेणी कला संगम में फोटोग्राफी का अंशकालीन (Part time) पाठ्यक्रम चलाया जाता है। यहाँ प्राथमिक और उच्च स्तरीय दो प्रकार के पाठ्यक्रम चलाए जाते है, जिनकी अवधि पाँच महीने है। हालाँकि प्राथमिक पाठ्यक्रम कैमरे के विभिन्न प्रकारो से जुड़ा है, लेकिन उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में श्वेत-श्याम फिल्मों की विभिन्न किस्मों, उनके उपयोग की विविध विशेषताओ, डार्क-रूम के बारे में जानकारी, फिल्म डेवलप करने की विधियाँ आदि जैसे फोटोग्राफी के विभिन्न पक्षों के विस्तृत ब्योरों की जानकारी दी जाती हे।

विदेशी भाषाएँ

वर्तमान में विदेशी भाषाओ का जितना अधिक महत्त्व है उतना पहले नहीं था। भाषाएँ भी ऐसा अन्य विकल्प है, जिसमे विशिष्ट कौशल दिखाए जा सकते हैं। इस क्षेत्र में पूर्णकालीन पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। विदेशी भाषा सीखने की प्रक्रिया रोचक है, इसमें दुभाषिए तथा अनुवादक के रूप मे अंशकालीन कार्य करने का विकल्प भी है। इसके लिए मात्र स्नातक डिग्री होना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु पर्याप्त बुद्धिमत्ता भी आवश्यक है। भाषा विकल्प असंख्य है। हम अधिक लोकप्रिय फ्रासीसी और जर्मन भाषा से लेकर कम लोकप्रिय तथा अधिक कठिन जापानी और रूसी भाषाएँ सीख सकते हैं। एलाइस फ्रेंकाइस, मैक्समूलर भवन, इडो-जापानी सेटर तथा इंस्टीच्यूट ऑफ हिस्पेंसा क्रमशः फ्रेंच, जर्मन, जापानी, स्पेनिश भाषाएँ सिखाते हैं।

संगीत और नृत्य

कुछ वर्षों पहले तक नृत्य और सगीत मात्र शौक माने जाते थे नृत्य और

सगीत मे व्यावसायिक प्रशिक्षण से व्यक्ति का जावनवृत्त आकर्षक बन जाता है। विद्यार्थी जीवन मे आपके पास काफी समय होता है तथा ऐसी कला सीखना उचित होता है, जो रुचि का विपय होने के साथ-साथ आपका कैरियर भी साबित हो सकती है। ऐसे अनेक स्कूल और संस्थान हैं, जहाँ सगीत और नृत्य में औपचारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। यामिनी नृत्य स्कूल, राष्ट्रीय नृत्य और संगीत संस्थान, श्रीराम भारतीय कला केंद्र आदि में नृत्य से संबंधित पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय कला केद्र और दिल्ली स्कूल ऑफ म्यूजिक, दिल्ली में सगीत में विधिवत् शिक्षा दी जाती है। यदि इन सस्थानों मे जाना संभव नहीं है तो आप किसी प्रतिष्ठित संगीतज्ञ से संगीत की शिक्षा ले सकते हैं। अनेक संगीतज्ञ इस कला के प्रति समर्पित शिष्यो को संगीत का प्रशिक्षण देते है।

निम्नलिखित संस्थानों में संगीत और नृत्य के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1 त्रिवेणी कला सगम, 205, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली।
2 यामिनी नृत्य स्कूल, इंस्टीच्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली।
3. श्रीराम भारतीय कला केद्र, 1, कॉपरनिकस मार्ग, नई दिल्ली।
4 कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, (दिल्ली विश्वविद्यालय), शेख सराय, नई दिल्ली।
5 इंटरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल, 12, मॉडर्न स्कूल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली।
6 मैक्समूलर भवन, 3, कस्तूरबा गाधी मार्ग, नई दिल्ली।
7 एलायस फ्रेंकेस, डी-13, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली।
8 जापानी दूतावास, 32, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली।
9 इंस्टीट्यूटो हिस्पानिया, वाई-10, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली।
10. इतालवी दूतावास, सांस्कृतिक केंद्र, 50-ई, चद्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली।



श्रव्य-विज्ञान

(Audible Science)

श्रव्य-विज्ञान व्यवसाय उन लोगो को नया जीवन देता है, जो श्रवण तथा वाक् सबधी समस्याओ से ग्रस्त हैं। आयुर्विज्ञान के विकास और प्रगति के साथ श्रव्य-वैज्ञानिकों तथा वाक्-चिकित्सको की भूमिका को अत्यधिक बल मिला है।

यद्यपि भारत बढ-चढ़कर यह दावा नहीं कर सकता है कि यहाँ अनेक वाक्-चिकित्सक व श्रव्य-वैज्ञानिक है, लेकिन इस अर्द्ध-चिकित्सीय क्षेत्र में काफी सभावनाएँ हैं। बुनियादी तौर पर श्रव्य-वैज्ञानिक का कार्य वाक् और श्रवण त्रुटियो का निदान तथा प्रवाह मे बोलने एवं स्वर के उतार-चढ़ाव की दृष्टि से उपयुक्त चिकित्सा करना है। मस्तिष्क द्वारा सही प्रकार से कार्य न करने, मानसिक अवरोध तथा चोट के कारण उत्पन्न हकलापन, देर से बोलने, बाल्यावस्था में वाक् विकारो जैसी समस्या को श्रव्य-वैज्ञानिक ही सुलझाता है। इनका विदर तालू, श्रवण विकार तथा स्वर संबंधी ऐसी समस्याओं से वास्ता पडता है जिनके लिए विशेष उपचार की जरूरत होती है।

श्रव्य-वैज्ञानिक ऑडियोमीटर की सहायता से श्रवण दोष का आकलन करता है तथा वाक् चिकित्सक वाक् भाषा प्रशिक्षण के लिए वाणी सबंधी उपकरण का इस्तेमाल करता है। संकेत भाषा, होठों से बात समझना, स्वर संबंधी व्यायाम जैसी तकनीकों का इस उपचार में प्रयोग किया जाता है। वाक् चिकित्सक तथा श्रव्य-वैज्ञानिक का कार्य चुनौती भरा होता है। इसके लिए धैर्य, समर्पण भाव, तर्क शक्ति और सूक्ष्म अवलोकन की आवश्यकता होती है। यदि रोगी बच्चा है तो चिकित्सक को रोगी के परिवार और स्कूल टीचर के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखना है, ताकि डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक रोगी की प्रगति जानने के लिए जानकारी ले-दे सकें।

अस्पताल और पुनर्वास केद्रों मे श्रव्य-वैज्ञानिक तथा वाक् चिकित्सक के लिए पर्याप्त अवसर मौजूद हैं। इन्हें सरकारी अस्पतालो में अन्य डॉक्टरों के समान

वेतन और भत्ते मिलते हे. प्राइवेट अस्पताल मे रोगी के साथ प्रत्येक मीटिग (विजिट) के लिए पॉच सौ से एक हजार रुपए तक फीस ली जाती है। श्रव्य-वैज्ञानिक अपना क्लीनिक खोलकर प्राइवेट प्रैक्टिस भी करता है। प्राइवेट व्यवसायी के लिए कोई आय सीमा नहीं है। स्कूलों मे मूक-बधिर बच्चो के अर्ध-चिकित्सीय उपचार के लिए श्रव्य-वैज्ञानिकों की जरूरत होती है।

इस क्षेत्र में रुचि रखनेवाले व्यक्ति स्नातक स्तर तक पाठ्यक्रम मे प्रवेश ले सकते हैं। तीन वर्ष का बी एस-सी. पाठ्यक्रम होता है। लेकिन कक्षा बारहवीं तक विज्ञान विषयों का होना जरूरी है। देश के अनेक संस्थानों में स्नातकोत्तर डिग्री भी दिलाई जाती है। श्रव्य-विज्ञान या वाक् चिकित्सा का विदेशों में व्यापक क्षेत्र है। सयुक्त राज्य ने विशेषज्ञता पाठ्यक्रम कराए जाते हैं, जहाँ इस क्षेत्र मे निरंतर शोध कार्य किया जाता है तथा प्रतिदिन नई प्रौद्योगिकी की शुरुआत होती है तथापि हमारे देश में ये सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। प्रौद्योगिकी उन्नयन का इस क्षेत्र में अत्यधिक महत्त्व हे। प्राइवेट प्रैक्टिस के रूप में आपको भारी पूँजी लगानी होगी।

श्रव्य-विज्ञान या वाक् चिकित्सा में गोली खिलाने या इंजेक्शन लगाने का कार्य नहीं होना है। व्यक्ति को बड़े ध्यान से रोगी का अध्ययन करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति में ध्वनि/बोलने की क्षमता जाग्रत् करना प्रोफेशन मात्र नहीं है, बल्कि बहुत बडी चुनौती है।

निम्नलिखित संस्थानो में इससे सबंधित पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं—

1 स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चडीगढ।
2 अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली।
3 अली यावर जग नेशनल इंस्टीच्यूट फॉर द हीयरिंग हैंडीकेप्ड, मुबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
4. इंस्टीच्यूट ऑफ स्पीच एड हियरिंग, बगलौर।
5 टी एन मेडिकल कॉलेज, बी वाई.एल नैयर चेरिटेबल अस्पताल, मुंबई।
6 गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात।
7. उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
8 कस्तूरबा गांधी मेडिकल कॉलेज, मणिपाल इंस्टीच्यूट ऑफ नर्सिंग, मंगलूर।



संयुक्त सुरक्षा सेवाएँ

(Combined Defence Services)

रक्षा सेवाएँ युवा वर्ग के आकर्षण का केंद्र रही हैं। रक्षा सेवाएँ अनुशासन, गरिमा और सामाजिक हैसियत का मिश्रित रूप हैं। इनमें धन और विशेष सुविधाएँ भी मिलती हैं। किसी अन्य नौकरी या कैरियर में यह सबकुछ नहीं मिलता। जैतून-हरित की यूनिफॉर्म आज भी युवाओं को आकर्षित करती है; हालाँकि अन्य क्षेत्रों में इतनी अधिक आकर्षक नौकरियाँ मौजूद हैं। संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा मे निम्नलिखित विषय/क्षेत्र शामिल हैं—

1 भारतीय सैन्य अकादमी (आई एम.ए), देहरादून।

2. नौसेना अकादमी, गोवा।

3 वायुसेना स्टेशन बेगमपेट, हैदराबाद।

4 अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए.), चेन्नई।

सी डी.एस परीक्षा वर्ष मे दो बार होती है। इसके लिए निम्नलिखित पात्रता मानदंड है—

1. भारतीय सैन्य अकादमी के लिए उम्मीदवार किसी भी विषय मे स्नातक हो उसकी आयु अठारह से तेईस वर्ष के बीच हो और वह अविवाहित हो।
2 नौसेना अकादमी के लिए उम्मीदवार इंजीनियरिंग या भौतिकी अथवा गणित मे स्नातक हो, आयु सीमा साढे अठारह वर्ष से साढ़े इक्कीस वर्ष तक है। वह अविवाहित होना चाहिए।
3. वायुसेना के लिए शैक्षिक योग्यता नौसेना अकादमी के समान है, लेकिन आयु सीमा अठारह से बाईस वर्ष है। व्यक्ति अविवाहित हो।
4. अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी के लिए उम्मीदवार किसी भी विषय में स्नातक हो। आयु सीमा अठारह से चौबीस वर्ष; लेकिन विवाहित उम्मीदवारों को भी लिया जा सकता है।

सी डी.एस. की लिखित परीक्षा मे 100 अको का अग्रेजी पेपर होता है। अवधि सामान्य होती है। लेकिन ओ टी.ए. परीक्षा में बैठनेवाले उम्मीदवारों के लिए गणित विषय अनिवार्य नहीं होता है। अंग्रेजी के पेपर में व्याकरण तथा बोध-ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। सामान्य ज्ञान में समसामयिक घटनाओं, सामान्य विज्ञान इतिहास, भूगोल विषय शामिल हैं। यह परीक्षा स्नातक स्तर की होती है। लेकिन गणित प्रारंभिक स्तर तक का होता है तथा माध्यमिक स्कूल के पाठ्य विवरण में शामिल अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, विस्तार कलन और सांख्यिकी विषय होते है।

लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अधिकांशतः उम्मीदवार चुन लिये जाते हैं, बशर्ते उन्होंने थोड़ी-बहुत मेहनत की हो तथा उनके पास मूलभूत ज्ञान हो। अगला चरण इटरव्यू है। यह देश में प्रतियोगी परीक्षाओं की सबसे बड़ी चुनौती है। सेवा चयन बोर्ड इंटरव्यू लेता है। एस एस.बी में उत्तीर्ण होने पर उम्मीदवार को बहुत बड़ी सफलता मिलती है। एस एस बी द्वारा आयोजित इंटरव्यू का लक्ष्य व्यक्ति में निहित अधिकारियो के गुणो का पता लगाना है। इनमें नेतृत्व कौशल, प्रभावी पारस्परिक क्रियाएँ, तेजी से निर्णय लेने की शक्ति, संप्रेषण कौशल, प्रतिकुल परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता, तर्कशक्ति तथा सगठन शक्ति, आत्मविश्वास, विलक्षण बहादुरी, दृढ निश्चय तथा सबसे ऊपर कर्तव्यनिष्ठा एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठा आदि गुण शामिल हैं।

एस.एस.बी. में तीन प्रकार के दृष्टिकोण अपनाए जाते हैं—

(क) मनोवैज्ञानिक परीक्षण : इस बात का पता लगाने के लिए यह परीक्षण किया जाता है कि उम्मीदवार में अधिकारी बनने के लिए अपेक्षित मानसिक स्तर है या नहीं। यहीं से निवारण (elimination) प्रक्रिया शुरू होती है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण में शाब्दिक तथा शब्देतर अभ्यास कार्य शामिल है, जिसमे शब्दों के बीच सबंध, विषयवस्तु-मूल्यांकन, आत्म-मूल्यांकन तथा परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया जैसे पहलू आते हैं। एस एस बी के इटरव्यू के माध्यम से जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण, परिस्थितियों के प्रति अनुक्रिया एवं अत्यधिक जटिल हालात मे विवेकशीलता/संयम रखने की योग्यता का आकलन किया जाता है।

(ख) सामूहिक कार्य : आस-पास के माहौल और लोगों के साथ उम्मीदवार के व्यवहार की परीक्षा ली जाती है तथा अंतर्वैयक्तिक संबंधों एवं कौशलों का अध्ययन किया जाता है। इससे विशेष योजना के प्रति उम्मीदवार की प्रतिक्रिया के ढग का पता लगाने में मदद मिलती हें। यह सतर्कता, विवेक तथा सूझ-बूझ का

अभ्यास कार्य है। इसमें घर से बाहर के सामूहिक कार्यों की दृष्टि से परखा जाता है। यहाँ इंटर-ग्रुप रुकावट दौड़, भाषण/वार्त्ता जैसी क्रियाएँ शामिल हैं। व्यक्ति को निर्धारित समय के भीतर छोटा सा भाषण देना होता है। यह आशु-वार्त्ता होती है। अंत में कमांड का कार्य दिया जाता है। यह परीक्षा इस प्रकार से तैयार की जाती है कि व्यक्ति में विद्यमान नेतृत्व शक्ति तथा सहयोग एव टीम भावना से कार्य संपन्न करने की क्षमता का पता लग जाता है।

(ग) इंटरव्यू : चयन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू इटरव्यू है। इसमे उम्मीदवार से उसके परिवार एव शैक्षिक पृष्ठभूमि, शौक, पाठ्येतर कार्यों, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओ की जानकारी तथा रक्षा सेवाओं में भरती होने से जुड़े कारणों के बारे में सवाल पूछे जाते हैं। इंटरव्यू बहुत बारीकी से लिया जाता है। इटरव्यू के बारे में यह याद रखा जाए कि उम्मीदवार को मनगढ़ंत जवाब नहीं देने चाहिए। यदि कोई जवाब दिया जाता है तो संक्षेप में दें। उम्मीदवार को खुले दिमाग से इंटरव्यू में आना चाहिए। कोई पूर्वग्रह नहीं रखना है। उसे सोच-समझकर सही-सही जानकारी देनी चाहिए। उम्मीदवार याद रखें कि एस.एस.बी. को अधिकारी गुण-सपन्न लोगों की जरूरत है—अर्थात् उन्हे ऐसे लोगो की जरूरत हे, जिन्हे अधिकारी के रूप में प्रशिक्षित किया जा सके। यदि उम्मीदवार ऐसा आभास देता है कि वह प्रशिक्षित है तो व्यावहारिक प्रयोजनार्थ उसका नाम रद्द कर दिया जाता हे।

इंटरव्यू के बाद शारीरिक परीक्षण आता हे। इसका प्रयोजन उम्मीदवार की शारीरिक शक्ति तथा सहनशक्ति का पता लगाना है। शारीरिक परीक्षण मे ऐसे उम्मीदवारो को अधिक सफलता मिलती है, जो अच्छे खिलाड़ी हैं। शारीरिक परीक्षण के दौरान पैरों के बाद कद और नेत्र दृष्टि को प्रमुख महत्त्व दिया जाता ह। छोटा कद या वर्ण-अंधता के कारण उम्मीदवार अयोग्य ठहरा दिया जाता है।

चुने गए उम्मीदवार को भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। प्रशिक्षण की अवधि अठारह माह की होती है। सफल समापन के बाद उम्मीदवार को सेकेंड लेफ्टिनेंट का रैंक दिया जाता है। अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी के प्रशिक्षण की अवधि एक माह है। प्रशिक्षण के बाद उन्हे भी सेकेंड लेफ्टिनेंट का रैंक दिया जाता है। नियुक्ति की अवधि शॉर्ट सर्विस कमीशन में पाँच वर्ष की होती है। वायुसेना अकादमी मे प्रशिक्षण की अवधि पचहत्तर सप्ताह होती है। प्रशिक्षण के बाद उन्हें पायलट अधिकारी का रैंक दिया जाता है। जहाँ तक नौसेना अकादमी का संबंध है, उम्मीदवार को नौसेना की कार्यकारी शाखा में कैडेट के रूप में शामिल किया जाता है। प्रशिक्षण के बाद उन्हें भारतीय नौसेना जहाजों के

ुक्त किया जाता हे, बशर्ते उन्होने एक सौ अस्सी दिनो की न्यूनतम कुल नेवल वाच रखने का प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लिया हो।

नवाओं में आकर्षण का केंद्र वेतनमान ही नहीं, बल्कि अन्य नौकरियो अधिक विशेष भत्ते और सुविधाएँ भी शामिल हैं। इनमें सामूहिक बीमा सुविधाएँ, रियायती आवास सुविधा एव यात्रा, निःशुल्क चिकित्सा र अन्य अनेक समतुल्य सुविधाएँ शामिल हैं, जिनके कारण अधिकतम मीदवार इस ओर आकर्षित होते हैं।

स्नातक के बाद कार्यालय सवर्ग प्रवेश सेना।

विशिष्ट क्षेत्रों मे इंजीनियरिंग डिग्रीधारक, आयु सीमा बीस से सत्ताईस वर्ष है। यह चयन सीधे एस एस बी इंटरव्यू के माध्यम से होता है। प्रायः अप्रैल/अक्तूबर में प्रवेश की अधिसूचना दी जाती है।

50 प्रतिशत अकों सहित स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले एन सी सी के सदस्यो के लिए शॉर्ट सर्विस कमीशन की विशेष प्रवेश परीक्षा है। कैडेट के पास 'सी' प्रमाण–पत्र परीक्षा में न्यूनतम बी ग्रेड होना चाहिए। आयु सीमा उन्नीस से पच्चीस वर्ष है। सीधे चयन एस एस बी इंटरव्यू के माध्यम से किया जाता है। अक्तूबर/नवंबर में प्रवेश परीक्षा की सूचना दी जाती है।

विशेष क्षेत्र में इजीनियरिंग डिग्रीधारकों के लिए शॉर्ट सर्विस कमीशन (तकनीकी), सीधे एस.एस.बी इंटर्व्यू से चयन किया जाता है। मार्च/अक्तूबर में प्रवेश परीक्षा अधिसूचित की जाती है।

मेना शिक्षा कोर (ए.ई मी) तथा सेना आयुध कोर (ए ओ.सी.) मे स्नातकोत्तर : आयु सीमा तेईस से सत्ताईस वर्ष है। ए ई सी या ए ओ सी के लिए विनिर्दिष्ट विषयों में इंजीनियरिंग।

सेना मेडिकल कोर (ए.एम सी) शॉर्ट सर्विस कमीशन में पैंतालीस वर्ष तक की आयु के सिविलियन डॉक्टर्स को रखा जाता है। यह चयन इंटरव्यू के माध्यम से किया जाता हे।

सेना दंत कोर : पी सी /एस एस सी ; सीधे स्थायी कमीशन में बी.डी एस की भरती की जाती है। उम्मीदवार ने 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों तथा आयु अट्ठाईस वर्ष तक हो; एम डी एस. की आयु तीस वर्ष तक हो, इन्होंने एक वर्ष की 'रीटेटिंग इंटर्नशिप' पूरी की हो।

रिमाउंट वेटेरिनेरी कोर : आयु सीमा इक्कीस से बत्तीस वर्ष है।

शैक्षिक योग्यता पशु चिकित्सा-विज्ञान मे स्नातक डिग्री है। एस एस बी इटरव्यू से सीधे चयन किया जाता है।

(viii) जे.ए.जी विभाग के लिए विधि स्नातक : आयु सीमा इक्कीस से पच्चीस वर्ष है। न्यूनतम 50 प्रतिशत अंको सहित प्रोफेशनल विधि डिग्री हो। जे ए.जी विभाग द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा के माध्यम से चयन किया जाता है। लिखित परीक्षा के बाद एस एस.बी. इटरव्यू होता है।

(ix) स्नातक स्तर की शिक्षा के बाद भारतीय सेना में प्रवेश की अन्य श्रेणियों में ऑटो कार्टोग्राफर सर्वेक्षक, हवलदार शिक्षा, ग्रुप एक्स तथा वाई जे सी ओ (धार्मिक शिक्षक), जे सी.ओ (खान-पान) शामिल हैं। आयु सीमा बीस से सत्ताईस वर्ष है। जे सी ओ (धार्मिक शिक्षक) की आयु सीमा सत्ताईस से चौंतीस वर्ष हैं।

(ख) अधिकारी संवर्ग प्रवेश : स्नातक स्तर की शिक्षा के बाद।

(i) उन्नीस से बाईस वर्ष की आयु के बी एस-सी या बी.ई डिग्रीधारक पुरुष उम्मीदवारो के लिए एन.सी सी विशेष प्रवेश परीक्षा, नौसेना विंग वरिष्ठ डिवीजन मे एन सी सी. में 'सी' प्रमाण-पत्र।

(ii) उन्नीस से बाईस वर्ष की आयुवाले पुरुष उम्मीदवारो के लिए विशेष स्नातक प्रवेश परीक्षा, जिन्होंने बी एस-सी या बी ई की हो।

(iii) प्रत्यक्ष प्रवेश स्कीम (विधि संवर्ग) : आयु सीमा साढे उन्नीस से पच्चीस वर्ष है। वैद्युत् इजीनियरिंग या यांत्रिक इजीनियरिंग मे स्नातक डिग्री या भौतिकी/इलेक्ट्रॉनिक्स में स्नातकोत्तर डिग्री।

(ग) स्नातक स्तर की परीक्षा के बाद अधिकारी संवर्ग प्रवेश योजना . वायुसेना (वायु सेना में कैरियर अध्याय में देखे)।



समारोह प्रबंधन

(Event Management)

प्रोफेशन के रूप में समारोह प्रबधन अभी भी प्रारंभिक दौर से गुजर रहा है। बडे और छोटे नगरों मे इधर-उधर अस्तित्व में आ रही व्यावसायिक कंपनियों मे भी सकारात्मक वृद्धि हुई है। यदि समारोह प्रबंधन एक सौ पचास करोड़ रुपए का है, तब अनुभवहीन उद्योग भी अगले पाँच वर्षों मे पॉच सौ करोड रुपए तक पहुँच जाएगा।

जैसाकि नाम से पता चलता है, समारोह प्रबंधन का अर्थ किसी समारोह को सतर्क होकर रचनात्मक दृष्टिकोण से शो के आयोजन और निष्पादन की योजना तैयार करना है। यह योजना उत्पाद या ब्राड लॉन्च, प्रदर्शनी या कंसर्ट शो या यहाँ तक कि सी आई टी आई. की बैठक जैसा कॉरपोरेट सम्मेलन भी हो सकती है। समारोह प्रबंधन मूलत: विज्ञापन तथा जन-संपर्क का ही विस्तृत रूप है। किसी समय जन-संपर्क के साधन के रूप में तथा ब्रांड बनाने के अभ्यास के रूप में इसका इस्तेमाल किया जाता था। किंतु आज यह जन-संपर्क कार्य से अधिक महत्त्वपूर्ण है और इसीलिए इसे विशेष क्षेत्र माना जाता है। कैरियर के रूप मे समारोह प्रबंधन के विशेष तत्व विशिष्ट रूप से निम्नलिखित भागो में विभाजित हैं—संकल्पना तैयार करना, रचनात्मकता, नवाचार, संभार योजना, तकनीकी योजना, डिजाइन मूल्य तथा मूल्य प्रबंधन।

संकल्पना तैयार करने में ब्रांड जैसे इवेंट की कल्पना तथा उसके बाद ब्राड की विशिष्ट माँगों के अनुकूल तैयारी शामिल है। उत्तम समारोह प्रबंधक का सार तत्त्व रचनात्मकता और नवाचार है। इसलिए समारोह में शामिल प्रक्रियाओं की गहन जानकारी होना जरूरी है, भले ही प्रोडक्ट लॉन्च करना हो अथवा प्रदर्शनी हो या किसी की वर्षगॉठ मनाने के लिए आयोजित पार्टी हो। निर्धारित श्रोतागण की जानकारी होना निर्णायक तत्त्व है। समारोह प्रबंधन नवोन्मेष या नूतन ढंग से कार्य

करता है, अर्थात् नई बोतल में पुरानी शराब बेचना है समारोह के प्रस्तुतीकरण के ढंग पर लक्ष्य पूरा किया जा सकता है या लक्ष्य भंग हो सकता है।

समारोह प्रबंधन कंपनी के कार्य एवं इसके आकार पर निर्भर करते हैं। छोटी एजेंसी में कार्य परस्पर मिलते-जुलते होते हैं, जबकि बड़ी कंपनी में विशेष विभागों की व्यवस्था होती है। विशेष विभागों में ग्राहक सेवा, विपणन (मार्केटिंग), उत्पादन, सर्जनात्मक या कारोबार विकास क्षेत्र शामिल है। योजना-दल योजनाएँ तैयार करता है तथा इवेंट का प्रारंभिक खाका तैयार करता है। उत्पादन दल सुनिश्चित करता है कि महत्त्वपूर्ण दिवस (D-day) को अपेक्षित हर व्यवस्था की जा रही है तथा यह कार्य सभी विभाग मिलकर कर रहे हैं, जबकि निष्पादन दल योजना टीम द्वारा बनाई गई रूपरेखा पर कार्य करते हैं। इस टीम में इलेक्ट्रीशियन, सज्जाकार, फ्लोरिस्ट एवं बढ़ई शामिल होते हैं। समन्वयन कार्य के लिए सुपरवाइजर होते हैं।

समारोह प्रबंधकों के लिए सफलता के निम्नलिखित तत्त्व बताए जाते हैं—संप्रेषण कौशल, विचार, उत्कृष्ट संगठन एवं नेटवर्क कौशल, विश्लेषणात्मक मस्तिष्क, लंबी अवधि तक कार्य करने की क्षमता, उत्कृष्ट जन-संपर्क कौशल, मधुर एवं आकर्षक व्यक्तित्व तथा समारोह के अनुरूप विचार ढालने के बारे में आत्मविश्वास।

इस क्षेत्र में धाक जमाने के लिए आतिथ्य प्रबंधन, होटल प्रबंधन, विज्ञापन और मार्केटिंग पृष्ठभूमि से काफी मदद मिलती है। इवेंट प्रबंधन में विशेष पाठ्यक्रम चलाया जाता है। लेकिन इच्छुक व्यक्ति इवेंट प्रबंधन कंपनी में प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य शुरू कर सकता है। अन्य विकल्प कॉरपोरेट क्षेत्र है। आज अनेक कंपनियों में इन-हाउस समारोह टीम है, जो अपने कार्यक्रम तैयार करती है। श्रम विभाजन तथा उच्च स्तरीय इवेंट के प्रबंधन के क्षेत्र में यह प्रवृत्ति उभरकर सामने आ रही है। पी आर फर्में संकल्पना तैयार करने तथा कार्यनीति बनाने का कार्य करती हैं; जबकि वास्तविक इवेंट का निष्पादन इवेंट प्रबंधन कंपनियाँ करती हैं।

यहाँ अच्छा पारिश्रमिक मिलता है। अनुभवहीन प्रशिक्षणार्थी भी चार हजार रुपए कमा सकता है। एम.बी.ए. या कुछ अनुभव प्राप्त स्नातकोत्तर को लगभग छह हजार से आठ हजार रुपए तक छोटी एजेंसी में मिलता है। यह पारिश्रमिक एजेंसी के आकार, समारोह के बजट जैसे कारकों पर निर्भर करता है। हालाँकि सुपरवाइजर अच्छा पैसा कमा सकता है; लेकिन अंशकालिक सुपरवाइजर प्रतिदिन चार सौ रुपए तक कमा सकता है।

सतही तौर पर, यह क्षेत्र बड़ा लाभप्रद दिखाई देता है, लेकिन यह भ्रामक धारणा है। समारोह प्रबंधन तथा इसे सफल बनाना श्रमसाध्य कार्य है, जिसके लिए

निरतर अथक प्रयास करने की जरूरत होती है अतिथि सत्कार, बेठने की व्यवस्था, उद्घाटित करने (ushering) की व्यवस्था, सतर्कता, स्थल की सजावट जैसे बाह्य ब्योरों एवं सैट, प्रकाश, ध्वनि एवं विशेष प्रभाव जैसे तकनीकी कौशलो का ध्यान रखना पड़ता है। सफल इवेंट के लिए सही समय पर उचित दृष्टि से प्रत्येक कार्य व्यापार देखना आवश्यक है। आपको अनवरत कठोर परिश्रम ही नही करना पडता, बल्कि सकट कालीन स्थिति में शात भी रहना पड़ता है। निर्धारित बजट के भीतर सफल इवेंट का आयोजन और समय सीमा के भीतर कार्य संपन्न करना आदि भी बडी चुनौतियॉं है। यह उद्योग समग्र रूप में निष्पादन पर आधारित है तथा इसके परिणाम तुरंत सामने आते हैं। यह बात संतोषजनक है।

प्रबधन प्रक्रिया सीखने के लिए समारोह आदर्श प्लेटफॉर्म है, जहाँ व्यक्ति ब्राड या उत्पाद के करीब आता है तथा परिणामस्वरूप उद्योग के भी। अन्य लाभ यह है कि आप जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगो से मिलते है और उनके साथ कार्य करते है। विजक्राफ्ट एंटरटेनमेंट एजेंसी (भारत की प्रमुख इवेंट प्रबंधन कंपनी) इवेंट इंजीनियर प्राइवेट लिमि , डी.एन ए नेटवर्क, क्लॉज सेलीब्रॉ जैसी कुछ एजेंसियाँ इस क्षेत्र में कार्य कर रही हैं।



समुद्री अभियांत्रिकी

(Marine Engineering)

आज समुद्र क्षेत्र से जुड़ा उद्योग प्रौद्योगिकी से सुसज्जित है, जिससे वह दिनोदिन अधिक सक्षम होता जा रहा है। वस्तुतः आज महासागर में विश्व स्तर पर दस हजार जहाजी बेड़े चल रहे हैं। परिणामस्वरूप, समुदी अभियांत्रिकी की ओर अधिकाधिक लोग आकर्षित हो रहे हैं। सभवतः इजीनियरिंग की यह नवीन शाखा—समुद्री इंजीनियरिंग—अनेक पीढियों, वर्षों के बाद उभरकर सामने आई है।

इस शाखा पर दृष्टिपात करने पर पता चल जाता है कि इस क्षेत्र में मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक, रेफ्रिजरेशन तथा वातानुकूलन इंजीनियरिंग क्षेत्र के अनेक प्रकार्य शामिल है। लेकिन जितना दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक आयाम इस क्षेत्र में विद्यमान है। डेक पर मशीनरी संबंधी कार्य करने के अलावा मेरीन इंजीनियर को आपात स्थिति में समुद्र मे घिरे होने पर यदा-कदा आग बुझाने तथा जान बचाने के कौशल का भी प्रदर्शन करना होता है। इन्हें डिजाइन के सबंध मे अनुसंधान, शिक्षण और प्रशिक्षण, परामर्श जैसे कार्य भी करने पड़ते है। निस्संदेह, इनका मुख्य कार्य इजन, बॉयलट, रेफ्रिजरेटिंग तथा स्वच्छता संबंधी उपकरणों, डेक मशीनरी और जहाजों के वाष्प कनेक्शन का रख-रखाव करना है। इन्हे लगातार कार्य करना पड़ता है। इस क्षेत्र में असीम धैर्य की जरूरत है, लेकिन स्वचालित यांत्रिक कार्य-प्रणाली के कारण यह कार्य सुगम हो चुका है।

पिछले दशक मे काफी प्रौद्योगिकीय उन्नति हुई है, जिसके कारण जहाज की मशीनरी अधिक चुनौतीपूर्ण और जटिल बन गई है। इससे अब समुद्री अभियांत्रिकी अर्थात् मेरीन इंजीनियरिंग अधिक रोमांचक तथा परितोषप्रद है। भारतीय वाणिज्यिक नौ सेना में कामकाजी स्थितियाँ अच्छी हैं। इसमें उत्कृष्ट वेतन पैकेज मिलते हैं। इससे इजीनियरिंग के क्षेत्र से जुड़े प्रार्थियों में यह क्षेत्र विशेष लोकप्रिय होता जा रहा है। अनेक गैर-सरकारी संस्थानो में समुद्री इंजीनियरिंग क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जाता है।

नौ परिवहन महानिदेशक, मुंबई ऐसे समस्त संस्थानों को अनुमोदित करता है, जो मेरीन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम चलाते हैं। हालाँकि अधिकांशतः छात्र ही समुद्री इंजीनियरिंग विषय चुनते है, फिर भी पिछले वर्षो में इस दिशा में परिवर्तन नजर आया है। अब इस पाठ्यक्रम मे छात्राओं की भी संख्या बढ़ रही है। समुद्री विज्ञान/समुद्री इंजीनियरिंग मर्चेंट नेवी (डेक या इंजन विभाग) में शामिल होने के लिए अनिवार्य योग्यता है।

समुद्री अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (MERI) चार वर्ष का पाठ्यक्रम चलाता है, जबकि ट्रेनिंग शिप 'चाणक्य', मुंबई द्वारा समुद्र विज्ञान में बी.एस-सी के समकक्ष तीन वर्ष का डिग्री पाठ्यक्रम चलाया जाता है। यह संस्थान मुंबई विश्वविद्यालय से जुडा है। समुद्री विज्ञान तथा मेरीन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम मे दाखिले के लिए न्यूनतम पात्रता भौतिकी, रसायनशास्त्र, गणित के साथ 10+2 परीक्षा है।

संयुक्त प्रवेश परीक्षा (JEE) के माध्यम से दोनों पाठ्यक्रम के लिए चयन किया जाता है। आई आई टी. द्वारा उक्त परीक्षा ली जाती है। मास्टर्स और मेट्स की परीक्षा के संबंध में भारत में लागू विनियमों के अंतर्गत सभी नौ चालन (navigating) अधिकारियों के लिए दक्षता प्रमाण-पत्र लेना अनिवार्य है। महानिदेशक, शिपिंग (डी.जी एस.), मुंबई के माध्यम से भूतल परिवहन मंत्रालय द्वारा दक्षता परीक्षाएँ आयोजित की जाती है। जूनियर इंजीनियर के रूप में कार्य आरंभ करनेवाले समुद्री इंजीनियर को भी ऐसी ही दक्षता-परीक्षा देनी पड़ती है। डी.जी.एस. उक्त परीक्षा आयोजित करता है तथा जूनियर इंजीनियर को पाँचवें, तीसरे व फिर तीसरे इंजीनियर के रैंक पर पदोन्नत किया जाता है और अंतत. उसकी पदोन्नति मुख्य इंजीनियर के रैंक पर की जाती है। पदोन्नति के अंतर्गत पारिश्रमिक में वृद्धि भी शामिल है। यहाँ चीफ इंजीनियर को लगभग डेढ़ लाख रुपए प्रति माह या अधिक पारिश्रमिक मिलता है।

समुद्री इंजीनियर अनेक देशो और शहरो की सैर करता है। विश्व का कोई भी कोना उससे अछूता नहीं रहता। वह नए-नए लोगों से मिलता है और ऐसे अवसरों का उन्हे लाभ भी मिलता है। इसपर अच्छी-खासी मिलनेवाली मोटी रकम सोने पर सुहागे का काम करती है। शुरू-शुरू में भारतीय पोत में व्यक्ति पच्चीस से तीस हजार रुपए तक कमा सकता है; जबकि किसी विदेशी पोत मे वह प्रारंभ में लगभग दो से तीन हजार डॉलर तक कमा सकता है। यह नौकरी वास्तव में आकर्षक है। पारिश्रमिक के अलावा व्यक्ति को अच्छे-खासे भत्ते आदि भी मिलते हैं। इस क्षेत्र

का एक दूसरा पहलू भी है समुद्री इजानियर एक बा मे छह मास तक यात्रा करता है, जिससे उसके कार्य मे नीरसता आ जाती है। लेकिन छह मास से अधिक अवधि तक जहाज में रहने का लाभ भी है। इससे व्यक्ति को आप्रवासी भारतीय (NRI) का दर्जा मिल जाता है, जिसका लाभ यह है कि उसे अपने पारिश्रमिक पर कर (Tax) नही देना पड़ता है। निश्चित रूप से अन्य नौ सैनिक अधिकारियों के समान समुद्री इजीनियर को प्रतिवर्ष छह मास का सवेतन अवकाश भी मिलता है।

यह व्यवसाय दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय हो रहा है। प्रतिवर्ष पैंतीस से चालीस प्रतिशत इंजीनियरिग छात्र इस विशेष क्षेत्र को चुनते है।

□



स्वतंत्र कार्य

स्वतत्र रूप से कार्य करना वस्तुत. स्व-रोजगार का सर्वोत्तम रूप है, जिसमें पूँजी निवेश भी नहीं करना पड़ता। स्वतंत्र कार्यकर्ता में कतिपय कौशल विकसित होने चाहिए तथा उसे अपने हिसाब से अलग-अलग ग्राहकों को पैसा और समय—दोनो रूपो मे सतुष्ट करना चाहिए। वह स्व-विवेक से निर्णय लेता है कि कोई कार्य किस प्रकार से किया जाना है तथा तय की गई राशि की दृष्टि से ग्राहक को संतुष्ट करना है। ऐसा व्यक्ति दूसरों पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि अपने कौशल के बलबूते पर आगे बढता है।

विश्वसनीयता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है और जैसे-जैसे विश्वसनीयता बढती है, मार्केट और पैसा—दोनो में ही वृद्धि होती है। अन्य महत्त्वपूर्ण कारक सपर्क है। फ्रीलासर को मार्केट में अच्छे संबंध विकसित करने चाहिए। कार्य तथा ग्राहकों के साथ बरताव के माध्यम से और मार्केट में स्थापित शोहरत से अधिक सपर्क बनते हैं।

यदि कोई व्यक्ति फ्रीलांसर बनना चाहता है तो उसे स्वतत्र कार्य जगत् की अनिश्चितताओं का सामना करना, समय प्रबंधन तथा अच्छी दरों पर समझौता करना सीखना चाहिए। साथ ही व्यक्ति को समय-समय पर कौशल अद्यतन करने चाहिए तथा अपने व्यवसाय से संबंधित नवीन घटनाक्रमो से परिचित रहना चाहिए। स्वतत्र कार्यों में फोटोग्राफी, पत्रकारिता, अध्यापन और लेखन कार्य शामिल हैं। इसके अलावा ऐसे अन्य क्षेत्र भी हो सकते हैं, जहाँ फ्रीलासिंग की जा सकती है, बशर्ते व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र मे प्रवीण हो।

निम्नलिखित प्रकार के स्वतंत्र कार्य किए जाते हैं—

1. फोटोग्राफी : चित्र और डिजाइन सहित फोटोग्राफी लोकप्रिय स्वतत्र विकल्प है। इस प्रकार के सर्जनात्मक व्यवसायों में अभिप्रेरित करनेवाला कारक 'एकाधिक नियोक्ता' का होना है। सफल रिकॉर्ड का प्रमाण, अच्छा पोर्टफोलियो,

सही प्रकार क मार्केटिंग काशल—ये ऐसे अनिवाय तत्त्व है, जिनसे अच्छा पारिश्रमिक एव सराहना मिलती है।

2. पत्रकारिता और लेखन : पत्रकार और लेखक के रूप में यह सर्वोत्तम प्रोफेशन है। इसमे अर्जित योग्यता इतनी प्रमुख भूमिका नही निभाती जितनी संप्रेषण कोशल तथा घिसे-पिटे विचारों को सर्वाधिक रोचक ढंग से लेख या लेखन मे प्रस्तुतीकरण निभाता है। लेखो तथा पुस्तको की संख्या के साथ-साथ प्रतिष्ठा बढती है। ये रचनाएँ उत्तम कोटि की हों और सुरुचिपूर्ण हों। पत्रकारिता में रिपोर्टिंग सर्वाधिक प्रचलित स्वतंत्र कार्य है।

3. प्रबंधन परामर्शदाता : आज के युग में प्रबंधन परामर्शदाता आकर्षक प्रोफेशन है, विशेषत· अनुभवी कार्यपालक का लोकप्रिय प्रोफेशन है, जो कार्यो के अनुभव के आधार पर परिपूर्ण अवस्था पर पहुँचते हैं। प्रबंधन परामर्शदाता का कार्य डाटा सचय, समीक्षा और विश्लेषण है। यह उपयुक्त सुझाव देता है तथा प्रस्ताव के कार्यान्वियन में सहायता करता है। व्यक्ति के पास संबंधित क्षेत्र में उच्च स्तर की विशेषज्ञता होनी चाहिए, क्योकि परामर्शदाता द्वारा दी गई सलाह को गंभीरता से लिया जाता है। परामर्श सेवा के विभिन्न प्रकार हैं—कार्य परामर्शदाता, कर परामर्शदाता, मानव संसाधन परामर्शदाता मार्केटिग परामर्शदाता, सुरक्षा परामर्शदाता, इजीनियरिंग परामर्शदाता, स्वास्थ्य परामर्शदाता, मनोविज्ञान परामर्शदाता आदि। स्वतत्र कार्य करते समय अंतर्वैयक्तिक कौशल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है, क्योंकि परामर्श सेवा के लिए आनेवाले ग्राहक बाध्य होते हैं अथवा समस्या के प्रति नकारात्मक रवैया रखने है। इस प्रकार से परामर्श सेवा मे मात्र सलाह नही दी जाती बल्कि ग्राहक की सकारात्मक मनोवृत्ति बनाए रखी जाती है, ताकि दी गई सलाह लागू हो सके।

4. व्यवसाय सेवाएँ : ऐमे कार्य के लिए संपर्क या संतुष्ट ग्राहको से मिलनेवाले सुझाव के माध्यम से ग्राहको की सख्या में वृद्धि होती है। इस प्रकार के स्वतत्र कार्य मे लेखा प्रणाली, जन-सपर्क, मार्केट शोध, निजी तहकीकात और प्रत्यक्ष बिक्री आती है।

5. होम सर्विस : आंतरिक सज्जा, डिजाइन, पाक कला और केटरिंग, ब्यूटी क्लीनिक, संविदा आधार पर स्वच्छता कार्य, सुरक्षा/सतर्कता अधिष्ठापना, क्रेच, उद्यान डिजाइनिग, घरेलू कार्यो के लिए स्टाफ देना भी हैं, जिसमे बिल जमा कराना आदि जैसे बाह्य कार्य शामिल है। स्वतत्र कार्य में जोखिम उठाने समय प्रमुखत. इस बात को ध्यान मे रखा जाए कि उपयुक्त दामों पर सर्वोत्तम सेवाएँ प्रदान की जाएँ। आपको यह सुनिश्चित करना है कि प्रचार कार्य इस प्रकार से किया जाए कि ग्राहको

को दिखाई दे। इस प्रकार के व्यवसाय में मुँह से की गई तारीफ या प्रचार का अधिक महत्त्व है तथा ग्राहक की संतुष्टि के आधार पर व्यवसाय मिलता है। इस क्षेत्र में अनुभव या संबद्ध क्षेत्र में प्रशिक्षण निश्चित रूप से आदर्श योग्यता है, लेकिन प्रबंधन कौशल की भी केंद्रीय भूमिका है।

यह याद रखना जरूरी है कि स्वतंत्र कार्य में आपके पास विशेषज्ञता होनी चाहिए तथा ग्राहकों की संतुष्टि में विश्वास रखना चाहिए। यदि ये दोनों गुण विद्यमान हैं तो इस क्षेत्र में सफलता की कोई सीमा नहीं है।

□□□